ऐतिहासिक उपन्यास

अनीता

नरेन्द्र हरित

© : नरेन्द्र हरित

प्रकाशक : प्रेम प्रकाशन मन्दिर
३०१२, गली काल्का मिश्र,
बल्ली मारान, दिल्ली-११०००६

प्रथम संस्करण : १९७५

मूल्य : पन्द्रह रुपये

मुद्रक : शुक्ला प्रिंटिंग एजेन्सी द्वारा
नूतन प्रेस, चाँदनी चौक, दिल्ली-६

समर्पण

◆

श्रद्धेय स्वर्गीय पं० मामचंद जी को

भूमिका

प्रस्तुत उपन्यास को एक बार हाथ में लिया तो बिना समाप्त किये नहीं छोड़ सका। उसका आरम्भ एक ऐतिहासिक घटना से होता है, जबकि बाबर हिन्दुस्तान पर आक्रमण करता है और पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी से उसका युद्ध होता है। इसके पश्चात् उपन्यास का ताना-बाना एक घुड़सवार सैनिक के परिवार के इर्द-गिर्द बुना जाता है। सैनिक शराब और जुए में घर को तबाह कर देता है, पर उसकी स्त्री, जिसके नाम पर उपन्यास का नामकरण किया गया है, जीवन भर कष्ट सहती है और परिवार की मान-मर्यादा की रक्षा करते हुए अपने को बलिदान कर देती है। उसके अंतिम शब्द थे—"मैं भारत माता हूँ। मैं इस देश की रमणी हूँ। मैंने सिंगार किया, मैं दुलहिन बनी, मुझे पति का प्रेम मिला, मैंने पुत्र को गोद में खिलाया; खुदा रूठ गया, भाग्य ने साथ नहीं दिया, मेरी दुनिया बदल गई और मैंने अपने बेटे को कत्ल कर दिया! मैं माँ हूँ, अब भी देखो, मेरे कलेजे में जख्म है।"

और उसके बेटे को गोद लेने वाला अहमद उसके जनाजे के साथ चलते हुए कहता है:

"अमीना एक ऐसी माँ थी, जो सिपाही की बीवी थी। उसने अपना हक अदा कर दिया और वह कुर्बान हो गई। मुल्क ऐसी ही औरतों से आगे बढ़ता है।"

वस्तुतः इस परिवार के माध्यम से लेखक ने उन असंख्य परिवारों की कहानी कही है, जिनके स्वामी बुरी आदतों में पड़कर एक के बाद एक बहुत-सी मुसीबतों को आमंत्रित करते हैं, लेकिन उन परिवारों की स्त्रियाँ अपने उच्च चरित्र, त्याग और बलिदान से समाज के आगे एक आदर्श उपस्थित करती हैं।

उपन्यास में इतिहास की कुछ घटनाएँ आती हैं, लेकिन वे गौण हैं और उनका उल्लेख सम्भवतः उस काल के वातावरण को दिखाने के लिए किया गया है। मुख्य कथानक की धारा तो अमीना के परिवार की उथल-पुथल के सहारे प्रवाहित होती है।

नारी के त्याग और बलिदान की गाथाओं से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। हमारे समाज में आज भी ऐसी स्त्रियों की कमी नहीं है, जो भयंकर-से-भयंकर आपदाओं को बड़े धैर्य से सहन कर लेती हैं और स्वयं कष्ट उठाकर दूसरों को सहारा देती हैं। अमीना इन्हीं देवियों में से है और उसका चरित्र, निस्संदेह नारी-समाज को प्रेरणा देने वाला है।

उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता उसकी औपन्यासिकता तथा भाषा के प्रवाह में है। उसका घटना-चक्र इस प्रकार चलता है कि पाठक का कौतूहल अन्त तक बना रहता है। वह कहीं भी ऊबता नहीं है। अमीना के परिवार के साथ-साथ, उस परिवार से सम्बद्ध, कुछ अन्य परिवारों से उसका ऐसा नाता जुड़ जाता है कि उनके सुख-दुख को वह अपना मानकर उनके साथ आगे बढ़ता जाता है।

लेखक का भाषा पर अच्छा अधिकार है। कहीं-कहीं तो उसने ऐसे चित्र खींचे

हैं कि पाठक मुग्ध रह जाता है :

"चाँदनी का आलम था, आसमान से चाँदनी बरस रही थी, हवा मौन शहनाई बजा रही थी।"

"अगहन के छोटे दिन, लम्बी रातें और गुलाबी जाड़ा जब आया और आकर पूस की गोद में चला गया तो सर्दी भयंकर हो गई। सवेरे जब देखो, धरती ओस से भीगी मिलती।"

"ऐसे में ही एक दिन आसमान पर बादल छाये तो वे काले से गोरे हुए, सिंदूरी और लाल रंगों में भी बदले, फिर भूरे बन कर बरसे और रिमझिम-रिमझिम बूँदों की झड़ी लग गई।"

इन चित्रों के अतिरिक्त कुछ वाक्य तो सुभाषितों के रूप में हैं :

"तारा जब आसमान से टूटता है तो वापस नहीं जाता।"

"इंसान पक्का इरादा कर ले तो उसके लिए कोई भी काम मुश्किल नहीं है।"

"अपनी मेहनत पर भरोसा रक्खो। देने वाला खुदा है और मेहनत करने वाला उसका बंदा।"

"इंसान जब मुर्दादिल बन जाता है तो उसके सारे हौसले पस्त हो जाते हैं।"

"जुल्म मत करो, ज्यादती बुरी होती है। किसी को सताओगे तो उसके आँसू जरूर बहेंगे।"

"सच्ची हमदर्दी मुर्दे में भी जान डाल देती है।"

"बुराइयों को भूल जाओ, अच्छाइयों को अपने दिल में जगा लो। यही दुनिया तुम्हारे लिए खुशनुमा हो जायगी।"

ऐसे उदात्त विचार सारे उपन्यास में जगह-जगह बिखरे पड़े हैं।

उपन्यास की कुछ मर्यादाएँ भी हैं। उसका पटल सीमित है। उसकी घटनाएँ एक दायरे में ही चक्कर लगाती हैं। कहीं-कहीं पर भाषा भी कुछ क्लिष्ट हो जाती है। इन तथा दूसरी अन्य कमियों के होते हुए भी उन्यास सुपाठ्य है। उसमें माँ के अंतर की व्यथा है और यह व्यथा इस कृति को ऐसी त्रासदी का रूप देती है, जो पाठकों को अनेक स्थलों पर विह्वल कर देती है।

यद्यपि लेखक का एक सामाजिक उपन्यास 'अमर-साधना' इससे पहले प्रकाशित हो चुका है, फिर भी वह साहित्य-जगत के लिए नये हैं। उनमें युवा-पीढ़ी का उत्साह और उमंग है। उनमें सम्भावनाएँ हैं।

मैं इस रचना के लिए लेखक को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में उनकी लेखनी और निखरेगी और पाठक उनसे बहुत-कुछ पायेंगे।

मुझे हर्ष है कि इस उपन्यास का प्रकाशन अंतर्राष्ट्रीय नारी-वर्ष में हो रहा है।

७/८ दरियागंज, दिल्ली-११०००६
गांधी-जयन्ती
२ अक्तूबर, १९७५

—यशपाल जैन

अपनी बात

सोलहवीं शताब्दी के इतिहास पर आधारित यह उपन्यास 'अमीना' आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे आनन्द की अनुभूति हो रही है। अमीना एक समस्या-मूलक उपन्यास होते हुए भी चरित्र-प्रधान है। परिवार के प्रति जितना उत्तर-दायित्व पुरुष का होता है, नारी का भी उससे कम नहीं होता। वही सृष्टि है, वही जननी और वही धात्री है। इस उपन्यास की नायिका अमीना इसी परम्परा की प्रतीक बन अपने परिवार को तन-मन से पालती है। विघ्न और व्याघात उसके मार्ग को अवरुद्ध करते, लेकिन वह हँसते-हँसते उन काँटों पर चल देती है। उसे अनुभूति में वे शूल फूल लगते और वह अपने गन्तव्य पर पहुँच जाती है।

जब मुगल सम्राट् बाबर भारत में आया तब अमीना अपने पति और बच्चों के साथ आई थी और वे भी यहीं बस गए थे। अमीना का शौहर असलम बाबर की सेना में घुड़सवार था। मैंने इसमें नारी की सम्पूर्ण विवेचना व्यक्त करने का प्रयत्न किया है जो विवश है और जिसे मर्यादा का भय है। वह किसी भी तरह अपने को मुक्त नहीं पाती। धर्म, समाज और परम्परा उसे पुरानी रूढ़ियों पर चलने के लिए विवश करते; किन्तु सब की मर्यादा रख अमीना अपना पथ स्वयं स्पष्ट करती है। अमीना एक महान् नारी है जिसने बचपन, जवानी और बुढ़ापा तीनों अवस्थाओं में अपने जीवन से संघर्ष किया है।

अमर-साधना उपन्यास के बाद यह मेरा दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें मैंने बाबर, हुमायूँ, शेरशाह सूरी और सलीम के शासनकाल का जिक्र किया है। मुझे आशा है कि पाठक इसे स्वीकार करेंगे और मुझे अपने सुझाव देंगे। आपके सुझावों से मुझे और मेरी लेखनी को एक नई प्रेरणा मिलेगी।

इसके साथ ही मैं श्री नरेन्द्र गुप्त का आभार प्रकट करना नहीं भूलूँगा, जिन्होंने समय-समय पर मेरा मार्ग-दर्शन किया और मुझमें शक्ति का संचार किया।

—नरेन्द्र हरित

पहला

“बेगम ! हम लोग काबुल से बहुत दूर आ गये, यह हिन्दुस्तान है। यहाँ की आबो-हवा हमारे माफिक नहीं ! देखो किस्मत का क्या फैसला होता है।” जब जावेद ने यह कहा तो नूर महल ने एक दीर्घ उच्छवास ली और फिर धीरे-धीरे कहने लगी—

“बाबर के पास फौज कम है। सुना है कि इब्राहीम लोदी के पास दो लाख से ऊपर सिपाही हैं, जीत कैसे होगी ? अल्लाह मालिक है। अब तो खुदा ही खैर करेगा।”

“बेगम तुम औरत हो इसलिए दिल छोटा कर लेती हो। हम लोग मर्द हैं। मुसीबतों से तनिक भी नहीं डरते। बाबर ने इधर जितनी भी लड़ाईयाँ लड़ीं सब में हमारे बादशाह को कामयाबी मिली अब दिल्ली में मुगलों का झंडा फहरायेगा इसमें कोई शक नहीं।”

चाँदनी रात का आलम था। आसमान से चाँदनी बरस रही थी। हवा मौन शहनाई बजा रही थी। बाबर की सेना का पड़ाव यहाँ शाम के समय हुआ था। दूर मीलों तक लम्बा पड़ाव था। ऐसा लगता कि कोई छोटा-मोटा चलता-फिरता शहर है। हाथी, घोड़े, खच्चर, तोपगाड़ियाँ, रसद की गाड़ियां, घुड़सवार और पैदल सैनिकों के अतिरिक्त सैनिकों के परिवार, उनके बच्चे एक बहुत बड़ा हुजुम था। शाही खानदान की रौनक भी सेना के साथ थी। बाबर का पूरा परिवार चारों बेटे, दोस्त, नाते-रिश्तेदार, उसके दरबार के अमीर भी सपरिवार साथ आये थे।

दिल्ली लगभग सौ मील दूर रह गई थी। बाबर को यह पता था कि इब्राहीम लोदी को खबर लग चुकी है और उसने एक बहुत बड़ी सेना के साथ इधर ही कूच कर दिया है।

बाबर में जोश उमड़ आया और उसकी भुजायें फड़क उठीं। उसे अपने तोपखाने और कुशल घुड़सवारों पर अटूट विश्वास था। इसीलिए वह बड़ी से बड़ी सेना के साथ भी टक्कर लेने के लिए तैयार रहता। उसका विश्वास था कि उसकी जीत निश्चित है।

होली जल चुकी थी। हल्का-हल्का गुलाबी जाड़ा था लेकिन मैदानी इलाके में कुछ ज्यादा लगता था। नूरमहल के डेरे में शमा जल रही थी। आज रात वे दम्पत्ति

ही नहीं बल्कि सेना का कोई भी व्यक्ति नहीं सोया । सभी में एक उत्साह था । सभी सजग और सतर्क थे कि सवेरे फौज कूच करेगी । इब्राहीम लोदी तेजी से इधर ही बढ़ता चला आ रहा है, अगर टक्कर हो गई तो तलवारें बजेंगी, खून की नदियाँ बहेंगी और आराम हराम हो जायेगा ।

जावेद एक कुशल घुड़सवार था । उसने अपने शहनशाह के साथ अनेक लड़ाइयाँ लड़ीं । उसके रणकौशल पर बाबर मुग्ध था । वह तीर का निशाना ऐसा लगाता कि कभी चूकता नहीं । तलवार जब युद्ध के मैदान में म्यान से निकलती तो वह बिजली सी चमकती और इससे लाल लहू बहता । भाला फैंक कर मारने में भी उसका कोई सानी नहीं था । उसकी आयु लगभग ३० वर्ष की थी । बेगम नूरमहल ने कई बच्चों को जन्म दिया लेकिन जीवित एक भी नहीं रहा । दम्पत्ति को औलाद की ख्वाहिश थी । वे पीर की पूजा करते, कुरान पर सिजदा टेकते और दिन भर की पाँचों नमाजे पढ़ते मगर उनकी इच्छा अपूर्ण थी ।

बातचीत के दौरान नूरमहल तनिक उदास हो गई और जावेद से कहने लगी—
"तुम आये दिन लड़ाइयों में जाते हो अगर कभी कुछ हो गया तो मैं क्या करूंगी ? परवरदिगार गोद भरता है और फिर सूनी कर देता है । जाने इस मालिक को क्या मंजूर है ? इससे अच्छे तो हम लोग काबुल में ही थे यहाँ आ कर परेशान हो गये ।"
"बेगम मुकद्दर को मत कोसो और दुनिया के मालिक से मिन्नत करो वह तुम पर रहम करेगा । जानती हो मेरा अपना यकीन क्या है ? बाबर की फतह जरूर होगी और तब हम लोग हिन्दुस्तान में ही रहेंगे । हमारी तरक्की हो जायेगी और मेरा दिल कहता है कि इसके साथ ही साथ एक बात और होगी ।"

"वो क्या ?"

"इस बार तुम्हारे जो बच्चा होगा, मैं हिन्दुस्तान की कसम खाता हूँ क्योंकि अब हमारा वतन यही बनेगा, वह बच्चा जिंदा रहेगा और तुम्हारा दामन खुशियों से भर देगा ।"

"इंशा अल्लाह ।"

"आदमी सोचता बहुत कुछ है मगर होगा वही जो अल्लाह ताला को मन्जूर है ।"

नूरमहल के मन में आशंकायें आतीं । गुप्त भय बार-बार कंपा देता कि कहीं वह विधवा न हो जाए, उसका शौहर लड़ाई में मारा न जाये, कहीं बाबर की हार न हो जाये और हम लोग हिन्दुस्तान में ही बेमौत न मारे जायें । अब काबुल किसी तरह भी नहीं पहुँच सकते । वहाँ से सैकड़ों मील दूर चले आये हैं । इस तरह कोई भी अच्छी बात नूर-महल के मन में नहीं आती । वह पति की बातें सुनती रही और अपना कोई भी तर्क पेश नहीं किया ।

सवेरे जब बाबर की सेना ने प्रस्थान किया तो बेगम नूरमहल ने अपनी पालकी

से झाँका तो मौसम बड़ा सुहावना था । पथ के दोनों ओर गेहूँ, जौ और चने के पक रहे खेत थे । ऐसा लगता कि धरती में सोना उग आया है और उसके पीछे स्वर्णिम है । ऐसे में ही नूरमहल की निगाह एक आम्र वृक्ष पर बैठी कोयल पर पड़ गई । अचानक कोयल बोलने लगी और उसकी कूह-कूह की सुरीली पुकार से सारा प्रान्त गूंज उठा । बेगम नूरमहल मुस्कराई, अच्छा सकुन हुआ था । इसलिए उसके होठों पर हंसी आ गई ।

सेना का कारवाँ आगे बढ़ता रहा, उसकी गति में वेग था । वह दोपहर को एक गाँव के बीच से गुजरा । तब अचानक बेगम नूरमहल की दृष्टि एक श्यामा गाय पर पड़ गई, जिसके माथे पर सफेद टीका था और सफेद बछड़े को दूध पिला रही थी । बछड़े के मुंह से दूध का फना गिर रहा था । यह देखकर नूरमहल का हौंसला बढ़ा और उसे अपने खाविंद की बातें याद आने लगी कि अब हिन्दुस्तान हमारा वतन बनेगा । हम काबुल नहीं लौट सकते और यहीं रहेंगे ।

तीसरे पहर नूरमहल की बाँयी आँख फड़की । अब तो वह खुशी से फूली न समायी और मन ही मन अल्लाह-ताला का शुक्र अदा किया कि उसने उसकी उलझन दूर कर दी । शकुन अच्छे हुए हैं । बाबर को कामयाबी मिलेगी और उसकी मनचाही मुराद पूरी होगी ।

नूरमहल ने पानदान खोला । उसने एक पान लगाया और बीड़ा मुँह में रख लिया । तब रात हो आयी थी और यह खबर लग चुकी थी कि इब्राहीम लोदी पानीपत के करीब पहुँच चुका है इसलिए पड़ाव नहीं डाला गया, सेना चलती रही ।

दूसरे दिन दोनों सेनाएँ पानीपत के विशाल मैदान में आमने सामने एकत्रित हो गई ।

नूरमहल ने उस दिन रोज़ा रखा । उसने पानी तक नहीं पिया । उसका कहना था कि आज मेरा रोज़ा है और रोज़ा मैं तभी खोलूंगी जब मेरा शौहर रात को मेरे सामने होगा ।

इक्कीस अप्रैल सन् पन्द्रह सौ छब्बीस ईसवी का सवेरा भारतीय इतिहास में एक कड़ी जोड़ने आया । वह कड़ी थी बाबर और संसार प्रसिद्ध पानीपत का प्रथम युद्ध । जिसमें अल्प संख्यकों ने एक बड़ी सेना पर विजय पायी । बाबर की सेना में अधिकतर घुड़सवार थे । पैदल सैनिक मिलाकर उनकी संख्या पच्चीस हजार थी लेकिन उसे अपनी सेना पर गर्व था । वह जानता था कि उसके सिपाही दिलेर हैं और वे पीठ कभी नहीं दिखलाएगें । इसके अतिरिक्त एक बात और थी जिसका बाबर को अपने ऊपर बहुत ज्यादा गर्व था । उसका तोपखाना बहुत बड़ा और बहुत अच्छा था । तोपची भी सिद्धहस्त थे । उसकी अधिकांश विजय तोपखाने के कारण ही हुई ।

महाभारत के महायुद्ध में कौरवों के गुरु द्रोणाचार्य ने चक्रव्यूह की रचना की थी जिसे तोड़ना आसान नहीं बल्कि बहुत ही कठिन कार्य था । बाबर युद्ध के समय

ऐसी ही व्यूह रचना कर रहा था। इसे वह तुलगमा के नाम से पुकारता। दोनों सेनाएँ आमने-सामने डटी थीं। बाजे बज रहे थे। सूरज निकल चुका था और दिन का पहला पहर बीतने पर था। लड़ाई शुरू हो गई।

इब्राहीम लोदी के पास एक लाख सेना थी जिसमें काफी संख्या में हाथी थे। वे हाथी युद्ध कुशल नहीं थे। जब तोप का गोला छूटता तो वे चौंक जाते। पीछे हटते और महावत के अंकुश मारने पर इधर-उधर हो जाते। लोदी के घुड़सवार सैनिक भी अयोग्य सिद्ध हुए। मुगलों ने उनके दाँत खट्टे कर दिये और उन्हें तलवार के घाट उतारने लगे।

बाबर की सेना का यह क्रम था कि जब दुश्मन के सैनिक आगे बढ़ते और वार करते तभी बाबर के सिपाही उनके पीछे पहुँच जाते और आगे तथा पीछे दोनों पंक्तियों के सैनिकों का सफाया कर देते। बाबर बराबर तुलगमा का प्रयोग कर रहा था। दोनों सेनाओं में भीषण मार काट मची थी। कोलाहल इतना तीव्र था कि कान नहीं दिये जाते। लाशों पर लाशे पड़ गईं। घायलों की चीख पुकार कानों के पर्दे फाड़ती। युद्ध पूरी गति से हो रहा था। लोदी के सैनिक कट रहे थे।

दोपहर तक इब्राहीम लोदी के अधिकांश सैनिक मारे गये। वह खुद भी रणभूमि में मारा गया। उसके मरते ही सेना में भगदड़ मच गई और मुगलों ने रही-सही सेना को चारों ओर से घेर लिया। बाकी सिपाहियों के पैर उखड़ गये थे। उन्होंने किसी तरह युद्ध भूमि से भाग कर अपनी जान बचाई। युद्ध में बाबर की विजय हुई।

× × ×

बाबर ने इब्राहीम लोदी की कब्र युद्ध स्थल में ही बनवाई। उसके निकट ही उसके हाथी को भी दफना दिया गया। मुगल सेना आँधी की रफ्तार से दिल्ली में दाखिल हुई। उसने दिल्ली पर अधिकार कर लिया।

आगरे के किले पर भी मुगलों का अधिकार हो चुका था। बाबर को दोनों किलों के खजानों में काफी तादाद में धन मिला। चाँदी के सिक्के, सोने की मोहरे, हीरे-जवाहरात आदि। उसने वह सैनिकों में दोनों हाथों बाँटा। सरदारों को दिया, सेनापतियों को भी खुश किया, रिश्तेदारों को भी नाराज होने का मौका नहीं आने दिया। उसने अपने भविष्य के बारे में नहीं सोचा कि इतनी बड़ी दौलत हाथ से निकाल दी अब क्या होगा।

जावेद दिल्ली में रहने लगा। वह हिन्दुस्तान का निवासी बन गया। बेगम नूरमहल यहाँ आकर बहुत खुश थी और उसका कहना था कि हिन्दुस्तान एक अच्छा मुल्क है। गर्मी का मौसम था। यहाँ का मौसम अच्छा है। यहाँ नदियों और पहाड़ी झरनों को छोड़कर पानी की कमी है। यहाँ के लोगों के मकान न तो हवादार हैं और न ही बनावट में एक समान सुन्दर।

दिल्ली और आगरे की जनता इब्राहीम लोदी के अत्याचारों से ऊब चुकी थी।

जब बाबर ने शांति की घोषणा की तो लोगों को उस पर भरोसा हुआ और हर आदमी सोचने लगा कि बाबर रियाया के साथ इन्साफ करेगा और उसे तकलीफ नहीं देगा। नूरमहल को इनाम में जो रकम मिली थी। उससे उसने जेवर बनवाये और जावेद ने अपनी आराम तथा सुविधा के सभी साधन जुटा लिए।

पड़ोसियों को यह मालूम था कि दम्पत्ति बड़े प्रेम से रहते हैं। उनका आपस में बहुत लगाव है। वे एक दूसरे को अत्यधिक प्यार करते हैं। दुनिया में ऐसे लोग बहुत कम हैं जो दूसरों को सुखी देखकर खुश होते हों। अधिकांश व्यक्तियों में ईष्या की भावना होती है और वे द्वेष की आग में जलते हैं। जावेद का पड़ौसी असलम भी एक घुड़सवार सैनिक था। वह परेशान रहता, उसकी अपनी घरवाली से नहीं पटती, रोज घर में मारपीट होती। कई बच्चे थे। वे गन्दे और घिनौने रहते। उनके तन पर फटे कपड़े होते। इसका एक प्रमुख कारण था कि असलम जरूरत से ज्यादा शराब पीता। वह इसका आदी हो चुका था। जुआ भी वह छिपकर खेलता जबकि बाबर की ओर से सर्वथा वर्जित था। यही नहीं उसका चरित्र भी दूषित था। वह वेश्या गामी तो था ही इसमें कोई सन्देह नहीं साथ ही झूठी पतलें चाटने की भी उसकी आदत थी। वह अपने स्वभाव से मजबूर था इसीलिए बदनामी से बच नहीं पाता। हर एक उसकी तरफ उंगली उठाता।

असलम जितना दुष्ट था, अमीना उतनी ही शांत ! वह न जाने कैसे अपने घर गृहस्थी की गाड़ी चलाती। किसी से भी पति की शिकायत नहीं करती। बड़े-बड़े आँसुओं से रोती। उसे अपना भविष्य अन्धकारमय लगता। वह सोचती कि आखिर इन बच्चों का क्या होगा ? कभी-कभी जब असलम के सामने ऐसी बातें आती तो वह बुरा मान जाता और कहता कि अगर मैं लड़ाई में मारा गया तो तुम्हारा और इन बच्चों का क्या होगा ? पहले यह तो सोचो।

अमीना अक्सर नूरमहल के पास आ जाती। वह घण्टों उसके पास बैठी रहती। इसमें कुछ मन बहल जाता। वह कभी घर और पति की शिकायत उससे नहीं करती। नूरमहल भी उससे कुछ नहीं पूछती। हालाँकि वह सब जानती थी कि अमीना कितनी दुःखी है। नूरमहल की पूरी-पूरी सहानुभूति अमीना के साथ थी। वह भी उसके घर जाती और उसकी कोशिश हमेशा यही रहती कि उसकी बातों से अमीना का दिल न दुःखे।

एक दिन नूरमहल जब अमीना के घर गयी तो वह बैठी अपना फटा हुआ चूड़ीदार पाजामा सी रही थी। नूरमहल ने सूई डोरा अमीना के हाथ से ले लिया और दुःख प्रकट करती हुई बोली—"अल्लाह ऐसी किस्मत किसी को भी न दे कि बदन ढाँपने के लिए कपड़े और पेट के लिए रोटी तक मयस्सर न हो।" इस पर अमीना सन्ताप से भर आई और उसने नीचे सिर झुका लिया। नूरमहल आगे फिर कहने लगी—"जितना मेरा शौहर कमाता उतना ही तुम्हारा खाँविद भी फिर क्या

बात है कि तुम्हारे घर में हमेशा खींचा-तानी ही मची रहती है ?"

"कुछ न पूछो बहन । तकदीर की लकीरें मिटती नहीं वे अपना असर जरूर दिखलाती हैं। मेरे नसीब में जो बदा है वह मुझे मिल रहा है। मैं किसी से शिकायत नहीं करती। रो लेती हूँ। आँसू बहा लेती हूँ। बस ! मेरे लिए यही काफी है।"

' फिर भी तुम्हें असलम भाई को समझाना चाहिए।"

"मैं यह करके भी देख चुकी और अब इसकी जरूरत नहीं है।"

"क्यों ?"

"मैंने तसल्ली कर ली है। मुझे अल्लाह के दरबार में जाकर जवाब देना पड़ेगा। तब मैं यह नहीं कह सकती कि मैंने अपने शौहर के साथ अच्छा सलूक किया है।"

"तुम बहुत ईमानदार हो अमीना बहन और अब ईमानदारी का जमाना नहीं रहा दुनिया बहुत बेईमान हो गई है। कुछ भी हो मुझसे तुम्हारी तकलीफ नही देखी जाती। तुम्हारे तीन बच्चे है और तुम उन्हें पेट भर खाना नहीं दे पातीं, परवरिश नहीं कर पाती। खुद भी फटे कपड़े पहनती हो। तुम्हारे घर की यह हालत है। तौबा-तौबा खुदा खैर करे।"

अमीना ने नूरमहल की बातें सुनीं तो उसकी आँखें भर आईं। उसने सामने खेल रहे तीनों बच्चों पर नजर डाली। कादिर आठ साल का था अभी तक उसके पढ़ने का कोई भी इन्तजाम नहीं हुआ। पहले कुछ दिन मौलवी के मकतब में गया फिर घर बैठा रहा। नादिरा छः साल की थी वह भी मैले फटे कपड़े पहने घूम रही थी। रहमान चार साल का था वह भी देखने में ऐसा लगता मानों किसी भिखारी का बेटा हो।

नूरमहल ने जब अमीना को चिन्तित देखा तो तनिक मुस्कराई और धीरे से बोली—

"मेरे पास कई चूड़ीदार पाजामे रखे हैं मैं एक तुम्हें दे दूँगी।"

"नहीं ऐसा नहीं करना बहन।"

"क्यों ?"

"मेरा खाविंद बड़ा जालिम है। वह बात की खाल निकालता है। कदम-कदम पर शक करता है। न जाने उसका मिजाज कैसा हो गया है ?"

"तो इसमें हर्ज क्या है ? कह देना कि पाजामा मैंने तुमको दिया है।"

"यह भी मेरे शौहर को पसन्द नहीं।"

"क्यों ?"

"उनका कहना है कि मेरी शान में बट्टा न लगे और……।"

अभी अमीना इतना ही कह पायी थी कि नूरमहल बीच में बोल उठी—

"शान भी कायम रहे अपने रौब और रूआब में भी तनिक फर्क न पड़े। घर वाले तकलीफ़ उठायें यह अच्छी समझ है। अगर कहो तो मैं अपने घर में बात करूँ

वो असलम भाई को समझाएँ।"

"तौबा करो बहन तौबा। उस आदमी को तो हमेशा यही शक रहता है कि मैं उसकी शिकायत हर एक से करती हूँ और अपना दुखड़ा रोती हूँ। इस पर वह जल भुन जाता है और मुझे बुरी तरह पीटता है।"

"तो फिर?"

"मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। मेरी हालत में तबदीली नहीं आ सकती। मौत ही मुझे इससे छुटकारा देगी।"

"ऐसा लगता है कि तुम जिंदगी से ऊब गई हो अमीना?"

"ऊब ही नहीं गई बुरी तरह परेशान हूँ कि अगर ये बच्चे न होते तो मैं जहर खा लेती, इस दुनियाँ से चली जाती।"

"ऐसा मत सोचो! जिन्दगी से खेलना एक बहुत बड़ा गुनाह है बहन।"

"मैं बच्चों का मुँह देखकर ही जिंदा हूँ बहन वरना अब तक·· ···।"

आगे अमीना कुछ भी न बोल पायी। वह सुबक-सुबक कर रोने लगी। जब अमीना ने आँचल में मुँह छुपा लिया और उसकी सिसकियाँ बन्द नहीं हुई तो नूरमहल तनिक आगे बढ़ आई। उसने उसका सिर ऊपर उठाया और अपने आँचल से आंसू पोंछती हुई सहानुभूति भरे स्वर में कहने लगी—"रो-रो कर मन को समझाना और आँसुओं के घूंट पीना यह भी एक मौत है। हिम्मत से काम लो बहन ऐसी कोई मुश्किल नहीं जो आसान न हो सके।" अमीना के पास नूरमहल जितनी देर बैठी वह उसे समझाती ही रही फिर जब चली तो भी तसल्ली देकर।

अमीना नूरमहल के प्रति सोचती रही कि उसका जीवन कितना सुखी है। यद्यपि उसके कोई सन्तान नहीं थी फिर भी वह गमगीन नहीं रहती। उसका शोहर उसके वश में है और वह हमेशा उसे खुश रखता। औरत को और चाहिए भी क्या? अगर मर्द उसके माफिक है तो फिर फूली नहीं समाती और उसके होठों पर हमेशा हंसी ही नजर आती है।

देर तक अमीना नूरमहल के बारे में ही विचार करती रही फिर उसने एक जुंम्हाई ली, जगह से उठी पाजामा एक ओर रख दिया और नीले आकाश की ओर देखने लगी। धुंधला सा पड़ रहा था। दिशाएँ धूमिल हो रही थीं। साँझ आ रही थी। पक्षियों के बसेरे पर जाते हुए उनके कलरव ने यह स्पष्ट कर दिया।

दूसरा

"चिराग भी बुझा दिया हराम जादी ! क्या तूने सोच लिया था कि मैं अब घर नहीं आऊंगा ?"

यह कहते हुए असलम ने घर में प्रवेश किया। किवाड़ भिड़ रहे थे वे उसने धकेल कर खोले, अन्दर आया तो अमीना के पास जाकर खड़ा हो गया। वह उसकी आवाज़ सुनते ही लेटे से उठकर बैठ गई थी। डरते-डरते धीरे से अमीना ने जवाब दिया—'रोग़न नहीं था तो फिर चिराग कैसे जलता। शमादान पता नहीं कब से यूंही पड़ा है उसके लिए मोमबत्तियाँ भी मयस्सर नहीं होती।"

"मैं इसका जुम्मेदार नहीं हूँ तुमने मुझसे चलते वक्त कहा था ?"

"तेल का नाम कैसे लेती उसे अशगुन कहा जाता है। कल रात को तो कहा था तब तुम नशे में थे इसलिए कुछ याद नहीं रहा।"

"मैं नशे में कभी नहीं रहता तू मुझे बदनाम करती है। खुदा ऐसी औरत दुश्मन को भी न दे। अच्छा बकवास बन्द करो और चिराग जलाओ।"

"रात चाँदनी है ! घर में उजाला नहीं हो सकता इसका कोई इन्तजाम नहीं है।"

"और खाना ?"

"खाना सवेरे का रखा है इस वक्त कुछ भी नहीं बनाया है।"

"क्यों ?"

"थोड़ी दाल और कुछ आटा था वही सवेरे पका लिया बच्चों ने खाया दोपहर तक तुम्हारी राह देखी जब तुम नहीं आये तो उठा कर वैसे ही रख दिया। रात को क्या बनाती ? घर में कुछ भी तो नहीं था।"

"उल्टा चोर कोतवाल को डांटे ! तू मुझे रास्ता बतला रही है।"

"कैसा रास्ता ?"

"यही कि तूने खाना उठा कर रख दिया और खुद भी नहीं खाया ! बड़ी नेक है अपने शौहर का बहुत ज्यादा ख्याल रखती है ! औरतों के ये दाँव-पेच मुझे खूब मालूम हैं। जब रोये तो समझ लो मक्कारी कर रही है और जब बिगड़ कर बोले या सफाई दे तो समझ लेना चाहिए कि वह झूठ बोल रही है और यह उसकी शरारत है। अब तू ही बतला कि एक तो दाल रोटी और वह भी सवेरे की बनी, मैं कैसे खा लूं ? जबकि भूख बहुत जोर की लगी है।"

"गुस्सा मत करो जो कुछ रूखा-सूखा है खा लो। मैं क्या करूँ ? मैं कहाँ से लाऊँ। कमाना मर्दों का काम है और घर चलाना औरतों की जिम्मेदारी है।"

"तुझसे हजार बार कहा है कि मुझे नसीहत मत दिया कर। मैं औरतों की बुद्धि से नहीं चलता।"

अमीना की आँखों में आँसू आ गए। वह कुछ नहीं बोली। वह चुपचाप प्रतिमा की भाँति बैठी रही। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि असलम को कैसे समझाये ? असलम भरपूर नशे में था। उसकी जेब खाली थी और अगर कुछ होता तो वह घर के खाने की परवाह नहीं करता किसी दुकान पर जाता और गोश्त रोटी खा कर आता। गुस्सा तो असलम को बहुत ज्यादा आ रहा था लेकिन वह अपने काबू में था इसलिए जहाँ खड़ा था वहीं गिर पड़ा और गिरते ही आँखें बन्द कर लीं। वह जमीन पर ही गुड़ी-मुड़ी होकर पड़ा रहा।

अमीना ने जब यह देखा तो फिर उसने असलम को उठाया और जगाया नहीं। उसने उस पर एक मैली चादर डाल दी और खुद बिस्तर पर बैठकर आँसू बहाने लगी।

× × ×

"तुम्हें तो यार इनाम में बहुत ज्यादा रकम मिली थी आखिर तुमने उसका क्या किया ?"

असलम से जब एक दोस्त ने यह पूछा तो वह कुछ शर्मिन्दा हो गया और नीचे सिर झुका धीरे-धीरे कहने लगा -

"कर्ज छूत की बीमारी है किसी से भी ले लो वह कभी अदा नहीं होता। सूद इतना बढ़ जाता कि असल से दुगना हो जाता। कमर टूट गई दोस्त लेकिन अब तक कर्ज चुका नहीं पाया।"

"तो तुमने सब रुपया कर्ज में दे दिया ?"

"हाँ ! मजबूरी थी ! मरता क्या न करता। घरवाली इसलिए नाराज है और रोज झगड़ा होता है।"

"वह तो होगा ही उसे कोई रोक नहीं सकता।"

"क्यों ?"

"कर्ज का तुमने एक पैसा भी नहीं चुकाया यह मुझे अच्छी तरह मालूम है।"

"एं ?"

"चौंकते क्यों हो ?"

"तुम बात ही ऐसी कहते हो।"

"मैं हकीकत बयान कर रहा हूँ।"

"क्या ?"

"यही कि सारी रकम तुम जुए में हार गये और……।"

"यह क्या कह रहे हो तुम ?"

'बाकी जो कुछ बची उसकी शराब पी डाली और तवायफ का कोठा गुलजार किया। तुम्हारी ये हरकतें देख लेना एक दिन तुम्हारे घरवालों को ले डूबेंगी।"

"सब ऐसे ही कहते हैं और कोई भी मुझे अच्छा नहीं बतलाता।"

"देखो असलम ! नेकी का ढोल बजाओ तो भी लोग बहरे हो जाएँगे । बदी पर बदी डालो उसे सात तालों में बन्द कर दो मगर वह छिप नहीं सकती । पानी में किया हुआ पाखाना कभी डूबता नहीं ऊपर तैर आता है । अपने पर काबू पाओ तुम समझदार हो । तुम्हें समझाने की जरूरत नहीं मैं तुम्हारा दोस्त हूँ मैं भी वही नौकरी करता हूं और मुझे भी वही तनख्वाह मिलती है जो तुम पाते हो ।"

असलम के इस दोस्त का नाम अहमद था । वह भी एक कुशल घुड़सवार था और बाबर की सेना में बहुत दिनों से काम कर रहा था । उसका हृदय उदार था । उसे असलम से सहानुभूति थी । वह उसकी कभी-कभी मदद भी करता था और जो कर्ज देता यह सोचकर कि अब उसे वापस नहीं मिलेगा और न वह मांगेगा । अहमद जब अमीना का हाल देखता और बच्चों को फकीर जैसा पाता तो उसे असलम के हाल पर तरस आने लगता । उसका काम समझाना था लेकिन असलम पर किसी भी बात का असर नहीं होता ।

असलम से जब अहमद की किले के बाहर मैदान में बातें हुईं तो असलम को शक हो गया कि जरूर अहमद उसके घर गया होगा और अमीना ने उससे शिकायत की होगी । वह देर तक इसी विषय पर सोचता रहा और उसका गुस्सा बढ़ता रहा । अगर उस समय अमीना उसके सामने होती तो वह उसे जरूर पीटता । साँझ हो आई थी । असलम बिल्कुल मुर्दा सा नजर आ रहा था । घर से भूखा ही चला आया था । रात को भी भूखा सोया था । उसके सामने ही सवेरे बच्चे सोकर उठे और रात का रखा हुआ खाना खाने लगे । भूख की इतनी चिंता असलम को नहीं थी । उसका पेट कचोटता और आँतों में ऐंठन सी हो रही थी । इसीलिए दारू के ठेके पर गया और ठेकेदार से उधार शराब माँगी । उसने साफ इन्कार कर दिया । उसका कहना था कि अभी पिछले पैसे न जाने कितने पड़े हैं अब उधार नहीं दूंगा । क्रोध तो असलम को अत्यधिक आया लेकिन वह उसे पी गया । आखिर मायूस हो गया । ठेके पर उसे कोई भी दोस्त नहीं नजर आया जिससे कहता कि वह आज उसे पिला दे ।

पैसा जब आदमी के पास नहीं होता और उसे उसकी सख्त जरूरत हो तो वह उसके लिए कोशिश करता और हाथ पैर मारता है । गलत काम भी करता और ऊंच-नीच नहीं सोचता । दूसरी स्थिति यह होती कि वह चुप होकर बैठ जाता । किंतु असलम चुप होकर बैठने वाले आदमियों में से नहीं था । उसने सोचा कुछ देर कौड़ियाँ खेले और वह जुआ घर गया । असलम भूल ही गया कि उसके पास जहर खाने के लिए भी पैसा नहीं है । जुआ खाने में असलम दाँव पर बैठा, उसने कुछ भी नहीं लगाया तो उसे टोका गया । तब खिसिया कर अपने कुर्ते में लगे चाँदी के बटन दाँव पर रख दिये । पहले ही दाँव में बटन चले गये और वह खाली हाथ हो गया । असलम वहाँ से उठकर चल दिया और बाहर आकर देर तक खड़ा-खड़ा सोचता रहा ।

पाप जब मन में बस जाता है और दिल दिमाग पर छा जाता है तो आदमी

फिर भूल हा जाता है कि पुण्य क्या है ? वह एक बार उठता तो फिर उठता ही नहीं और गिरता चला जाता है। ठीक यही स्थिति असलम की भी थी। उसके कदम गलत राह की ओर उठ चुके थे।

असलम जाहिदा के कोठे पर पहुँचा तो वहाँ नृत्य हो रहा था। लोग उस वेश्या पर दौलत लुटाते नहीं थकते और उसकी हर अदा पर वाह-वाह करते। उसके गाने पर झूम-झूम जाते और जब उसके पैरों में बंधे घुँघरू छम-छम बजते तो वे बैठे ही बैठे हिलने लगते। उनको गुलाबी नशा छा जाता। असलम के चेहरे पर उदासी छा रही थी। न वह हँसा और न ही उसने तवायफ की कोई तारीफ ही की। पैसा न्यौछावर करने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। हाँ ! अलबत्ता पान जरूर खाया जो जाहिदा की माँ ने उसे दिया था।

असलम बैठा हुआ राह देखता रहा कि कब नाच खत्म हो और सब लोग जायें फिर वह एकान्त में जाहिदा से बात करेगा और आज उससे कुछ मोहरें उधार लेगा।

नृत्य चलता रहा घुँघरू बराबर बज रहे थे। असलम को जल्दी हो रही थी इसलिए चिन्ता की रेखाएं बार-बार उसके माथे पर खिच जातीं। वह दीर्घ उच्छवाँस लेता और कभी-कभी अपनी पलकें भी मूँद लेता।

तीन

"कहो मियाँ आज बहुत ढीले नज़र आ रहे हो।"

जाहिदा ने पैरों के घुँघरू खोलते हुए असलम की ओर देखा। यद्यपि नाचते-नाचते वह थक गई थी फिर भी उसके होठों पर मुस्कराहट थी। असलम जाहिदा के खास कमरे में बैठा था उसमें खास आदमियों के अलावा हरेक नहीं जाता था। वह बोला कुछ नहीं तभी जाहिदा ने टोक दिया और बोली—"लगता है कि आज सवेरे का खुमार अब तक दूर नहीं हुआ। कैसे सुस्त हो असलम।"

आज एक खास जरूरत पड़ गई और उसका इन्तजाम नहीं हो सका।"

"कैसी जरूरत ?"

"घर वाली के बच्चा होने वाला था। हमल गिर गया, लेने के देने पड़ गए। दाईयों ने मुँह माँगे पैसे लिए और उसके बाद हालत बिगड़ती चली गई। हकीम को बुलाया उसकी दवा के पैसे दिये, घर में लाकर खाने-पीने का सामान रखा और हाथ बिल्कुल खाली हो गया। कल सवेरे हकीम फिर आयेगा। उसके लिए पैसे चाहिए मेरा सारा हिसाब बिगड़ गया।

जाहिदा ने यह सुना तो वह हमदर्दी से भर आई। उसके मुँह से निकला—"सचमुच तुम मुसीबत में पड़ गए असलम मियाँ। तुमने पैसे को कभी पकड़ा नहीं इसीलिए परेशान रहते हो।"

"मुझे कुछ मोहरें चाहिए जाहिदा।"

"मोहरें ?"

"हाँ मोहरें।"

"कैसे ?"

"उधार।"

"कितनी ?"

"यही कोई पच्चीस।"

"पच्चीस तो बहुत ज्यादा होती हैं। एक सिक्के का अनाज आदमी महीने भर में खा नहीं पाता। इतनी मोहरों का क्या करोगे ?"

"यह तो मैं भी जानता हूँ कि पच्चीस मोहरें बहुत ज्यादा होती हैं। पहले मुझे तनख्वाह दस मोहरें मिलती थी लेकिन जब से हिन्दुस्तान आया दस की पन्द्रह हो गई। बीमारी का मामला है इसीलिए कह रहा हूँ कि अगर मुझे पच्चीस मोहरें दे दो तो मैं बेफिक्र हो जाऊँगा।"

"मेरे पास होती तो मैं पच्चीस क्या पचास देती असलम मियाँ। जानते तो हो ही कि धरोहर अम्मीजान के पास रहती है और वे ही दे सकती हैं।"

"मैं तुम्हारी अम्मी से नहीं कहूँगा जाहिदा। मुझ पर यकीन रखो। मैं सूद सहित वापस लौटा दूँगा।"

"लेकिन यह क्यों भूल जाते हो असलम मियाँ कि मैं एक तवायफ हूँ कोई महाजन नहीं।"

"यह जानता हूँ।"

"तो फिर ?"

"मोहरें मुझे बहुत जरूरी चाहिएँ इसलिए तुम्हारे पास आया हूँ जाहिदा।"

"मैंने अपनी मजबूरी बतला दी। अब बैठो मत यहाँ से चले जाओ असलम, नहीं तो अभी खादिमा आती ही होगी उसे अम्मी भेजेंगी, वह समझ रही होंगी कि तुम रात को इस कोठे के मेहमान बनोगे। खादिमा मोहरें माँगेगी तब उसे क्या दोगे और तुम्हारी बेइज्जती हो जायेगी।"

"मैं ज्यादा देर बैठने नहीं, जाने के लिए ही आया हूँ।"

"तो फिर जाओ न देर क्यों कर रहे हो ?"

"मुझे मोहरें चाहियें।"

"तुम अजीब आदमी हो! लोग तवायफ को रकम देते हैं और तुम उससे माँग रहे हो।"

जाहिदा की यह बात असलम को तीर जैसी लगी और उसने भी कुछ नहीं कहा चुपचाप उठकर खड़ा हो गया। वह घबराया हुआ और परेशान था जिसके कारण उसके पैर सीधे नहीं पड़ रहे थे। जब कोठे से उतरा तो अन्त में घर की राह ही सूझी। रास्ते में असलम सोचता जा रहा था कि आज वह अमीना से कुछ नहीं कहेगा और चुपचाप जाकर बिस्तर पर लेट जायेगा। न ही उसकी किसी बात का जवाब देगा। यद्यपि असलम कल का भूखा था और इस समय भी भूख उसे तेजी से सता रही थी लेकिन फिर भी उसमें हिम्मत थी इसलिए तीव्र-वेग के साथ घर की ओर बढ़ा चला जा रहा था।

जब घर दिखाई पड़ने लगा तो असलम के मन में एक बात खटकी कि अमीना कल ही कह रही थी कि घर में कुछ नहीं है। आज उसने क्या किया होगा? जाने घर में चूल्हा जला या नहीं? बच्चों ने क्या खाया होगा? मैं रोज सोचता हूँ और हर महीने इरादा करता हूँ कि इस बार घर की हालत सुधार लूँगा लेकिन ऐसा मुमकिन नहीं हो पाता।

इधर असलम की यह स्थिति थी और उधर जब सवेरे वह घर से चल दिया था तो अमीना देर तक बैठी सोचती रही कि दोपहर को वह क्या खाना बनायेगी? बच्चे माँगेंगे तो क्या देगी? असलम के लिए अमीना को पता था कि वह खाली हाथ ही घर लौटेगा। देर तक वह गहरे सोच में डूबी रही। फिर पड़ोस में अहमद की घरवाली जरीना से आटा उधार ले आयी। उसने कहा—"जरीना बहन किसी को मालूम न हो कि मैं तुमसे आटा ले गयी। इसमें मेरे शौहर की बदनामी होगी और मुझे भी अच्छा नहीं लगता। यह आटा मैं जल्दी ही लौटा जाऊँगी।"

घर आकर अमीना ने रोटियाँ पकाईं। उसने सोच लिया था कि दाल और सब्ज़ी का कोई इन्तजाम नहीं है इसीलिए रोटी नमक से खा ली जायेगी। दिन बीत गया रात आई बच्चे खाकर सो गए किन्तु अमीना जागती रही। वह असलम के आने की राह देख रही थी। आज भी घर में अन्धेरा था। जब रात बहुत ज्यादा हो गई तो अमीना को आलस्य आ गया। वह बैठे ही बैठे लेट गई और जमीन को ही अपना बिस्तर बना लिया। आधी रात को असलम आया। किवाड़ों की कुण्डी अन्दर से बन्द थी। उसने दस्तक दी अमीना हड़बड़ाकर उठ बैठी।

अमीना को भय था कि असलम आते ही बड़बड़ाना शुरू कर देगा क्योंकि अन्धेरे से उसे चिढ़ है। मगर ऐसा नहीं हुआ असलम सीधा चारपाई पर गया। उसने कपड़े बदले और फिर शांतिपूर्वक लेटा रहा। उसकी इस गतिविधि से अमीना ने अनुमान लगाया कि उसकी कल की नाराजगी अभी दूर नहीं हुई। वह डरते-डरते उसके पास गई और धीरे से बोली—"खाना खा लो न जाने कब से तुम्हारा इन्तजार कर रही हूँ।"

"मुझे भूख नहीं है।"

"क्यों ?"

"एक बार कह दिया कि भूख नहीं है।"

"क्या बाजार से खाकर आये हो।"

"यही समझ लो।"

अमीना जड़ बनी देर तक वहीं पर खड़ी रही। असलम का भूख से बुरा हाल था लेकिन वह औरत के आगे झुकना नहीं चाहता था इसीलिए अकड़ा लेटा रहा और जब अमीना ने ज्यादा जोर दिया तो उठ कर बैठ गया और उत्सुक स्वर में पूछने लगा—"घर में तो कुछ था नहीं फिर तुमने खाना कैसे पका लिया ?"

"किसी तरह आज का काम चलाया तुम्हें क्या बतलाऊँ।"

"किसी से भीख माँगी होगी और मुझे बदनाम किया होगा। मर्दों की बुराई करना तो औरतों के लिए एक मामूली-सी बात है।"

अमीना की आदत थी कि वह बात को बढ़ाती नहीं वहीं पर ही खत्म कर देती इसीलिए वह मौन रही। किन्तु उसे चुप देख असलम का गुस्सा भड़क उठा और वह तेज गले से चिल्लाया—"बोलती क्यों नहीं दुश्मन तूने किसके आगे हाथ फैलाया ?" अब अमीना को झूठ बोलना पड़ा और उसने कहा—"बहुत दिनों की आटे की भूसी इकट्ठी थी उसी को खूब छाना फिर पानी से मल मल कर धोया। बड़ी मेहनत करनी पड़ी तब जाकर थोड़ा सा आटा निकला। उसी की रोटियाँ पकायीं बच्चों ने भी खायीं तुम्हारे लिए भी रखी हैं। चलो उठकर खा लो, भूखे मत लेटो।"

असलम ने जब यह सुना तो वह उठा और बावर्ची खाने में जाकर बैठ गया। असलम भूखा था इसलिए वह नमक के साथ ही रोटी खाने लगा। यह देख अमीना का मन भर आया और वह धीरे से बोली—"सालन कुछ नहीं है। तेल और घी भी नहीं है नमक से ही खा लो। अल्लाह एक दिन हमारी जरूर सुनेगा।" असलम चुपचाप खाता रहा और वह कुछ नहीं बोला फिर जब बिस्तर पर आकर लेटा तो उसे खूब गहरी नींद आयी। उसने सपने में देखा कि एक बूढ़ा मुसलमान फकीर उससे कह रहा है कि तवायफ किसी की भी दोस्त नहीं होती वह सिर्फ दौलत से मुहब्बत करती है और उसका प्यार झूठा है।

सवेरे असलम अपने ख्वाब के बारे में सोचता रहा। उसके दिमाग में अब यह बात आ गई थी कि बीवी बीवी ही है और तवायफ तवायफ ही। यह पहला मौका था कि जब असलम को महसूस हुआ कि अगर अमीना घर में न हो तो बच्चे सड़क पर भीख माँगे और मेरा बुरा हाल हो। सवेरे असलम जब जाने लगा तो अमीना ने उसे रोका और उसने कल के बचे हुए आटे की दो मोटी-मोटी रोटियाँ बनायीं और असलम से बोली—"घर से खाली पेट मत जाओ। अल्लाह बुरा मानता है। आजकल हम लोगों का सितारा गर्दिश में है कल को बुलन्द होगा फिक्र मत करो। जो परवरदिगार मुसीबत के दिन दिखाता वही एक दिन हँसाता भी है।"

असलम बहुत खुश था। वह खाना खाकर बाहर निकला घोड़े पर बैठा और काम पर पहुँच गया। उसे जाहिदा पर रह-रहकर क्रोध आ रहा था कि उस बेवफा ने उसे मोहरें नहीं दीं और बहुत बढ़िया बहाना बना दिया। अब वह उसके कोठे पर कभी नहीं जायेगा और उसकी सूरत तक नहीं देखेगा। जब जेब में पैसे होंगे तो दूसरी तवायफ का नाच देखेगा।

चौथा

आज सवेरे ही सवेरे बेगम नूरमहल अमीना के आँगन में पहुँची और हँस कर उससे कहने लगी—"क्या हो रहा है अमीना बहन ? लो मैं तुम्हारे लिए नया पायजामा ले आयी।" अमीना ने पायजामा देखा और तब तक नूरमहल ने उसे उसके हाथ में दे दिया। अमीना चौंक गयी और घबराहट भरे स्वर में जल्दी-जल्दी कहने लगी—"इसकी क्या जरूरत थी बहन, मैं अपनी वजह से किसी को तकलीफ नहीं देना चाहती।"

"इसमें तकलीफ कैसी ?"

"तकलीफ की बात नहीं, अपनी गरीबी, अपनी मुसीबत अपने ही काटने से कटती है। कहा जाता है कि सहारा इंसान की सबसे बड़ी कमजोरी होती है।"

"अच्छी बातें करो अमीना। मैं जानती हूँ कि तुम्हारे दिल में जख्म बन गये हैं और वे अच्छे नहीं होंगे। उन पर तसल्ली का मरहम कभी नहीं लग सकता। अगर यही हालत रही तो एक दिन वे जख्म नासूर बन जायेंगे।"

"मैं मौत से नहीं डरती बहन। मेरे सामने ये बच्चे हैं और बस इन्हीं का फिक्र है।"

बच्चे अपनी किस्मत लेकर आये हैं अमीना बहन। जिस मालिक ने उन्हें जमीन पर भेजा है वही उनकी परवरिश करेगा। असलम भाई को समझाओ, उनकी मिन्नत और खुशामद करो। अगर वे राह पर आ जायें तो सब कुछ अपने आप ही ठीक हो जायेगा।"

इस पर अमीना ने एक लम्बी साँस ली और वह आकाश की ओर देखने लगी। नूरमहल एक मोढ़े पर बैठी थी। वह अमीना से बातों में व्यस्त थी। तभी रोता हुआ कादिर माँ के पास आकर खड़ा हो गया। वह कह रहा था—"अम्मी जान मुझे भूख लगी है। सवेरे से कुछ भी खाने को नहीं मिला।" अमीना ने कादिर की बात सुनी तो दूसरी ओर मुँह छिपा लिया।

रात को कुछ भी नहीं बचा था। सवेरा होते ही बच्चे रोटी माँगते। अभी जो रोटियाँ पकायी थीं उन्हें असलम खा गया इसलिए वह निरुत्तर रही। पुत्र से रुख नहीं मिलाया। नूरमहल यह सब देख रही थी। उसकी समझ में सारी परिस्थिति आ गई। उसने अमीना से कुछ कहने के लिए अभी मुख खोला ही था कि नादिरा पैर पटकती हुई माँ के सामने मुँह फुला कर खड़ी हो गई। वह गुस्से में थी और बोली—"अम्मी हुजूर खाना लाओ अब्बा सब रोटियाँ खा गये। मुझे भूख लगी है।" अमीना चुप थी उसने नादिरा की ओर भी नहीं देखा। रहमान नादिरा के पीछे ही आ रहा था और वह आते ही माँ के घुटनों से लिपट गया और जिद करता हुआ उसका आँचल पकड़ कर बोला—"अम्मी रोटी, अम्मी खाना।" अमीना ने रहमान को भी नहीं छुआ और उसने पलकें मूँद लीं फिर जब खोलीं तो बहुत रोकने पर भी उसकी आँखों से दो मड़े-बड़े आँसू टपक पड़े।

नूर महल ने यह देखा तो वह दया से द्रवीभूत हो उठी। उसने अमीना से कुछ भी नहीं पूछा और चुपचाप उठ कर चल दी। जब थोड़ी देर बाद वह लौट कर आयी तो उसके साथ बहुत-सा सामान था। एक बड़ी-सी डलिया में आटा, दूसरी में दाल, तीसरी में चावल, चौथी में नमक मसाले और पाँचवीं मे आलू प्याज सब्जी थी। यह सामान नूरमहल ने आँगन में लाकर रखा। वह अपने साथ पड़ौस का एक लड़का भी लिवा लाई थी जो दोनों हाथों में लकड़ियाँ, मोमबत्तियाँ और गोबर के कंडे पकड़े था। जब लड़के ने अपना सामान लाकर यथा स्थान रख दिया तो नूरमहल उसकी ओर उन्मुख होकर कहने लगी—"जाओ बेटा वह घी और तेल भी उठा लाओ जो मैं बाहर निकाल कर रख आयी हूँ।"

अमीना ने जब यह सब सामान देखा तो अब वह नूरमहल से असमंजस भरे स्वर में बोली—"ये सब क्यों ले आयी बहन? इसकी क्या जरूरत थी?" नूरमहल को हँसी आ गयी। वही धीरे से बोली—"जरूरत तुम्हें नहीं लेकिन बच्चों को है यही मैंने महसूस किया तब सामान ले आयी।"

"तुम तो यह ले आई नूरमहल और कुछ भी नहीं सोचा कि......।"

"क्या?"

"बच्चों का वालिद बड़ा जालिम है उसकी जबान में लगाम नहीं उसे अपने गुस्से पर काबू नहीं। वह यह पसन्द नहीं करता कि मैं किसी के आगे हाथ फैलाऊं और उसका कहना है कि मेरी इसमें तौहीन होती है।"

"तौहीन उधार लेने, कर्ज लेने और माँगने से कभी नहीं होती। लेना और देना हमेशा बना रहता है। बात तब खराब होती है और बदनामी तभी है जब राह गलत होती है। इन बातों की परवाह मत करो। असलम भाई से कहो कि पहले अपने को सम्भालें। बच्चे भूखे हैं तुम बैठो मैं अभी खाना पकाती हूँ। खुदा का भी दस्तूर अजीब है। जहाँ रोटियों का ठिकाना नहीं उस आँगन में बच्चे खेलते और भूखों मरते हैं, जहाँ

औलाद की ख्वाहिश है वहाँ गोद भरता और सूनी कर देता है।"

यह कह कर नूरमहल उठ खड़ी हुई और बावर्चीखाने की ओर चल दी। अमीना उसके पीछे आयी वह उसे मना करती रही, किन्तु नूरमहल नहीं मानी। उसने चूल्हा जलाया और उस पर दाल चढ़ा दी। अमीना और नूरमहल दोनों पास-पास बैठी दुःख-सुख की बातें कर रही थीं। उसी दौरान में अमीना के मुँह से निकला—"बहन मुफलिसी भी अगर मुकद्दर में बदी है तो उससे भी मुझे इंकार नहीं, मैं उसमें भी खुश हूँ लेकिन उसके साथ जहमत है। रोज घर में हाय-हाय होती, पड़ौसी सुनते बच्चे तमाशा देखते, यह सब सहा नहीं जाता और कभी-कभी तो मन में आता है कि थोड़ा-सा जहर खा लूँ और बच्चों को भी दे दूँ।"

"ऐसा मत करना अमीना! बिगड़ा हुआ इन्सान एक दिन जरूर सुधरता है। जब तक ठोकर नहीं लगती आदमी की आंखें नहीं खुलतीं। मैं तो परदा करती हूँ और अपनी जाति में यह रिवाज बहुत खराब है कि औरतों को परदानशीं बन कर रहना पड़ता है वरना मैं असलम भाई से बात करती और उन्हें समझाती।"

"कोई समझाये कोई राह दिखलाये लेकिन वे सावन में अन्धे हुए हैं उन्हें हरा ही हरा दिखलाई पड़ता है। आज ही पूछेंगे कि सामान कहाँ से आया? तुमने खाना कैसे बनाया? तब क्या जवाब दूँगी?"

"कह देना कि जब तुम लाकर नहीं रखते और घर का ख्याल नहीं करते, बच्चे रोते और भूख से बिलबिलाते हैं तो पड़ौसियों को रहम आता। मेरा नाम ले देना और बतलाना।"

"तुम्हारा नाम तो लेना आसान है लेकिन उसका नतीजा...।"

"कैसा नतीजा?"

"मेरी देह काली हो जायेगी। मुझ पर बेभाव की मार पड़ेगी। वह आदमी कहेगा कि किसी ने भी दिया मगर तुमने सामान लिया क्यों?"

"तुम अपने शौहर से इतना ज्यादा डरती हो।"

"डरूं न तो और क्या करूं बहन?"

तुम्हें हिम्मत से काम लेना चाहिए।"

"हिम्मत तभी तक साथ देती है जब तक इन्सान इन्सान रहता है मगर जब वह शैतान बन जाता है तो फिर हिम्मत के पैर फूल जाते हैं। इसीलिए कह रही थी कि पायजामा क्यों लाई मेरी तो मौत दोनों तरह से है।"

अमीना को नूरमहल देर तक समझाती रही। उसने खाना बनाया बच्चों को खिलाया और फिर आग्रह करके अमीना को भी दस्तरखान पर बैठाया। जब उसने अकेले खाने में संकोच किया तो हँस कर कहने लगी—"तकल्लुफ मत करो अमीना चलो मैं भी खाने में तुम्हारा साथ देती हूँ।"

अमीना और नूरमहल दोनों ने साथ ही साथ भोजन किया। फिर वे बातों

में व्यस्त रहीं और जब तीसरा पहर हुआ तो नूरमहल अपने घर आई।

× × ×

रात को नूरमहल ने जावेद को बतलाया कि असलम के घर का हाल बहुत बुरा है। वह जो भी कमाता है ऐय्याशी और नशेबाजी में फूंक देता है। जुआ खेलने का भी उसे शौक है और यही सबब है कि घर में रोटियों के लाले हैं, औरत और बच्चे चीथड़े पहने घूमते हैं। वह आदमी जेहन का भी खराब है और बिना मतलब ही घर में झगड़ा करता है। सवेरे जाता तो लड़ाई लड़कर और रात को जब लौटता तो अंगारों पर पैर रखता हुआ। नूरमहल ने जावेद को यह भी बतलाया कि आज वह अमीना को सामान दे आई। उसके घर में जाकर खुद ही खाना पकाया सबको खिला कर आई और अपना एक नया पायजामा भी उसे दे आई।

जावेद को पहले से ही मालूम था कि असलम की आदतें अच्छी नहीं हैं। उसने जब नूरमहल के मुँह से सारी दास्तान सुनी तो दुःखी होकर बोला—"करेला यूँ ही कड़वा होता है बेगम। फिर अगर वह नीम पर चढ़ जाये तो उसकी कड़वाहट को मिटाया नहीं जा सकता। टेढ़े निकले दाँत और बिगड़ा हुआ आदमी कभी ठीक नहीं हो सकते फिर भी मैं एक बार कोशिश करूँगा और असलम को समझाऊँगा।"

"मैंने एक नया तरीका सोचा है।"

"क्या ?"

"असलम और अमीना को दावत दो। उन्हें अपने घर बुलाओ। बाहर दस्तरखान पर तुम दोनों दोस्त बैठो। खाना खाओ फिर जब हम लोग हरम में हों तो सूने में असलम को समझाओ। उसके ख्याले शरीफ में कुछ न कुछ तो आयेगा ही।"

"यह तुमने बहुत अच्छी तरकीब सोची बेगम। मैं तुम्हारी तमीज को दाद देता हूँ।"

इधर रात को दम्पत्ति में यह बातें हो रही थीं और उधर असलम जब सवेरे घर से निकला तो रास्ते में ही उसे एक बहुत पुराना दोस्त मिल गया। दोनों शराब के ठेके पर गये और वहाँ खूब जी भर कर पी। उसने दोस्ती के नाते ही असलम को कुछ सिक्के दिये। वह जुआ घर पहुँचा, रोज हारता था आज जीता।

आज असलम ने जाकर हाजिरी भी नहीं दी और न वह मनसबदार से ही मिला। उसे होश ही नहीं रहा और वह अपने रंग में ही दीवाना था। पहले असलम का मन हुआ कि जाहिदा के कोठे पर जाये। उसे खूब धिक्कारे और बुरा-भला कहे लेकिन फिर उसे उससे नफरत हो आई और उसने इरादा बदल दिया और सीधा घर की ओर चल पड़ा। हालांकि रात हो आई थी और उसका पहला पहर आधा हो चुका था लेकिन अचानक असलम को ध्यान आया कि घर में भूंजी-भाँग भी नहीं है अगर वह खाली हाथ पहुँचा तो क्या हालत होगी ?

असलम ने आटा दाल आदि सब सामान लिया। उसने मोमबत्तियाँ भी खरीदीं, ईंधन और तेल भी लिया और एक मजदूर पर सब सामान लदा लाया। अमीना ने असलम को देखा तो कुछ चौंकी क्योंकि आज वह समय से पहले आ गया था। घर में अंधेरा था। असलम जल्दी से बोला—"लो ये मोमबत्तियाँ और शमा जला दो।" जब शमा जल गई और रोशनी होने लगी तो असलम ने अमीना का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और बोला—"तेल का बर्तन और आटा दाल के कपड़े खाली करके इस मजदूर को दे दो यह जाकर दुकानदार को लौटा देगा।" अमीना ने फौरन ही अपने शौहर के हुक्म को पूरा किया और उसे ताज्जुब हो रहा था कि तनख्वाह मिलने में अभी दस-बारह दिन की देर है पैसा कहाँ से आया जो ये (असलम) सामान खरीद लाये ?

बच्चे सो गये थे। असलम आज बहुत खुश था। उसने एक मोहर और थोड़ी सी रेजगारी अमीन को दी और फिर उससे कहने लगा—"कल का काम चलाना और दरवाजे पर अगर कुछ तरकारी बिकने आ जाये तो जरूर खरीद लेना। वैसे मैं आज लाता रात हो गयी थी।" असलम कहता रहा और अमीना सुनती रही लेकिन उसे कोई खुशी नहीं थी। असलम का कहना जारी था वह बोला—"बच्चे भूखे सो गये होंगे। जल्दी से खाना पकाओ और जगा कर उन्हें खिलाओ। क्या करूँ ? देर हो गयी वैसे मेरी कोशिश थी कि जल्दी आ जाता।"

"खाना तैयार है इस वक्त कुछ भी नहीं बनाना है। हाँ, ठंडा जरूर हो गया है। तुम्हारे लिए अभी आग जला कर गर्म किये देती हूँ।"

"खाना तैयार है ?"

"हाँ।"

"और बच्चे ?"

"वे खा चुके हैं।"

"सामान कहां से आया ?"

"आज मैंने अपना सन्दूक खोला यों तो उम्मीद नहीं थी लेकिन मन नहीं माना देखा तो उसमें चाँदी का एक सिक्का मिल गया। बुढ़िया पड़ोसिन को बुलाया और उससे आटा, दाल, घी, तेल और लकड़ी वगैरह सारा सामान मंगाया। कुछ पैसे बचे थे उसमें एक बना बनाया चूड़ीदार पायजामा खरीद लिया। किस्मत इसे कहते हैं वैसे मैं तो नाउम्मीद थी।"

असलम की समझ में अमीना की बातें आ गयीं और वह पहले से अधिक खुश हो उठा और हँसते-हँसते बोला—"कल तुमने सही कहा था अमीना बेगम।"

"क्या ?"

"यही कि हमारा सितारा अभी गर्दिश में है और एक दिन वह बुलन्द जरूर होगा। तुम्हारे सन्दूक में चाँदी का सिक्का मिल गया और मुझे भी एक दोस्त को

दिया हुआ बहुत पुराना कर्ज मिल गया। क्या करूँ बेगम आदत से मजबूर हूँ। यह पीने की लत नहीं छूटती इसी में बहक जाता और इसी में सनकता और इसी में बदनामी भी होती, यही कोठे पर खींच ले जाती, यही जुआ खिलाती।"

अमीना ने आग जलाई। शमा जल रही थी। अमीना ने उजाले में अपने शौहर का चेहरा देखा फिर सहज स्वर में कहने लगी—"शहंशाह बाबर शराब खूब पीता था। वह सदा खुला इस्तेमाल करता लेकिन उसका गुलाम कभी नहीं बना। आज भी उसकी शोहरत है। हिन्दुस्तान आते ही उसने शराब छोड़ दी और उसने सोने-चाँदी के बर्तन भी तुड़वा कर फेंक दिए। उसे दारू से नफरत हो गयी और उसने हमेशा-हमेशा के लिए उसे छोड़ दिया। इसीलिए कह रही हूँ कि अगर इन्सान पक्का इरादा कर ले तो उसके लिए कोई भी काम मुश्किल नहीं है।"

"तुमने अच्छा नमूना पेश किया है बेगम मैं तुम्हारी तारीफ करता हूँ। मैं भी यही सोचता हूँ और कोशिश भी करता हूँ लेकिन फिर फिसल जाता हूं यही मेरी कमजोरी है।"

"कमजोरी तभी तक परेशान करती है जब तक इन्सान आँखें नहीं खोलता। आँखें खुलीं, कान खड़े हुए बस फिर वह सम्भल जाता है।"

अमीना देर तक असलम को समझाती रही। आज उसे भी तसल्ली थी कि रात को रोयेगी नहीं, ऊब-ऊब कर साँसें नहीं लेगी और आराम की नींद सोयेगी।

पाँच

जरीना को जब अमीना आटा वापस करने गयी तो वह मुस्कराई और अपनत्व भरे स्वर में कहने लगी—"तुमने तकलीफ क्यों की अमीना बहन ? हम घर में खाली दो प्राणी हैं। दुनिया के मालिक ने हमें औलाद नहीं दी उसके लिए तरस रहे हैं। बच्चों के मुँह से छीनकर तुम मुझे आटा देने आयी हो। मैं तो यही कहूँगी कि रसूलजादी बीबी फातिमा तुम्हारी खैर करे, तुम्हें दौलत, रौनक और शोहरत सभी से भर दे। यह आटा ले जाओ मुझे इसका गम रहेगा।"

"नहीं जरीना ! आगे के लिए रास्ता रखो फिर कभी जरूरत पड़ सकती है। रह गई मेरे दिन फिरने की बात सो इस जिंदगी में कभी मुमकिन नहीं और न कभी ऐसा होगा।"

"मैं तुम्हें खैरात नहीं दे रही हूँ और न ही तुम पर रहम खा रही मैं तो तुम्हारी औलाद पर निछावर हूं। तुम किस्मत वाली हो। अल्लाह ताला ने तुम्हें

तीन बच्चे दिये हैं। तुम्हारे पास जो दौलत है वह मुकद्दर वाले को ही मिलती है हरेक को नहीं। बैठो जब जाओ तो आटा ले जाना भूलना मत।"

"नहीं बहन! मैं……।"

जरीना ने अमीना को आगे बोलने नहीं दिया और वह तत्क्षण ही अपनी बात कहने लगी—"क्या मुझे इतना भी हक नहीं अमीना? जो मैं बच्चों को कुछ दे सकूं? उनके लिए कुछ करूँ? आज मेरे भी औलाद होती तो मुझे इतना सदमा कभी नहीं होता।"

यह कहते-कहते जरीना उदास हो गई और उसकी आँखें भर आयीं। अमीना ने उसके मर्म को समझा और वह मौन रही। कुछ क्षण बाद जरीना ने सिर ऊपर उठाया और धीरे-धीरे कहने लगी—

"अमीना तुम गरीबी को झीखती हो अपनी और अपनी तंग जिंदगी को कोसती हो। मैं एक बदनामी से डरती हूं जानती हो वह क्या है? लोग मुझे बाँझ कहते हैं।"

"कहने वाले कम अक्ल के हैं। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? वे कमबख्त क्या जाने? मन छोटा न करो खुदा तुम्हें बेटा देगा और तुम माँ बनोगी।"

"मैं ख्वाब के महल नहीं बनाती। मेरा नसीब झूठा है और उसकी मैंने खूब अच्छी तरह पहचान कर ली है। अब वह मुझे औलाद क्या देगा? शादी को पूरे बारह साल हो गये।"

"अपना यकीन अपना ही होता है बहन! और उम्मीद पर तो सारी दुनिया कायम है। नसीब के खेल कोई नहीं जानता। मेरी जबान खाली नहीं जा सकती। परवरदिगार तुम्हारी मुराद जरूर पूरी करेगा।"

जरीना ने जब अमीना को विदा किया तो उसको पहुँचाने उसके घर तक आयी। वह आटा तो वापस लाई ही थी साथ ही कुछ मिठाईयाँ और फल ले आयी। रहमान को उसने गोद में उठा लिया और उसे अपने हाथों से मिठाई खिलाने लगी। अमीना ने यह देखा तो मुस्कराई और रहमान को मीठी डाँट बताती हुई बोली—"यह तेरी खाला है, तू कैसा बेवकूफ है? खालाजान को सलाम कर।"

"वालेकुम सलाम खालाजान।" रहमान के मुँह से जैसे ही यह निकला जरीना ने उसका मुँह चूम लिया और बलाएँ लेने लगी।"

उस दिन अमीना बहुत प्रसन्न रही। असलम रात को यद्यपि भरपूर नशे में घर आया लेकिन उसका होश-हवास दुरुस्त था इसलिए कोई उधम नहीं मचाया। अमीना के चित्त को शांति मिली। वह मन-ही-मन खुदा की मिन्नत करने लगी कि दुनिया के मालिक अब घर में कभी उलझन न हो। रुखी दे एक वक्त दे लेकिन अमन रख।

× × ×

दूसरे दिन सवेरे ही सवेरे जरीना अमीना के घर आ पहुँची। आज वह अपने साथ खिलौने और कपड़े लाई थी। उसने कादिर के मैले-फटे कपड़े उतार फेंकें और उसे ढीली मोहरी का पाजामा पहनाया, कुर्ता और सिर पर टोपी लगा दी। फिर धीरे से उसका मुँह चूम लिया और प्रसन्न मुद्रा में बोली—"आज मैंने तेरे खालू से कह दिया है, उम्र बतला दी वे तेरे नाप की जूतियाँ ले आवेंगे।"

कादिर खुशी से फूला नहीं समाया। वह कभी माँ की ओर देखता और कभी जरीना पर चौंकती निगाह डालता। अमीना को यह सब अटपटा सा लग रहा था इसीलिए वह व्याकुल होकर बोली—"यह सब क्यों ले आयी बहन! बच्चों के वालिद क्या कहेंगे। वे मुझे डांटेंगे तब क्या जवाब दूंगी? जानती तो हो ही कि गुस्सा उनकी नाक पर हरदम बना रहता है।" इस पर जरीना कुछ जोर से हँसी और हँसते-हँसते बोली—"कह देना कि मैंने अपना शौक पूरा किया है। अगर मेरे औलाद होती तो तुम्हारे घर इस तरह मन बहलाने नहीं आती।" अमीना भौंचक्की सी रह गई और वह जरीना का मुँह देखने लगी।

जरीना ने नादिरा को अपने पास बुलाया। उसने उसे प्यार से गोद में बैठा लिया फिर उसके गन्दे कपड़े उतार डाले। उसे नया गरारा और कुरता पहनाया। उसके लिये चोटियाँ लाई थी और साथ ही यह भी कहा कि उसके खालू उसके लिए भी जूतियाँ लायेंगे।

रहमान को जरीना ने जो कुरता पहनाया वह लखनवी चिकन का था और उसके सिर पर गोटे की टोपी रखी और सफेद चूड़ीदार पाजामा पहनाया। फिर खिलौने देती हुई बोली—"रहमान तेरी भी जूतियां कल ले आऊँगी। तेरे लिए लाल मखमल की जूतियाँ मंगवाई हैं।"

इधर जरीना अपनी खुशियों का जश्न मना रही थी और उधर अमीना धर्म-संकट में थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह असलम को क्या बतलायेगी और उससे क्या कहेगी।

रात को उजाले में असलम ने जब बच्चों के बदन पर नये कपड़े देखे तो वह बुरी तरह चौंका और जल्दी-जल्दी उत्सुक स्वर में अमीना से पूछने लगा—"बच्चों के पास कपड़े कहां से आये?" अमीना ने कुछ भी झूठ नहीं बोला वह इस सवाल का जवाब देने के लिए पहले से ही तैयार थी और धीरे से बोली—"आजकल अहमद की बीवी जरीना मेरे घर आती है। बेचारी के कोई बच्चा नहीं है औलाद को तरसती है। कल फल और मिठाईयाँ लाई थी और आज सबको कपड़े दे गयी।"

"तुमने उसे टोका नहीं? कोई ऐतराज नहीं किया?"

"मेरी उसने एक नहीं मानी। सवेरे लड़कों से पूछ लेना। मैंने बहुत कहा लेकिन जरीना नहीं मानी। जानते हो आखिर में उसने क्या कह डाला?"

"क्या?"

"कि मुझे इतना भी हक नहीं जो मैं बच्चों को प्यार दुलार कर सकूं। अगर मेरे औलाद होती तो तुम्हारे घर इस तरह मन बहलाने नहीं आती।" इस पर असलम को हंसी आ गयी और वह उसी मुद्रा में बोल उठा—"यह अच्छी जबरदस्ती है। किसी को अमीर के बच्चे प्यारे लगते हैं मगर जरीना को गरीबों पर प्यार आया है।" यह कहने के साथ ही असलम को अहमद की याद आ गयी और उसका अन्तःकरण कहने लगा कि जैसा खाविंद दरियादिल है वैसी ही बीवी भी मिली। अल्लाह अगर जिंदगी दे तो दौलत सबसे पहले बख्शे। वही हंसी है वही खुशी और उसी से हर इन्सान को इज्जत मिलती है।

दम्पत्ति में देर तक अहमद और जरीना के विषय में बातें होती रहीं। आज दोनों अतीव प्रसन्न थे। उनमें हंस-हंस कर बातें हुईं और उन्होंने सन्तोष की साँस ली और सुख की नींद सोये।

× × ×

जिस दिन असलम को तनख्वाह मिली। वह सीधा घर नहीं आया सबसे पहले दारु के ठेके पर पहुँचा और वहाँ खूब नशा करके जुआखाने आया। उसकी कोशिश थी कि आज खूब देर तक खेलेगा एक के दो करेगा तभी घर जायेगा। हर जुआरी यही सोचता है कि वह जुआ खेलेगा तो कभी हारेगा नहीं। लेकिन अधिकांश यही होता है कि लोग हारते ज्यादा और जीतते बहुत कम हैं। असलम पूरी रकम हार गया और उसके पास एक पैसा भी नहीं बचा। वह किसी तरह मुर्दा सा घर आया और धम्म से चारपाई पर गिर गया।

यहाँ अमीना राह देख रही थी कि आज तनख्वाह मिलेगी रुपया घर आयेगा। लेकिन जब उसने असलम को परेशान देखा तो समझ गयी कि कुछ दाल में काला जरूर है तभी उसके खाविंद की यह हालत है। अमीना को यह भी पता था कि आज उसका शौहर नशे में है। उसका मन दुःखी हो गया और वह पति के पास आयी और धीरे से बोली—"लेटे क्यों हो ? उठो ! खाना खा लो फिर सोना।"

"मैं खाना नहीं खाऊंगा बेगम।"

"क्यों ?"

"मुझे भूख नहीं है।"

"यह मैं कैसे मान लूं कि तुम भूखे नहीं हो ? सवेरे खाकर गये थे ? और अब तक भूख ही न लगी। उठो ! तुम्हें मेरी कसम भूखे मत लेटो।"

"तुम ख्वाहमख्वाह के लिए मुझे परेशान कर रही हो अमीना। एक बार कह दिया कि भूख नहीं है और मैं कुछ भी नहीं खाऊंगा।"

"मैंने भी अभी कुछ नहीं खाया और तुम्हारी राह देख रही थी। तुम···।"

अभी अमीना इतना ही कह पाई थी कि असलम ने बाधा दी। वह अपनी बात कहने लगा—"तुम खाओ बेगम। मेरे पीछे भूखी मत लेटो। मैं बहुत ही बदनसीब

हूँ। मेरी किस्मत में आराम नहीं लिखा। जब तक जिन्दा हूँ यूँ ही मुसीबतें झेलूँगा। तुम्हें नहीं मालूम बेगम कि आज मेरे साथ क्या हुआ ?" अमीना भौंचक्की सी रह गई। वह जल्दी-जल्दी उत्सुक स्वर में पूछने लगी—"क्या हुआ ?"

"आज तनख्वाह मिली थी।"

"फिर ?"

"लेकिन मेरे पास एक पैसा भी नहीं बचा।"

"कैसे ?"

"न तो मैं जुआघर ही गया और न ही शराब के ठेके पर। पहले सोचा कि बाजार चलूं और घर के लिये कुछ सामान खरीद लूं लेकिन मुझे नहीं मालूम था कि मेरे साथ धोखा हो जायेगा।"

"कैसा धोखा ?"

'मैं पंसारी की दुकान पर पहुँचा और उसे सामान लिखवाने लगा इतने में ही किसी गिरहकट ने अपना काम दिखला दिया और उसने मेरी जेब साफ कर दी।"

"ऐं।"

"हाँ बेगम यह पहला मौका है जबकि जेबकतरे ने मुझे दाँव दिया।"

अमीना समझ गयी कि उसका शौहर सरासर झूठ बोल रहा है। वह रकम जुए में हार आया और यहाँ बहाना बना रहा है लेकिन फिर भी वह शांत रही। उसके मुँह से धीरे से यही निकला—"कभी तनख्वाह जुए में हार जाते, कभी दारु के ठेके पर चली जाती; कभी तवायफ उसकी मालकिन बन जाती। यह तो हर महीने का रोना है कोई आज नहीं। आज नए गिरहकट की बन गई। हम लोगों का नसीब ही खोटा है। कोई बात नहीं अफसोस मत करो। उठो खाना खाओ, यह तो सब चलता ही रहता है।"

इस पर असलम उठ कर बैठ गया और वह अमीना से कहने लगा—

"पूरा महीना पड़ा है बेगम आखिर काम कैसे चलेगा ?"

"खुदा मालिक है वही खैर करेगा और उसी का सहारा है।"

इधर असलम कुछ दिनों से इन्सान बन कर रह रहा था। उसके भीतर का शैतान सो गया तभी घर में खुशहाली थी। वह अनमने भाव से उठा और दस्तरखान पर जाकर बैठ गया। नशे की हाजत पूरी नहीं हुई थी इसीलिए खाना नहीं चलता था। वह कौर मुँह में डालता और निवाला बाहर निकल आता। किसी तरह थोड़ा सा खाया और फिर पानी पीकर लेटा रहा।

अमीना को सारी रात नींद नहीं आई। इधर थोड़ी सी कुछ शांति मिली थी लेकिन आज वह उलझन फिर चौगुनी बढ़ गई। वह न जाने क्या-क्या सोचती रही और अन्त में उसकी समझ में एक बात यही आयी कि अब उसे जिन्दा नहीं रहना चाहिए। बहुत दिन जीवित रही, उसके घर की हालत बदलेगी नहीं और उसकी बर-

बादी के दिन आ गये हैं। बच्चों का बुरा हाल होगा। उसका जनाजा उठेगा और असलम न घर का रहेगा न घाट का। एक दिन वह आयेगा जब उसकी नौकरी भी चली जायेगी उसे बेइज्जत कर के काम से निकाल दिया जायेगा।

सवेरे अमीना ने जब आँखें खोली तब भी चिंता से उसका बुरा हाल था। वह उठी और जल्दी-जल्दी खाना पकाया। असलम को खिला-पिलाकर घर से भेजा फिर बैठ कर अपनी किस्मत पर आँसू बहाने लगी। अमीना रो रही थी तभी जरीना ने आँगन में प्रवेश किया। उसने अमीना को रोते देखा तो घबरा गयी और उसके पास जा चिन्तित स्वर में पूछने लगी—"क्या हुआ अमीना बहन ? तुम रो क्यों रही हो ?"

"रोना तो मेरे मुकद्दर में लिखा है बहन। खुदा ऐसी किस्मत दुश्मन को भी न दे। मैं बाज आयी ऐसी तकदीर को लेकर ओढूं, चाटूं या बिछाऊं।" रोते-रोते अमीना ने जब यह कहा तो जरीना हमदर्दी से भर आयी। वह दुःखी स्वर में बोली—

"आखिर बात क्या है ?" अब अमीना अपने को रोक नहीं पायी वह फफक कर रो पड़ी और फिर रोते-रोते बोली—"बात कोई नयी हो तो बतलाऊं वही पुरानी लकीर है जिसे मैं रोज पीटती हूँ।"

इसके बाद अमीना ने जरीना को सब हाल बतलाया। जरीना ने जब सुना कि असलम पूरी तनख्वाह जुए में हार आया है तो वह अवाक् रह गई और उसके मुँह से बोल नहीं निकला। अन्त में जरीना ने अमीना को समझाया और ढाढस बंधाया। उसने कहा—"दिन बदलते हैं बहन ! वक्त हमेशा एक जैसा ही नहीं रहता। आज तुम आँसू बहा रही हो कल हँसोगी, मुस्कराओगी।" लेकिन अमीना को तसल्ली नहीं हुई। वह ऊब-ऊब कर साँसें लेती और उसे भविष्य अन्धकारमय दिखलाई पड़ रहा था।

जरीना जब अपने घर गई तो वह रहमान को साथ ले गई। अहमद की तबियत कुछ ढीली थी इसीलिए वह घर पर ही था। उसने रहमान को देखा तो बहुत खुश हुआ। उसके सोये हुए अरमान जाग उठे। ख्वाहिश ने जोर मारा और मन कहने लगा कि काश उसके भी एक बच्चा होता। उसे भी कोई अब्बा कहता और न जाने उसकी यह मुराद कब पूरी होगी ? रहमान दोपहर तक जरीना के घर में रहा फिर उसे माँ की याद आयी तो अपने घर लौट आया।

× × ×

रहमान के जाने के बाद जरीना कुछ उदास हो गयी। वह धीरे से पति से बोली—"अब मेरे औलाद नहीं होगी मैं नाउम्मीद हो गयी हूँ।"

"उम्मीद तो मुझे भी नहीं रही। बहुत इन्तजार किया बेइन्तहा सब्र किया लेकिन परवरदिगार ने नहीं सुनी।"

"तो फिर क्या सोचा है तुमने ?"

"क्या सोचूं ? मेरी तो समझ में कुछ भी नहीं आता।"

"कुछ तो सोचना पड़ेगा ही।"

"क्या ?"

"यही कि हम लोग बिना औलाद के नहीं रह सकते। यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगता।"

"तो फिर क्या करूं जरीना बेगम ?"

"तुम दूसरी शादी कर लो मुझे उसमें बहुत खुशी होगी।"

"दूसरी शादी ?"

"हाँ, दूसरी शादी ?"

"यह तुम क्या कह रही हो जरीना ?"

"मैंने दिल की बात कह दी। मुझे हंसी नहीं, खुशी नहीं, दौलत और दुनिया भी नहीं सिर्फ औलाद चाहिए औलाद। जब तक मेरी यह ख्वाहिश पूरी नहीं होगी मुझे कब्र में भी चैन नहीं मिल सकता।"

"मगर मैं दूसरी शादी नहीं करूंगा बेगम।"

"क्यों ?"

"मुझे ऐसी नेक बीवी नहीं मिल सकती। मैं अपना घर तबाह नहीं करूंगा।"

"तो फिर ?"

"मैं क्या बतलाऊं ?"

"कोई लड़का गोद ले लो। दत्तक औलाद को ही हम लोग अपना बच्चा मान लेंगे।"

"अभी कुछ दिन और राह देख लो बेगम। हो सकता है कि खुदा हमारी सुन ले और उसके बाद हम यही करेंगे किसी गरीब का बच्चा गोद ले लेंगे।"

"मगर मैं अब समायी नहीं कर सकती।"

"क्यों ?"

"मुझसे सूने घर में अकेला नहीं रहा जाता मेरा जी ऊबता है।"

"कोई खादिमा रख लो एक से दो हो जाओगी तुम्हारा मन बहला रहेगा।"

"घर में काम ही कितना है कि जिसके लिए खादिमा रखूं।"

"फिर ?"

"एक ही रास्ता है।"

"वह क्या ?"

"यही कि लड़का गोद जल्दी से जल्दी ले लो।"

"ज़रीना! तुम्हें बहुत उतावली हो रही है।"

"अब बात मेरे बस की नहीं रही और मैं मजबूर हूँ।"

"तुम्हारी निगाह में कोई लड़का है ? आज से मैं भी इसका ख्याल रखूंगा।"

"मैंने एक लड़का देखा है। वह मुझे बहुत प्यारा लगता है।"

"कौन है वह ?"

"असलम का सबसे छोटा बेटा रहमान।"

'तो क्या असलम और उसकी बीवी अपना बच्चा तुम्हें दे देंगे ?"

"मुझे यकीन है।"

"तुमने कभी बात चलाई ?"

"नहीं।"

"तो फिर ?"

"अगर तुम कहो तो कल मैं अमीना से बात करूं ?"

"कहीं वे लोग बुरा न मान जायें ?"

"ऐसा कभी नहीं हो सकता अमीना के मिजाज से मैं खूब वाकिफ हूँ।"

"तुम्हारा मन है तो बात चलाना मैं मना नहीं करता।"

जरीना ने जब अपने शौहर के मुँह से यह सुना तो वह खुशी से फूली नहीं समायी। मन-ही-मन उसे अपने खाविंद पर गर्व हो आया और उसका अन्त:करण कहने लगा कि खुदा हर बीवी को ऐसा ही शौहर दे।

छठा

एक सप्ताह भी नहीं बीता और घर का सारा सामान खतम हो गया। अमीना की चिन्ता बढ़ी और उसने एक पड़ोसिन से कहा अगर मुझे कुछ ऐसा काम मिल जाए जिसे मैं घर पर आसानी से कर सकूँ तो फिर रोटियों के लाले नहीं रहेंगे। मुझसे बच्चों की तकलीफ देखी नहीं जाती। मेरा शौहर गुमराह है और वह अन्धेरे से उजाले में कभी नहीं आ सकता।

यह एक बुढ़िया थी जो कपड़ों में काज करती, बटन लगाती और कपड़ा रेशमी हो या सूती उस पर इतनी महीन बखिया डालती कि देखने वाले दंग रह जाते। वह अपनत्व से घर आयी और अमीना से बोली—"तुम्हारे पास हुनर है और तुम भूखी नहीं रह सकतीं, तुम कशीदा जानती हो और सिलाई में भी तुम्हारा हाथ साफ है। यह मेरी जिम्मेवारी है, मैं तुम्हें काम लाकर दूँगी उसके दाम मिलेंगे और तुम्हारी मुसीबत दूर हो जायेगी।"

"बाजी, तुम मेरे लिए खुदा हो। तुमने मुझे जीने की राह दिखला दी और मैं तुम्हारा शुक्रिया जिन्दगी भर अदा करती रहूँगी।"

"इसमें अहसान की कोई बात नहीं यह तो मेरा फर्ज है।"

यह कह कर बूढ़ी लतीफन ने अमीना को आश्वासन दिया और फिर खुश होकर चली गई। बस फिर क्या था दूसरे दिन से ही अमीना को काम मिलने लगा। प्रति दिन नकद पैसे मिल जाते और इस प्रकार उसकी गाड़ी चलती रही। उसने असलम को सब कुछ बतला दिया। उसके पास कोई जवाब नहीं था इसलिए वह खामोश रहा।

नित्य सवेरे का सूरज अपनी लाल आभा लेकर आता और वह स्वर्णिम होता। ऐसे ही रात आती वह अपने गीत गाती और फिर चली जाती। बरसात का मौसम बीत चुका था और अब सर्दियाँ आ गयी थीं। एक अमीना और असलम ही नहीं बल्कि जितने भी लोग काबुल से बाबर के साथ आये थे वे सब ही महसूस करते कि हिन्दुस्तान में जाड़ा कड़ाके का पड़ता है।

अमीना के घर की हालत खस्ता थी। कम्बल फटे हुए और रजाइयों का बुरा हाल था। गरीबी ने तो इस परिवार के साथ चोली-दामन का साथ बना रखा था। एक दिन अमीना तीसरे पहर आँगन में बैठी फटी रजाई सी रही थी तभी जरीना आकर पास बैठ गयी और कुछ देर तक इधर-उधर की बातें करने के बाद अपने सही मकसूद पर उतर आयी। वह संकोच भरे स्वर में बोली—"एक बात कहूँ अमीना! बुरा तो नहीं मानोगी ?"

"बुरा क्यों मानूँगी ?"

"मैं चाहती हूँ कि……।"

"क्या ?"

"मेरे कोई औलाद नहीं है यह तो तुम जानती ही हो और मैं अब नाउम्मीद हो गयी हूँ बहन।"

"उम्मीद कभी नहीं छोड़नी चाहिए। खुदा तुम्हारी गोद जरूर भरेगा। मन में मलाल मत लाओ।"

"ये सब कहने और मन समझाने की बातें हैं अमीना बहन। इनसे अब तसल्ली नहीं होती। मैं तो तुमसे कुछ कहने आयी हूँ ?"

"क्या ?"

"कुछ माँगना चाहती हूँ बहन।"

"मेरे पास देने को है ही क्या जरीना बहन।"

"देखो इन्कार मत कर देना।"

"इन्कार क्यों करूँगी ?"

"बात ही ऐसी है।"

"कैसी ?"

"मैं खास चीज लेने आयी हूँ।"

"मेरे घर में खास क्या है ? जो कुछ भी है वह सब तुम्हारा ही है यहाँ तो

बहन दौलत के नहीं आँसुओं के चिराग जलते हैं।"

"मैं तुमसे तुम्हारी दौलत ही माँगती हूँ।"

"कैसी दौलत ?"

"मुझे रहमान को दे दो।"

"रहमान को ?"

"हाँ, रहमान को।"

"रहमान तुम्हारा ही बेटा है ले जाओ मैं कब मना करती हूँ।"

"मैं ऐसे नहीं पूरे दस्तूर के साथ लूंगी।"

"कैसा दस्तूर ?"

"मैं बच्चा गोद लूंगी और उसकी रस्म की अदायगी होगी।"

"क्या कहा ? रहमान को तुम गोद लोगी ?"

"हाँ।"

"यह तो बड़ी अटपटी बात कह दी और मुझे इस पर सोचना पड़ेगा।"

"क्या ?"

"यही कि मैं घर की मालकिन नहीं।"

"तो अपने शौहर से पूछ लो। उससे राय ले लो। मैं तुम्हारे बच्चे को सिर आँखों पर रखूंगी और उसे कोई तकलीफ नहीं हो सकती।"

"यह तो मैं जानती हूँ लेकिन……।"

"लेकिन अभी कह नहीं सकती कि रहमान के वालिद राजी होंगे या नहीं।"

"अगर तुम्हारा मन होगा तो वे इन्कार नहीं करेंगे।"

"मेरा मन ?"

"हाँ, तुम्हारा मन।"

इस पर अमीना निरुत्तर हो गयी और उसने सिर नीचे झुका लिया। जरीना ने अमीना की यह गतिविधि देखी तो वह कुछ चौंकी और चिन्तित स्वर में पूछने लगी— "क्या सोचने लगी अमीना बहन ?"

"कुछ नहीं। कुछ भी तो नहीं।"

जरीना ने एक दीर्घ उच्छवास ली और दुःखी होकर बोली—"औलाद सबको प्यारी होती है चाहे वह गरीब हो या अमीर ? मैंने बड़ी हिम्मत करके तुमसे कहा है। मेरी यह मुराद पूरी कर दो अमीना बहन। मैं तुमसे भीख माँगती हूँ।" यह कहने के साथ ही जब जरीना ने अपना आँचल फैलाया तो अमीना सिसक कर रो पड़ी। वह खूब रोई और देर तक रोती रही। जरीना ने भी उस रुदन में उसका साथ दिया।

जब अमीना के आँसुओं का वेग कुछ कम हुआ तो उसने खांस कर गला साफ किया और गीले स्वर में बोली—"मैं जानती हूँ और मुझे यकीन है कि मेरा रहमान

तुम्हारे घर में फूल की तरह रहेगा और उसकी जिन्दगी सुधर जायेगी। वह आगे चल कर नेक इन्सान बनेगा मगर बहन, औलाद की कसक बहुत बुरी होती है। लोग यही कहेंगे कि हम गरीब थे इसीलिए हमने अपना बेटा दूसरों को दे दिया।"

"दुनिया के तो हजार मुंह हैं बहन! उन्हें बन्द नहीं किया जा सकता। अगर मैं बे-औलाद न होती तो तुम्हारे आगे दामन नहीं फैलाती।"

"अच्छा! आज मैं रहमान के अब्बा से बात करूँगी फिर कल तुम्हें बतलाऊँगी।"

अमीना ने जब जरीना को विदा किया तो वह देर तक बैठी सोचती रही और उसका विवेक साथ नहीं दे रहा था और वह अपने में हैरान थी कि आखिर इस मामले को कैसे निपटाये? जरीना को क्या जवाब देगी?

रात को जब असलम के सामने रहमान का जिक्र चला तो वह भी चौंका और अमीना से कहने लगा—"यह तो हमारी गरीबी का मजाक उड़ाना है बेगम। और कुछ नहीं। अहमद की बीवी से साफ-साफ कह दो कि हम अपना बच्चा उन्हें नहीं देंगे।"

"यह तुमने कह दिया और मैंने सुन लिया मगर……।"

"मगर क्या?"

"लड़के की जिन्दगी बन जायेगी। अहमद खुशहाल है और वह रहमान के लिए कुछ भी उठा नहीं रखेगा। सोचो तो हम लोग पेट भर रोटी भी नहीं दे सकते, कपड़े भी नहीं पहना सकते और पढ़ाई-लिखाई तो दूर रही।"

"यह ठीक है अमीना, लेकिन हमारा दिल गवाही नहीं देता।"

"क्यों?"

"औलाद का मोह ही कुछ ऐसा होता है। किसी से बच्चा माँगो तो वह फौरन इन्कार कर देगा।"

"यह मैं भी जानती हूँ।"

"तो फिर?"

"फिर क्या जरीना का दिल न तोड़ो और रहमान को दे दो। मैंने अपना दिल खूब मजबूत कर लिया है।"

इस तरह अमीना असलम को समझाती रही। उस रात उसे नींद नहीं आई और वह ख्यालों में ही खोई रही। उसे लग रहा था कि रहमान का सोया नसीब जागा है। उसकी तकदीर करवट लेगी और उसकी जिन्दगी मुस्कुरायेगी।

× × ×

आखिर जरीना की मुराद पूरी हो गई। उस दिन खूब जश्न मनाया गया। रात को अच्छी खासी रोशनी हुई और खुशियाँ मनाई गईं। खैरात बटी और कंगलों को भर पेट खुराक मिली। मुल्ला और मौलवी दोनों आये और उन्होंने कुरान-शरीफ

की कुछ आयतें पढ़ीं। अमीना ने अपने हाथों रहमान को जरीना की गोद में बिठा दिया।

अमीना को पुत्र देकर भी कोई मलाल नहीं था। वह अपने में पूर्णतया सन्तुष्ट थी कि उसके बच्चे का भविष्य बन गया। लेकिन असलम को ऐसा महसूस हो रहा था कि उसकी कमजोरी का नाजायज फायदा उठाया गया है। अमीर से कोई उसकी औलाद नहीं माँगता और न ही उसकी हिम्मत पड़ती। गरीब नरमचारा होता है इसीलिए उसे हर आदमी दबा लेता है। दुनिया मतलब की है और कोई किसी का नहीं।

यद्यपि जरीना ने रहमान को गोद ले लिया था लेकिन उसने उसे खुली छूट दे रखी थी कि जब उसका जी चाहे तो अमीना के पास चला जाये और जब मन हो तो यहाँ रहे।

अहमद खुशी से फूला नहीं समाता। वह रहमान के लिए रोज फल और मिठाइयाँ लाता और उसे प्यार करते नहीं अघाता। न जाने कितनी जोड़ी कपड़े उसके लिए सिलवा डाले। वह उसे गोद में लेता और जरीना से कहता—"देखो, फूल हँस रहा है यह गुल कभी मुरझा नहीं सकता। इसमें खुशबू है जरीना। यह हमारे चमन को गुलजार कर देगा। इसके चेहरे पर रौनक है और इसका माथा खूब चमकता है।" जरीना यह सुनती तो निहाल हो जाती। वह प्रसंग को बदल देती और अपनी बात कहने लगती—"देखो, लापरवाही मत करो। कल ही किसी मौलवी से कह दो कि हमें रहमान को पढ़ाना है और उसे होशियार बनाना है।"

"इसके लिए मैंने तुमसे पहले ही सोच लिया है बेगम।"

"क्या?"

"कल ही किसी मकतब में ले जाकर इनका नाम लिखवा दूँगा।"

जरीना ने अपने दोनों कानों पर हाथ रख लिए और वह चौंक कर बोली—तौबा करो तौबा! मैं लड़के को मकतब नहीं भेजूंगी।

"तो फिर?"

"मौलवी घर पर ही पढ़ाने आयेगा। मेंने यही सोचा है।"

"यह महँगा पड़ेगा जरीना।"

"कैसी बातें करती हो! लोग औलाद के लिए दिलोजान लगा देते हैं। मैंने ऊँचे ख्वाब देखे हैं और जो महल बनाए हैं मेरा रहमान उन्हीं में बैठेगा।"

"जरीना! तुमने साबित कर दिया कि तुम बे औलाद होते हुए भी माँ हो और तुम्हारे अन्दर सच्ची माँ का दिल है। मैं तुम्हारा दिल नहीं तोड़ूंगा और तुम जो कहोगी वही करूंगा।"

इस तरह दम्पत्ति पास-पास जब बैठते तो रहमान के विषय में ही बातें करते। जरीना कहती कि रहमान उर्दू पढ़ेगा, फारसी सीखेगा, अरबी भी उसे पढ़ानी है

ग्रौर मेरी तो सबसे बड़ी ख्वाहिश यह है कि वह रोज कुरान-शरीफ पढ़कर मुझे सुनाये। ग्रहमद भी ग्रपने उद्गार निकालता। उसके कथन में गहराई होती ग्रौर खूब हँस-हँस कर जरीना से बातें करता। ग्रावाज उसके मुँह से निकलती वह उसकी नहीं बल्कि उसकी ग्रात्मा की होती। ग्रहमद कहता कि रहमान तनिक बड़ा हो जाए तो मैं उसे घोड़े की सवारी सिखलाऊँगा, शिकारी भी बनाऊँगा, तीर चलाना, तलवार पर काबू पाना, बर्छी ग्रौर भाले से भी चोट करना सिखलाऊँगा। मैं उसे एक सिपाही बनाऊँगा ग्रौर ऐसा सिपाही जो ग्रागे चलकर सेनापति बने।

रहमान को कुछ दिन तक ग्रमीना की याद सताती रही। वह बार-बार दौड़ कर ग्रमीना के पास पहुँच जाता। लेकिन धीरे-धीरे जरीना के प्यार ने उसे ग्रपने पाश में बाँध लिया ग्रौर वह उसे ग्रम्मीजान कहकर पुकारता। यह सुनकर जरीना का कलेजा हाथ भर का हो जाता ग्रौर उसकी ग्राँखों में मोह का नीर भर ग्राता ग्रौर वह गद्गद् हो जाती।

ग्रहमद को जब रहमान ग्रब्बा कहता तो वह ग्रपने को रोक नहीं पाता ग्रौर उसमें वात्सल्य उमड़ ग्राता ग्रौर वह उसका मुँह चूम लेता।

सातवाँ

"यह बच्चा भी नहीं रहा। ग्रब ग्रागे खुदा ग्रौलाद न दे। मैं बे-ग्रौलाद ही ग्रच्छी हूँ।"

नूरमहल ने जब यह कहा तो जावेद दुःख से सराबोर हो गया। उसने एक लम्बी साँस ली ग्रौर फिर दुखित स्वर में कहने लगा—

"तसल्ली रखो बेगम! मुकद्दर की मार से कोई भी इन्सान नहीं बचता।" नूरमहल रोने लगी ग्रौर रोते-रोते बोली—"मुझे कोई दवा ला दो ताकि उसे खा लूँ ग्रौर ग्रागे कोई बच्चा न हो। जब पैदा होने के बाद वे जिन्दा नहीं रहते तो क्या फायदा?"

"बेगम जो तकदीर में बदा है वह होकर ही रहेगा।"

"मैं तंग ग्रा गई हूँ, मुझे ऐसा नसीब नहीं चाहिए जो दिन रुलाये ग्रौर रात कभी हँसने न दे।"

"तो फिर क्या करूँ बेगम?"

"मेरी एक बात मानो तो कहूँ।"

"वो क्या?"

"देखो ! अहमद ने असलम के छोटे बेटे रहमान को गोद ले लिया। तुम भी·········।"

"मैं क्या करूँ ?"

"तुम कादिर को ले लो। वह भी लड़का अच्छा है।"

"मैं कादिर को ले लूं ?

"हां।"

"लेकिन यह मुमकिन कैसे हो सकता है ?"

"मैं अमीना से बात करूँगी।"

"मैं इसके लिये मना नहीं करता बेगम ! मगर एक बात है।"

"क्या ?"

"एक लड़का असलम ने अहमद को दे दिया और दूसरा तुम्हें दे देगा यह मेरी समझ में नहीं आता। कहीं तुम्हारी जुबान खाली चली गई तो फिर तुम्हें इसका मलाल होगा।"

"तो फिर ?"

"अगर तुम्हें बच्चा गोद ही लेना है तो नादिरा को माँगो। अमीना इन्कार नहीं करेगी और वह तुम्हारी बात रख लेगी।"

"लड़की कुछ दिन बाद ब्याह कर पराये घर चली जायेगी तब ?"

"ऐसा नहीं होगा बेगम।"

"क्यों ?"

"मैं घर-जवांई लाऊँगा। वह हमारे साथ ही रहेगा।"

"घर जवांई।"

"हाँ घर जवांई। इसके अलावा एक बात और है बेगम।"

"वो क्या ?"

"हमें दोनों मिल जायेंगे अगर अमीना ने तुम्हारी बात मन्जूर कर ली। लड़के की जगह मैं दामाद को मानूंगा और लड़की तो नादिरा है ही।"

"मुझे यकीन है कि अमीना मेरी बात नहीं टालेगी।"

"इसीलिये तो कह रहा हूँ कि कादिर को मांगना ठीक नहीं। वह बात खाली चली जायेगी। नादिरा की बात चलाओ और उसका बोझ भी कम हो जायेगा। उसे लड़की की शादी नहीं करनी पड़ेगी बेचारी पेट को रोती। दहेज कहां से लायेगी ?"

दम्पत्ति देर तक इसी विषय पर बातें करते रहे। उनकी योजना पक्की बन गयी और नूरमहल ने अपने सिर पर यह जिम्मेवारी ले ली कि वह अमीना को मना कर रहेगी और उसने भी सपने देखने प्रारम्भ कर दिये और ख्वाबों के महल बनाने लगी कि वह भी लड़की गोद लेने की रस्म अदा करेगी और अहमद से कम

धूम नहीं मनायेगी बल्कि उस्से ज्यादा खर्च करेगी।

इधर नूरमहल अपनी धुन में थी और उधर अमीना रात को चौंक-चौंक उठती। उसके पास नित्य रहमान सोता था। वह बिस्तर सूना पाती तो उसका हृदय कचोट उठता। कलेजे में हूक सी उठती और उसका अन्त:करण कहने लगता कि उसने यह बहुत गलत किया जो अपना बेटा जरीना को दे दिया।

जब नूरमहल अपना प्रस्ताव लेकर अमीना के पास पहुँची तो वह उसका मुँह देखने लगी और आश्चर्य से चौंक कर रह गई। नूरमहल धीरे से बोली—"नादिरा को मुझे दे दो अमीना बहन। जैसे तुम्हारी लड़की वैसी ही मेरी कहलायेगी। मेरे दिल में तमाम हौंसले हैं और मैं वे सब पूरे कर लूंगी। तुम्हारी बेटी को गोद लूँगी तो कायदे से उसकी रस्म चुकाऊंगी।" अमीना कुछ नहीं बोली वह चुपचाप नूरमहल की बातें सुनती रही और नूरमहल का मुंह तनिक देर के लिये भी बन्द नहीं हुआ और वह कहती रही—"मेरा वादा है कि अगर मैं नादिरा को गोद लूंगी तो तुम्हारा ख्याल हमेशा रखूंगी। तुम्हें किसी भी प्रकार की तकलीफ नहीं होने दूंगी।" थोड़ी देर बाद अमीना बोली—"तुमने ऐसा सवाल किया है नूरमहल बहन कि जिसका मैं फौरन ही कुछ भी जवाब नहीं दे सकती। मैं जानती हूँ कि तुमने बात सोच समझ कर ही कही है लेकिन···?"

'लेकिन क्या ?'

'मुझे कुछ सोचने का मौका दो।'

'हाँ, खूब सोच लो कोई जबरदस्ती नहीं है।'

'यही कहती हूँ कि ।'

'क्या ?'

'अपने शौहर से बात कर लूँ। घर के मालिक मर्द ही होते हैं और औरतें तो अपनी मर्जी से कुछ भी नहीं कर सकतीं।'

'ठीक कहती हो अमीना तो फिर मैं कब आऊँ ?'

'कभी आ जाना बहन जब तुम्हारा मन हो मैं आज ही बात कर लूँगी।'

जब नूरमल चली गई तो अमीना अपने भाग्य पर आँसू बहाने लगी। उसने बचपन की याद की तो उसमें दुःख ही दुःख पाया। माँ सौतेली थी वह अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। जब तक शादी नहीं हुई कठोर परिश्रम करती रही और उसे तनिक भी चैन नहीं मिला। शादी के बाद भी अमीना मुसीबतें ही झेलती रही। शौहर तो मनचाहा मिला मगर उसकी आदतें अच्छी नहीं थीं। वह न तो खुद शांति से रहता और न उसे ही रहने देता। गरीबी मजबूरी बन गई और उसने उसकी कमर तोड़ दी। अब नौबत यहाँ तक आ पहुँची कि उसे अपना एक बेटा भी गोद दे देना पड़ा।

जब से नूरमहल ने नादिरा को मांगा तब से अमीना को न जाने कैसा-कैसा

लग रहा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे ? वह बेहद परेशान थी और उसका मन कहता था कि उसने अगर नादिरा को भी अपने पास से हटा दिया तो फिर खाली हाथ रह जायेगी।

असलम के सामने जब अमीना ने नूर-महल की बात रखी तो वह गम्भीर हो गया और देर तक कुछ बोला नहीं। अमीना भी गुमसुम थी। दम्पत्ति, नूरमहल और जावेद का स्वभाव अच्छी तरह जानते थे। वे पहले असमंजस में रहे और जब उनका यकीन पक्का होने लगा तो असलम बोला—"औलाद को गोद वही मांगता है अमीना जिसकी गोद खाली होती है। अहमद के लिये मैं जानता था कि वह रहमान को आँखों की पुतली की तरह रखेगा और ठीक वही हाल जावेद का है, वह उससे कहीं ज्यादा शरीफ है और उसकी घर वाली···।"

अमीना ने असलम के मुँह की बात छीन ली और वह फौरन ही बोलउठी—"नूरमहल जैसी औरत चिराग लेकर ढूँढो तो भी नहीं मिलेगी। वह लायक बीवी हमदर्द पड़ौसिन और एक नेक औरत है। उसकी बराबरी हर घरवाली नहीं कर सकती।"

"यही तो मैं भी कह रहा हूँ कि उन दोनों मियाँ-बीवी ने आपस में सलाह की होगी तभी नूरमहल तुम्हारे पास आयी और अपना मसला पेश किया।"

"तो अब होना क्या चाहिये ?"

"मैं क्या बतलाऊँ अमीना ?"

"मैं भी परेशान हूँ और मेरी भी समझ में कुछ नहीं आ रहा।"

"मगर एक बात है अमीना।"

"वो क्या ?"

"लड़की आराम से रहेगी और जावेद उसे अपनी जान से भी ज्यादा अजीज मानेगा।"

"हाँ यह बात तो है।"

"दे दो नादिरा को, वह हमारी आँखों के सामने ही रहेगी। हम देखेंगे, खुश होंगे। औलाद तो कोई भी गोद ले ले मगर वह भूल नहीं सकती कि उसके माँ-बाप कौन हैं ?"

"तो तुम्हारी राय यही है ?"

"हाँ।"

"फिर मेरे पास सिर्फ कादिर रह जायेगा।"

"यह तुम्हारी भूल है अमीना।"

"कैसी भूल ?"

"रहमान तुम्हारी आँखों के सामने ही रहता है। वह तुम्हें रोज मिलता है और ऐसे ही नादिरा भी रहेगी। वह बेटी तुम्हारी ही कहलायेगी।"

"जैसा समझो वैसा करो ।"

यह कहते-कहते जब अमीना उदास हो गयी और उसका कण्ठ भर आया तो असलम ने उसे समझाया और ढाढस बंधाता हुआ सरल स्वर में बोला—"तुम माँ हो अमीना ! औलाद की जो कसक तुम्हें वह मुझे नहीं हो सकती यह बिल्कुल सही है लेकिन यह तो सोचो कि तुम्हारी लड़की अच्छे घर में जा रही है और वहाँ उसकी अच्छे ढंग से परवरिश होगी, उसे इलम मिलेगा, उसमें लियाकत आयेगी और वह होनहार बनेगी ।"

"सब जानती हूँ और सब मालूम है ।"

यह कहकर अमीना ने एक दीर्घ-उच्छ्वांस ली और उसका दिल भर आया । उसके आंसू गिरने को ही थे ऐसे में ही असलम ने उसके दिल के घाव पर तसल्ली का मरहम रख दिया और वह धीरे से बोला—"जिसके एक ही औलाद होती है वह अपने सारे अरमान उसी से पूरे कर लेता है । नादिरा शहजादी बनकर रहेगी और उससे शादी करने कोई शहजादा ही आयेगा । मन में हिचक मत लाओ और दिल कड़ा करके नूरमहल की बात रख लो । वह जिन्दगी भर तुम्हारे काम आयेगी ।"

इस तरह असलम और अमीना न जाने कितनी देर तक बातें करते रहे और अन्त में वे इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि वे नूरमहल से इन्कार नहीं करेंगे और लड़की उसको गोद दे देंगे चाहे उनकी वाह-वाह भले ही न हो मगर उन्हें तसल्ली रहेगी ।

× × ×

"मैं कुर्बान जाऊँ अल्लाहताला ने मेरी मुराद पूरी कर दी । तुमने कुछ सुना ?"

"क्या बात है । बेगम ! आज बहुत खुश नजर आ रही हो ।"

"आज का दिन ही ऐसा है ।"

"कैसा ?"

"आज खुशियां मनाओ । खुशी के गीत गाओ और यह भूल जाओ कि हम लोग बे औलाद थे ।"

"क्या मतलब ? मैं कुछ समझा नहीं ?"

जब जावेद ने यह कहा तो नूरमहल खूब जोर से हंसी और हंसते-हंसते बोली—"अमीना ने मेरी बात मान ली और उसने नादिरा को मुझे दे डाला ।"

"यह तो सोने मे सुहागा है बेगम ! तभी तुम इतनी खुश हो ।"

दम्पत्ति प्रसन्नता के आवेग में झूम उठे । वह दिन योजनायें बनाने में बीत गया और रात सपनों की दुनिया लेकर आयी । सपने में नूरमहल ने देखा कि उसके आँचल से दूध बह रहा है और नादिरा छोटी सी दूधमुँही बच्ची है जिसके मुंह से

लार बह रही है। सवेरे जब वह सोकर उठी तो खुशी से फूली न समा रही थी और उसने देखा कि जावेद के होठों पर भी मुस्कान है। उसका मनमयूर नाच उठा और वह खुशी से बावरी हो उठी।

× × ×

उस दिन सब ने जाना कि जावेद ने असलम की बेटी नादिरा को गोद लिया है। जैसी धूम-धाम अहमद के यहाँ हुई थी उससे कहीं बढ़-चढ़ कर जश्न मनाया गया। नूरमहल का स्नेह नादिरा के प्रति पहले से ही अटूट था, अब तो वह उस पर जान देती और बलि-बलि जाती और वह उसकी बलायें लेती नहीं थकती। जिस प्रकार जरीना के आग्रह पर रहमान के लिये घर पर मौलवी रखा गया, ठीक उसी भांति नादिरा की पढ़ाई की व्यवस्था घर पर ही कर दी गयी। वह शहजादियों की तरह रहती और उसका खूब लाड़-प्यार होता।

यद्यपि अमीना को मन ही मन मलाल था वह अपने में दुःखी थी लेकिन फिर भी उसे तसल्ली थी कि उसकी बेटी अच्छे घर पहुँच गई है और वहाँ उसे किसी भी तरह का अभाव नहीं रहेगा। नादिरा घर आती तो वह भूल जाती कि उसने अपनी बेटी को गोद दे दिया है!

ऐसे ही नादिरा भी माँ का प्यार भुला न पाती और वह उसमें खो जाती। असलम खुश था। दम्पत्ति कादिर का भविष्य उज्जवल बनाने की योजना बनाने लगे। अमीना कहती कि रहमान के लिये मौलवी लगा है और उसकी पढ़ाई पर खूब ध्यान दिया जा रहा है। नादिरा भी पढ़ रही है और नूरमहल उसे तनिक देर के लिये भी अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देती। उन दोनों बच्चों की किस्मत अच्छी थी जो इस घर से चले गये। यहाँ तो वही पुराना रोना है कि यह नहीं वह नहीं। मैं कहती हूँ कि आखिर कादिर का क्या होगा? उसके लिये तुमने क्या सोचा है?

इस पर असलम सिर खुजलाने लगता और गहरी चिन्ता में डूब जाता। अन्त में विवश होकर उसके मुँह से एक दीर्घ उच्छवास निकलती और वह दुखिया मन से कहने लगता—"बेगम! जब गरीबी और मुसीबतें आदमी की कमर तोड़ देती हैं तो वह कुछ भी सोच नहीं पाता और कुछ भी नहीं कर पाता। उसके सारे रास्ते बन्द हो जाते हैं और चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा छा जाता है। मैं भी कभी अन्धेरे से उजाले में आऊँगा मगर यह नामुमकिन सा हो गया है। कुछ मत कहो बेगम! मुझे कादिर का खुद ख्याल है और मैं उसे जल्दी ही रास्ते पर डालता हूँ। अगर अल्लाहताला ने चाहा तो मैं भी मौलवी बुलवाऊँगा और वह कादिर को पढ़ाया करेगा।"

"आसमान को मत छुओ और जमीन पर ही चलो! इन्सानियत यही कहती है। कादिर को मकतब भेजो। वह वहाँ उर्दू और फ़ारसी सीखेगा।"

"अच्छा मकतब ही भेज दूंगा। वैसे मैंने सोच रखा है कि कादिर को अरबी पढ़ाऊँगा क्योंकि मुगल-दरबार में अरबी जानने वालों की बड़ी इज्जत होती है।"

"अरबी जब पढ़ाना हो तब पढ़ाना मगर अभी लड़के को मकतब भेजो और उसके लिये कागज-किताबें खरीदो।"

असलम ने हाँ में सिर हिला दिया। अब वह बहुत कुछ संयत हो चुका था और अपने में संभल चुका था। जाहिदा को वह एकदम भूल चुका था और उसके कोठे की ओर आँख उठाकर भी नहीं देखता। जब हाथ में पैसा होता और जुआ खेलने की तलब लगती तो अपने मन को मार लेता और इच्छा को दबोच डालता। हाँ पीने की आदत उसकी जरूर नहीं गई हालाँकि उसके लिये भी वह निरन्तर प्रयत्नशील था।

अब इन दिनों असलम आधी से ज्यादा तनख्वाह घर लाता और वह अमीना के हाथ पर रखता। अमीना के लिये इससे बढ़कर दूसरी खुशी क्या हो सकती थी। वह देखती और असलम भी कुछ कह नहीं पाता। कभी जरीना घर-गृहस्थी का सामान ले आती और शिकवा करने पर कहती कि यह सब कादिर के लिये है।

ऐसे ही नूरमहल भी नहीं चूकती और वह अमीना का घर भरे रहती। कादिर का भी दोनों को ख्याल था। अगर जरीना उसके लिये कपड़े बनवाती तो नूरमहल जूतियाँ पहनाती। अहमद टोपी लाता तो जावेद उसे ईद पर पहनने के लिये बढ़िया रेशमी कपड़े बनवाता।

आखिर वह दिन भी आया जब कादिर की पढ़ाई शुरू हो गयी। अमीना परवरदिगार से दुआ करती और उसके सामने आंचल पसार कर भीख माँगती। वह आंसू बहाती और मौन स्वरों में कहती कि दुनिया के मालिक तू सबकी बिगड़ी बनाता है मेरी भी सुन ले। मेरी बिगड़ी बना दे और अब चैन से रहने दे चाहे रूखी-सूखी दे।

कुछ लोग तो यह कहते कि अमीना और असलम ने अपनी गरीबी से तंग आकर अपने दोनों बच्चे गोद दे दिये। इससे उनका फायदा हुआ और वह जिन्दगी भर मजे में रहेंगे। अहमद उनकी मदद करेगा और जावेद भी पीछे नहीं रह सकता। नूरमहल और जरीना तो दोनों दरियदिल औरतें हैं और उनका क्या कहना।

मगर दुनिया के न जाने कितने मुँह होते हैं कोई कुछ कहता है तो कोई कुछ। किसी की भी जबान पकड़ी नहीं जाती। जहाँ चार बुराई करने वाले होते वह आलोचना ही आलोचना करते मगर वहाँ कुछ भले लोग भी होते जो अच्छाई को सामने लाते और उस पर प्रकाश डालते कि असलम का कलेजा हाथ भर का

है जो अपना लड़का अहमद को दे दिया। औलाद कलेजे का टुकड़ा होती है और उसे कोई किसी को नहीं देता। अमीना भी अपने में एक है। वह माँ धनी है जिसने हँसते-हँसते अपनी बेटी नूरमहल को दे दी। उसने दूसरे की मुराद पूरी कर दी और खुदा उसका भला करे।

यह सब कुछ होते हुए भी असलम के घर की हालत पहले जैसी ही थी मगर उसमें थोड़ा सुधार जरूर हुआ। दम्पत्ति अपनी कोशिश में पीछे नहीं थे। इसका एक मूल कारण था जिसे असलम भी भली-भांति पहचानता था। जब से वह हिन्दुस्तान आया उस पर न जाने कितना कर्ज हो गया। जिसे वह आज तक चुका नहीं पाया और सूद बराबर बढ़ रहा था। जब लोग तकाजा करते तो वह शर्मिन्दा हो जाता और उसके पास कोई भी जवाब नहीं रहता। वह धीरे-धीरे कर्ज चुका रहा था इसीलिये घर की हालत पतली थी।

अमीना को इससे संतोष था। असलम ने उसके सामने कसम खायी थी कि आगे से वह कभी उधार नहीं लेगा। बख्शीश और इनाम इखराम से ही अपने निज की जरूरतें पूरी करेगा और बदनामी की चादर जो उसके गुनाहों ने उसे ओढ़ा रखी है वह उसे जल्दी से जल्दी उतार फैंकेगा। आदमी गिरता है गिरकर उठता है और फिर चलता है यही जिन्दगी है जो चलेगा ही नहीं वह गिरेगा क्या। एसे लोग जानवरों में अजगर और मनुष्यों में धनवान कहलाते हैं। मुझे इन्सान बनना है और दुनिया में रहकर अपना फर्ज पूरा करना है।

इस तरह जिन्दगी के दिन आगे बढ़ रहे थे। रातें अपनी कहानी कहती और दिन रोज नया संसार बसाता। इतिहास प्रसिद्ध खानवा का युद्ध हो चुका था। चित्तौड़ के महाराणा सांगा के झंडे के नीचे सभी राजपूत राजा इकट्ठे हुए। खानवा के मैदान में दो लाख राजपूतों ने मुगलों से टक्कर ली लेकिन आपसी फूट के कारण उनकी पराजय हुई। बाबर को भी इस युद्ध में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। पानीपत के भयंकर युद्ध से उसके सैनिक निराश और थक गये थे। वे अपने देश को वापस लौटना चाहते थे। अतः बाबर ने अपने सैनिकों को उत्साहित करने के लिए एक प्रभावशाली भाषण दिया। उसने कहा—"मेरे सरदारों और सैनिकों, हर कोई जो विश्व में आता है मरता भी अवश्य है जब हम मर कर चले जाते हैं तब केवल अल्लाह पीछे रहता है और वह नहीं बदलता है। जो कोई भी जीवन भोज में भाग लेने आता है भोज समाप्ति से पहले मौत के प्याले से मदिरा अवश्य पीता है। जो कोई इस मरण की सराय पर पहुंचता है अवश्य एक दिन सुख-दुःख अर्थात् संसार से जायेगा। तो क्या ही अच्छा हो कि अपमान के इस जीवन की अपेक्षा वह मान की मौत को प्राप्त हो यदि हम युद्ध में लड़ते मारे जायेंगे तो हम शहीदों की मौत मरेंगे। यदि हम जीवित रहे तो हम विजयी होकर निकलेंगे तो आओ हम एकमत होकर अल्लाह की शपथ खायें कि हममें से कोई भी

युद्ध से पीठ नहीं दिखायेगा जब तक कि उसकी आत्मा शरीर से अलग नहीं हो जाती।"

इस भाषण के परिणाम-स्वरूप मुगल सैनिकों में उत्साह का संचार हो गया और उन्होंने एक स्वर में युद्ध से पीछे न हटने की शपथ ली।

सतरह मार्च पन्द्रह सौ सताइस ईस्वी की प्रात: काल नौ बजे राजपूतों और मुगलों में भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो गया था। इस युद्ध में राजपूत सेना का संचालन सांगा के हाथ में था और मुगलों का नेतृत्व बाबर कर रहा था। चालीस हजार मुगलिया सैनिकों ने दो लाख राजपूतों को हरा दिया। इस युद्ध के बाद बाबर की धाक जम गई और वह पूर्णतया निश्चिंत हो गया। उसके सभी सिपाही खुश थे। कोई भी सैनिक ऐसा नहीं जो उसकी प्रशंसा न करे। सभी कहते कि वह शेर है और एक शेर अकेला ही जंगल में राज्य करता है। उसका सितारा बुलन्द है और उसके सौभाग्य का सूरज कभी अस्त नहीं हो सकता।

आठवाँ

शहनशाह बाबर सबसे पहले एक मनुष्य था। सात साल की उम्र से उसने उत्तरदायित्व अपने ऊपर ओढ़ा और जब बारह वर्ष का हुआ तो छोटी सी रियासत का शासक बन गया। जो उसके बुजुर्गों की थी।

इस बादशाह ने शुरू से लेकर आखिर तक कठिनाइयों का मुकाबला किया और हमेशा उसकी जीत हुई। उसने हिम्मत कभी नहीं हारी। वह साक्षात् जीवट का पुतला था। पराक्रम में उसे आनन्द मिलता और परिश्रम से घबराता नहीं। यही कारण था कि हमेशा उसमें स्फूर्ति बनी रहती। उसकी दृष्टि सर्व व्यापक थी। वह सदा अपने बाहुबल पर भरोसा रखता।

बाबर में एक नहीं अनेक खूबियाँ थीं जिनका बयान नहीं किया जा सकता। हरम, दरबार और सेना का तो वह ख्याल रखता ही था साथ ही प्रजा का भी दुख-दर्द देखता। प्रजा की सुख सुविधा के लिये हमेशा प्रयत्नशील रहता। ऐसा कोई नहीं जो सम्राट् के सामने न जा सके और अपनी बात कह न पाये।

जब बाबर को सैनिकों की टुकड़ियाँ परेड़ करते समय सलाम करती तो वह एक-एक चेहरे को गौर से देखता। उसकी दृष्टि इतनी सूक्ष्म थी कि वह एक क्षण में ही यह जान लेता कि कौन खुश है और कौन उदास। यही नहीं बाबर को यह भी पता रहता था कि उसका कौन सैनिक गुमराह हो रहा है और कौन राह पर चल

रहा है। उसे यह सब गुप्तचरों द्वारा विदित होता रहता था।

असलम के बारे में भी बाबर ने सुन रक्खा था कि वह हमेशा फटे-हाल रहता है। कुनबा छोटा है लेकिन फिर भी वह उसकी परवरिश नहीं कर पाता इससे बाबर को दुःख पहुँचता।

अमावस की रात थी। चिल्ला जाड़ा पड़ रहा था। असलम ने काली चादर ओढ़ रखी थी। यूँ तो उसकी जेब खाली थी मगर जब घर लौट रहा था तो रास्ते में एक यार मिल गया जो मदिरालय का पुराना खिलाड़ी था। जब उसकी जेब में पैसे होते तो लोगों को खूब दिल खोल कर पिलाता। किसी को बड़ा भाई बनाता और किसी को दोस्त कहता। बदले में उसे भी लोग पिलाते। आज उसने असलम को खूब पिलाई और वह बेकाबू हो चुका था।

बाबर को बहुत कम समय मिलता। वह दिन में तनिक देर के लिये भी विश्राम नहीं कर पाता और हमेशा राज्य व्यवस्था में ही लगा रहता। रात को थोड़ी देर के लिये ही सोता और सवेरे जल्दी ही उसकी आँखें खुल जातीं। वह कभी-कभी पोलो खेलने के लिये चला जाता था। आज आधी रात को जब पोलो खेलकर लौट रहा था तो सहसा घोड़ा रुक गया और वह हिनहिनाने लगा। बाबर ने जल्दी से चकमक पत्थर जलाया और उजाले में देखा कि वह एक मुगल सैनिक था जिसके सिर पर मुगलिया टोप था।

पत्थर का क्षणिक प्रकाश तत्काल ही लुप्त हो गया। सम्राट् घोड़े से नीचे उतरा और पुनः रोशनी की तो देखा कि वह उसका सैनिक घुड़ सवार असलम है। बाबर समझ गया कि असलम नशे में है। वह बेहोशी की हालत में यहाँ रास्ते में पड़ा है। उसे तरस नहीं आया और न ही उसने रहम खाया बल्कि वह मन ही मन आग बबूला हो उठा। असलम को हिलाया-डुलाया लेकिन उसमें कोई भी हरकत नहीं हुई।

इस पर बाबर को तेजी का गुस्सा आ गया और वह अपने को रोक नहीं पाया। उसने जल्दी से असलम को उठाकर घोड़े पर डाला और किले की ओर चल दिया।

× × ×

अमीना ने सारी रात रात देखी मगर असलम घर नहीं आया। वह समझ गई क्योंकि यह उसके लिये कोई नयी बात नहीं थी। उसका अन्तः करण कहता कि बहके कदम फिर बहक गये होंगे। गलत लोग कभी सुधरते नहीं। वे कभी राह पर नहीं आ सकते। दुनिया यही कहती चली आयी है और यही होता है। जरूरत से ज्यादा पी ली होगी इसीलिये वहीं मयखाने में पड़े होंगे।

जब दिन चढ़ आया और छज्जे पर से धूप आँगन की दीवारों पर उतरने लगी तो अमीना चौंकी कि अब तो नशा उतर चुका होगा और उन्हें घर आना चाहिये था।

क्या बात हो गयी ? कहीं नशे में गिर तो नहीं पड़े ? किसे भेजूं और किस से कहूँ ?

जब दोपहर से तीसरा पहर आ गया तो अमीना को चिन्ता और अधिक बढ़ गयी। उसका मन नहीं माना वह अहमद के घर गयी। संयोग की बात थी कि अहमद घर पर ही मिल गया। उसने जब अमीना की बातें सुनी तो चिन्ता में डूब गया कि आखिर असलम रहा कहाँ ? अमीना को उसने बतलाया कि रात को असलम उसके सामने घर चला था फिर आगे क्या हुआ इसका उसे मालूम नहीं। अभी जाकर वह पता लगाता है कि वह कहाँ है और घर क्यों नहीं आया और जैसे ही असलम उसे मिलेगा वह फौरन घर भेज देगा। अमीना को इससे कुछ तसल्ली हुई और वह घर लौट आयी और खुदा की इबादत करने लगी।

रात अपनी पूरी जवानी में आ गई थी। अमीना बार-बार आंगन से चौखट पर जाती और वह राह पर आंखें बिछा देती और देर तक खड़ी पथ निहारती रहती किन्तु उसकी आशा निराशा में बदल जाती। वह ऊब-ऊब कर लम्बी सांसें लेती और अपने में परेशान हो जाती।

अहमद ने आकर अमीना को बताया कि असलम का कोई पता नहीं लगा। हर सिपाही से पूछा मगर सबने एक ही जवाब दिया कि आज तो मैंने असलम को देखा ही नहीं। हाँ, कल अलबत्ता रात को देखा जब मनसबदार घुड़सवारों की हाजिरी ले रहा था।

अमीना रोने लगी। उसके आंसू धार बनकर बह रहे थे। वे एक क्षण के लिये भी नहीं रुकते। अहमद की भी आँखें भर आईं और उसने उसे गीले स्वर में समझाया और आश्वासन देता हुआ बोला—"रोओ मत अमीना ! इससे कोई फायदा नहीं। असलम भाई जायेंगे कहाँ मैं उन्हें ढूंढकर लाऊँगा। लगता है कि किसी दोस्त के चक्कर में पड़ गये हैं तभी नहीं आये। तसल्ली रखो और अल्लाह से दुआ करो कि वे जल्दी ही घर आ जायें !"

किन्तु अमीना रोती रही, वह बार-बार आंसुओं को आंचल से पोंछती और सिसकियाँ लेती। उसका उमड़ा हुआ दुख तनिक भी कम नहीं हुआ और वह अपने में अधीर हो रही थी।

जब अहमद चला गया तो भी अमीना सोयी नहीं। उसने कुछ खाया भी नहीं और सारी रात जागती रही। कभी रोती, कभी सिसकती और कभी आंसू पोंछने लगती। सारी रात अमीना ने यूँ ही गुजार दी। सवेरे आईने में जब उसने अपनी सूरत देखी तो आँखें लाल हो रही थीं पलकों पर सूजन आ गयी और चेहरे पर सफेदी। एक बार अमीना के मन ने कहा कि कहीं कोई अनहोनी तो नहीं हो गयी। खुदा ऐसा न करे उन्हें कुछ हुआ हो और वे सही सलामत घर आ जायें।

बात फैल चुकी थी और सभी सैनिकों इसकी चर्चा थी। जावेद ने सुना

तो उसे बहुत दुःख हुआ और उसने भी असलम की खोज की। उसने तलाश में कुछ भी उठा नहीं रखा मगर कामयाबी नहीं मिली। यह अमीना की बदकिस्मती थी।

जावेद और नूरमहल दोनों अमीना के घर आये। उन्होंने उसे ढाढस बंधाया और उसे तसल्ली देते रहे। सभी परेशान थे कि आखिर असलम चला कहाँ गया? वह आया क्यों नहीं?

अमीना का मन नहीं माना और उसने पड़ौसिन बुढ़िया लतीफन को जाहिदा के कोठे पर भेजा मगर वहाँ मालूम हुआ कि एक लम्बी मुद्दत से असलम कोठे पर नहीं आया। ऐसे ही मयखाने में भी खोज की गयी मगर कुछ भी नतीजा नहीं निकला। असलम के जितने दोस्त थे उन सबने भी इन्कार कर दिया कि इस बीच असलम उन्हें मिला ही नहीं।

तीसरी रात भी बीत गयी और असलम वापस घर नहीं आया। अमीना को जमीन-आसमान नजर आने लगे। अगर बच्चे साथ न होते तो वह चूल्हा भी न जलाती। उसे लग रहा था कि असलम शायद इस दुनिया में नहीं रहा। वह नशे की हालत में किसी कुएँ-खाई में गिर पड़ा होगा और वहीं उसकी मौत हो गयी होगी।

मगर अमीना अपने मन की शंका किसी पर भी व्यक्त नहीं करती। वह भीतर ही भीतर घुटती और दीर्घ उच्छवास लेती। उसे उजाले में भी अंधेरा लगता और उसकी आत्मा चीत्कार कर उठती। कादिर भी परेशान था। वह अपने बाप की तलाश में दिन भर भटकता। लोगों की सहानुभूति उसके साथ थी। जब कोई समझाता तो वह रोने लगता। अमीना अगर पर्दा न करती होती तो वह स्वयं गली-गली, कूँचे-कूँचे अपने शौहर को ढूँढती। मगर मजबूरी थी मर्यादा भंग करना उसके वश की बात नहीं थी।

धीरे-धीरे पांच दिन बीत गये। जो सुनता वही ताज्जुब करता। कुछ लोग तो यह कहते कि वह परिवार से परेशान था इसीलिए घर छोड़कर चला गया है और कभी नहीं आयेगा।

× × ×

मुगल सम्राट् बाबर का दरबार लग रहा था। बादशाह चाँदी के ऊँचे सिंहासन पर बैठा था। खिदमदगार पीछे खड़े उस पर चँवर डुला रहे थे। दरबार में ऐसा सन्नाटा था कि अगर सुई भी गिरती तो साफ सुनायी पड़ता। अमीर अपनी-अपनी कुर्सियों पर बैठे एकटक सम्राट की ओर देख रहे थे। अंगरक्षक पूर्णतया सतर्क थे। ओहदेदार, मनसबदार, सेनापति ऐसे ही सभी मुख्य दरबारी उपस्थित थे।

बाबर ने अपने दरबार को ठीक उसी प्रकार सजाया था जैसा उसका काबुल का दरबार था। सभी लोग इस प्रतीक्षा में थे कि अब दरबार की कार्यवाही आरम्भ

होगी लेकिन देर हो गयी। बाबर अभी मौन था।

सहसा वातावरण भंग हुआ और सम्राट् की आवाज सुनाई दी "मुलजिम घुड़सवार असलम को हाजिर किया जाये। मा-बदौलत पहले उसका मुकदमा सुनेंगे।"

अब लोग चौंके ? जिन सैनिकों ने सुन रक्खा था कि असलम कई दिनों से लापता है उनके कान खड़े हो गये। देखते ही देखते बन्दी असलम बाबर के सामने लाकर खड़ा कर दिया गया। उसके हाथ-पैर लोहे की जंजीर से जकड़े थे। चेहरे पर मुर्दनी छा रही थी और देखने में भी वह मुर्दा जैसा ही लगता था। उसकी दृष्टि नत हो रही थी और वह बहुत घबराया हुआ सा था।

सम्राट् ने असलम की ओर देखा और फिर तेज गले से बोला—"तुम्हारे जैसे सिपाही मुल्क में अमन नहीं रख सकते असलम। इसका मुझे निहायत अफसोस है। मैंने शराब छोड़ दी और ऐसे लोगों को अच्छी निगाह से नहीं देखता। मेरी फौज में ऐसा कोई भी आदमी नहीं रह सकता जिसमें तुम्हारे जैसी लत हो। बोलो तुम्हें क्या सजा दी जाये, मैं तुम्हारे मुँह से ही सुनना चाहता हूँ ?"

बाबर का सवाल हो चुका था। जवाब असलम को देना था। तभी सम्राट् के पास खड़े एक मुगल अधिकारी ने असलम का अपराध उसे पढ़कर सुनाया कि वह एक जिम्मेदार आदमी है और सेना का घुड़सवार है उसे शराब छूनी भी नहीं चाहिये लेकिन वह उसका ऐसा आदी है कि बेतहाशा पी लेता है। उसे होश नहीं रहता कहीं नाली में गिरता तो कहीं सड़क पर।

असलम ने धीरे-धीरे अपना झुका हुआ सिर ऊपर उठाया फिर डरते-डरते दबी जबान से बोला—"जहाँपनाह ? मुझ माफ कर दिया जाये मैं कुसूरवार हूँ। अपने गुनाह की माफी चाहता हूँ। अब आईन्दा ऐसी गलती नहीं होगी।"

बाबर के तेवर चढ़ रहे थे। उसकी आँखों में गुलाबी डोरे थे। वह रोष भरे स्वर में बोला—"गुस्सा तो मुझे इतना आया था कि तुम्हारा सिर धड़ से अलग कर दूँ लेकिन फिर कुछ सोचकर रह गया। अच्छा एक बार फिर तुम्हें मौका देता हूँ। सभी दरबारियों के सामने कुरान शरीफ की कसम खाओ कि तुम आगे से दारु पीना तो दूर रहा छुओगे भी नहीं। तुम्हारे बच्चों पर तरस खाता हूँ वरना तुम्हारे लिये तो मौत की सजा ही सोची थी।"

जैसे ही लोहे की जंजीरें खोली गयीं असलम सम्राट् के पैरों पर गिर पड़ा और रोने लगा। सभी दरबारी वाह-वाह करने लगे। सबने मौन स्वरों में यही कहा कि हमारा बादशाह बहुत ही रहम दिल है।

असलम जब घर आया तो अमीना उससे कुछ नहीं बोली क्योंकि उसको सारा हाल पहले से ही मालूम हो चुका था। असलम ने अमीना को अपनी सारी कहानी सुनायी और फिर दुखी होकर बोला—"बेगम ? बहुत बड़ी गलती हो गयी।

मैं बादशाह की नजरों में आ गया। खुदा ने खैर की वरना जान चली जाती। मेरा समझ में तो यही आता है कि अब शाही नौकरी करना ठीक नहीं।"

"जो हुआ उसे भूल जाओ। बीते दिन बीती बातें फिर लौट कर नहीं आतीं। सुबह का भूला शाम को घर आता है यह तो तुमने सुना ही होगा। अपने मन को मारो इसी में ही तुम्हारी जीत होगी। रह गयी नौकरी की बात तो उसके लिये मैं यह राय कभी नहीं दूंगी कि तुम छोड़ दो।"

'क्यों ?"

"जो इज्जत शाही नौकरी में है वह दूसरे काम में नहीं मिल सकती।"

"यह सही है बेगम ? मगर मुझे डर लगता कि···।"

"क्या ?"

"यही कि अब की बार शहंशाह मुझे माफ नहीं करेंगे।'

"मैं कहती हूँ कि तुम ऐसा काम ही क्यों करो जो यह नौबत आये। आदमी को चाहिये कि वह शान से जिये और वह रूखी-सूखी खाकर अपनी गुजर करे।"

इस पर असलम कुछ नहीं बोला और वह खामोश ही रहा। तभी उसने देखा आगे-आगे जरीना और पीछे-पीछे अहमद आ रहा है। रहमान भी दौड़ता हुआ आया आते ही अमीना की गोद में बैठ गया। अमीना ने उन्हें सम्मान पूर्वक बिठाया और उनकी आव-भगत की।

अभी सब में बातें चल ही रही थीं कि प्रवेश द्वार पर नूरमहल आती दिखलायी दी, वह नादिरा की उंगली पकड़े थी और पीछे जावेद था। बस फिर क्या था देखते ही देखते अमीना के घर में खुशी की लहर दौड़ गयी। बच्चे प्रसन्नता से फूले नहीं समा रहे थे। अमीना जल्दी से बावर्ची खाने में गयी और उसने जल्दी से हलुवा बनाया। जरीना ने वह सब तक पहुँचाया और इस तरह सबका मुँह मीठा हुआ।

उस रात असलम को नींद नहीं आयी। वह सारी रात जागता रहा तथा करवटें बदलता रहा। उसे अपने पर बहुत ग्लानि आ रही थी। वह लगातार अपने विषय में ही सोचता रहा।

नौ

सारी प्रजा में यह खबर हवा की तरह फैल गयी कि शहनशाह बाबर का सब से बड़ा शहजादा हुमायूँ सख्त बीमार है, उसकी हालत अच्छी नहीं है। शाही हकीम हैरान हैं, उसे तनिक भी फायदा नहीं पहुँच रहा। बादशाह ने खाना छोड़ रखा है, वह हुमायूँ को बहुत चाहता है इसीलिए दिन-रात खुदा की इबादत करता कि उसका बेटा ठीक हो जाये।

जो सुनता वही दुखी हो जाता। अपने सम्राट् में सभी को श्रद्धा थी, जो रियाया इससे पहले सम्राट् इब्राहीम लोदी से घृणा करती थी, वही बाबर को श्रद्धा की दृष्टि से देखती।

बाबर ने खूब खैरात लुटाई। भूखों और कंगालों को जी भर कर दान दिया। वह हर क्षण, हर कदम पर खुदा की इबादत करता और परवरदिगार से यही दुआ माँगता कि उसका शहजादा शीघ्र ही बीमारी से अच्छा हो जाए।

लेकिन हुमायूँ की हालत चिन्ताजनक होती जा रही थी। शाही हकीमों के चेहरे सफेद थे, उनके मुँह से बोल नहीं निकल रहे थे। वे पूरी तरह प्रयत्नशील थे मगर दवाइयाँ काम नहीं कर रही थीं। हुमायूँ को कोई भी लाभ नहीं हो रहा था।

जिस हरम में दिन-रात खुशी का वातावरण रहता था अब वहाँ मौन छाया हुआ था। सभी के चेहरे उदास थे। दरबारी भी चिन्ता के सागर में गोते लगाते। सेना में भी क्षोभ था, और क्यों न होता? हुमायूँ उदार, दयालु और एक दरिया-दिल इन्सान था।

अन्त में जब बाबर निराश हो गया तो उसने दोनों हाथ बाँधे और फिर हुमायूँ के पलंग के सात चक्कर लगाए। वह रो रहा था और सूखे कण्ठ से कह रहा था—"खुदा, मेरे अल्लाह मेरी गुजारिश सुन ले। मेरे शहजादे को जिन्दगी दे और मुझे उठा ले। औलाद खोकर मैं जीना नहीं चाहता। परवरदिगार! मुझे मौत दे और हुमायूँ को अच्छा कर दे।"

बाबर निष्कपट, निश्छल और स्वावलम्बी था। उसकी लग्न सच्ची थी। दुनिया के मालिक ने उसकी पुकार सुन ली और लोगों को आश्चर्य हुआ जब हुमायूँ स्वस्थ होने लगा और बाबर ने चारपाई पकड़ ली।

दिनों का कारवां आगे चलता रहा। उसकी मंजिल अबाध गति की थी वह निरन्तर चल रहा था। जिस दिन हुमायूँ ने चारपाई छोड़ी खूब खैरात बँटी, जश्न मनाया गया। किले में ही नही बल्कि पूरे दिल्ली शहर में रोशनी हुई। परन्तु जनता में अब पहले जैसा उत्साह नहीं था क्योंकि बादशाह बाबर बीमार हो गया था।

असलम और अमीना भी पूरी तरह दुखी थे, दम्पत्ति अल्लाह ताला से यही

दुआ करते कि उनका शहंनशाह अच्छा हो जाए। वह इन्सान नहीं बल्कि हम सब का खुदा है। ऐसे ही जावेद और नूरमहल भी कुरान-शरीफ का पाठ करते और पीर के मजार पर फूल चढ़ाते। इस समय हर मस्जिद में पाँच बार नमाज़ पढ़ी जाती और अजान होती तो लगता कि बाबर की आत्मा बोल रही है।

शाही हकीम निराश हो चुके थे परन्तु नतीजा कुछ भी नहीं निकला और कुछ दिन पश्चात् बाबर यह दुनिया छोड़ कर चला गया।

× × ×

बाबर के मरने के बाद कुछ दिन तक तो शांति रही फिर उसके बाद अशांति ने एक अकेले हुमायूँ को ही नहीं बल्कि पूरी दिल्ली और आगरा को भी घेर लिया। हुमायूँ परेशान हो उठा। अभी वह गद्दी पर ही बैठा था कि उस पर चारों ओर से मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़े।

यह सब उसकी दयालुता का परिणाम था। वह कर्त्तव्यपरायण और नेक दिल बादशाह था।

बाबर ने मरते समय हुमायूँ को जो गुप्त वसीयत की थी वह उसी के अनुसार चला। किन्तु जिनके लिए उसने त्याग किया वे ही उसके दुश्मन बन गए। सगे भाई बदल गए और खून ने खून को नहीं पहचाना, सभी उसके लिए गैर हो चुके थे।

बाबर ने अपनी वसीयत में लिखा था कि हुमायूँ तुम मेरे उत्तराधिकारी हो। हिन्दुस्तान में अमन कायम रखना और मुल्क के सभी लोगों के साथ अच्छा सलूक करना। मजहबी मामलों को मिटा देना, ताकि रियाया में आपसी कोई झगड़े-झंझट न हों। गो-वध बन्द करवा देना। मुल्क के किसी भी मन्दिर और पूजा स्थल को कोई नुकसान न पहुँचाना। हिन्दुस्तान की जनता के दिलों को जीतना। इस्लाम की तरक्की करना लेकिन तलवार से नहीं शान से। जहाँ तक हो हर मुसलमान को यही समझाना कि वह शिया और सुन्नी का भेद मिटा दें।

इसके अलावा बाबर ने यह भी लिखा था कि दुश्मनों से सावधान रहना। वे दोस्त बन कर धोखा दे सकते हैं। अपने भाइयों से मेल-जोल रखना और उन्हें उनका उचित हिस्सा देना।

हुमायूँ ने बाप की वसीयत पर पूरा-पूरा अमल किया। वह नहीं जानता था कि उसकी उदारता उसके लिए विष बन जायेगी और यह व्यवहार उसे बहुत महँगा पड़ेगा। उसने कामरान को काबुल तथा कन्धार के प्रदेश दे दिये। यहाँ से राजस्व की अच्छी आमदनी होती और सैनिकों की भरती भी यहीं से की जाती। इस तरह दयालु हुमायूँ ने अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मार ली। उसने केन्द्रीय शासन को निर्बल बना दिया। अस्करी को सम्भल की रियासत दे दी और वह भी उसे पाकर फूला नहीं समाया।

ऐसे ही हिन्दाल को हुमायूँ ने मेवात तथा अलवर के प्रदेश दे दिये। वह

जानता था कि तीनों सगे भाई उसके दाहिने हाथ हैं। उसे उन पर अटूट विश्वास और अगाध स्नेह था। उसे पूर्ण भरोसा था कि जहाँ पर उसके पसीने की एक भी बूँद गिरी वहाँ पर उसके भाई अपना खून बहा देंगे और वक्त आने पर वे अपना फर्ज पूरा करेंगे।

यद्यपि हुमायूँ में एक बहुत बुरी लत थी जिसकी शिकायत बाबर को शुरू से रही। वह अफीम खाता इसलिए हमेशा सुस्त बना रहता। आलस्य से उसका चोली-दामन का साथ था लेकिन फिर भी वह सहृदय था, सज्जनता, परोपकारिता और उदारता तो उसमें कूट-कूट कर भरी थी। उसने अपने चचेरे भाई सुलेमान के साथ भी बहुत ही अच्छा सलूक किया और उसे खुश होकर बदख्शां का प्रदेश दे दिया।

किन्तु हुमायूँ के सभी भाई बहुत ही नीच प्रवृत्ति के निकले। उनकी निगाहें बदल गयीं। वे अपनी-अपनी जगह पर स्वतन्त्र हो गये। दिल्ली सल्तनत से कोई भी सम्बन्ध नहीं रक्खा। हुमायूँ सब कुछ समझ गया लेकिन उसने किसी का भी विरोध नहीं किया। वह जानता था कि इससे अशांति फैलेगी और जनता के भी कान खड़े हो जाएँगे।

बाबर के मरते ही हुमायूँ के प्रबल शत्रु खड़े हो गए। इनमें से एक शेरखाँ था जो बिहार और बंगाल के पठानों का नेता था। गुजरात का सुल्तान बहादुरशाह और जौनपुर का पठान महमूद लोदी; इन तीनों की योजना यह थी कि हुमायूँ पर चढ़ाई कर दी जाये और उसे हिन्दुस्तान से भगा दिया जाये।

यही नहीं हुमायूँ के भाई कामरन ने भी अपनी नीचता का पूर्ण परिचय दिया। उसे काबुल और कन्धार के प्रदेश मिले थे लेकिन उसने पंजाब पर भी अधिकार कर लिया।

अब हुमायूँ की समझ में आ रहा था कि उसने कितनी बड़ी भूल की है। दिल्ली और आगरे के खजाने उसे खाली मिले क्योंकि बाबर ने दौलत को खुले हाथों लुटाया था। हुमायूँ डर रहा था कि अगर दुश्मनों ने हमला कर दिया तो वह उनका मुकाबला कैसे करेगा। युद्धों का सामना खाली खजाने के साथ कभी नहीं हो सकता।

सेना बाबर पर जान देती थी। उससे बड़ी श्रद्धा रखती थी। हुमायूँ से उसे शिकायत थी कि अफीम खाने की उसे बहुत बुरी आदत है। वह सारे दिन आलस्य में ही डूबा रहता है। एक काम को शुरू करके पूरा नहीं करता और बीच में ही अधूरा छोड़ देता है। जरूरत से ज्यादा सब पर मेहरबान रहता है। न तो वह कुशल सेनापति है और न ही योग्य शासक। लेकिन फिर भी हुमायूँ बाबर का बेटा था इसीलिए सभी सैनिक उसका सम्मान करते थे। वे उसकी उन्नति के साथी थे और शुभचिन्तक।

चारों ओर अशांति का साम्राज्य था। हुमायूँ परेशान था। उसे अपनी सेना

पर पूर्ण भरोसा था। उसने अपने साथ एक बहुत बड़ी सेना ली और सब से पहले बिहार की ओर कूच किया। शेर खाँ जो कभी बाबर की सेना में नौकर था वह बागी बन गया। बाबर ने उस पर मेहरबान होकर उसे उसके पिता की रियासत वापस कर दी थी किन्तु उसने पूरे बिहार और बंगाल पर अधिकार कर लिया। हुमायूँ ने चुनार के किले को चारों ओर से घेर लिया। शेरखाँ ने दृढ़ता के साथ हुमायूँ का मुकाबला किया किन्तु उसकी पराजय हुई और मजबूर होकर हुमायूँ से उसे संधि करनी पड़ी।

इसी चुनार के युद्ध में असलम बुरी तरह घायल हो गया। उसका दाहिना हाथ तलवार से कट चुका था और बायाँ पैर बेकार हो गया। वह अपाहिज होकर एक मुद्दत के बाद दिल्ली आया। अमीना पर गाज फट पड़ी और वह खूब फूट-फूट कर रोयी।

× × ×

असलम के बायें पैर की हड्डी टूटी थी। वह जुड़ तो गयी लेकिन सही नहीं हुई और वह जीवन भर के लिए लंगड़ा हो गया। चलने और उठने-बैठने में उसे लाठी का सहारा लेना पड़ता। वह जीवन से निराश हो गया। उसे जिन्दगी बोझ लगने लगी। उसके सारे अरमान मुर्दा हो गए। वह केवल एक जिन्दा लाश की तरह रह गया।

उसका दायां हाथ कोहनी से कटा था और अब केवल बायाँ हाथ ही रह गया। अब वह घोड़े की सवारी भी नहीं कर सकता था। उसकी नौकरी खत्म हो गई और कोई अन्य काम भी उसके वश का न था क्योंकि दाहिने हाथ से अपंग था। कादिर बारह साल का था। वह अभी किसी योग्य भी नहीं था जो गृहस्थी का खर्च चलाता। अमीना ने अपना काम बन्द नहीं किया। उसने लतीफन का सहारा ले रखा था। वह घर पर सिलाई करती, उसे उसकी सिलाई नित्य मिल जाती।

जावेद असलम के परिवार की पूरी-पूरी मदद करता और अहमद भी अपना फर्ज नहीं भूलता। कुछ लोगों ने अमीना को इस तरह समझाया था कि वह सिलाई करके अपनी जीविका कब तक चलाती रहेगी। जावेद और अहमद से इमदाद लेना ज्यादा मुनासिब नहीं। उसे शाही दरबार में जाकर शहंशाह हुमायूँ से गुजारिश करनी चाहिए कि उसका खाविंद लड़ाई में अपाहिज हो गया है और उसे उसके बदले में जिन्दगी के दिन काटने के लिए कुछ मुआवजा दिया जाये। बादशाह दरियादिल इन्सान हैं वह हमेशा गरीबों पर रहम करता है वह उसके हाल पर तरस जरूर खायेगा।

अमीना का साहस नहीं होता कि वह शाही दरबार में जाए और वहाँ जाकर दया की भीख माँगे। कुछ दिन तक तो वह स्वयं ही इस समस्या पर विचार करती रही और जब मन नहीं माना तो एक दिन अपने दिल की बात नूरमहल से कह

दी। नूरमहल ने उसे मना किया। वह बोली—'खुदा के लिए ऐसा न करना अमीना बहन आखिर हम लोग किस दिन के लिए हैं ? नादिरा के अब्बा हुजूर सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?'

अमीना भौंचक्की-सी रह गई। वह नूरमहल का मुँह देखने लगी और ऐसे में ही उसके मुँह से धीरे से निकल गया—'आखिर तुम लोगों का सहारा कब तक लेती रहूँगी। मुझे लिहाज लगता, लेकिन कुछ कह नहीं पाती।'

'तुम पागल हो पागल। तुम्हें मैं समझा नहीं सकती। मैं नादिरा के वालिद से कहूँगी। वे तुम्हें ऐसा नहीं करने देंगे।'

इस तरह अमीना ने जितने भी तर्क पेश किए नूरमहल ने वह सब अपने वितर्कों से खण्डित कर डाले। उसकी एक भी बात नहीं मानी।

घर आकर नूरमहल ने जावेद को सब हाल बताया तो वह गमगीन हो गया और एक लम्बी साँस लेकर बोला—'मैं तो यह पसन्द नहीं करता नादिरा की अम्मी कि अहमद उस घर की मदद करे। दूसरी एक बात और है।'

'वो क्या ?'

'अमीना सिलाई करती है मुझे यह भी नापसन्द है। मैं दोनों घरों का खर्चा आराम से चला सकता हूँ। मैं जाऊँगा अमीना को समझाऊँगा और उसे मना कर दूँगा कि वह शाही दरबार में न जाए। मैं इसे ठीक नहीं समझता।'

जावेद के आने से पहले ही अहमद और जरीना अमीना के पास आ चुके थे। वे भी उसे जोर देकर मना कर गए कि वह हुमायूं के दरबार में न जाए।

अमीना ने सब की सुन ली मगर किसी को कुछ भी जवाब न दिया। अन्त में उसने अपने पति से राय ली तो असलम उदास हो गया। उसके मुँह से एक दीर्घ उच्छवास निकली और वह धीरे से बोला—'कादिर की वालिदा जाना तो तुम्हें जरूर चाहिए। शहंशाह हुमायूँ तुम्हारी बात जरूर सुनेंगे। चाहे थोड़ी ही पूंजी दें लेकिन देंगे जरूर। हाँ, एक बात और याद आ गई। जहाँपनाह से कहना कि वह कादिर को अपनी सेना में ले ले। वह भी एक सिपाही बनेगा और जब तक जिएगा मुगलिया सल्तनत की खिदमत करेगा।'

अमीना ने देर तक पति से बातें कीं लेकिन उसकी हिम्मत ने साथ न दिया जो वह शाही दरबार में जाती। असलम का बुरा हाल था। उसकी मानसिक स्थिति अच्छी नहीं थी। वह दिन-रात सोचा करता। एक मिनट के लिए भी उसे शान्ति नहीं मिलती। कभी-कभी उसके मन में आता कि मैं जीकर क्या करूँगा। मेरी जिन्दगी से कोई भी फायदा नहीं। मैं इस धरती पर एक बोझ हूँ और इसके अलावा कुछ भी नहीं।

असलम के शराबी दोस्त उसके पास नहीं आते थे। जुआरी भी उसे भूल चुके थे। हाँ, कुछ हमदर्द थे जो कभी-कभी आ जाते और उसका दुःख-दर्द पूछ लेते। सच्चे

दोस्तों में अहमद और जावेद थे जो उस पर जान देते थे।

अब असलम को महसूस हो रहा था कि दुनिया क्या है। उसका अन्तःकरण पुकार-पुकार कर कहता कि दुनिया वाले किसी के भी नहीं, सभी मौके के साथी हैं। जिधर से हवा आती है उधर ही पीठ कर लेते हैं। अपना अपना ही होता है। गैर कभी अपना नहीं हो सकता। जावेद और अहमद ने मेरे बच्चे गोद ले लिए, वे हमारे हो गए। इसीलिए हमारा ख्याल रखते हैं और हम पर कुर्बान हो रहे हैं।

दसवाँ

एक दिन हुमायूं अपने अंगरक्षकों के साथ घोड़े पर सवार हो संध्या के समय किले से बाहर हवाखोरी के लिए निकला। वह जमुना के किनारे-किनारे दूर तक चला गया और जब लौटा तो रात हो आई थी। उसका पहला पहर बीतने पर था। चारों ओर चाँदी ही चाँदी बिछी थी। आसमान में चाँद हँस रहा था और तारे भी हीरों की तरह जगमगा रहे थे। बादशाह का चित्त बहुत प्रसन्न था। वह हंस-हंसकर अपने अंगरक्षकों से बातें कर रहा था।

जब हुमायूँ शहरपनाह के भीतर घुसा और फाटक को पार किया तभी एक लड़का सामने आ गया, उसके हाथ में बेला के फूलों के कुछ हार तथा गजरे थे।

शाही सवारी धीरे-धीरे चल रही थी। सम्राट् ने घोड़ा रोक दिया। तभी लड़का और क़रीब आ गया और खुशामद भरे स्वर में बोला—'जहाँपनाह कोशिश करता हूँ। आज किसी ने भी मेरे हार-गजरे नहीं खरीदे, घर जाकर अम्मी को क्या जवाब दूंगा। हुज़ूर आप ले लें। आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।'

अंगरक्षकों ने यह चाहा कि वे लड़के को डाँट कर भगा दें। लेकिन बादशाह मुस्करा रहा था। उसकी मुद्रा लड़के के प्रति सहानुभूतिपूर्ण थी। इसीलिए किसी का साहस नहीं हुआ। सभी मौन थे।

हुमायूं के होठों पर मुस्कान थी और लड़का बराबर कहे जा रहा था—'ताजे फूल हैं बादशाह सलामत! मैंने अपने हाथों तोड़े और खुद ही यह हार और गजरे बनाए हैं।'

'क्या तुम माली हो?'

'जी नहीं।'

हमायूँ ने फिर पूछा—'तो फिर?'

'मैं मुसलमान हूँ।'

'तुम्हारे वालिद क्या करते हैं ?'

'वे अपाहिज हो गए हैं और उनसे अब कोई काम नहीं होता।'

'क्या तकलीफ है ?'

'उनका दाहिना हाथ नहीं है और बयाँ पैर लंगड़ा हो गया।'

'कैसे ?'

'लड़ाई में वे घायल हो गए थे।'

'लड़ाई में।'

'जी लड़ाई में।'

'कौन-सी लड़ाई में ?'

'जब हुज़ूर ने बिहार में शेर खाँ पर हमला किया था।'

'तो क्या तुम्हारे वालिद शाही नौकर थे ?'

'जी हाँ।'

'उनका नाम क्या है ?'

'असलम।'

'असलम।'

'हाँ असलम जो घुड़सवार सिपाही थे।'

सम्राट् कुछ चिन्तित हो गया। वह कई क्षण तक न जाने क्या सोचता रहा फिर लड़के की ओर उन्मुख हो स्नेह भरे स्वर में बोला—'तुम्हारे घर में कौन-कौन है ?'

'अम्मी, मैं और वालिद बाकी दो भाई-बहन और थे।'

'क्या मतलब ?'

'जी सरकार, एक मुझसे छोटा भाई, दूसरी मुझसे छोटी बहन गोद ले लिए गए।'

इसके बाद लड़के ने अपना सब हाल बतलाया कि उसका नाम कादिर है और उसके घर की हालत अच्छी नहीं है। माँ सिलाई करती, वह पढ़ता और शाम के समय नित्य हार और गजरे बेचता। जावेद और अहमद उनकी सहायता करते। अगर वे सहयोग न दें तो भूखों मरने की नौबत ना जाए।

हुमायूं को कादिर के हाल पर तरस आ गया। वह बहुत दुःखी भी हुआ। उसने स्वयं अपने हाथों में सारे के सारे हार और गजरे ले लिये और फिर सोने की पाँच मोहरें कादिर को देता हुआ बोला—'यह लो मुझे तुम्हारा ख्याल है। मैं खुदा से यही दुआ करूँगा कि तुम खूब पढ़ो और एक नेकदिल इंसान बनो।'

कादिर ने मोहरें हाथ में ले लीं और वह अवाक् रह गया। उसका हाथ काँपने लगा और कुछ क्षण बाद उसके होंठ हिले मगर कुछ कह नहीं पाया।

'ले जाओ डरो मत। मैंने तुम्हें बख्शीश दी है। तुम होनहार लड़के हो।

ऐसे लड़के ही आगे चलकर मुल्क के काम आते हैं और उनकी शोहरत होती है।'

जब बादशाह सलामत ने यह फरमाया तो कादिर धीरे से बोला—'अम्मी बिगड़ेंगीं और वालिद डाटेंगे। माफ कीजिए आलमपनाह! मुझे सिर्फ कीमत चाहिए और ज्यादा कुछ नहीं।'

'शाबाश बेटे, तुमने तबीयत खुश कर दी। जी चाहता है कि तेरा मुंह चूम लूँ और तुझ पर कुर्बान जाऊँ। अब घर जाओ और असलम से कह देना कि शहंशाह ने यह मोहरें मुझको दी हैं। फिर वह कुछ नहीं कहेगा।'

कादिर ने बहुत कहा किन्तु सम्राट् उसे समझाता ही रहा और अन्त में विवश हो गया और उसे जाना पड़ा।

× × ×

असलम बहुत खुश था कि उसका बेटा बादशाह से मुलाकात करके आया है। उसकी नजर में आ गया और अपने घर का सारा हाल भी बतला दिया। हो सकता है कि मेहरबान शहंशाह के मन में रहम आ जाए और वह कुछ हमारे घर की मदद कर दे तो बहुत अच्छा रहेगा।

अमीना न खुश थी न ही उसे कोई मलाल था। उसने बेटे से यही कहा कि आज जो कुछ हुआ सो हुआ मगर आगे से ऐसा मत करना, नहीं तो शहंशाह फिर तुम्हें अच्छा लड़का नहीं कहेंगे। अपनी मेहनत पर ही भरोसा रखो। देने वाला खुदा है और मेहनत करने वाला उसका बन्दा। कादिर का साहस स्वयं उसका साथ नहीं दे रहा था वि अब वह भविष्य में सम्राट् के सामने जाए और उनसे मिन्नत करे कि वे उसके हार-गजरे ले लें। अब अगर उसने आगे कदम बढ़ाया तो बादशाह हुमायूं उसे लालची समझेंगे।

यद्यपि अमीना के घर में गरीबी थी लेकिन पूरे का पूरा परिवार नेक नीयत था। किसी में भी लालच और द्वेष नहीं था। जहाँ पहले कलह रहती थी वहाँ अब शान्ति का साम्राज्य था।

असलम घर में बैठे-बैठे ऊब जाता और उसका मन बाहर निकलने के लिए करता। डण्डे और लाठी के सहारे ठीक तरह चल नहीं पाता इसीलिए लकड़ी की बैशाखी बनवायी। उन्हें दोनों बाहों में टिकाता और उन्हीं के सहारे लंगड़ा-लंगड़ा कर धीरे-धीरे चलता। वह बेकार था कोई काम नहीं करता, इसका उसे बहुत मलाल था।

अब असलम बाहर निकलता। इधर-उधर जाकर अपना मन बहला लेता। उसके बांये पैर में इतनी शक्ति नहीं थी कि वह अधिक दूर जा सके। असलम की पीने की आदत छूट चुकी थी। जुआ और जाहिदा को न जाने वह कब का छोड़ चुका था। अब उसके साथ कोई भी बुरी लत नहीं थी मगर फिर भी असलम खुश नहीं था। उसे अपनी जिन्दगी जहर लगती और वह चाहता था कि उसे जल्द ही

मौत आ जाए। उसके अपाहिज हो जाने के कारण उसे यह दुनिया बिल्कुल बेकार और नीरस लगने लगी।

नादिरा को जब असलम देखता तो संतोष की सांस लेता और उसे लगता कि यह उसकी बेटी नादिरा नहीं बल्कि कोई शहजादी है। उसने अच्छी किस्मत पायी है। उसके दिन सोने के और रातें चाँदी की होंगी।

रहमान को भी देखकर असलम मन-ही-मन फूला नहीं समाता और उसकी तरफ से भी पूरी तरह से बेफिक्र हो गया था। वह जानता था कि उसका बेटा अहमद की आंखों का तारा है। वह भी शहजादा सा लगता है और उसकी परवरिश भी उसी तरह से हो रही है।

लेकिन कादिर के लिए असलम को चिन्ता थी कि आखिर उसका भविष्य क्या होगा? अभी वह छोटा है चौदह बरसातें ही देखी हैं। उर्दू पढ़ गया है मगर अभी कुरान-शरीफ अच्छी तरह नहीं पढ़ पाता। क्या-क्या अरमान थे मेरे और कैसे-कैसे ख्वाब मैंने देखे थे कि कादिर को फारसी पढ़ाऊँगा। उसे अरबी की भी तालीम दूंगा। वह इलम में अधूरा रह जायेगा तो यह मेरी जिन्दगी की सबसे बड़ी हार होगी।

असलम मन-ही-मन सोचता था। वह अपनी बात किसी से भी नहीं कह पाता था। उसके अन्दर का मानव उससे कहता कि तेरे दिन फिर सकते हैं असलम। तू खुशहाल हो सकता है अगर तेरी घरवाली दरबार में चली जाए। क्या तू पागल है या बेहोश? सात मुल्क ही क्या बच्चा-बच्चा भी जानता है कि दरियादिल मेहरबान शहंशाह हुमायूँ खजाने में दौलत कम होने पर भी जरूरतमंदों और गरीबों को खूब दौलत बाँटता है। उसका दिल मोम का है। उसके दिल में प्रजा के लिए ममता कूट-कूट कर भरी है।

असलम विचलित हो जाता। वह जानता था कि पर्दानशीन औरतें लिहाज नहीं छोड़ सकतीं। अमीना खानदानी औरत है और आज तक बुर्का ओढ़े बगैर कभी घर से बाहर नहीं निकली। कोई भी आया तो मुँह पर ओढ़नी का घूंघट डाल लिया और उस पर भी किवाड़ों की ओट से बात की मगर सामने कभी नहीं गयी। मैं उसे कभी मजबूर नहीं करूंगा। घर का हो या बाहर का हर इन्सान अपनी मर्जी का मालिक होता है।

असलम यह उम्मीद कर रहा था कि शायद बादशाह सलामत की नजरें उस पर इनायत हो जायें। वह राह देखता रहा और दिन पर दिन यूं ही बीतते चले गये।

असलम दिन में न जाने कितनी ही बार अल्लाहताला से मौत माँगता। परन्तु इससे पहले उसकी ख्वाहिश थी कि कादिर किसी राह से लग जाए। अगर उसे शाही नौकरी मिल जाए तो वह सोने में सुहागा है, नहीं तो कोई हुनर सीख जाए और दस्तकार बन जाए। इस तरह उसकी जिन्दगी आराम से गुजरेगी और

वह कभी भूखा नहीं रह सकता। जब तक वह किसी राह से नहीं लगेगा घर की हालत कभी सुधर नहीं सकती और जब घर का हाल पतला होगा तो उससे शादी कौन करेगा। अपनी लड़की कौन उसे देगा? वह हिल्ले से लग जाए, उसका घर बस जाए फिर मैं आराम से मर सकूँगा।

दुखिया असलम इसी तरह न जाने क्या-क्या सोचा करता। उसे भविष्य की चादर काली दिखलायी पड़ती और आने वाले कल पर विश्वास नहीं होता।

ग्यारहवाँ

तीसरे पहर अमीना एक कुर्ते में काज बना रही थी। पास ही आँगन में चारपाई पर असलम लेटा था। कादिर को मकतब से आए देर हो चुकी थी। वह खाना खाने के बाद सबसे पहले फूल लेकर आया फिर तनिक भी देर नहीं की। जमकर बैठ गया और हार तथा गजरे बनाने लगा।

प्रसंग चल रहा था कि बरसात आने वाली है और इससे पहले ही कुछ ईंधन का इन्तजाम कर लिया जाए नहीं तो दिक्कत होगी। ठीक तभी बाहर किसी ने आवाज दी। उसने पुकारा—'असलम, कादिर।'

कादिर चौंका। वह जल्दी से उठकर बाहर आया और उसने देखा कि उसके दरवाजे पर शाही सिपाही खड़े हैं। दो घुड़सवार हैं जिनके पैर अब भी रकाब से नहीं उतरे और दो पैदल सैनिक हैं जिनके कंधों पर भाले और कमर में तलवारें लटक रही हैं। इसके अलावा चार खिदमतगार हैं जिनके सिर पर बड़े झाबों में सामान है। कादिर दहशत सी खा गया और उसके मुँह से बोल नहीं निकला।

एक सैनिक ने उसे टोका, उसने एक सवाल किया—'असलम घर में है? उसे बाहर बुलाओ!'

कादिर ने अन्दर आकर बाप को सब हाल बतलाया। अमीना चौंक गयी और असलम के भी कान खड़े हो गए। वह जब बैसाखी लगाकर दरवाजे की ओर चला तो अमीना भी पीछे-पीछे चल दी। वह किवाड़ों की ओट में हो गयी और असलम बाहर आया। असलम को देखते ही एक घुड़सवार बोला—'शहंशाह हुमायूँ ने तुम्हारे लिए यह सामान भेजा है। इसमें एक थैली में सौ सोने की मोहरें है और दूसरी में एक हजार चाँदी के सिक्के। कुछ जेवर हैं और कुछ कपड़े। तुम अपाहिज हो गए हो इसीलिए शहंशाह ने तुम्हारे बच्चों की परवरिश के लिए यह सब किया है।'

खुशी से असलम का दिल धड़कने लगा। उसकी आँखों में प्रसन्नता के आँसू आ गए और वह पुलकित स्वर में बोला—'मैं आलमपनाह का शुक्र गुजार हूँ। उनका शुक्रिया अदा करता हूँ। खुदा से दुआ करता हूँ कि वे लम्बी उम्र पायें और जब तक यह दुनिया है उनका बाल भी बांका न हो।'

असलम ने हुक्म दिया और कादिर ने वह सामान एक-एक करके घर के अन्दर पहुँचाया। अमीना ने देखा तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गयीं। उसने ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि बादशाह इतना ज्यादा मेहरबान हो जाएगा।

शाही सिपाही चले गए और दम्पत्ति में बातें होने लगीं। वे पूरी तरह प्रसन्नचित दिखलायी दे रहे थे। अमीना ने जब गहने देखे तो वह पति से खुश होकर बोली—'यह जेवर मैं कादिर की दुल्हन को दूँगी। खुदा कितना मेहरबान है कि शहंशाह को रहम आ गया।'

'अभी कादिर का ब्याह कहाँ होता है जब होगा तब देखा जाएगा। जेवर तुम पहनो अमीना। आधे सोने के और आधे चाँदी के हैं। नसीब इसे कहते हैं बेगम कहाँ तो बदन ढाँपने के लिए कपड़ा तक मयस्सर न था और कहाँ सोना-चांदी आ गया। तकदीर के खेल निराले होते हैं अमीना। उन्हें कोई भी जान नहीं पाता।'

'मैं अब जेवर क्या पहनूंगी। मेरी गहने पहनने की उम्र निकल गयी।'

'यह तुम्हारा पागलपन है अमीना। इन्सान जब मुर्दादिल बन जाता है तब उसके सारे हौंसले पस्त हो जाते हैं। तुम्हारी भी वही हालत है और मैं इसे बिल्कुल अच्छा नहीं समझता। गहने पहनो वे घिस न जाएँगे और न ही पुराने हो जाएँगे। जब बहू आए तब उसे दे देना यही तुम्हारी ख्वाहिश है न।'

अमीना ने तर्क नहीं किया और उसने बात को आगे नहीं बढ़ाया। प्रसंग को वहीं पर ही समाप्त कर दिया। दिन-रात घर में खुशी का उल्लास बराबर बना रहा। रात को सब लोग देर से सोए और सवेरे बहुत जल्दी उठ गए। सब में एक नई उमंग थी, एक नया उत्साह था और ऐसा लगता कि चिन्ता के काले बादल गोरे आसमान से हट गए, वह एकदम साफ-सुथरा और स्वच्छ हो गया।

× × ×

जावेद ने जब सुना कि असलम को शाही इमदाद मिली है तो उसे कोई खुशी नहीं हुई, लेकिन उसने बुरा भी नहीं माना और इसका उसे कोई मलाल भी नहीं हुआ।

नूरमहल को प्रसन्नता हुई कि आज अमीना की सारी कठिनाइयाँ दूर हो जाएँगी। उसे किसी तरह की भी तकलीफ नहीं रहेगी।

और अहमद वह विलक्षण स्वभाव का था। अपने घर में हँसकर जरीना से कहने लगा—'देखो खुदा जब मेहरबान होता है तो वह तनिक भी देर नहीं लगाता। अमीना ने अपनी बात रखी वह शाही दरबार में मिन्नत करने नहीं गई। घर बैठे ही

उसे शाही इमदाद मिल गई। किस्मत इसे कहते हैं।'

जरीना पहले से ही खुश थी। खुशी उसमें समाती नहीं। जब उसने पति की बातें सुनीं तो खिलखिल करती हुई मुदित होकर बोली—'रहमान की किस्मत उसे मेरे घर ले आई। नादिरा भी रेगिस्तान से वादी में पहुँच गई। उसकी तक़दीर का सितारा भी बुलन्द हो गया। रह गया था बेचारा कादिर उसकी भी खुदा ने सुन ली। अब वह चाहे तो कोई छोटा-मोटा रोजगार कर सकता है। मुझे निहायत खुशी है कि अल्लाह-ताला उसे तरक्की दे।'

दम्पत्ति असलम के परिवार के लिए शुभ कामनाएँ कर रहे थे। वे असलम के घर गए और दोनों मियाँ-बीबी को जाकर मुबारकबाद दी।

असलम के पड़ौसी भी उसके मकान पर आए। सभी ने उसके भाग्य की सराहना की। किसी ने कहा और सलाह दी कि अमीना को अब सिलाई वाला काम बन्द कर देना चाहिए। किन्तु अमीना इसके विपक्ष में थी। उसने एक भी नहीं लगने दी। अपनी जिद पर अड़ी रही। उसका कहना था कि आदमी को अपने गुजरे हुए दिन कभी नहीं भूलने चाहिएँ। गरीबी से इन्सान जब अमीरी का चोगा पहन लेता तो वह भूल जाता है कि कल क्या था और आज क्या है।

हाँ, एक परिवर्तन अवश्य हुआ कादिर ने हार तथा गजरे बेचना बन्द कर दिया। वह सवेरे उर्दू पढ़ता और शमादान जला कर फारसी। जावेद और अहमद दोनों उसे बेटे की तरह चाहते। बहुत प्यार करते। वे उसे जब रात चाँदनी होती और उनका अवकाश का समय होता तो घोड़े की सवारी सिखलाते। मैदान में ले जाकर भाला फेंक कर चलाना सिखाते। ऐसे ही तलवार चलाना भी खूब मन से सिखाते। उनकी ख्वाहिश थी और वे चाहते थे कि कादिर भी अपने बाप की तरह ही एक घुड़सवार शाही सिपाही बने। बहादुरों में उसका नाम हो।

असलम भी कादिर को सिपाही बनाने के लिए पूरी तरह तैयार बैठा था। मगर अमीना यह सपना भूलकर भी नहीं देखती। वह जब ऐसी बातें सुनती तो उपेक्षा-पूर्वक अपना मुंह फेर लेती। हालाँकि वह मुल्क के लिए गद्दार नहीं थी और न उसे नफरत ही थी। जब तक काबुल में रही काबुल उसका वतन था फिर जब वतन का शहंशाह हिन्दुस्तान चला आया और उसने हिन्दुस्तान को अपना वतन बना लिया तो वह भी हिन्दुस्तान की हो गई और उसे अपना देश मानने लगी।

अमीना सोचती कि अगर उसका पति शाही सेना में नौकर न होता तो न उसका हाथ कटता और न पैर टूटता। मैं कादिर को फौज में नहीं जाने दूँगी।

और कादिर की स्थिति यह थी कि जब बाप पूछता कि तुम सिपाही बनोगे तो कादिर 'हाँ' कह देता और खुश नजर आता।

ऐसे ही जब माँ कादिर का मन टटोलती तो वह उसकी हाँ-में-हाँ मिलाता उसे खुश कर देता।

अमीना कहती—'नौकरी में कुछ भी नहीं रखा बेटे। मुझे पराई गुलामी बिल्कुल पसन्द नहीं। तुम तिजारत करो। परवरदिगार तुम्हें उसी में बरक्कत देगा। अपने घर पर कोई छोटी-सी दुकान खोल लो। सौदा बाजार भी ले जाया करो। पढ़-लिख लिया यह बहुत अच्छा है। कुरान शरीफ की नकलें उतारना। उसके मुँह माँगे पैसे मिलेंगे।'

इस तरह असलम के घर में एक बार फिर सुख की लहर दौड़ गई जिसे देखो वही प्रसन्न चित्त दिखाई देता। अब न किसी को कोई शिकायत थी और न शिकवा।

हाँ, एक बात जरूर थी। अमीना ने अपना लिबास नहीं बदला। वह सादी चाल ही चलती रही उसके रहन-सहन में तनिक भी फर्क नहीं आया। इसका उसे तनिक भी गुमान नहीं था कि बादशाह सलामत ने उसे काफी दौलत दी है और अब वह गरीब नहीं खुशहाल है।

असलम का भी पहनावा पहले जैसा ही था। वह तड़क-भड़क अब पसन्द नहीं करता क्योंकि अपंग था। कादिर के लिए वह जरूर चाहता और अमीना भी हमेशा टोका करती कि वह अच्छी जूतियां पहने। उसे रेशमी कपड़े पहनने चाहिएँ। न जाने कितने रखे हैं।

लेकिन कादिर वही करता जो घर में देखता। उत्सवों पर वह अच्छे कपड़ों में दिखलाई पड़ता बाकी सब दिन एक जैसा ही रहता। सादगी में उसे सुख मिलता और वह उसे बहुत अच्छा समझता था।

यही कारण था कि हर आदमी कादिर की भर मुँह प्रसन्नता करता। लोग उसकी तारीफ करते नहीं थकते। बड़ाई के पुल बाँध देते। कहने वाले असलम से कहते कि असलम होनहार बिरवान के होत चिकने पात। तुम्हारा लड़का होनहार है। यह खुदा की बड़ी मेहर है। वह तुम्हारा नाम रौशन करेगा।

दम्पत्ति जब पुत्र की प्रशंसा सुनते तो उनके हर्ष का पारावार नहीं रहता। वह मन-ही-मन खुदा का शुक्रिया अदा करते और कहते कि दुनिया के मालिक ऐसा ही रहे। वे दिन अब फिर लौट कर न आएँ जो बीत गए हैं।

बारहवाँ

अगहन के छोटे दिन लम्बी रातें और गुलाबी जाड़ा जब आया और आकर पूस की गोद में चला गया तो सर्दी भयंकर हो गई और वह चिल्ला जाड़ा कहलाने

लगा। गजब की शीत पड़ती। सवेरे जब देखो तो धरती ओस से भीगी मिलती। फसलों को पाला मार गया सबेरे कोहरा बहुत जबरदस्त पड़ता।

ऐसे में ही एक दिन जब आसमान पर बादल छाए तो वे काले से गोरे हुए, सिन्दूरी और लाल रंगों में भी बदले। फिर भूरे बनकर बरसे और रिमझिम-रिमझिम बूंदों की झड़ी लग गई। दिन में ठण्डी हवा बर्फीली बनकर ऐसी चल रही थी कि दाँत आपस में टकराकर बजने लगते। कलेजा काँप जाता और रोए खड़े हो जाते।

जिस तरह जाड़ा भरपूर जवान था। वैसे ही चिल्ला की बरसात भी अपनी जवानी पर आ गई। पहले पानी धीरे-धीरे बरसता रहा और रात होते ही वह तेजी पकड़ गया। हवा झकोले भरती, वह आँधी का-सा शोर मचाती। धड़धड़ की आवाज होती। पानी मचल-मचल कर बरसता। लोगों का कहना था कि यह पानी तीन दिन से पहले नहीं निकलेगा।

रात आधी बीत गई और पानी का वेग तनिक भी कम नहीं हुआ। वह ज्यों-का त्यों जोर बाँधे बरसता ही रहा। ऐसा लगता कि यह काली रात्रि है और इसका सवेरा कभी नहीं होगा। प्रलय के बादल बरस रहे हैं। प्रलय हो जाएगी और सारी की सारी धरती पानी के गर्भ में समा जाएगी।

असलम सो गया था। अमीना देर तक जागती रही। वह सिलाई में व्यस्त थी। अन्त में आधी रात के बाद उसने भी चिराग गुल कर दिया और बिस्तर पर जाकर लेट गई और लेटते ही पलकें मुँद गईं और नींद ने उस पर अपना अधिकार जमा लिया।

कादिर के सामने रखा शमादान जल रहा था और वह बैठा अपना सबक याद कर रहा था। उसे न तो बरसात का शोर सुनाई पड़ता और न कोई आवाज ही। वह अपनी लगन में लीन था। एकाग्रचित्त होकर अध्ययन कर रहा था। बाप जब सोया तो उसने कई बार कहा कि सो जाओ बेटा कादिर। तुम्हारे मुकद्दर से रात फिर आएगी। मगर लड़का सोया नहीं। वह अपने कार्य में व्यस्त रहा।

माँ अमीना का भी हृदय कचोट उठा। उसने भी बिस्तर पर जाते समय अपने बड़े लाडले से कहा था—'मुन्ना बेटे! मेरे बादशाह! सो जाओ रात को ज्यादा देर तक नहीं जागना चाहिए। इससे तन्दुरुस्ती खराब हो जाती है।'

किन्तु कर्त्तव्यपरायण कादिर निरुत्तर रहा। उसका मन पढ़ाई में लग रहा था इसीलिए सोया नहीं जागता रहा।

पानी का रोह अपने में अजीब था। वह छर-छर का शोर करता। कानों के पर्दे फट जाते और कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता।

आँधी तूफान बन गयी थी। अचानक धम्म की आवाज हुई। ऐसा लगा कि आँगन में कोई जोर से कूदा है। कादिर चौंका। उसके कान खड़े हो गए। वह सन्नाटे में आ गया और अन्धेरे में आँगन की ओर देखने लगा।

"धम्म ! धम्म !"

"ऐं !"

कादिर के रोयें खड़े हो गए। वह दहशत से भर गया। उसके अन्तःकरण ने कहा कि चोर आ गए और आज उसके घर में चोरी होगी।

बीच में आँगन था और उसके सामने बरामदा जिसके सामने अमीना बेटी थी। वह उठकर खड़ा हो गया, उसके पैर काँपे उसका साहस नहीं हुआ कि माँ के पास जाये और जाकर जल्दी से उसे जगा दे।

'धम्म ! धम्म।'

'ऐं ! यह क्या ?'

कादिर के काटो तो बदन में लहू नहीं। उसका सारे का सारा बदन पत्ते की तरह थर-थर काँपने लगा। बगल में ही जो कोठरी थी उसमें असलम सोया था। उसका भी रास्ता आँगन से ही था कादिर की हिम्मत नहीं पड़ी।

इधर कादिर की यह स्थिति थी और उधर अमीना ने जब आहट सुनी तो वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। उसका हृदय तेजी से धड़कने लगा। वह टोंकना चाहती थी कि कौन है, लेकिन गला रुंध गया और आवाज मुँह से नहीं निकली। लगातार लोग कूदते रहे। उनकी संख्या आठ नौ हो गई। अमीना जैसे-तैसे उठकर खड़ी हुई। उसके पैर लड़खड़ाये और वह गिरते-गिरते बची।

असलम की भी नींद टूट गई। उसने भी लोगों के कूदने की आवाजें सुनीं। वह समझ गया कि बदमाश आये हैं और वे उसका घर लूटेंगे।

मजबूरी एक त्रिकोण बन गई थी। न तो असलम अमीना को बुला सकता था और न अमीना उस तक जा सकती थी। कादिर भी एक कोने में था। जब उसने देखा कि उसकी कोठरी में दो अजनबी आदमी आ रहे हैं, उनके कपड़े पानी से तर-बतर हैं तो वह जोर से चीखा और जल्दी से शमादान बुझा दिया।

कादिर की चीख सुनते ही अमीना औंधे मुंह जाकर बेटे पर गिरी। असलम भी लंगड़ाता हुआ किसी तरह उस कोठरी में आया।

यह चोर नहीं डाकू थे और असलम के घर में डाका डालने की योजना बना कर आए थे। शमादान अब बुझ चुका था। यह वह समय था जबकि दियसलाई का आविष्कार नहीं हुआ था। लोग घरों में आग रखते जिसे कभी बुझने नहीं दिया जाता। इसके अलावा चकमक पत्थर का प्रयोग होता, लेकिन वह बहुत महंगा पड़ता इसीलिए हर आदमी उसे अपने पास नहीं रख पाता।

एक डाकू ने चकमक पत्थर से आग जलाई। दूसरे के पास अण्डी के तेल में डूबी हुई लकड़ी पर कपड़ा लिपटी मसाल थी।

मशाल में जैसे ही आग लगी। खूब तेज रोशनी हो गई।

एक डाकू ने असलम की पीठ पर दो डंडे मारे और तेज़ गले से उसे डाँटते

हुए बोला—'कहाँ हैं सोने और चाँदी के सिक्के जो शहनशाह ने तुम्हें भेजे थे ?'

असलम खामोश रहा। उसने अपनी दृष्टि नीचे झुका ली। उसकी यह स्थिति देख दूसरा डाकू आगे बढ़आया। उसके हाथ में बबूल का मोटा सा डंडा था। उसकी मूँछें रौबीली थी और आँखों में मशाल जल रही थी। उसने असलम की ठुड्डी ऊपर उठायी और आँख से आँख मिलाता हुआ क्रोध भरे स्वर में बोला—'देखो मियाँ अगर अपनी खैर चाहते हो और इस बच्चे की जिन्दगी तो वह दौलत मेरे हवाले कर दो जो तुम्हें बादशाह की तरफ से मिली है। वर्ना······।'

असलम हत्‌बुद्धि सा हो गया था। उसे चक्कर आ गया। वह भड़-भड़ा कर गिर पड़ा। अमीना रोने लगी। उसने जल्दी से उसे सम्भाला। तभी एक डाकू ने उसे डाँटा। वह जोर से बोला—'क्यों री, तू भी नहीं बताएगी ? क्या तुम सब लोगों का मार खाने का इरादा है ?'

अमीना ने घूमकर उस डाकू की ओर देखा और जैसे ही उसने कुछ कहने के लिए अपना मुंह खोला ही था ठीक तभी तीसरा डाकू आकर बोल उठा—पूछने पर कोई बतलाता नहीं तभी तो डाका डालने वाले लोगों को मारते और उनकी जान तक ले लेते हैं। इससे पूछो मत, इसके डंडे लगाओ। अभी इसके पुरखे जमीन पर उतर कर आयेंगे और यह बोलने लगेगी।'

उस डाकू ने यह कहने के साथ ही अमीना पर हाथ छोड़ दिया। उसके तीन-चार डंडे मार दिए। कादिर को यह सहन नहीं हुआ। वह ताव में भर कर उस डाकू से लिपट गया और हाथा-पाई करने लगा।

निर्दयी डाकू को उस लड़के पर तनिक भी दया नहीं आई। उसने उसे दोनों हाथों से ऊपर उठाया और फिर जमीन पर छोड़ दिया।

अन्त में डाकू सफल हो गए। उन्होंने घर का कोना-कोना छान डाला। सोने के सिक्के ज्यों-के-त्यों रखे थे। चाँदी के भी कम नहीं हुए। जेवर एक बार भी अमीना ने नहीं पहने। वे भी डाकुओं ने ले लिए और कहाँ तक कहा जाय वे घर के सब बर्तन भी ले गए। रेशमी कपड़े भी नहीं छोड़े। लगभग दो घण्टे तक उन लोगों ने लूट की और फिर प्रवेश द्वार खोलकर बाहर निकल गए।

उसके बाद असलम चिल्लाया। अमीना ने भी शोर मचाया। तब रात बहुत थोड़ी रह गयी थी। पानी वैसे ही जोर बाँधे बरस रहा था। अन्धेरे में लोग असलम के घर आए। सभी पड़ौसियों को हमदर्दी थी सभी ने हाय-हाय की। बूढ़ी बुजुर्ग औरतों ने कहा कि जिन लोगों ने असलम के घर को लूटा है उनका सत्यानाश हो। खुदा उनका बेड़ागर्क करे।

सवेरा होते ही पानी बन्द हो गया। जावेद को खबर मिली वह नूरमहल के साथ भागा चला आया। अहमद और जरीना भी गमगीन थे। दोनों ऐसे लगते कि वे लुटे हुए मुसाफिर हो और अपनी मँजिल भूल गए हों।

अमीना के चोट आयी थी। उसकी पीठ पर नीली साँटे उभर आईं और सूजन आ गयी थी। जरीना यह देखकर रो दी। उसने उस पर हल्दी-चूना लगाया और फिर बैठकर उस पर रुई के पहल से सेंक करने लगी।

असलम को भी लगता कि उसकी रीढ़ की हड्डी टूट सी गयी है। वह लेटा था। उठकर बैठ नहीं पाता। उसमें तकलीफ होती। जावेद ने उसकी पीठ पर भी हल्दी-चूना लगाया और सेक करने लगा।

कादिर पर मार नहीं पड़ी, लेकिन वह उठा कर पटका गया था। इसीलिए उसकी भी पीठ में दर्द था। नूरमहल उसकी परिचर्या में लग गई। अहमद और जावेद दोनों ने सपत्नीक असलम दम्पत्ति को आश्वासन दिया। उन्हें ढाढ़स बँधाया उन सबका कहना था कि अब तुम फिक्र क्यों करते हो असलम। तुम्हारा लड़का जवान हो रहा है। वह जल्दी ही कमाने लगेगा। डाकू घर का सामान और जर-जेवर ले गये। तुम्हारी किस्मत तो नहीं ले गये। मुकदर हमेशा आदमी के साथ रहता है।

तसल्ली हो या न हो, लेकिन वह करनी पड़ती है। मजबूर इन्सान परिस्थितियों के आगे अपने घुटने टेक देता है और वह विवश हो जाता है। असलम की भी यही हालत थी। वह सन्तोष करके रह गया। अब उसे लगने लगा था कि तकदीर उसके दिन बदलने नहीं देगी। किस्मत की जो लकीरें हैं वे मिट नहीं सकती। सब कुछ मिलाकर उसका मुकदर खराब है। वह कभी बदल नहीं सकता।

अमीना को बहुत दुःख था। वह मन मसोस कर रह जाती। वह किसी से कहती नहीं। उसके सारे अरमान और सपने सब धूल में मिल गये। वह लूट गयी और उसकी जिन्दगी में फिर पतझड़ आ गया।

कादिर को भी गहरा आघात पहुँचा। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि एक दिन ऐसा होगा। खबर इधर-उधर फैल चुकी थी। जावेद और अहमद दोनों ने अपना फर्ज पूरा किया। वे शहर कोतवाल के पास गये और इस घटना की रिपोर्ट लिखवा दी कि रात असलम के घर डाका पड़ गया। डाकू सब सामान लूट ले गये। उन बेरहमों ने मियाँ-बीबी को पीटा भी।

बस फिर क्या था पुलिस तहकीकात करने लगी। सिपाही इधर-उधर सुराग लगाने लगे कि डाकू शहर के ही थे या कहीं बाहर से आये।

दिन पर दिन बीतते गये। एक भी डाकू पकड़ा नहीं गया और न किसी का पता ही चला।

अमीना जीविका चलाने के लिए सिलाई का काम निरन्तर कर रही थी। यही उसकी रोजी थी। कादिर फिर हार और गजरे बेचने लगा। उसकी पढ़ाई का खर्चा जावेद उठाता और कभी-कभी अहमद। आजकल वह कुरान शरीफ की एक प्रतिलिपि भी तैयार कर रहा था।

बात पुरानी हो गयी अ धीरे-धीरे लोग यह भूलने लगे कि असलम के घर में डाका पड़ा था और वह बुरी तरह लूट गया ।

जो हमदर्द थे उनकी दुआये असलम की खैरे मनाती । खुदा उसे बरकत दे और लड़के की रोजी । वह खुशहाल रहे । उसने जिन्दगी में बहुत तकलीफ उठायी है ।

जलने वाले जलते और अब उनकी छाती ठंडी हो गयी थी । इनमें से कुछ असलम के शराबी दोस्त थे जिन्होंने एकदम उससे मुँह मोड़ लिया । कुछ वे थे जो जुआ घर में उसके साथ खेलते । इसके अलावा तवायफ जहीदा जो अब उससे बेहद जलती थी क्योंकि न तो वह उसके कोठे पर जाता और न दौलत लुटाता । वह उसे भूल गया और शाही मदद मिलने पर भी एक बार भी उससे मुलाकात नहीं की ।

असलम सबकी सुनता, लेकिन किसी से कुछ कहता नहीं । वह अपने में बुझ सा गया था । इसीलिए अधिकांश मौन रहता । वह मन-ही-मन अल्लाहताला से मिन्नत किया करता कि रसूल अल्लाह तूने अपाहिज बना दिया अब रोटी दे । कादिर को इन्सान बना दे । वह खूब तरक्की करे । उसकी रोजी और रोजगार में बरक्कत हो ।

तेरहवाँ

हुमायूँ चारों ओर अपने दुश्मनों से घिरा था । पूरब में जाकर वह शेर खाँ को हराकर आया लेकिन उसकी ताकत को पूरी तरह नष्ट नहीं किया । इसीलिए उसके जाते ही शेरशाह फिर स्वतन्त्र हो गया ।

शेर खाँ को हुमायूँ की बड़ी चिन्ता थी । इसके लिए बाबर ने उसे अपने जीवन में आगाह भी किया था कि वह उसका सबसे बड़ा दुश्मन है ।

बेचारा हुमायूँ अकेला था । भाई ऐसे नीच निकले कि उन्होंने उसकी सहृदयता का अनुचित लाभ उठाया । उन्हें कोई भी हमदर्दी नहीं थी । वे चाहते थे कि अफगानों की हुकूमत दिल्ली पर हो जाये और हुमायूँ यहाँ से भाग जाये ।

एक बात और थी जो हुमायूँ को जिन्दा रखती और वही उसका साथ देती । वह घबराता तो बहुत जल्दी और निराश भी हो जाता था लेकिन जब शान्ति पूर्वक उस समस्या पर विचार करता तो हिम्मत बढ़ जाती और साहस कर कहने लगता कि आगे बढ़ो कोई भी काम मुश्किल नहीं है । यही कारण था कि पिता

की मृत्यु के बाद वह लगातार दुश्मनों से लोहा लेता रहा। खजाना खाली होने पर भी निरन्तर युद्धों में लगा रहा। यह उसके साहस का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

हुमायूँ अपने सैनिकों का बहुत ख्याल रखता। वह उन्हें वेतन समय पर देता। कभी शिकायत का मौका नहीं आने देता। सभी उससे खुश थे और दिलोजान से चाहते थे कि हिन्दुस्तान में मुगलिया सल्तनत का बाबर ने जो झण्डा फहराया है। वह सदियों तक फहराता रहे। मुगलों की हुकूमत कायम रहे।

एक दिन हुमायूँ को अपने गुप्तचर द्वारा यह विदित हुआ कि असलम के घर में डाका पड़ गया वह बुरी तरह लूट गया। उसे बहुत अफसोस हुआ। उसने शहर कोतवाल को बुलाया और उससे डाँट कर पूछा कि तुम लोग कैसे हो ? तुम्हारा कैसा महकमा है ? इतना बड़ा मामला हो गया है और तुम लोग डाकुओं का पता नहीं लगा पाये।

हुमायूँ ने जासूसों को हुक्म दिया कि वे असलम के घर में पड़े डाके का पता लगावें। आखिर यह साजिश किसकी है ? गरीब लूट गया। उस नेक इन्सान ने किसका क्या बिगाड़ा था।

हुमायूँ की परेशानियाँ दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही थीं। उसे लग रहा था कि उसके दुश्मन अब हिन्दुस्तान में उसके पैर टिकने नहीं देंगे। उसकी भीतरी हालत खोखला है। न तो सेना में नयी भरती होती और न कर ही आता कि जिससे खजाना भर सकता और सारे खर्चे आराम से चलते।

फिर भी बादशाह अपने में गम्भीर था। यह खानदानी असर था और उसके बाप की तालीम कि चाहे जितनी बड़ी मुसीबत आये घुटने कभी मत टेकना।

सम्राट् उत्सवों में भी भाग लेता। वह राग-रंग भी मनाता। हँसता और लोगों के साथ उदारता का व्यवहार करता।

यद्यपि दिल्ली और आगरा की प्रजा हुमायूँ से बहुत ज्यादा खुश थी, लेकिन जन ताजनता थी। उसमें स्त्री, बच्चे, बूढ़े और जवान सभी शामिल थे। वह हुमायूँ श्रद्धा रखती किन्तु उसके दुश्मनों से युद्ध नहीं कर सकती थी। वह रणकुशल नहीं थी।

जनता में कोई भी ऐसा नहीं था जो हुमायूं की दयालुता से परिचित न हो। दान देते समय वह सोचता ही नहीं कि मेरे पास क्या है और क्या नहीं। उसे निहायत खुशी होती जब दूसरे को मुस्कराता देखता।

पिता की तरह ही हुमायूँ भी अपने परिवार को खूब चाहता था। उसका जरूरत से ज्यादा ख्याल रखता। इसी तरह अपने रिश्तेदारों को भी कभी नाराज होने मौका का नहीं देता। वह सर्वप्रिय था सबका प्यारा। सभी उसे दुआ देते और उसकी लम्बी उम्र के लिए खुदा से इबादत करते।

ईद आने वाली थी। रोजे चल रहे थे । सबेरे जब मस्जिदों में अजान होती

उससे पहले ही लोग खाना खा-पी लेते तब आसमान पर तारे चमकते होते, दिन-भर पानी तक नहीं पीते। रोजे की नमाज भी दिन में पाँच बार पढ़ी जाती।

शाही महल में रोजे चल रहे थे ऐसे ही शहर दिल्ली में भी। सांझ होते ही जब किले के फाटक पर मशाल जलती और उसकी खूब तेज रोशनी होती तभी मस्जिद में नमाज पढ़ी जाती। उसके बाद फिर लोग अपने रोजे खोलते।

दिल्ली शहर की रौनक देखते ही बनती। बाजार सज रहा था। दूकानदारों को तनिक भी फुर्सत नहीं। दरजी दिन-रात सिलाई करते। उन्हें ईद के त्यौहार पर ग्राहकों के कपड़े तैयार करने थे। चमार जूतियाँ सीलते। उन पर कला का काम करते। वे ज्यादा से ज्यादा जूतियाँ बनाने की कोशिश में थे ताकि ईद पर अच्छी बिक्री हो। मनीहारों की दुकानों पर चूड़ियों के ढेर लग रहे थे उन पर पर्दे पड़े थे जिनमें पर्दानशीन औरतें जाकर चूड़ियाँ पहनतीं। बजाज पान चबाते और हँस-हँसकर ग्राहकों से मीठी-मीठी बातें करते। क्या मजाल कि दूकान पर आया हुआ ग्राहक बिना सौदा लिए वापस लौट जाये।

सर्राफ सोने-चाँदी के गहने शीशे के डिब्बों में सजा-सजाकर रखते। जौहरियों की भी दुकानें खुली थीं जो हीरे जवाहरात बेचते।

जिस दुकान पर देखो उसी पर भीड़ नजर आती। हलवाई सेमई, और मिठाईयाँ बनाने में लगे थे। जैसे ही साँझ होती बाजार की रौनक बढ़ जाती। इस समय औरतों और बच्चों की इतनी भीड़ होती कि राह निकलना कठिन हो जाता।

कादिर के हार गजरें आजकल खूब बिकते इसीलिए वह प्रसन्न रहता। अमीना का काम भी दुगना बढ़ गया था। उसने सोच लिया कि ईद पर अच्छी कमाई करेगी। दिन-रात सियेगी, वह भी अपना त्यौहार हँसी-खुशी मनायेगी। ईद से बड़ा उसके समाज में दूसरा त्यौहार नहीं होता। यह ऐसा पर्व है कि इस दिन दुश्मन भी दुश्मन से हँसकर गले मिलता। लोग बैर-भाव भूल जाते और एक-दूसरे को ईद की मुबारकबाद देते।

जब जावेद कादिर को ईद के लिए कपड़े बनवाने लगा जो रेशमी थे तो उसने एतराज किया और हँसकर बोला—'चाचा जान अब मैं इस काबिल बन गया हूँ कि खुद कमा कर खा सकूँ। यह आप लोगों की दुआ है। अब मैं आपको सताना नहीं चाहता। आप मेरी फिक्र न करें।'

पहले तो जावेद को ताज्जुब हुआ, लेकिन बाद में खुशी की अनुभूति हुई। वह प्रसन्नता के अतीव आवेग से अलोकित हो उठा और भावावेश में आ कादिर का मुँह चूम लिया।

अहमद को भी कादिर ने ऐसा ही सन्तोषजनक जवाब दिया। अमीना का कलेजा हाथ भर का हो रहा था कि अब उसका लड़का अपने पैरों पर खड़ा हो गया। हार-गजरे बेचने में उसकी अच्छी आमदनी होती। वह खूब मेहनत करता।

किसी तरह दौड़-धूप करके पूरे का पूरा माल बेच लेता । नुकसान नहीं होता । यह उसकी किस्मत है ।

असलम को भी तसल्ली थी कि कादिर काफी समझदार हो गया है । अब उसे ससझाने और कुछ भी सिखलाने की जरूरत नहीं । उसने कुरान शरीफ की नकल तैयार कर ली है, उसकी कीमत अच्छी मिलेगी । इसी तरह अगर वह नकलें करता रहा तो खुदा चाहेगा रोटी के लिए कभी मोहताज नहीं रहेगा ।

यों तो असलम की इच्छा थी कि उसका बेटा कादिर शाही खिदमत में चला जाए । यही उसके हक में अच्छा रहेगा । मगर परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं थीं । उसे इसमें निराशा ही दिखाई पड़ती । इसीलिए तसल्ली कर ली कि उसके बेटे ने इल्म हासिल कर लिया है । अब वह बेकार नहीं रह सकता । उसे काम मिलेगा और वह रोटी रोजी कमा लेगा ।

कादिर ने अपनी कमाई से माँ को हरी साटन का गरारा बनवाया वैसा ही कुर्त्ता । गुलाबी रेशम की ओढ़नी, जिसमें सुनहरा गोटा लगवाया । मखमल की लाल जूतियाँ लाया जिन पर सुनहले कला बत्तू का काम था । वह अपने साथ माँ को भी बाजार ले गया । उसे खूब महंगी और बढ़िया चूड़ियाँ पहना लाया ।

अमीना मना करती रही किन्तु कादिर ने उसकी एक भी नहीं सुनी । उसने अपने मन का किया ।

असलम के लिए भी कादिर ने कपड़े बनवाये थे । ढीली मोहरी का सफेद पयजामा, मखमल का कुर्त्ता वैसी ही सफेद कलीदार टोपी, जूते और एक रेशमी दुपट्टा ।

अपने लिए कादिर ने एक शेरवानी बनवायी जो टसर की थी और काले रंग की उस पर सफेद चूड़ीदार पायजामा । उसकी जूतियाँ काले रंग की थीं और चमड़े की । उसने काली मखमल की टोपी खरीदी थी जो दिन में और रात की रोशनी में चम-चम करती ।

कादिर घर में मेवा भी लाया जिसमें गिरी, मखाना, छुआरा, किसमिस तथा चिरौंजी थी । अमीना मेहनत की हद कर देती । उसे इतनी समाई नहीं थी कि पैसा देकर अपना अनाज दूसरे से पिसवाती । इसीलिए जब एक पहर रात शेष रहती, तो वह शुक्र के उदय होते ही उठकर बैठ जाती । सबसे पहले खुदा की इबादत करती, फिर चक्की पीसती, यही कारण था कि जब कादिर ने कहा कि वह बाजार से सेमई लाएगा । अमीना ने उसे मना कर दिया । वह हँसकर बोली—'सेमई में पैसे मत डालना । मैंने मैदा घर में पीस ली है । घर में बट लूंगी ।'

कादिर को अपनी माँ से जाने कितनी अधिक श्रद्धा थी । वह श्रद्धा विभोर हो जाता और मन-ही-मन उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगता । उसे गर्व था अपनी जननी पर और उसने ऐसी मातायें बहुत कम देखी थीं ।

कादिर को अपने बाप पर गुमान था। वह कहता कि वालिद खुदा होता है और खुदा से भी बड़ा जो उसकी पूजा करता उसे अल्लाह मिल जाता है।

कादिर रात को जब घर आता तो उसकी रोज की आदत थी कि वह असलम के लिए दूध लाना नहीं भूलता। उसके मन में हमेशा यही भावना बनी रहती कि ज्यादा से ज्यादा बाप की खिदमत कर लूं। इससे बड़ा नेक काम और कोई नहीं।

ईद पर घर की सफाई हुई। दोनों माँ बेटों ने मिल कर उस पर सफेदी की। जो मकान पहले गन्दा और घिनौना लग रहा था वही अब जगमग-जगमग करने लगा।

पड़ौसियों को खुशी होती कि कादिर ने घर को खूब सम्भाल लिया। परवरदिगार अगर किसी को औलाद दे तो ऐसी ही।

अब ईद मुबारक का केवल एक दिन बाकी रह गया था। लोग कहते कि रात को ईरान में चाँद देखा जायगा। अरब में भी वह दिखलाई पड़ेगा। ऐसे ही अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान और काबुल में भी। हिन्दुस्तान में भी चाँद कल ही दिखलाई पड़ेगा।

सवेरे से ही पूरे शहर में उत्साह था जिसे देखो वही नई उमंगों, नयी तरंगों में डूबा था। गरीब, अमीर दोनों भेद भूल गए। वे राग-रंग में मग्न थे। कहीं शहनाई बजती तो कहीं आनन्दोत्सव में बाजे बजते सुनाई पड़ते। चारों ओर खुशियाँ ही खुशियाँ थीं। कादिर को ऐसा लगता कि जमीन पर जन्नत उतर आया है। हर बन्दा अब बन्दा नहीं रहा रसूल का पैगम्बर बन गया है।

सवेरे से ही कादिर हार और गजरे बेच रहा था। उसने सारी रात मेहनत की। इसीलिए खूब ढेर सारे फूल खरीदे थे। वह शहर की सड़कों पर घूमता। अमीरों और उमराओं को टोकता। उनसे मिन्नत भरी मीठी जबान में कहता कि हार ले लो हुजूर। खुदा आपका भला करे सरकार गजरा ले लो। लीजिये देखिये हाथ में लेकर मुआयना फरमाइये। ताजे बेल के फूल हैं। चमेली के हार भी खुशबूदार हैं और यह गुलाब हैं मालिक। चाहे सुर्ख ले लो या गुलाबी।

लोग कादिर की बातों से प्रभावित होते। उन्हें उसके भोलेपन पर तरस आ जाता इसीलिए न मन होते हुए भी वे हार और गजरे खरीद लेते।

कादिर को अचानक शहर कोतवाल मिल गया। वह घोड़े पर सवार था और बाजार का गश्त लगा रहा था। उसने उसे देखते ही घोड़ा रोक दिया और डाँटकर बोला—'क्यों रे लड़के तेरा ही नाम कादिर है?'

'जी हाँ।'

'तुम्हारे वालिद असलम हैं घुड़सवार?'

'जी सरकार।'

'तुम्हारे ही घर में डाका पड़ा था ?'

'जी हाँ ।'

'शाही दरबार में मेरी शिकायत किसने जाकर की तुमने या तुम्हारे बाप ने ।'

कादिर ने कोतवाल की यह बात सुनी तो वह सहम गया । भय से थर-थर काँपने लगा ।

तभी कोतवाल ने जोर से डाँटा और आँखें लाल कर बोला—'जवाब नहीं दिया लड़के ?'

और यह कहने के साथ ही कोतवाल ने घोड़ा हाँकने वाला चाबुक हाथ में लिया और सड़ाक-सड़ाक दो चाबुक कादिर के मार दिये । वही बुरी तरह बिलबिला गया ।

कोतवाल के साथ आठ-दस सिपाही थे वे सब घोड़ों पर सवार थे । वे भीड़ पर नियन्त्रण कर रहे थे ताकि आने-जाने का रास्ता साफ रहे । वे सब भी एक टक कादिर की ओर देख रहे थे ।

और वह रो रहा था । सिसक-सिसक कर उसने डरते-डरते धीरे-धीरे जवाब दिया—'वालिद तो घर से बाहर कहीं जाते नहीं वे चलने से मजबूर हैं । मैं शाही दरबार में कभी नहीं गया । मेरी इतनी उम्र हो गयी । मैं नहीं जानता हूँ माई-बाप हम लोगों ने दरबार में शिकायत नहीं की । उसके लिए मैं कुरान शरीफ की कसम खाता हूँ ।'

'तू झूठ बोलता है लड़के । मैं जानता हूँ कि तू कैसे बाप का बेटा है । जो बदजात और बुरे लोग होते हैं उनकी औलाद पर भी वही असर पड़ता है । असलम जुआरी, शराबी और चाल-चलन का खराब है । झूठ बोलना तो तुम लोगों का पेशा है । दूसरे की खैरात पर जीतें तुम्हें शर्म नहीं आती । तेरी माँ भी बड़ी कमीनी है । उसने ही यह खबर दरबार तक पहुँचाई होगी ।' 'कोतवाल साहब, मैं आपकी इज्जत करता हूं । एक बार कह दिया कि हम लोगों ने कोई शिकायत नहीं की मगर आपको यकीन नहीं होता इसके लिए मैं क्या करूँ ? सच्ची बात कही जा सकती है । समझाई भी जा सकती मगर उसका सुबूत पेश करना मेरे वश में नहीं ।'

'मुझसे दलील करता है हरामी के बच्चे । अभी तेरी खाल खींच लूंगा । तू है किस हवा में मुझे समझ क्या रखा है ।'

यह कहते-कहते कोतवाल ने दो चाबुक कादिर पर फिर बरसा दिये । वह तड़प कर रह गया । उसे भी ताव आ गया । उसने भय को दूर ढकेल फेंका और साहस के साथ बोला—'कोतवाल साहब, आपने मेरी मां को कमीनी बनाया । मुझे हरामी का बच्चा कहा यह मुनासिब नहीं । गरीब हो या अमीर किसी की इज्जत से नहीं खेलना चाहिए मैं ।'

अभी कादिर इतना ही कह पाया था कि कोतवाल ने अपना चमड़े वाला हन्टर निकाल लिया वह घोड़े से नीचे कूद पड़ा और कादिर का हाथ पकड़ उसे बेरहमी के साथ हन्टर से पीटने लगा।

कादिर गिर पड़ा उसके कपड़े फट गये। वह लहू-लुहान हो गया। रोता और चिल्लाता रहा। कोई भी उसके पास नहीं आया। किसी की हिम्मत नहीं थी जो कोतवाल के पास जाता और उसे मना करता। लोग दूर से तमाशा देख रहे थे और उनकी आँखें सजल थीं।

कादिर पिटता रहा, वह रोता-चिल्लाता रहा। उसके हार और गजरे सब खराब हो गये। फूल सड़क पर गिरकर कुचल गये। एक भी गजरा और हार मतलब का नहीं रहा।

अन्त में जब कादिर पिटते-पिटते बेहोश हो गया तो कोतवाल ने उसे छोड़ दिया। वह घोड़े पर आकर बैठा और जाते-जाते घोड़े के चाबुक लगाता हुआ कादिर की ओर उन्मुख होकर बोला—'अगर फिर कभी शाही दरबार में जाकर मेरी शिकायत की तो याद रखना कि मुझसे बुरा कोई नहीं होगा।'

कादिर किसी तरह घर आया। अमीना और असलम ने उसकी यह हालत देखी तो दोनों हाय-हाय करने लगे। दम्पत्ति ने दईया-तौबा मचा दिया।

अमीना ने जब पूरा हाल सुना तो उसका जी जल गया और वह शहर कोतवाल को गालियाँ देने लगी।

असलम को भी क्रोध आया। उसने कोतवाल को बुरा-भला कहा और यह तय कर लिया कि वह खुद शहनशाह के सामने जाकर हाजिर होगा। उससे शिकायत करेगा कि कोतवाल ने उसके बेटे को बेगुनाह पीटा और वह भी त्यौहार के दिन। उसके साथ वह तनिक भी रियायत नहीं करेगा। अगर वह शहर कोतवाल है तो असलम भी शाही घुड़सवार रह चुका है।

अमीना ने जल्दी-जल्दी बेटे के कपड़े बदले। उसके पूरे बदन पर हल्दी और चूने का लेप किया। अह निरन्तर आँसू बहा रही थी कि आज ईद का त्यौहार है और उसका बेटा हाल-बेहाल हो गया। खुदा गैरेत लाये और कोतवाल का बुरा हो।

अमीना ने दूध में फिटकरी डालकर कादिर को पिलायी। फिर उसके बदन पर हल्का-हल्का सेंक भी किया जिससे उसे कुछ आराम मिला।

जैसे हवा चलती और वह पूरे वातावरण में फैल जाती है वैसे ही यह समाचार पास-पड़ौस में बात कहते ही पहुँच गया कि असलम के बेटे कादिर को शहर कोतवाल ने बेगुनाह ही बेरहमी के साथ पीटा है। वह उस पर उल्टी तौहमत लगा रहा था कि उसके बाप ने शहनशाह हुमायूँ के दरबार में जाकर उसकी शिकायत की है।

ज़ावेद को बहुत गुस्सा आया, वह आपे से बाहर हो गया। वह उसी समय

सम्राट् के पास जा रहा था लेकिन लोगों ने समझा कर उसे मना कर दिया। अहमद खून का घूंट पीकर रह गया। उसने सोच लिया था कि वह शहर कोतवाल को इसका मजा चखा कर रहेगा।

दिन भर असलम के घर में पड़ोसी औरतों और आदमियों की भीड़ रही, एक आता एक जाता यही क्रम चल रहा था। जो भी आता वह हमदर्दी की गागर उड़ेल देता, कोई कहता कि समाई करके बैठो असलम, खुदा सब देखता है।

किसी की सहानुभूति इस तरह होती, कि कोतवाल ने जो बेजा हरकत की है इसका नतीजा उसे जरूर मिलेगा, गरीब की हाय बहुत बुरी होती है, वह पत्थर में सूराख कर देती है उसे सुनकर जमीन की छाती फट जाती और आसमान हिलने लगता है।

कादिर के बदन पर अमीना तीसरे पहर तक बराबर सेंक करती रही, वह निरन्तर पीड़ा से कराहता रहा। उसे तनिक आराम मिला तो झपक गया। यह देख अमीना ने सन्तोष की साँस ली और वह बेटे के लिए खुदा से खैर मनाने लगी।

आने-जाने वालों में यह चर्चा सबसे पहले चलती कि चाँद आज ही निकलेगा इसमें तनिक भी शक नहीं। अरे शाही मस्जिद के बाहर तो अभी से मेला लग रहा है। नमाज पढ़ने वालों के कपड़े बिछे हैं। चारों तरफ भीड़ ही भीड़ है।

अमीना यह सुनती तो उसे मानसिक वेदना पहुँचती। उसका अन्तःकरण कहने लगता कि आज सारे शहर में त्यौहार का मौज मेला है। लोग खुशी से चाँद निकलने का इन्तजार कर रहे हैं मगर उसकी खुशी किस्मत ने छीन ली। शायद खुदा ने वरदान में उसे आँसू ही दिए थे वही अनमोल मोती वह लुटाने लगी। उसके आँसुओं का खजाना कभी खाली नहीं होगा। रोना उसकी तकदीर में लिखा था।

अमीना को याद आया कि कादिर आज सवेरे कहकर गया था कि अम्मी हुजूर तैयार रहना। मैं रात को तुम्हें ईद के मेले में ले चलूँगा। इस साल बाजार की रौनक देखते ही बनती। अच्छी, खासी चहल-पहल है। अब्बाजान को चलने में तकलीफ होगी। उन्हें यहाँ से किराये की बैलगाड़ी पर मेले ले जाऊँगा, वहाँ बैशाखी के सहारे घूम-फिर लेंगे। मैं उन्हें सम्भाले रहूँगा, यह मेरी जिम्मेदारी है।

अमीना का मन नहीं माना, वह सोते हुए पुत्र के पास आई। स्नेहवश उसके माथे पर हाथ रख दिया, लेकिन यह क्या वह एकदम चौंक पड़ी। कादिर को तेज ज्वर चढ़ा था। उसका चेहरा सुर्ख हो रहा था।

अमीना भागी-भागी असलम के पास गई और उससे आँसू बहाती हुई कहने लगी—'लड़के को बुखार आ गया। घरेलू दवाईयाँ तो बहुत दी, लेप किया मालिश के साथ सेंका भी अब बुखार आ गया है। जाओ किसी हकीम को बुला लाओ। मेरा दिल न जाने कैसा-कैसा हो रहा है।'

असलम गमगीन हो गया। उसने अमीना को कुछ भी जवाब नहीं दिया।

बैशाखी लगाकर पुत्र के पास आया और फिर उसके बिस्तर पर बैठ गया। उसने नब्ज़ देखी सिर पर हाथ रखा। ज्वर तेजी का था। वह चौंका और मन-ही-मन घबरा गया।

तत्क्षण ही असलम उठकर खड़ा हो गया और जाते-जाते अमीना से बोला—'मैं हकीम के घर जाता हूँ कादिर की अम्मी। तुम इसे जगाना मत। अगर थोड़ी देर और सो लेगा तो बुखार कम हो जायेगा।'

अमीना को पुत्र प्यारा था। ऐसे ही पति असलम का वह जरूरत से ज्यादा ख्याल रखती। खिदमत भी खूब करती। उसका मन नहीं माना। वह पलक मारते ही उठ खड़ी हुई, पति की दाहिनी बाँह थाम ली, और उसे चौखट तक छोड़ आयी।

यहीं नहीं अमीना देर तक दरवाजे पर खड़ी रही। वह जाते हुए अपने पति की गतिविधि देखती रही और मन-ही-मन अल्लाहताला से दुआ करती रही कि उसका खाविंद सही सलामत जाकर लौट आये। उसकी राह आसान हो जाए और मंजिल उसे महसूस न हो।

जब तक असलम नजरों से ओझल नहीं हो गया। अमीना ज्यों-की-त्यों खड़ी रही। उसकी विचार शृंखला चलती रही, फिर जब वह पुत्र के पास आई तो भी पति के सपने ही देख रही थी। उसे वर्तमान परिस्थिति का तनिक भी बोध नहीं रहा।

× × ×

असलम जब हकीम के दवाखाने में पहुंचा तो वे गद्दी से उठने ही वाले थे। उसने जब उनसे मिन्नत की और अपने साथ घर चलने के लिए कहा तो हकीम सहमत हो गया। वह साथ चल दिया यद्यपि उसकी आने की इच्छा नहीं थी।

हकीम रहमदिल था। वह गरीबों के साथ बहुत अच्छा सलूक करता इसीलिए शहर में उसकी शौहरत थी। वह अपने से नहीं कहता बड़ा बोल कभी नहीं बोलता। मगर लोग यही कहते कि वह शाही हकीम से कम अक्लमन्द नहीं। उसकी सूझ गहरी है। मरीज को फायदा होकर रहता।

हकीम किसी बीमार के घर पैदल नहीं जाता, उसके लिए सवारी आती। किन्तु असलम के साथ वह पैदल ही चल दिया। कादिर को आकर देखा। उसे दवा दी और फिर चलते-चलते यह कहा—'आज पुरवाई हवा चल रही है। यह चोट वगैरह के लिए बहुत खराब होती है। लड़के को हवा से बचाना नहीं तो बदन का दर्द बढ़ जायेगा।'

हकीम ने दवा के पैसे भी नहीं लिये। अमीना उसकी मिन्नत करती रही। अन्त में जब विवश हो गयी तो दीन स्वर में बोली—'हकीम साहब आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैं इसकी कायल हूँ और आप का शुक्रिया अदा करती हूँ।'

अमीना एक क्षण चुप रही और पुनः कहने लगी—'खुदा ने चाहा तो कादिर को आराम हो जायेगा। फिर आपको तकलीफ नहीं दूँगी हकीम साहब। उसे आपके मकतब में लेकर आऊँगी यही दुआ दीजिये।'

'खुदा हाफिज।'

हकीम ने यह कहा और वह घर से बाहर निकल गया।

चौदहवाँ

जब आसमान के रूपहले दीये जल गये और घर में भी शमादान की रोशनी हुई तो कादिर जागा। हकीम ने अमीना को मना किया था कि सोते से जगाना मत। दवाई जागने पर ही देना तभी फायदा होगा।

अमीना ने दवाई दी फिर उसने काढ़ा बनाने के लिए हांड़ी में पानी चढ़ा दिया। उसका विश्वास था कि काढ़ा पीते ही बुखार एकदम उतर जायेगा।

जब असलम के अच्छे दिन थे तो घर में रोज शमादान ही जलता। बुरे दिनों ने मोमबत्ती और चिराग भी मयस्यर नहीं होने दिया। मगर अब शमादान रोज जलता और कादिर उसी की रोशनी में पढ़ता-लिखता। अन्दर कोठरी में अमीना अन्डी के तेल का दीपक जलाती। बावर्ची खाने में भी वह चूल्हे की आग की रोशनी से काम चला लेती या फिर मोमबत्ती जलाती। वह भी थोड़ी देर के लिए फिर बुझा देती।

कादिर के कमरे में शमादान जल रहा था। वह आंखें खोले छत की ओर देख रहा था। गहरे विचारों में खोया था। ऐसा लगता कि वह कुछ भूल गया है। उसे याद कर रहा है।

अमीना जब काढ़ा लेकर आयी तो कादिर बड़ी मुश्किल से उठा और कराह कर बैठा। उसने कड़वा-कड़वा बदजायके वाला काढ़ा पीया तो मुंह का स्वाद खराब हो गया और ऊबकाई आने लगी।

अमीना ने पुत्र को लिटाया और फिर ममता भरे मृदु स्वर में बोली, सो जाओ बेटा। मैं चादर ओढ़ाये देती हूँ। हकीम साहब का कहना था कि काढ़ा पीते ही पसीना छूटेगा और बुखार उतर जायेगा।'

अमीना ने चादर ओढ़ा दी। कादिर कुछ क्षण तक तो मुँह ढांपे लेटा रहा। फिर उसने चादर उतार फेंकी और सामने चटाई पर बैठी मां अमीना से कहने लगा—'अम्मी हुजूर मेरी एक इलतजा है।'

'क्या ?'

'मैं तुम्हें मेला घुमाने ले जाऊँगा साथ में वालिद भी चलेगें।'

अमीना यह सुनते ही उदास ही गई। वह पुत्र के पास आ उसके सिर पर हाथ फेरती हुई प्यार से पुचकार कर बोली—'तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है तुम्हें बुखार है। एक तो तुम चल नहीं सकते और दूसरे ऐसी हालत में तुम्हारा घर से बाहर निकलना मुनासिब नहीं। दुनिया के मालिक की मेहरबानी होगी, हम सब लोग अगले साल ईद मेला देखेंगे और कुछ दिन बाद बकरा ईद आ रही है। उस त्यौहार पर भी तो बहुत बड़ा मेला लगता है।'

यद्यपि कादिर को बुखार था और उसके बदन में दर्द भी बहुत था, लेकिन फिर भी वह उठकर बैठ गया और मां से जिद करने लगा कि वह मेले जरूर जायेगा। साथ में दोनों मां-बाप को भी ले जायेगा।

असलम ने भी बेटे को समझाया मगर वह नहीं माना। उठकर खड़ा हुआ तो पैर काँपे दो कदम चला तो लड़खड़ा कर गिर पड़ा।

अमीना ने जल्दी से पुत्र को सम्भाला। वह रोने और हाय-हाय करने लगी।

किसी तरह कादिर बिस्तर पर लेटा। उसकी आँखों में आँसू आ गये। अमीना ने अपने आंचल से उसके आँसू पोंछे। वह देर तक उसे समझाती और ढाढस बँधाती रही।

× × ×

जैसे ही आसमान में ईद का चाँद निकला। गोले छूटे, तोपे दागी गईं। पूरे का पूरा शहर नमाज पढ़ने के लिए मस्जिदों में उमड़ पड़ा।

शहर में जश्न मनाया जा रहा था। सभी तरफ रोशनी थी। जहाँ देखो वही चिराग जलते। ऐसा लगता कि यह रात नहीं दिन है।

किन्तु अमीना के घर में उसके आँसू बह रहे थे। वह बेटे के पास सारी रात बैठी रही, सोई नहीं।

और कादिर, उसे तनिक झपकी लगती और फिर आँखें खुल जातीं। वह पीड़ा से कराहता। उसका सारा बदन दुख रहा था।

असलम ने भी कोरी आँख सवेरा कर दिया। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था। रह-रह कर शहर कोतवाल पर क्रोध आता कि वह जल्लाद है उसने मेरे बेटे को नाहक ही पीटा।

सवेरे कादिर का बुखार तो उतर गया। लेकिन दर्द में तनिक भी कमी नहीं हुई। उसे दर्द की वह पुड़िया दी गई जो हकीम ने प्रात: देने के लिए बतलाई थी। उससे कुछ नशा सा मालूम हुआ वह सो गया और असलम बैशाखी लगाकर हकीम को उसका हाल बतलाने चला गया।

रास्ते में असलम की एक पुराने दोस्त से मुलाकात हो गई। वह भी एक

घुड़सवार था और उसके साथ ही काबुल से आया था। उसका नाम रुस्तम था।

रुस्तम घोड़े पर सवार था। वह असलम को देखते ही घोड़ा रोक नीचे कूद पड़ा। उसने उसे गले से लगाया फिर ईद की मुबारकबाद दी।

असलम बहुत दिन बाद रुस्तम से मिला था। उसे भी खुशी हुई और वह फूला नहीं समाया।

रुस्तम ने अफसोस जाहिर करते हुए असलम से कहा—'कल मैंने जो कुछ सुना उसे सुनकर बहुत गुस्सा आया। कल आ नहीं पाया आज तुम्हारे घर मैं जरूर आता। शहर कोतवाल का दिमाग आजकल सातवें असमान पर है। वह इन्सान को इन्सान नहीं हैवान समझता है। उसकी आंखों में सूअर का बाल है इसलिए गरीबों को सताता और उन्हें परेशान करता है! सच कहता हूँ दोस्त ऐसे लोगों को खुदा कभी माफ नहीं करता। तुमने उसके खिलाफ कोई कदम नहीं उठाया। चुप होकर बैठे रहे। तुम्हें तो जहांपनाह के सामने पेश होना चाहिए। वे तुम्हारी फरियाद जरूर सुनेंगे।'

'मैं कहीं नहीं जाऊँगा रुस्तम भाई। जो ज्यादती करता है, उसे उसका अन्जाम जरूर मिलता है। अपना तो एक असूल है कि बदला लेने वाला कभी बड़ा नहीं होता है। वह हार जाता है। यही सबब है कि मैं खामोश हूँ।'

'तुम खामोश रहो, लेकिन मैं चुप नहीं रह सकता।'

'तो क्या करोगे?'

'करूँगा क्या। शहनशाह तक यह खबर पहुँचाऊँगा ताकि कोतवाल की कस कर खबर ली जाये।'

'तुम्हें खुदा की कसम रुस्तम ऐसा मत करना।'

'क्यों?'

'कोतवाल जल-भुन जायेगा। वह हमें और भी ज्यादा तंग करेगा। वह बड़ा बेरहम हैं। उसके पास तनिक भी मुलाहजा नहीं।'

'अब वह तुम्हें परेशान नहीं कर सकता। इसकी जिम्मेवारी मेरी है।'

'मैं इसे पसन्द नहीं करता।'

'चोट खाकर चुप रहना। यह अच्छी बात नहीं। अगर कांटा पैर में चुभता है तो खटकता है इसलिए निकाल कर फेंकना जरूर पड़ता है। तुम देखते जाओ कि क्या होता है। मैं क्या करता हूँ?'

असलम ने रुस्तम को बहुत समझाया लेकिन उसने उसकी एक नहीं मानी। उसने किसी तरह अपने प्यारे दोस्त को घोड़े पर बैठाया और हकीम के घर पहुँचा।

हकीम ने हाल सुना कुछ दवाईयाँ और दी। इसके अलावा असलम को तसल्ली बख्शी। उसने कहा—'खुदा हाफिज असलम मिया। अल्लाह जल्दी ही

तुम्हारे बेटे को नीरोग कर देगा। बुखार उतर गया है। दर्द भी धीरे-धीरे ठीक हो जायेगा। जो तेल मैंने दिया उसकी पूरे बदन में मालिश करवाओ। हल्का-हल्का सेंक करो। इसके अलावा जब तक दर्द अच्छा न हो जाए दूध में फिटकरी डालकर पिलाते रहो।'

असलम जब चला तो उसने कहा कि वह पैदल ही घर चला जाएगा। परन्तु रुस्तम नहीं माना। वह उसे घोड़े पर चढ़ा उसके घर तक लाया।

रुस्तम ने जब कादिर को देखा तो उसके तन-बदन में आग लग गई। वह शहर कोतवाल को बुरा-भला कहने लगा। उसने देखा कि कादिर की पूरी देह काली पड़ गई है। कहीं-कहीं खाल भी छील गई जिस पर पपड़ी जम रही है। अमीना से उसने कहा—'भाभी अब नेकी का जमाना नहीं रहा। गरीबों के हाल पर तरस खाना तो दूर रहा कोई उनकी तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखता। शहर कोतवाल ने सोचा होगा कि असलम नरम चारा है। वह मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता। यह उसकी भूल है। मैं उसे सबक पढ़ा कर मानूंगा।'

असलम की चिन्ता बढ़ गई वह परेशान हो उठा। झगड़ा करना और किसी की बुराई करने की उसकी आदत नहीं थी। उसने रुस्तम को बहुत समझाया मगर रुस्तम अपनी ही कहता रहा। जब वह चला गया तो असलम अमीना से बोला—'देखो कादिर की अम्मी जब हम लोगों ने जहांपनाह से कोई शिकायत नहीं की तब तो शहर कोतवाल हमारे सिर हो गया और जब उसकी शिकायत होगी तो उस पर भूत सवार हो जायेगा। रुस्तम को मना किया, लेकिन वह जुल्म के खिलाफ है।'

अमीना ने एक दीर्घ उच्छवास ली। वह आसमान की ओर देखने लगी। उसके मुँह से थका-हारा स्वर निकला—'रुस्तम शिकायत करे या न करे कोई भी बात छिपती नहीं। आखिर डाके वाली बात शहनशाह को कैसे मालूम हो गई। तसल्ली रखो। शहर कोतवाल हौआ नहीं जो हम लोगों को खा जाए।'

कादिर खुश था। उसने असलम से कहा—'अब्बा हुजूर आप फिक्र क्यों करते हैं। अब शहर कोतवाल मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता है। सच कहता हूँ। कसम कुरान की। मुझे उससे बिल्कुल डर नहीं लगता है।'

'शाबाश बेटे तेरी हिम्मत की मैं दाद देता हूँ इसीलिए तो कहता था और चिल्लाता था कि तू शाही सेना में भरती हो जा। तुझे सिपाही बनना चाहिए। तू ··।'

अभी असलम इतना ही कह पाया था कि अमीना बीच में बोल उठी—'मैं अपने लड़के को शाही फौज में नहीं भेजूंगी। ऐसा कभी नहीं हो सकता।'

'मैं जोर नहीं देता और न जिद ही करता हूँ। तुम मां हो मत भेजो। तुम्हारी मर्जी। बुलाता ही कौन है।'

'हाँ न बुलाये मुझे मंजूर है। ऐसी नौकरी किस काम की जिसमें जान हमेशा

हथेली पर रहती है।'

दम्पत्ति में देर तक इसी विषय में बातें होती रही। अन्त में अमीना ने उस प्रसंग को समाप्त किया। वह उठ कर वहाँ से चली गई। उसके अन्तःकरण में बैठी दूसरी अमीना बराबर कहे जा रही थी—'अगर तुम्हारा खाविंद मुगलिया फौज के अन्दर नौकर न होता तो उसकी बाँह नहीं जाती और न पैर ही टूटता। वह तो कहो जान बच गई वर्ना मौत में कुछ बाकी नहीं रहा था। लड़के को मत भेजना। धोखा हो सकता है। इस समय शहंशाह चारों तरफ से दुश्मनों से घिरा है। लड़ाईयाँ चल रही हैं। कादिर को घर में ही रखो। इसी में तुम्हारी भलाई है।'

× × ×

कादिर को स्वस्थ होने में पूरे बारह दिन लग गये। तब कहीं जाकर वह इस योग्य हुआ कि चल-फिर सके और अपना काम देखे।

कादिर जब शाम को बाजार जाता और हार तथा गजरे बेचता हुआ सड़कों से गुजरता तो उसकी निगाह सतर्क रहती। वह जानता था कि शहर कोतवाल से उसकी टक्कर एक बार जरूर होगी। वह दबेगा नहीं। हिम्मत से काम लेगा। जो लोग डरकर पीछे हट जाते जावेद चाचा कहते हैं कि वे फिर दुनियाँ में कुछ भी नहीं कर सकते।

बकरीद आने वाली थी। रुस्तम शहंनशाह से कोतवाल की शिकायत नहीं कर पाया। उन दिनों सम्राट् आगरे में था और बहुत ज्यादा परेशान था।

जिसकी जैसी भावना होती वह एक दिन प्रत्यक्ष रूप में सामने अवश्य आती। शहर कोतवाल एक दिन अचानक ही कादिर को मिल गया तब साँझ हो आई थी। दोनों की निगाहें चार हुईं। दोनों ने एक दूसरे को खूब गौर पूर्वक देखा।

कोतवाल एक क्षण के लिए रुका। उसने घोड़े की लगाम थाम ली। उसके बाद वह आगे बढ़ गया और कादिर अपनी जगह पर खड़ा रहा।

कादिर की हिम्मत ने उसका साथ दिया। वह दो कदम आगे बढ़ा और शहर कोतवाल को टोकता हुआ बोला—'कोतवाल साहब सलाम वालेकुम! हार ले लीजिए। गजरे भी लाया हूँ। पसन्द कर लीजिये।'

कोतवाल ने घोड़ा रोक दिया। उसने पीछे गरदन घुमाई उसे ताव आ गया कादिर पास आ चुका था। वह रोष भरे स्वर में बोला—'लड़के तू बड़ा गुस्ताख है। मुझे नहीं चाहिए हार और गजरे। इस बार शिकायत नहीं की नहीं तो उसका भी मजा चख लेते।'

कादिर को हँसी आ गई। वह तनिक भी भयभीत नहीं हुआ। निर्भीकता भरे स्वर में कहने लगा—'शिकायत किससे की जाए? क्या आपको मालूम नहीं।'

कोतवाल चौंका। उसने कादिर को नीचे से लेकर ऊपर तक देखा। फिर डाँट कर बोला—'क्या?' 'जहाँपनाह आजकल आगरे में हैं। और आगरे...।'

कोतवाल को समायी नहीं हुई वह जल्दी से बीच में हा बोल उठा—'तो क्या अभी तुम्हारा शिकायत करने का इरादा है ?'

'यह मैं नहीं कहता। आपने जो पूछा उसका जवाब दिया है।'

'तुम बहुत मगरुर हो। याद रखना अगर मेरे खिलाफ कोई भी हरकत की तो फिर तुम्हारी जान की खैर नहीं। मैं तुम्हें मुलजिम बना दूंगा और शाही बागी साबित कर दूंगा। बस फिर तुम्हें सजाये मौत ही मिलेगी।'

कादिर को हँसी आ गई। उसने कुछ भी जवाब नहीं दिया।

कोतवाल यह देखकर खिसिया गया। उसके तन-बदन में आग लग गई, लेकिन गुस्से को जब्त किया। घोड़ा आगे बढ़ा दिया और मन में यह सोचता हुआ वहाँ से चला गया कि इस लड़के को इतना पीटा भी। देह काली कर दी। फिर भी वह शोख है मुझसे तनिक भी नहीं डरता।

इधर शहर कोतवाल की यह स्थिति थी और उधर कादिर भी जहाँ का तहाँ पर खड़ा था। वह जाते हुए घोड़े और कोतवाल को देख रहा था, उसे खुशी थी कि आज उसने कोतवाल का मुकाबला किया। बात-चीत में तनिक भी पीछे नहीं हटा उल्टा उसे कायल कर दिया।

पन्द्रहवाँ

शहर कोतवाल को जिस बात की आशंका थी। वह उसके सामने आ गई। हुमायूँ आगरे से आया और उसके कान तक यह समाचार पहुँच गया कि ईद वाले दिन असलम के बेटे कादिर को शहर कोतवाल ने बीच बाजार में बेरहमी के साथ पीटा जबकि लड़का बिल्कुल बेनाह था।

इस बार शहनशाह ने शहर कोतवाल को माफ नहीं किया। उसे दरबार में बुलाया। उसकी एक भी नहीं सुनी और फौरन ही दण्ड दे दिया।

शाही हुक्म का फरमान जारी हो चुका था। बादशाह सलामत ने यह आज्ञा दी थी कि शहर कोतवाल को वह हर्जाना देना पड़ेगा जो असलम के घर में डाका पड़ा था।

कोतवाल रोने-गिड़गिड़ाने लगा। उसने कहा—'आलीजाह मैं इतने सोने और चाँदी के सिक्के कहाँ से लाऊँगा जो असलम को दूँ। जेवर भी मेरे पास इतने नहीं और न रेशमी कपड़े ही। मुझे माँफ कर दीजिए आईन्दा ऐसी गलती नहीं होगी।'

बादशाह गुस्से में था, लेकिन फिर भी उसने रहम किया। वह जानता था

कि कोतवाल की औकात इतनी नहीं। इसीलिए गम्भीर स्वर में बोला—'अच्छा तो फिर एक काम करो।'

'क्या ?'

'तुम पाँच सौ चाँदी के सिक्के और एक साल के लिए अनाज लेकर असलम के घर रख दो। जेवर और कपड़े रहने दो। इतना तुम दे सकते हो। इतना मैं अच्छी तरह जानता हूँ।'

कोतवाल ने कुछ कहने के लिए अभी मुँह खोला ही था तभी हुमायूँ दूसरी बात कहने लगा। वह बोला—'हाँ एक बात और है।'

'क्या ?'

'तुम्हें कादिर और असलम दोनों से माफी माँगनी पड़ेगी। तुम्हारी यही सजा है। जो लोग गरीब को सताते हैं वे मुल्क में अमन कभी नहीं रख सकते। जाओ देर न करो। माँ बदौलत ने जो हुक्म दिया उसे जाकर जल्दी पूरा करो।'

अब परिस्थिति वश से बाहर हो गई थी। शहर कोतवाल कुछ भी बोल नहीं पाया। उसने कोशिश की फिर सम्राट् के सामने अपना झुका हुआ मुँह ऊपर नहीं उठाया। वैसे ही घूमा और दरबार से बाहर निकल आया।

रास्ते भर कोतवाल उलझन में रहा। वह घर की ओर जा रहा था। उसका अन्तःकरण कहता कि आज तक कभी उसकी हार नहीं हुई। वह डरा-दबा नहीं। बच्चे से लेकर बूढ़े तक उसे सलाम करते उसका अदब मानते। अब नौबत यह आ गई कि वह जाकर एक मामूली से आदमी से माफी माँगेगा। उसके आगे सिर झुकाएगा। मजबूरी है कोई चारा नहीं। शाही हुक्म तो मानना ही पड़ेगा नहीं तो फिर उसकी सजा मौत है।

कोतवाल घर आया। उसने अपनी बीवी को सब हाल बतलाया। वह बेचारी नेक औरत थी। उसने छूटते ही जवाब दिया—'तुमको कितना मना करती समझाती मगर तुम मानते ही नहीं। जुल्म मत करो ज्यादती बुरी होती है। किसी को सताओगे तो उसके आँसू जरूर बहेंगे। यह बहुत बुरा है। अच्छा कोई बात नहीं। अब देर न करो जो कुछ आलमपनाह ने कहा है। उसे जाकर जल्दी पूरा करो। हमारा कोई नुकसान नहीं। तुम्हारी आमदनी अच्छी है। दौलत फिर जुड़ जाएगी।'

कोतवाल जब असलम के घर पहुँचा तो वह उसे देखकर दंग रह गया और यही समझा कि कोतवाल उसे परेशान करेगा। इसीलिए आया है।

अमीना भी सहम गई। वह एक बार नीचे से लेकर ऊपर तक काँप गई। उसका हृदय तेजी से धड़कने लगा और अन्तःकरण बोला कि कोतवाल की शायद शिकायत हो गई इसीलिए वह हम लोगों से बदला लेने आया है।

तब तीसरा पहर था। कादिर घर में था। वह बाजार जाने की तैयारी कर रहा था। उसने भी जब कोतवाल को देखा तो अचरज में पड़ गया। कुछ क्षण तक

तो अवाक् रहा। फिर धीरे से बोला—'कोतवाल साहब आदाब अर्ज। कहिए हुजूर कैसे तकलीफ की? आइए तशरीफ रखिए। हम गरीबों का दौलतखाना यही है। किसी तरह जी रहे हैं।'

और यह कहते-कहते कादिर ने मोढ़ा डाल दिया किन्तु कोतवाल बैठा नहीं। वह कादिर से बोला—'बाहर बैल गाड़ी खड़ी है। उस पर जो सामान लदा है। उसे उतरवाकर ले आओ।'

यह सुनकर कादिर चौंका। असलम और अमीना भी कोतवाल का मुँह देखने लगे।

कोतवाल ने अपनी बात फिर दोहराई—'जाओ सामान ले आओ। गाड़ीवान से कह दो वह तुम्हें सहारा दे देगा।'

'कैसा सामान कोतवाल साहब?'

कादिर ने साहस करके जब यह प्रश्न किया तो कहने लगा—'मैं लाया हूँ तुम्हारे लिए।'

'आप लाए हैं और मेरे लिए?'

'हाँ।'

'क्यों?'

'यह सब बताने की जरूरत नहीं। तुम्हें अपने आप ही मालूम हो जाएगा जाओ देर न करो। सामान……।'

कादिर ने कोतवाल की बात पूरी भी नहीं होने दी। वह बीच में ही बोल उठा—'आपने तो मुझे ताज्जुब में डाल दिया है सरकार। आखिर आप सामान क्यों लाए हैं और सामान क्या है?'

'पूरे एक साल के खाने के लिए अनाज है। बोरियाँ उतरवा लो। मुझे देर हो रही है।'

अब अमीना से चुप नहीं रहा गया। वह किवाड़ों की ओट में खड़ी थी। धीरे से बोली—'कोतवाल साहब माफ कीजिए। कादिर से जो गलती हो गई है। उसके लिए मैं माफी की तलबगार हूँ।'

'गलती कादिर से नहीं मुझसे हुई है। मुझे शहंशाह हुमायूँ ने यह हुक्म दिया है। कादिर ने दरबार में जाकर मेरी शिकायत की होगी।'

'खुदा की सौगन्ध खाती हूँ। कादिर ऐसा नहीं कर सकता। चाहे उससे पूछ लो। वह……।'

माँ की बात बीच में काट कादिर अपनी सफाई देता हुआ कहने लगा—'कसम अल्लाहताला की जो मैं दरबार में गया होऊँ। आप यकीन कीजिए। शिकायत किसी और ने की होगी। मेरे घर से कोई नहीं गया।'

असलम की आंखों के सामने रुस्तम का चेहरा घूम गया और अन्त:करण

कहने लगा—'यह काम रुस्तम का है। जावेद और अहमद को तो तुमने मना कर दिया था।'

कोतवाल ज्यों-का-त्यों खड़ा था। उसे जल्दी हो रही थी। इसीलिए उकताकर बोला—'मेरा वक्त खराब मत करो कादिर। मुझे और भी काम है। जाओ जल्दी करो।'

यह कहने के दूसरे ही क्षण कोतवाल अमीना की ओर उन्मुख हुआ और कपड़े की एक थैली उसकी ओर बढ़ाता हुआ व्यस्त स्वर में कहने लगा—'ये लो पाँच सौ चाँदी के सिक्के हैं। ये हरजाने के बतौर तुम्हें देने के लिए बादशाह ने कहा है।'

अमीना ने थैली नहीं ली। तब कोतवाल ने वह असलम के सामने फेंक दी। उसके मुँह से निकला—'इसे सम्भालो असलम। मैं अब चलता हूँ।'

इसके बाद कोतवाल रुका नहीं। वह तेजी के साथ घर से बाहर निकल गया। कादिर और असलम उसे बुलाते ही रह गए।

कोतवाल के जाने के बाद कादिर ने बाहर जाकर बोरियाँ उतरवायीं। उन्हें घर में लाकर रखा।

अमीना ने देखा उन बोरियों में किसी में गेहूँ, किसी में जौ, ऐसे ही चना उड़द, मूंग, मसूर, लोबिया, चना और अरहर की दालें थीं। सरसों, गुड़ और खाँड भी थी।

देर तक घर में यही चर्चा चलती रही कि रुस्तम ने शिकायत की। जहाँपनाह ने कोतवाल को हरजाने के लिए हुक्म दे दिया। यह अच्छा नहीं हुआ। अब कोतवाल हम लोगों का दुश्मन बन गया। वह छिपी कार्यवाही करेगा जिससे हम सब परेशान हो जाएँगे।

× × ×

जावेद और नूरमहल को जब मालूम हुआ कि कोतवाल असलम को हरजाना दे गया है तो वे बहुत खुश हुए। दम्पति ने जाकर मुबारकबाद दी।

ऐसे ज़रीना और अहमद को भी प्रसन्नता हुई। वे फूले नहीं समाए।

रुस्तम भी आया और आते ही उसने कहा—'देखा असलम भाई, आखिर कोतवाल को झुकना पड़ा। मैं पहले ही कहता था अब सीधाई का जमाना नहीं रहा। घी सीधी उँगलियों से कभी नहीं निकलता। उसे निकालने के लिए उँगलियाँ टेढ़ी करनी पड़ती हैं।'

असलम ने ऊबकर एक लम्बी साँस ली और धीरे से बोला—'मैं यह नहीं चाहता था। मेरे लिए तो खतरा पैदा हो गया।'

'कैसा खतरा ?'

'कोतवाल से दुश्मनी हो गई। इस रंजिश का नतीजा अच्छा नहीं होगा।'

'डरने की कोई जरूरत नहीं। अब कोतवाल तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।'

'दुश्मन को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए। वह छिपकर बदला ले सकता है।'

अमीना ने भी पति का समर्थन किया। उसने भी यही कहा, लेकिन रुस्तम हँसता रहा। ऐसा लग रहा था मानो उसने बहुत बड़ी बाजी जीत ली है।

जब सब लोग चले गए तो अमीना और असलम में इस तरह बातें होने लगीं। अमीना के मुँह से निकला—'यह पाँच सौ रुपये आए हैं। इनसे कादिर दुकान करेगा। फिर हमारी सारी मुश्किलें आसान हो जाएँगी।'

असलम का मन नहीं था कि कादिर दुकान करे। वह उसे सिपाही बनाना चाहता था लेकिन फिर भी अमीना का मन रखने के लिए उसने पूछ लिया—'किस चीज की दुकान करवाना चाहती हो कादिर की अम्मी?'

'परचून की या फिर कपड़े की।'

'तुमने ठीक ही सोचा कादिर का भी मन टटोल लो कि वह क्या चाहता है?'

'पूछूँगी, पूछ लूँगी वही वैसे ही करेगा जो मैं कहूँगी। मुझे उस पर नाज है। मैं तो यही कहूँगी कि ऐसी औलाद खुदा सब को दे।'

असलम अमीना की हाँ-में-हाँ मिलाता रहा। उसने तनिक भी विरोध नहीं किया।

फिर जब कादिर की राय ली गयी तो उसने कहा—'मैं कपड़े की दूकान करूँगा। वह भी घर में नहीं बाजार में दूकान किराये पर लूँगा। रोजगार दाता होता है। वही आदमी को सरसब्ज करता है। नौकरी में कुछ भी नहीं रखा।'

इस प्रकार योजना बन गई और बाजार में दूकान ढूँढ़ी जाने लगी।

जावेद और अहमद ने जब यह सुना तो उन्हें कादिर पर गर्व हो आया। वे पीठ-पीछे उसकी प्रशंसा करने लगे। नादिरा भाई की बढ़ती मनाती अब वह भी बड़ी हो गयी थी। वह जब अमीना के पास आती तो उसे यह महसूस नहीं होने देती कि वह गोद ले ली गई है और पराये घर में रहती है।

किन्तु रहमान अधिक लाड़-प्यार पाने के कारण कुछ ढीठ हो गया था। उसकी संगत शराबी लड़कों की हो गई। वह कोई-न-कोई शरारत करता ही रहता। यह उसकी आदत बन गई थी। पहले जरीना उसे दुलार समझती। अहमद भी हँस कर टाल देता कि बच्चा है अभी उसमें समझ नहीं, लेकिन अब रोज शिकायतें आती और दोनों की नाक में दम हो गया।

अमीना जब यह सुनती तो उसे दुख होता वह पुत्र को समझाती। असलम भी डाँटता कादिर तो कभी-कभी उसे पीट भी देता। वह तनिक भी रियायत नहीं करता।

यों तो अमीना निश्चिन्त हो गई थी, लेकिन रहमान की ओर से उसे हमेशा चिन्ता लगी रहती। वह सोचती कि एक कादिर है जो बाप का नाम रोशन कर

रहा है। और एक यह रहमान है जो मेरी कोख को बदनाम कर रहा है। यही तो कहा जाता है कि पाँचों अँगुलियाँ कभी बराबर नहीं होती। नसीब में आराम ही आराम हो ऐसा इस दुनिया में मुमकिन नहीं। हर बन्दा किसी-न-किसी चक्कर में पड़कर परेशान जरूर होता।

असलम को अपना जीवन भार जैसा लग रहा था। उसे जीने की कोई भी ख़ुशी नहीं थी। वह दिन-रात यही सोचा करता कि मुझे इस दुनिया से चला जाना चाहिए। अपाहिज होकर जीना मरने से भी गया-बीता है। कुछ लोग जिन्दगी के कायल हैं लेकिन मैं तो परवरदिगार से रोज मौत माँगता हूँ। ऊपर वाला सुनता ही नहीं।

यही कारण था कि असलम कभी प्रसन्न नहीं रहता। एकान्त पाते ही वह गहरे विचारों में खो जाता। न जाने क्या-क्या सोचा करता।

× × ×

एक दिन बादशाह हुमायूँ की सबारी निकल रही थी। सड़क के दोनों तरफ जनता की भीड़ लगी थी। लोग अपने सम्राट् का अभिवादन करते, सिर झुकाते। शहनशाह हाथी पर सवार थे। शाम का समय था। वह मगरीक की तरफ जा रहा था। यह रास्ता शाही मस्जिद को जाता।

रहमान कुछ लड़कों के साथ गुल्ली खेल रहा था। वह खेल में इतना मशगूल था कि अपने साथियों के संग खेलता ही रहा। सवारी देखने नहीं आया।

सबारी पास आ गई थी। शहनशाह उधर से गुजर रहा था। अचानक गुल्ली आकर उसके माथे पर लगी। वह तिलमिला गया। निशाना ऐसा लगा था कि आँख बच गई।

महावत ने फौरन ही हाथी रोक दिया। अंगरक्षक इधर-उधर भागे। वे तलाश करने लगे कि गुल्ली किसने मारी ?

और फिर रहमान पकड़ा गया। वह बादशाह के सामने लाया गया। वह डर से थर-थर काँप रहा था। वह नहीं जानता था कि उसकी गुल्ली शहनशाह हुमायूँ के माथे पर जाकर लगेगी। बादशाह के खून आ गया था। उसे उसने रुमाल से पोंछा। फिर उसने रहमान की ओर देखा। वह अपनी चोट भूल गया। उसे तरस आ गया। उसमें दयालुता उतर आई और वह हँस कर बोला—'लड़के देखकर खेला करो। किसी और के लग जाती तो वह तुम्हें जरूर पीटता। किसके लड़के हो ?'

'अहमद आपकी फौज में घुड़सवार है। मैं उन्हीं का गोद लिया हुआ बेटा हूँ। उनके कोई औलाद नहीं थी।'

'तभी चंचल हो और तुम्हारे वालिद का क्या नाम है ?'

'असलम।'

'असलम ! कौन असलम ?'

'वे अपाहिज हो गए हैं। पहले वह भी आपकी सेना में नौकर थे।'

'अच्छा वही असलम जिनका बेटा कादिर है?'

'जी हाँ।'

'अच्छा जाओ। भाग जाओ अब ऐसी गलती कभी मत करना।'

रहमान को जान-सी मिली। वह वहाँ से सिर पर पैर रखकर भागा। सीधे जरीना के पास आकर साँस ली और उसे कुछ भी नहीं बतलाया। मगर थोड़ी ही देर में सब जगह चर्चा फैल गई कि अहमद के बेटे ने बादशाह के गुल्ली मारी। वह बड़ा गुस्ताख है तनिक भी नहीं डरता। इस पर जरीना बिगड़ी। अहमद ने भी घर आकर रहमान को खूब डाँटा।

अमीना ने रहमान को बुलवाया। उसने उसकी अच्छी खासी खबर ली। असलम ने कान ऐंठे और कादिर ने उसे पीटा।

जहाँ भी चर्चा चलती लोग यही कहते कि सम्राट् दयालु है। उसके दिल में दया ही दया है। उसने रहमान को माफ कर दिया। अब अहमद को सोचना चाहिए जिसने लाड़-प्यार में लड़के को आवारा बना रखा है। अगर लड़का असलम के घर में होता तो इतना कभी नहीं बिगड़ता।

औरतें भी आपस में बातें करतीं कि अमीना की किस्मत खराब है। एक लड़का कादिर है और दूसरा रहमान। दोनों में जमीन आसमान का फर्क है। एक बाप के नाम पर धब्बा लगाता है और एक बुझ रहे चिराग को रोशन कर रहा है।

और रहमान जब अपने साथियों के बीच में पहुँचा तो शेखी बघारता हुआ बोला—'बादशाह ने मुझसे कुछ भी नहीं कहा। उसने हँसकर टाल दिया। तुम लोग कह रहे थे कि मुझे सजा जरूर मिलेगी।'

साथी कुछ नहीं बोले। वे जानते थे कि अगर रहमान अहमद का बेटा न होता तो उसे दण्ड अवश्य दिया जाता।

सोलहवाँ

सर्दी का मौसम था। अमीना आँगन में बैठी धूप का सेवन कर रही थी। कादिर एक हस्तलिखित पुस्तक की प्रतिलिपि तैयार कर रहा था। वह उसी कार्य में व्यस्त था।

असलम बिस्तर पर बैठा रजाई ओढ़े खुदा की इबादत कर रहा था। घर में एकदम शान्ति थी। आँगन में गौरैया चीं-चीं करतीं। वे फुदकतीं और फुर्र-फुर्र

करती हुई इधर-से-उधर उड़ जातीं। अमीना उनकी गतिविधि देखती तो मन ही मन मगन हो जाती। उसने ऊपर दृष्टि उठाई तो देखा कि सुनहली धूप मुंडेर से उतर कर छज्जे पर फैल रही है।

तभी सहसा बाहर किसी की आवाज सुनाई दी। आगन्तुक असलम को बुला रहा था।

'कौन ?'

अमीना चौंकी। वह प्रवेश द्वार की ओर देखने लगी।

आवाज फिर आई। स्वर अपरिचित था। असलम ने भी उधर ध्यान दिया। वह कादिर से बोला—'देखो बेटा कौन है ?'

कादिर बाहर जा ही रहा था। बाप की बात सुनकर कहने लगा—'जी अब्बा हुजूर, मैं जा रहा हूँ।'

फिर जब तक कादिर दरवाजे पर पहुँचा तीसरी आवाज भी आई।

'कौन ? कहिये।'

कादिर के मुंह से यह निकला ही था कि वह चौंक गया। उसने देखा कि शाही सिपाही सामने खड़ा है। वह घोड़े पर सवार है। लगाम उसके हाथ में है।

'तुम असलम के बेटे कादिर हो ?'

'जी हाँ।'

'ठीक है। असलम की कोई जरूरत नहीं, तुमको ही जहाँपनाह ने बुलाया है।'

'मुझे ?'

'हां तुम्हें।'

'क्यों ?'

'यह मैं नहीं जानता, तुम्हें मेरे साथ ही चलना पड़ेगा। शहनशाह का यही हुक्म है।'

कादिर असमंजस में पड़ गया। वह तत्क्षण ही घुड़सवार को कुछ भी जवाब नहीं दे पाया। उसके मन में शंकायें घर करने लगीं कि रहमान वाला मामला होगा, तभी यह सिपाही आया है।

कादिर को सोच-विचार में पड़ा देख घुड़सवार फिर बोला—'चलो देर न करो। आओ इसी घोड़े पर बैठ जाओ।'

मगर कादिर हतबुद्धि सा खड़ा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसके हृदय की धड़कन तीव्र हो गयी थी। वह पीछे मुड़ा और जाते-जाते घुड़सवार से बोला—'वालिद को बतला दूं। अभी आता हूँ।'

और जब कादिर अन्दर आया। उसने माँ-बाप को सब हाल बतलाया तो अमीना सन्न रह गयी। उसके काटो तो बदन में लहू नहीं। उसके मुँह से उसी हालत में निकल गया—'शहनशाह रहमान की शिकायत करेंगे और दरबार में बुलाने की

कोई वजह नहीं है।'

असलम काँप गया। वह शंका से भयभीत हो उठा। उसने धीरे से कहा—'जाओ कादिर, जाते ही शहनशाह को कोर्निश करना। तहजीब के साथ पेश आना। अगर जहाँपनाह नाराज हो तो खुशामद कर लेना।'

कादिर बाहर आकर घोड़े पर बैठा और वह दरबार की तरफ चल दिया। तब दरबार नहीं लग रहा था। सम्राट् सवेरे का नाश्ता कर अपने खास दरबार में बैठा कुछ अमीरों से बात कर रहा था। उसका हुक्म था कि कादिर को वहीं पर हाजिर किया जाए।

कादिर जब सम्राट् के सामने पहुँचा तो वह जमीन तक झुक गया। बादशाह बहुत खुश हुआ। वह मुस्कराया और उसने आशीर्वाद दिया—'लम्बी उम्र हो। खुदा खैर करे। कहो असलम का क्या हाल है?'

'सब हुजूर की मेहरबानी है। मुझे अफसोस है और मैं हाथ जोड़कर माफी माँगता हूँ। मेरे छोटे भाई रहमान से गलती हो गयी। सरकार ने उसे माफ कर दिया।'

इस पर हुमायूँ हँसा और हँसते-हँसते कहने लगा कि बच्चे गलतियां करते ही हैं, बड़े माफ करते हैं। दुनिया का यही कायदा है। तुम क्या कर रहे हो आजकल।'

'आलमपनाह वही हार और गजरे बेचता, इसके अलावा कुरान शरीफ की नकलें उतारता हूँ।'

'जानते हो कि मैंने तुम्हें क्यों बुलाया है?'

'नहीं।'

'तुम्हारी काबलियत से मैं खुश हूँ। मैंने तुम्हारे बारे में सब कुछ मालूम कर लिया है। इसीलिए फैसला किया है।'

'क्या?'

'मैं तुम्हें वही ओहदा दूँगा जो तुम्हारे वालिद का था। अगर तुमने मन लगाकर शाही खिदमत की तो एक दिन सेनापति बन जाओगे। तुम्हारे सिर पर जीत का सेहरा फहरायेगा।'

'मगर आलीजाह……।'

'क्या?'

'मैं एक सिपाही नहीं। मुझे कुछ भी नहीं आता। मैं…।'

'तुम्हें सब आता है। मैंने सब जान लिया। आज से तुम्हारी नौकरी शाही दरबार में पक्की हो गई। कल से अपने काम पर आ जाओ।'

'लेकिन आलमपनाह… …।'

'लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। तुम तकल्लुफ करते हो। और मैं यह बिल्कुल

पसन्द नहीं करता। जाओ असलम से कह देना कि हमें उसका बहुत ज्यादा ख्याल है। उसने हमारे पीछे जिन्दगी की बाजी लगा दी। हम उसे कभी भी नहीं भूल सकते। और सुनो······।'

यह कहते-कहते सम्राट् तनिक रूका, उसने एक थैली उठाई। वह कादिर के हाथों में देता हुआ स्नेह भरे स्वर में बोला—'लो यह तुम्हारा इनाम है।'

'कैसा इनाम आलीजाह ?'

'तुम्हारी नेक नियत का।'

'मगर मैं··· ······।'

'तुम एक ऐसे चिराग हो कादिर जिससे सारा जहाँ रोशन हो सकता है। मुझे तुम पर फख्र है। ज्यादा नहीं यह पाँच सौ सोने की मोहरे हैं। अपनी माँ को जाकर देना और कहना कि शहनशाह ने कहा है कि वह आराम के दिन बिताए और गरीबी को कभी महसूस न करे।'

काँपते हाथों कादिर ने मोहरों की थैली ले ली। मगर वह हतबुद्धि सा खड़ा रहा। उसके भोलेपन पर बादशाह को तरस आ गया। उसने एक खिदमतगार को हुक्म दिया कि कादिर को सही सलामत उसके घर पहुँचा दिया जाये।

और कादिर जब घर आया, तो अमीना अवाक् रह गयी। उसके मुँह से बोल नहीं निकला। उसने मोहरों की थैली को छुआ भी नहीं। ऊपर आसमान की ओर देखने लगी। उसके मुँह से अस्फुट स्वर निकला जो निराशा भरा था। उसने आँचल फैलाया और आंखों में आँसू भर कर दुनिया के मालिक से कहने लगी—'या अल्लाह परवर दिगार रसूल अल्लाह, मैं विधवा होते-होते बची। मेरा खाविंद अपाहिज हो गया। मेरे बेटे को मौत मत देना। या खुदा मैं तुमसे इसकी भीख माँगती हूँ। शाही हुक्म है मैं इन्कार नहीं कर सकती। मुझे कादिर को फौज में भेजना ही पड़ेगा। परवर दिगार अगर तू माँ होता, तो जानता कि औलाद की ममता कैसी होती है।'

अमीना की आँखों से झर-झर आंसू झर रहे थे। कादिर ने मोहरों की थैली उठाई और उसे असलम के पास ले गया। उसने रोनी सी सूरत बना रक्खी थी। मां का हाल देख कर बेहाल हो गया था। इसीलिए दुःखी स्वर में बाप से बोला—'अब्बा हुजूर, यह तोहफा कुबूल कीजिए। हिन्दुस्तान के बादशाह ने यह अम्मी के लिए भेजा था, लेकिन अम्मी ········।'

असलम ने बेटे की सूरत देखी तो जल्दी से उसे गोद में बैठा लिया। उसने उसके सिर पर स्नेह भरा हाथ फेरा और फिर मुँह चूम बलायें ले गदगद स्वर में कहने लगा—'तुम्हारी अम्मी बेधीरज है। मैं उन्हें बाद में समझा लूँगा। तुम उनकी परवाह मत करो बेटा, यह मोहरें उन्हीं की हैं। उनके अलावा इन्हें कोई भी नहीं छू सकता। बेटा तुम नहीं जानते, औरत घर की लाज है, वही इज्जत है। वही दुनिया। वही मां है, वही बीवी अमीना अपने में एक है। ऐसी औरत दुनिया में

चिराग लेकर ढूंढ़ो तब भी नहीं मिलेगी।'

इस तरह घर में एक ओर खुशी का उदाहरण था तो दूसरी तरफ अमाना के मुँह पर दुख के बादल छा रहे थे। उसे कोई खुशी नहीं थी। वह अपने में बुझ सी गई।

× × ×

कादिर घुड़सवार बन गया। वह नौकरी पर जाने लगा। वहां परेड होती। उसे प्रशिक्षण दिया जाता। युद्ध कला में उसे पारंगत बनाया जाने लगा।

घर पर असलम भी कादिर को लड़ाई के दाँव-पेच सिखलाता। वह उसे बतलाता कि हिरन का शिकार कैसे किया लाता है और तलवार के एक झटके में ही दुश्मन का काम कैसे तमाम किया जाता। भाला फेंकना, तीर चलाना और तलवार से वार करना, यह सब भेद भी सिखलाता।

जावेद खुश था। वह फुरसत के समय कादिर को रणकौशल सिखलाता। सबकी दिली ख्वाहिश थी कि कादिर असलम से भी अच्छा घुड़सवार बने। इसीलिए मनोयोग से उसे अभ्यास कराता। स्नेह से पुचकारता और पीठ थपथपा कर शाबाशी देता।

अहमद भी कादिर का जरूरत से ज्यादा ख्याल रखता। जब तक वह परेड में रहता तब तक वह इस बात का ध्यान रखता कि कोई सैनिक कादिर को परेशान न करे। परेड का दरोगा उससे देर तक कवायद न करवाये। अभी लड़का है, मासूम है। ज्यादा मेहनत से घबरा जायेगा।

रुस्तम को जब पता चला कि असलम का बेटा शाही फौज में नौकर हो गया है तो उसके हर्ष का पारावार न रहा। वह भी कादिर को अपनी आँखों से देखता। उसे पराया नहीं समझता।

सन् १५३७ में हुमायूँ ने शेर खाँ पर आक्रमण किया। वह हार गया और विवश होकर उसने संधि कर ली, लेकिन उसके बाद उसने अपनी शक्ति खूब बढ़ा ली। पूरे बिहार और बंगाल पर अधिकार कर लिया।

तीन साल बाद हुमायूँ ने जब दोबारा शेरखां पर हमला किया तो उसने उसे करारी हार दी। साथ ही पीछा करना शुरू कर दिया क्योंकि हुमायूँ की सैनिक शक्ति कमजोर हो गई थी।

हुमायूं भागा। वह किसी तरह दिल्ली पहुँचा। उसने फिर सेना इकट्ठी की। १५४० ई० में गंगा के किनारे कन्नौज में शेर खाँ से टक्कर हो गई।

सम्राट् हुमायूँ बुरी तरह हारा। उसकी सेना कुछ मारी गई। कुछ तितर-बितर हो गई। कादिर भी युद्ध में काम आया।

इधर बादशाह हुमायूँ अपने परिवार और कुछ सरदारों के साथ पंजाब की ओर चला गया। शेरखाँ दिल्ली पहुँचा। उसने शेरशाह की उपाधि धारण की और

गद्दी पर बैठा।

पूरी दिल्ली में शेरशाह का आतंक छा गया। लोग हुमायूँ की दयालुता याद करते और दुख के साथ कहते कि हुमायूँ आदमी हीरा था। वह इन्सान की कद्र करता और उसका दुख-दर्द समझता था। सुना है कि शेरशाह बड़ा जालिम है। अब देखो प्रजा के साथ कैसा व्यवहार करता। सब सामने आया जाता है।

जो मुगल सैनिक शेष बचे थे उन्होंने हथियार डाल दिये। शेरशाह ने उन्हें अपनी सेना में भरती कर लिया। उसने उनके साथ कोई भी दुर्व्यवहार नहीं किया। पहले जिस किले पर मुगलों का झंडा फहराता अब उसी पर सूर्य खानदान की ध्वज पताका लहराती। कहने वाले कहते कि लोदी बंश तो कुछ दिन रहा, लेकिन मुगल आए और चले गए। बाबर के मरने के बाद हुमायूँ सत्ता को सम्भाल नहीं पाया। वह ईरान चला गया और अब वहीं रह रहा है।

शेरशाह सूरी ने जनता की गलतफहमी को बहुत जल्दी ही दूर कर दिया। उसने उसकी सुख-सुविधा की तरफ सबसे पहले ध्यान दिया। इस तरह दिन बीतने लगे। लोग हुमायूं को भूलने लगे और शेरशाह सूरी के गुणों का गान घर-घर में होने लगा।

बाबर जब से हिन्दुस्तान आया वह लगातार युद्धों में ही व्यस्त रहा। उसे रियाया देखने और उस पर ध्यान देने का समय ही नहीं मिला। ऐसे ही हुमायूँ भी निरन्तर परेशानियों से ही गुजरता रहा। वह भी जनता के हित के लिए कार्य नहीं कर पाया, लेकिन शेरशाह ने राज्य के ढाँचे को ही बदल दिया। उसने हिन्दू-मुसलमानों के बीच जो भेद की दिवाल थी उसे तोड़ने का भरसक प्रयत्न किया। उसने सड़कें बनवाईं। उनके किनारे फल देने वाले वृक्ष लगवाए। प्रत्येक चार मील की दूरी पर एक सराय बनवाई। इन सरायों में हिन्दू और मुसलमानों के ठहरने का अलग-अलग इन्तजाम था। बाजारों की हालत सुधर गई। चीजों के भाव सस्ते हुए। लोग खुशहाल नजर आने लगे। किसी के भी होंठों पर शिकायत नहीं थी।

बुजुर्ग लोग कहते कि दिल्ली हजारों वर्ष पुरानी राजधानी है। यहाँ जब एक सूरज डूबता तो उसके बाद फिर दूसरा निकल आता है।

सत्रहवाँ

अमीना के घर जब खबर पहुँची कि उसका बेटा कादिर लड़ाई में मारा गया तो उसने छाती पीट ली सिर धुना और पति को दोष देने लगी कि अब तुम्हारी

मुराद पूरी हो गई। कादिर मौत के घाट उतर गया। इसीलिए कहती थी कि उसे फौज में भरती न कराओ।

कादिर की लाश लड़ाई के मैदान में ही रह गई। घर में चालीस दिन तक मातम मनाया गया।

असलम को कादिर पर गर्व था। उसने सपने में भी नहीं सोचा था कि उसका पुत्र इतनी जल्दी दुनियाँ से चला जायेगा। मन-ही-मन अपने मुकद्दर को झिकता और निराश-भरी साँसें ले लेकर सोचा करता कि अब वह जी कर क्या करेगा। उसकी जिन्दगी में कुछ भी नहीं रहा।

अमीना की रोते-रोते आँखें गड्ढों में धँस गईं। चेहरा पीला पड़ गया और वह बुढ़िया सी लगने लगी। अब उसका मन किसी भी काम में नहीं लगता। सिलाई से भी उसे उपेक्षा-सी हो गई थी।

जरीना और नूरमहल दोनों अमीना को ढाढ़स बँधातीं। बहुत समझाती मगर वह कहती कि जिसका जवान बेटा उठ जाये उस माँ को धीरज कोई नहीं बँधा सकता। मेरे खुदा मुझे मेरे कादिर के पास भेज दे। मैं यहाँ नहीं रहूँगी। मेरा इस दुनियाँ से जी ऊब गया है।

शहर कोतवाल को हुमायूँ ने अपने राज्यकाल में ही उससे असन्तुष्ट होकर उसे निकाल दिया था और यह हिदायत कर दी थी कि वह दिल्ली तथा आगरा कभी नहीं आएगा। जब हुमायूँ ईरान चला गया और दिल्ली पर शेरशाह सूरी का अधिकार हो गया तो वह पुनः दिल्ली लौट आया और जन-साधारण की तरह रहने लगा। उसका नाम अब्बास था। उसने कोशिश करनी शुरू कर दी कि शाही दरबार में उसे नौकरी मिल जाये। किस्मत अगर साथ दे गई तो वह फिर शहर कोतवाल बन सकता है।

एक दिन अब्बास पर अचानक रुस्तम की दृष्टि पड़ गई। उसने उसे टोका नहीं भली-भाँति पहचान लिया। फिर वह अपने घर नहीं गया सीधा असलम के पास पहुँचा। उसे सब हाल बतलाया कि अब्बास दिल्ली आ गया है।

असलम ने सुनकर कोई जवाब नहीं दिया किन्तु अमीना भीतर-ही-भीतर गुप्त भय की आशंका से काँप उठी। अब्बास उसका दुश्मन था और दुश्मन से खतरा हमेशा रहता है।

अब रहमान और नादिरा दिन भर अमीना के पास बने रहते ताकि उसका मन बहला रहे। वह रोये नहीं और कादिर को याद न करे। नूरमहल जब आती तो घंटों बैठी रहती जाने का नाम ही नहीं लेती। उसकी हमदर्दी इतनी घनी थी कि मुँह से बयान नहीं की जा सकती। कभी-कभी तो वह रो देती जब वह अमीना के बहते हुए आँसू पोंछती। उसे मालूम था कि औलाद की कलक कैसे होती है।

ज़रीना अमीना को अपने साथ मस्ज़िद ले जाती। वह पीर के मजार पर भी

जाती । कभी अपने घर लिवा लाती । वह उसका चित्त बहलाने का सतत् प्रयास करती रहती ।

और घर की परिस्थिति यह थी कि असलम अमीना को समझाता और अमीना उसे । परन्तु दोनों अधूरे ही रहते । वे एक-दूसरे को सन्तोष नहीं दे पाते ।

असलम के कलेजे में घाव हो गया था जिसके लिए वह जानता था कि अब यह जख्म इस जिन्दगी में कभी भर नहीं सकता ।

अमीना का भी कलेजा खाक हो गया था । उससे अब भी धुआँ उठता जिसकी घुटन में वह घुटती और दीर्घ उच्छवांस लेती ।

अमीना जब कादिर को ख्वाब में देखती तो सवेरे आँसू बहाती हुई मिलती । पति को बताती कि रात को मैंने कादिर को सपने में देखा । तब यह ख्याल ही नहीं रहा कि वह मर गया है और मुझे कभी नहीं मिल सकता ।

असलम अपना दुख किसी से भी नहीं कहता । उसकी देह में घुन-सा लग गया था । न तो भर पेट खाना खाता और न पूरी नींद सोता । उसके कलेजे में हूक सी उठती तो भीतर-ही-भीतर विचलित हो जाता ।

× × ×

अब्बास की हालत बहुत ज्यादा खराब थी जो कुछ पास में था वह सब धीरे-धीरे खर्च हो गया । अब रोटियों के लाले थे । रात में उसे नींद नहीं आती और दिन में ऊब-ऊबकर साँसें लेता न तो उसने कोई नौकरी की । कोशिश करने पर भी काम नहीं मिला । दो लड़के थे दो लड़कियाँ । उसने घोड़ा बेच दिया, जेवर भी बाजार चले गये और अब यह नौबत थी कि बर्तन भी बिके तभी रोटियाँ चल सकती थी । उसने बहुत सोचा बहुत विचार किया । उसे मालूम था कि अमीना ने पाँच सौ चाँदी के सिक्के जो मैंने दिए थे किसी भी काम में खर्च नहीं किए । उसके पास ज्यों-के त्यों रखे हैं । इसके अलावा अब्बास ने यह भी सुन रखा था कि शहनशाह हुमायूँ ने कादिर को पाँच सौ सोने की मोहरें दी थी । वे भी अमीना के पास हैं । उसमें से भी कुछ खर्च नहीं हुआ । उसने सोचा कि पहले असलम के घर में डाका पड़ा था । अब मैं चोरी करूँगा । चोर बनकर जाऊँगा । अगर वह रकम मेरे हाथ लग गई तो फिर बेफिक्री हो जायेगी ।

अब्बास इसी तरह योजना बनाता रहा और एक दिन अन्धेरी रात में रस्सी का फन्दा लगाकर असलम के आँगन में उतर गया । दम्पत्ति सो रहे थे उन्हें तनिक भी आहट नहीं मिली ।

अब्बास कोठरी में गया । उसने चकमक पत्थर जलाया जिससे रोशनी हुई । अमीना सोते से जाग पड़ी । वह रोशनी देखकर चौंक पड़ी । उसने शोर मचाया । वह जोर से चिल्लाई—"चोर ! चोर-चोर ।'

असलम जल्दी से उठ बैठा । उसने आवाज दी—'क्या है कादिर की अम्मी ?'

चकमक पत्थर बुझ चुका था और अब्बास बदहवाश-सा खड़ा था और

अमीना पलक मारते ही पति के पास पहुँच गई और हाँफती हुई कहने लगी—'चोर आया है। अन्दर कोठरी में है। शोर मचाओ ताकि पड़ौसी दौड़े वर्ना……।'

'चोर आया है!'

'हाँ, चोर आया है। कोठरी के अन्दर मौजूद है। उसे जाने मत दो। जाओ जल्दी से कोठरी का दरवाजा बाहर से बन्द कर दो।'

असलम एक बार थर्राया। जब वह चला तो कदम डगमगाये। आखिर में बैशाखी लगा कर कोठरी के दरवाजे पर पहुँचा और जैसे ही उसने किवाड़े बन्द करने की कोशिश की अब्बास उस पर शेर जैसा झपटा और एक ही झटके में ही उसे उठा कर जमीन पर पटक दिया। उसने भागने की कोशिश की। प्रवेश द्वार की ओर लपका, लेकिन अमीना किवाड़ों पर पीठ दिए खड़ी थी। वह जोर-जोर से चिल्ला रही थी—'दौड़ो, बचाओ, मेरे घर में चोर आए हैं।'

पड़ौसियों ने सुना। वे हड़बड़ाकर उठे और फौरन ही अमीना के घर की ओर भागे। उसने किवाड़े खोल दिए। पड़ौसी अन्दर आए। अब्बास पकड़ा गया। लोगों ने उसके पैर और हाथ बाँध दिए।

अब्बास ने अमीना और असलम की बहुत खुशामद की कि दम्पत्ति उसे क्षमा कर दे। अब वह ऐसा काम कभी नहीं करेगा, लेकिन अमीना और असलम दोनों मौन रहे। उन्होंने आँख उठाकर अब्बास की ओर देखा भी नहीं। उसका मामला शाही दरबार में चला गया और वह मुलजिम बनाकर कैदखाने में डाल दिया गया।

अमीना के घर में डाका पड़ चुका था और चोरी होते-होते बची। इसीलिए वह भविष्य के प्रति आशंका से भर गई। उसका मन न जाने कैसा-कैसा होने लगा। उसने सोचा कि वह सोने की मोहरें आधी नादिरा को दे दें और आधी रहमान को। फिर वह बेफिक्र हो जायेगी। उसे कोई चिन्ता नहीं रहेगी।

ऐसे ही अमीना ने चाँदी के सिक्कों के बारे में भी सोचा कि उसका भी आधा-आधा बँटवारा कर दे। वह जब तक जीयेगी मेहनत करेगी। हलाल का खायेगी, हराम का नहीं। उसने नेक जिन्दगी गुजारी है और वैसे ही गुजारेगी।

असलम के सामने अमीना ने जब अपना उक्त प्रस्ताव रखा तो असलम ने एक लम्बी साँस ली और निराशा भरे स्वर में कहने लगा—'दौलत मेरे किस काम की। जब उसका खर्च करने वाला ही नहीं रहा तो उसे लुटा दो बेगम। मेरे लिए वह जहर है जहर।'

अमीना रोने लगी। असलम ने भी आँसू बहाये। दम्पत्ति के सामने कादिर की तस्वीर आ गई और वे बेहाल हो गये।

× × ×

जब अमीना जरीना के पास सोने और चाँदी के सिक्के लेकर पहुँची तो

जरीना चौंक गई। उसने सिक्के नहीं लिए। उसका कहना था कि खुदा का दिया हुआ मेरे पास बहुत है। यह रकम अपने पास रखो। मौत और जिन्दगी में काम आयेगी।

अमीना ने बहुत आग्रह किया, लेकिन जरीना ने एक भी सिक्का नहीं लिया। अन्त में वह निराश हो गई और चुपचाप अपने घर लौट आयी।

उसके बाद अमीना नूरमहल के घर पहुँची। वहाँ भी वह सिक्के ले गई थी। उसने जब अपना प्रस्ताव नूरमहल के सामने रखा तो वह तनिक गम्भीर हो गई और धीर भाव से बोली—'मुझे सिक्के नहीं चाहिए नादिरा की अम्मी। ये अपने ही पास रखो। वक्त-जरूरत पर तुम्हारे काम आयेंगे। जिन्दगी से नाउम्मीद मत हो। लोगों पर बड़ी-बड़ी मुसीबतें आती हैं, लेकिन वे जिन्दा रहते हैं।'

अमीना ने खुशामद की उसने हाथ जोड़े किन्तु नूरमहल राजी नहीं हुई। वह उसे बस मना ही करती रही।

जावेद और अहमद को जब यह बात मालूम हुई तो दोनों बहुत दुखी हुए। वे असलम के पास जाकर उसे समझाने लगे कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए।

इस तरह अमीना की योजना कार्यरूप में परिणत नहीं हो पायी। उसे इसका महान् दुख था। वह हार मानकर बैठ गयी और उस धन की रक्षा करने लगी जो उसे कोतवाल और शहनशाह द्वारा प्राप्त हुआ था।

इधर अमीना और असलम की यह स्थिति थी और उधर अब्बास का मुकदमा शेरशाह सूरी के सामने पेश हुआ उसमें वह चोर ठहराया गया। उसकी बुजदिली साबित हो गयी। शेरशाह ने उसे बहुत डाँटा कि जो कभी शहर कोतवाल रह चुका हो। वह चोरी करे धिक्कार है उसकी जिन्दगी को। उसे तो चाहिए कि चुल्लू भर पानी में जाकर डूब मरे।

शेरशाह ने अब्बास को यह सजा दी कि जब तक असलम और उसकी बीबी जिन्दा हैं। वह दोनों की खिदमत करे। उनका खर्च उठाये उन्हें किसी तरह की भी तकलीफ न होने दे। उनके जान-माल की हिफाजत करे। उन पर अगर कोई भी आफत आयी या किसी मुसीबत से गुजरे तो उसकी जिम्मेदारी अब्बास पर ही होगी।

इस तरह अब्बास को मुक्त कर दिया गया। उसकी बदनामी खूब कस कर हुई। उसने घर से बाहर निकलना बन्द कर दिया।

अब अब्बास सोचता कि उसे क्या करना चाहिए। वह न तो घर का रहा और न घाट का। उसकी तकदीर साथ नहीं देती। उसका बुरा हाल है। अगर ऐसी ही हालत रही तो एक दिन यह नौबत आ जायेगी कि वह दिल्ली से भाग जायेगी। और फिर कभी लौट कर नहीं आयेगा।

अब्बास ने एक उपाय सोचा वह असलम के पास आता। उसे खुश करने की सेवा भाव से कोशिश करता। उसका कहना था कि किसी तरह उसे शाही

नौकरी मिल जाये।

असलम दयालु था वह पसीज गया। अमीना को भी रहम आया। मगर अब सम्राट् हुमायूं नहीं, शेरशाह सूरी था। वह क्या जाने कि असलम कौन है, किसका बेटा कादिर था जो लड़ाई में मारा गया।

दिन पर दिन बीतने लगे। सूरी वंश का साम्राज्य पूर्ण रूप से स्थापित हो चुका था। शेरशाह सूरी ने प्रजा के लिए जो कार्य किए वे सबके सब सराहनीय थे। प्रजा की श्रद्धा उस पर दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती। ऐसा सुधार किसी ने भी नहीं किया और न जनता की ओर ध्यान दिया था। उसने जमीन की नाप करवायी। जिससे खेती में सुधार हुआ, किसानों में खुशहाली आई और फसलें पहले से अच्छी होने लगी। उसने लम्बी-लम्बी सड़कें बनवाई। जो आज भी मौजूद हैं। सबसे बड़ी सड़क बंगाल में सोनार गांव से सिन्ध नदी तक जाती थी। यह सड़क पन्द्रह सौ मील लम्बी है जिसे अब जी०टी० रोड कहा जाता है अर्थात् ग्रांड़ ट्रक रोड। पूर्वी और पश्चिमी भारत के प्रायः सभी प्रमुख नगर इसी सड़क पर हैं।

गुरहान पुर से लेकर आगरा तक भी शेरशाह सूरी ने एक पक्की सड़क बनवायी। दूसरी आगरा से मारवाड़ तक जो वियाना होती हुई जाती है। यही नहीं यह मार्ग चित्तौड़ तक जाता।

शेरशाह ने एक सड़क लाहौर से मुलतान तक भी बनवायी है।

सूरी सम्राट् शेरशाह ने डाक का बहुत अच्छा प्रबन्ध किया। उसने पैदल हरकारे और घुड़सवार एक स्थान से दूसरे स्थान को डाक ले जाने के लिए नियुक्त किए। उसके सिक्के सोने-चाँदी और तांबे के थे। उसका सिक्का जो चाँदी का था तौल में वह १७५ ग्रेन था। उसने मस्जिदों का सुधार किया। पाठशालायें बनवाई। प्रतिभाशाली छात्रों को छात्र वृत्ति भी देने लगा।

इस प्रकार शेरशाह सूरी जनता में शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया। लोग उसके गुणों का गान करते। जिसे देखो वही कहता कि अगर यह बादशाह सलामत रहा तो दिल्ली की हालत ही नहीं बदलेगी पूरे देश का ढाँचा बदल जाएगा। लोग खुशहाल हो जायेंगे।

अमीना और असलम भी शेरशाह सूरी की मनौती मनाते, लेकिन वे अपने दयालु सम्राट् हुमायूँ को बिल्कुल नहीं भूले थे। वे उसके आभारी थे। उसके लिए शुभकामनायें करते। उन्हें लग रहा था कि सूरी वंश जल्दी ही समाप्त हो जाएगा। मुगल लौट आयेंगे वे दिनों की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हुमायूँ के जाने के बाद देश में अशान्ति नहीं फैली और न कोई ऐसी ही घटना घटी जिससे कहा जाता कि प्रजा को कष्ट हुआ और उसे सताया गया।

शेरशाह ने अमन का ख्याल रखा। उसने कहीं भी आग भड़कने नहीं दी। गहरी सूझ-बूझ से काम लिया। उसका व्यक्तित्व निराला था वह अपने में एक था

जो भी काम करता खूब सोच-समझ कर ताकि बाद में पछताना न पड़े। उसने दुश्मनों के साथ भी बुरा व्यवहार नहीं किया। उन्हें गले से लगा लिया, अपना बनाया। कहने को आरम्भ में वह एक साधारण सैनिक था, लेकिन उन्नति करते-करते शिखर तक पहुँच गया और भारत सम्राट् बन बैठा।

हर गली हर कूचे में शेरशाह की चर्चा थी कि वह अनोखा बादशाह है। ऐसा आज तक नहीं हुआ। उसका न्याय सर्वप्रिय है। उसके विचार बहुत ऊँचे हैं। वह अपने को सम्राट् नहीं कहता। उसका ख्याल है कि वह खुदा का भेजा हुआ एक बन्दा है जो दुनिया में इसलिए आया है कि हर बन्दे की खिदमत करे। वह पिता है और प्रजा बालक। वह उसकी रक्षा के लिए पैदा हुआ और उसी के लिए मरेगा।

शेरशाह का शासन जनता को बहुत पसन्द आया। सभी उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे। हर फरियादी को यह हक था कि वह सीधा बादशाह तक पहुँचे। किसी की भी हिम्मत नहीं जो उसे रोक सके और वहाँ तक न जाने दे।

सम्राट् शेरशाह अपने सिद्धान्तों का कट्टर पालक था। वह न तो उन्हें स्वयं भंग करता और न भंग करने वालों को क्षमा ही करता। उन्हें कठोर दण्ड देता। उसका न्याय प्रसिद्ध था। वह अपराधी के साथ तनिक भी रियायत नहीं करता।

अब चोरियाँ नहीं होतीं और न कहीं डाका पड़ने की ही खबर आती। कानून इतना सख्त था कि लोग गलत कदम नहीं उठाते थे। उनकी रूह काँप जाती जब वे शेरशाह सूरी का नाम सुनते।

पूरी दिल्ली में शान्ति का साम्राज्य था जिसे देखो वही हँसता-मुस्कराता नजर आता। लोग मुगलों को भूल गए और शेरशाह के नाम की माला जपने लगे।

अठारहवाँ

रहमान की उम्र सोलह साल की हो चुकी थी। वह दिन पर दिन उदण्ड होता जा रहा था। पढ़ाई में उसका मन नहीं लगता था। युद्ध कला भी वह सीखना नहीं चाहता था। अहमद हैरान हो गया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अपने दत्तक पुत्र के लिए क्या करे?

कुछ दिन और बीते रहमान ने पढ़ाई बिल्कुल बन्द कर दी। घर पर जब मौलवी के आने का समय होता तो वह गायब हो जाता और फिर देर तक उसका पता नहीं चलता। जरीना इससे बहुत दुखी थी। तंग आकर उसने मौलवी को जवाब दे दिया।

रहमान ने चोरी भी सीख ली। यद्यपि जरीना और अहमद उसे जेब खर्च देते लेकिन फिर भी वह दोनों के पैसे ही नहीं कभी-कभी रुपये भी चुरा ले जाता।

पहले दर्जे का खिलाड़ी वैसा ही शरारती, जबान का चटोरा, आवारा और घुमक्कड़ बन गया था रहमान। वह किसी के भी काबू में नहीं आता।

रहमान सोलह साल का हो गया। उसकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी थी। रेख भीग आई और ठुड्डी पर भी बाल उगने लगे। वह मखमल की सुनहले कामदार रंगीन जूती पहनता। कभी चूड़ीदार पायजामे और शेरवानी में दिखलाई पड़ता। कभी लखनऊ चीकन का कुर्त्ता उसके बदन पर होता और ढीली मोहरी का पायजामा। तहमत वह घर पर बाँधता। कसरत करता ताकि सेहत अच्छी रहे।

रहमान के चेहरे पर रुआब था। वह कभी गमगीन नजर नहीं आता। उसके एक नहीं तमाम दोस्त थे। वह उनसे कभी छुट्टी नहीं पाता।

एक बात और थी रहमान में स्वाभिमान था। वह घर में चोरी अपने माँ-बाप की भले ही कर ले, लेकिन बाहर किसी का एक पैसा भी नहीं छूता। वह किसी से उधार नहीं माँगता और न व्यवहार में ही।

संगत जब अच्छे लोगों की नहीं होती तो मनुष्य फिर पतन की ओर ही बढ़ता चला जाता है। उसे कोई रोक नहीं पाता। वह स्वयं भी रुक नहीं पाता। पतन की आँधी चलती और वह उसी हवा में उड़ जाता।

ठीक यही हाल रहमान का था। वह कभी-कभी अपने प्रति सोचता तो ग्लानि से भर जाता और यह निश्चय करता कि आगे से कोई भी गलत कदम नहीं उठायेगा। मगर ऐसा कर नहीं पाता। उसकी योजना-योजना ही रह जाती।

रहमान चरस पीने लगा। उसको दारू पीने की भी आदत पड़ गई। जुए का खेल भी उसने सीख लिया। अब कहने वाले कहते कि बाप के सारे दुर्गुण बेटे में आ गए। यह खानदानी असर होता है कि बाप के गुण बेटे को जरूर मिलते।

अमीना सुनती तो आँसू बहाती। उसे रह-रहकर रहमान पर क्रोध आता। वह जब उसे देखती तो बुरी तरह फटकारती। कभी सीधे मुँह बात नहीं करती। उसके आचरण से उसे महान दुख था। वह माँ थी फिर भी उसे उससे उपेक्षा-सी हो हो गई थी। कभी-कभी जब क्रोध पर काबू नहीं पाती तो झुँझला कर कहने लगती, तू पैदा होते ही मर जाता तो कितना अच्छा होता। अल्लाह की अदालत में भी इन्साफ सही नहीं होता। कादिर को जिन्दा रहना चाहिए था। तुझे मौत आती। तू खानदान के नाम पर काला धब्बा है एक काला धब्बा।

रहमान चुपचाप सारी बातें सुन लेता। वह माँ को कुछ भी जवाब नहीं देता।

असलम रहमान को कभी गुस्से में डाँटता कभी प्यार से समझाता। किन्तु रहमान चिकना घड़ा था। उस पर पानी की एक बूंद भी नहीं ठहरती। माँ-बाप द्वारा उसे जो भी शिक्षा मिलती। वह सब भूल जाता। उसे दुनिया रंगीन लग रही

थी और रात में सुनहलें ख्वाब दिखलाई पड़ते।

एक दिन अमीना ने असलम से कहा—'रहमान सोलह-सत्रह वर्ष का हो गया है। वह आवारा घूमता है। न जाने किसी काम से लगेगा या नहीं ?'

'हाँ कादिर की अम्मी सोचता मैं भी यही हूँ, मगर अफसोस तो यह है कि रहमान ने पढ़ाई छोड़ दी ! वह अहमद का कहना नहीं मानता। अगर वह नौकरी नहीं करना चाहेगा तो अहमद उसे कोई रोजगार करवा देगा। उसके पास इतना पैसा है। इसके लिए मैं अहमद से बात करूँगा कि लड़के को राह पर डालो नहीं तो वह बेराह हो जायेगा।'

अमीना ने पति की सारी बातें सुनी। कुछ क्षण तक वह मौन रही फिर धीरे से बोली—'हाँ मैं भी जरीना से कहूँगी कि लड़के को किसी रोजगार में डालो या नौकरी में डालो। वह शादी की बात चला रही थी। लेकिन मैं इसे अभी ठीक नहीं समझती। इसी साल नादिरा की शादी है। उसका निकाह हो जाये। उसके बाद देखा जायेगा।'

दम्पत्ति को रहमान की बड़ी चिन्ता थी। वे देर तक उसी के विषय में विचार-विमर्श करते रहे।

जब असलम और अमीना ने जरीना दम्पत्ति से रहमान के बारे में बातें की तो दम्पत्ति ने यही कहा कि हम लोग सब से पहले तो यह चाहते थे कि रहमान शाही सेना का एक घुड़सवार बने, लेकिन कादिर लड़ाई में मारा गया। अमीना बहन को अब तक उसका सदमा है। इसीलिए सोचा था कि रहमान को कोई रोजगार करवाया जायेगा जो वह पसन्द करेगा। मगर अफसोस है कि वह एक जगह टिकता ही नहीं भागा-भागा घूमता है। पकड़ में ही नहीं आता तो फिर रोजगार कैसे करेगा।

'कराना तो कुछ पड़ेगा ही अहमद भाई।'

असलम ने अहमद की ओर उन्मुख होकर वह कहा। तभी अहमद बोल उठा—'तुम्हारे कहने की जरूरत नहीं है असलम। मुझे इसका बेहद ख्याल है।'

'मैं चाहता हूँ कि रहमान की आदतें सुधर जायें। वह ठीक रास्ते पर आ जाये। उसके साथ सख्ती करो अहमद। नरमी से काम नही चलेगा।'

'मेरा गुस्सा रहमान जानता है। वह देर में आता है और फिर बड़ा खतरनाक हो जाता है।'

असलम अहमद से बातें में लगा था। उधर अमीना जरीना से अपने मन की बातें कह रही थी। उसे लग रहा था कि उसके मन का बोझ बहुत कम हो गया। जरीना ने आकर उसका दुख बाँट लिया है। सच्ची हमदर्दी मुर्दे में भी जान डाल देती है अगर सद्भावनायें हों और शुभ कामनायें तो मनुष्य आधा स्वर्ग तक पहुंच सकता है।

जाड़े की काली रात थी। वह साँय-साँय करती। अंधेरा इतना घना था कि हाथ को हाथ नहीं सूझता। चारों तरफ सन्नाटा था। साँय-साँय की आवाज आती। जब किले पर गजर जला और उसकी रोशनी छुपी तभी जरीना दरवाजे पर आ गई और वह रहमान की राह देखने लगी।

अहमद आ गया जब उसके लिए दस्तर खान बिछा तो वह खाने पर नहीं बैठा। उसने जरीना से यही कहा—'मैं रहमान का इन्तजार करूँगा। अकेले खाने में मजा नहीं आता।'

रात का पहला पहर बीत गया। जाड़ा अधिक बढ़ रहा था। हार मानकर अहमद को अकेले ही खाना पड़ा। जरीना भी राह देखते-देखते सो गई और रहमान घर नहीं आया।

जब सवेरा होने को था और पूरब के आकाश में सफेदी फूट रही थी तो रहमान घर आया। उसके मुँह से मदिरा की दुर्गन्ध अब तक आ रही थी। उसके कपड़े अस्त-व्यस्त थे। ऐसा लगता कि धूल में लेटा हो।

अहमद ने रहमान की यह हालत देखी तो अपने को रोक नहीं पाया। उसने ताव में आ उसके गालों पर तड़ातड़-तड़ातड़ न जाने कितने थप्पड़ जड़ दिए। जरीना ने भी मना नहीं किया। वह चुपचाप बैठी देखती रही।

रहमान ने मार खा ली। डाँट भी सुन ली। मगर यह नहीं बतलाया कि वह सारी रात कहाँ रहा। वह बुत बना खड़ा रहा। उस पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा।

अहमद ने रहमान को हिदायत कर दी कि जैसे ही साँझ हो उसे घर आ जाना चाहिए। वह बाहर नहीं रह सकता।

रहमान ने इस बात को एक कान से सुना और दूसरे से निकाल दिया।

असलम रोज रहमान की शिकायतें सुनता उसके कान पक गए थे। एक दिन उसने सोचा कि वह रहमान को अपने पास बुला ले। अहमद ने प्यार-दुलार में उसे बिगाड़ रखा है इसीलिए वह उसकी बात नहीं मानता।

अपने मन की यह बात जब असलम ने अमीना को बतलाई तो वह सहमत नहीं हुई। उसने कहा—'रहमान को वहीं रहने दो। वह आता रोज है ही जब वे लोग उसे नहीं सुधार पायेंगे तो फिर हमारी कदम उठेगा। अहमद की बात और है, तुम अपाहिज हो। वह अहमद से डरता है लेकिन ढीठ हो गया है। इसलिए अपने ऐब छोड़ नहीं पाता।'

असलम ने यह बात अहमद से भी कही तो वह हँस दिया और धीरे से बोला, 'देखो असलम भाई तुम रहमान के बाप हो। तुम्हें उस पर गुस्सा आता है और तुम चाहते हो कि तुम उसे पलक मारते ही सुधार लो। इसके अलावा यह काम तुम सख्ती के साथ करना चाहते हो। मैं इसे पसन्द नहीं करता।'

'तो फिर ?'

'मैं रहमान को प्यार से राह पर लाऊँगा। मैं भी उसका बाप हूँ। मैंने उसे गोद लिया है जब हार जाऊँगा, तंग आ जाऊँगा तभी सख्ती कर सकता हूँ वर्ना ऐसे नहीं।'

और रहमान को अपने घर रखने वाली बात जब असलम ने अहमद से कही तो वह मुस्करा दिया और मृदु स्वर में कहने लगा, 'मुझे कोई ऐतराज नहीं मगर ..'

'मगर क्या ?'

'मगर यह ठीक नहीं है। पहले मुझे अपनी कोशिश कर लेने दो। मुझे पूरा-पूरा यकीन है कि मैं कामयाब हो जाऊँगा। इसके अलावा एक बात और है।'

'क्या ?'

'जितनी देख-रेख रहमान की मैं कर सकता हूँ उतनी तुम नहीं। क्योंकि तुम बदन से मजबूर हो।'

अहमद की बातें सुनकर असलम मौन हो गया। फिर आगे उसने इस प्रसंग पर बात नहीं की। वह जानता था कि अहमद ठीक कहता है जब वह रहमान को रास्ते पर नहीं ला पाया तो मैं क्या कर लूँगा और सीधी-सी बात तो यह है कि जब अच्छे दिन आते और बनने का वक्त होता तो सभी के ख्याल अच्छे हो जाते और सभी लोग अच्छी बातें सोचते। मेरा घर बिगड़ गया। परिवार इधर-उधर हो गया। अगर मेरी किस्मत खराब न होती तो मैं अपाहिज क्यों बन जाता। कादिर नेक लड़का था। वह लड़ाई में मारा गया। रहमान एक मेरी ही नहीं अहमद की भी बदनामी करवा रहा है। मैं बदनाम था, लेकिन ऐसा नहीं जो दूसरों को सताता और उन्हें खलता।

अहमद के चले जाने के बाद असलम न जाने कितनी देर तक बैठा-बैठा सोचता रहा। सहसा उसके अन्तःकरण ने कहा—'तुम रोज दुनियाँ से जाने की तैयारी करते परन्तु जाते नहीं। छोड़ दो यह संसार। अब यह तुम्हारा नहीं रहा। यहाँ सभी बेगाने हैं कोई भी अपना नहीं।'

'अपना कुनबा कैसे छोड़ दूँ ? सिर्फ बीबी रह गई बच्चे गोद ले लिए गए। मेरा जवान बेटा मारा गया।...।'

'न कोई किसी का बेटा और न कोई किसी का बाप। यह सब बेकार के झंझट हैं। इन्हें छोड़ दो असलम। अमीना जी लेगी। उसके हाथ-पैर चलते हैं। तुम खुदा के पास जाओ और उससे कहना कि अगली जिन्दगी में तुम्हें बदनसीबी न दे। तुम हँसते-मुस्कराते रहो और तुम्हारी दुनियाँ आबाद रहे।'

'मुझे अमीना पर तरस आता। इसीलिए मैं जान नहीं दे पाता। वैसे मैं इरादा रोज करता हूँ मगर फिर भूल जाता हूँ।'

'आँखों में पट्टी बाँध लो। कानों में उँगली दे लो। जबान को छुट्टी दे दो

ताकि वह बोले नहीं। किस उम्मीद पर जी रहे हो असलम ? तुम्हारी जिन्दगी में अब क्या रहा ?'

'तुम सच कहते हो।'

'मैं तुम्हें नेक सलाह दे रहा हूँ कि आज की रात जहर खा लो। सवेरे बिस्तर पर मरे मिलोगे। देख लेना फिर तुम्हारी सोयी तकदीर जाग जायेगी।'

अन्तःकरण की बातों ने असलम को अत्यधिक प्रभावित किया। किसी तरह दिन बीता। साँझ आई और जब अमीना उसकी कोठरी में कादिर वाला शमादान जला कर रख गई तो वह चौंका उसके आँसू आ गए। उसने गीले स्वर में जाती हुई अमीना को टोक कर कहा—'कादिर की अम्मी यह शमादान ले जाओ। मुझे रोशनी अच्छी नहीं लगती। रोशनी उनकी है जो खुशहाल हैं। मेरे सामने तो अन्धेरा ही अन्धेरा है और मैं उसमें ही रहना चाहता हूँ।'

इस पर अमीना हंस दी। वह पास आ गई। उसके मुंह से सहज स्वर में निकला—'तुममें कितनी जिन्दादिली थी। कितनी शान थी तुममें। किसी का भी ऐहसान लेना पसन्द नहीं करते। तुम वही इन्सान हो। मैं कहती हूँ कि तुम्हें क्या हो गया है ? यह उखड़ी-उखड़ी और बहकी-बहकी बातें मेरे सामने मत किया करो।'

'जब इन्सान था तब था अमीना मगर अब तो अपाहिज हूँ। धिक्कार है ऐसी जिन्दगी पर। मुझे इससे नफरत हो गई है।'

अमीना ने उलझना उचित नहीं समझा। वह जाकर अपने काम में लग गई।

असलम ने दीर्घ उच्छवास ली। सामने ऊपर दृष्टि उठाई तो खुला हुआ आकाश दिखलाई पड़ा। वह नीला था और उसमें रुपहले दीये जल रहे थे। उसे यह अच्छा नहीं लगा। उसने मुँह फेर लिया। यही नहीं आंखें भी बन्द कर ली। ताकि कुछ भी दिखलाई न पड़े।

असलम की मनःस्थिति अत्यन्त शोचनीय हो रही थी। उसके अरमान पूरे नहीं हुए। उसने जो ख्वाबों के महल बनाए थे। वह सब ढह गए। जीवन संग्राम में वह हार गया और परिस्थितियों ने उसे मजबूर कर दिया।

उन्नीसवाँ

असलम दृढ़ निश्चय नहीं कर पाता। जब भी आत्महत्या के लिए सोचता और पक्का इरादा करता तो कान में आकर चुपके से कोई कह जाता कि रहमान को देख लो उसे इस हालत में छोड़कर मत जाओ।

इसके अलावा अमीना की तस्वीर आँखों के आगे आती। वह ऐसी औरत

थी जो गर्दिश के दिनों में भी मुस्कराती रही। खाविंद कैसा भी रहा हो उसने हमेशा उसका साथ दिया।

एक इच्छा और थी असलम की अगले महीने ही नादिरा की शादी थी। उसका मन कहता कि बेटी को ब्याह लूं फिर यहाँ से डेरा कूच करूँ।

अन्त:करण नित्य बढ़ावा देता। असलम के साहस को आगे धकेलता लेकिन वह फिर पीछे लौट आता और उसे मोह सताने लगता।

नादिरा की शादी करीब आ गई थी। अब केवल तीन दिन ही शेष बचे थे। जावेद के घर में तैयारियाँ चल रही थीं। नूरमहल को एक मिनट की भी फुरसत नहीं मिलती। हलवाई लगा था। उसने कई मिठाईयाँ तैयार कर लीं और अभी बना रहा था। बड़ी-बड़ी कलई की हुई ताँबे के डेगें भट्टियों पर चढ़ाई जाती। किसी में माँस पकता, किसी में दाल किसी में हलीम और किसी में भात।

मेहमानों की भीड़ लग रही थी। पूरा घर खचाखच भरा था। दरवाजे पर शामियाना लगा। नौबत बज रही थी। शहनाई वाले भी दो दिन से डटे थे।

बारात आगरे से आने वाली थी। जावेद को दिल्ली में कोई मनचाहा लड़का नहीं मिला जो उसके घर में घर जमायी बन कर रह सकता। इसीलिए आगरे में शादी की थी। शर्त यह थी कि यह लड़का घरजमाई बनकर रहेगा।

सवेरा हो गया आज निकाह होने वाला था किन्तु बारात अभी तक नहीं आई। जावेद को इसकी चिन्ता थी। वह बार-बार घर में आता और नूरमहल से कहता कि देखो बारात नहीं आई। इसका मतलब तो यह हुआ कि आज निकाह नहीं होगा।

नूरमहल निरुत्तर रहती आखिर वह क्या जवाब देती।

जब एक पहर दिन चढ़ आया तो दूर से खबर आई कि बारात आ रही है। सब की जान में जान पड़ी जावेद तो खुशी से उछल पड़ा।

तीसरे पहर बारात दरवाजे पर आई। आगे-आगे शहनाई बज रही थी। वादक रेशमी कपड़े पहने थे। पीछे थी रोशन चौकी उसके स्वर कानों में अमृत घोलते।

नपीरी बज रही थी। दूल्हा लाल घोड़े पर सवार था। उसके सिर पर फूलों का सेहरा पड़ा था, जिससे मुँह ढक रहा था। बाराती अच्छे बेहतरीन कपड़ों में थे। इत्र की खुशबू आती। लोगों के गले में पड़े फूलों के हार मन्द-मन्द महकते।

बारात की अगवानी हुई। उसके बाद निकाह की रस्म पूरी की जाने लगी। दोनों तरफ के मुल्ला और मौलवी दोनों ने निकाह करवाया।

दस्तर खान बिछा दिया गया। उस पर बारातियों की पाति बैठ गई। ऐसे ही आँगन में जो दस्तर खान बिछे उन पर औरतें और बच्चे बैठे। खाना परोसा जाने लगा। सबसे पहले पुलाव सामने आया जिसमें हरे मटर पड़े थे और वह बकरे के कोमल गोस्त का था। चावल भी बासमती थे।

बकरे के मांस के साथ-ही-साथ बटेर की भी सब्जी थी जिसका शौरुआ मुंह को छू लेता। खाने वाला यही चाहता कि बस खाते ही चले जाओ।

हलीम भी परोसा गया। ऐसे ही हलुआ भी। चपातियाँ इतनी हल्की कि कूक होती हवा में उड़ जायें। मछली रसेदार और सूखी भी थी।

मिठाइयों के दोने अलग सज रहे थे जिन पर चाँदी के वर्क लगे थे। सब कुछ मिला कर खाना बहुत अच्छा था। अतीव स्वादिष्ट बारातियों को स्वाद आ गया। वे लोग कहने लगे कि ऐसी दावत किसी भी बारात में नहीं मिली।

रात के खाने में जावेद ने मुर्ग मुसल्लम का प्रोग्राम रखा। इस समय पुलाव नहीं था। उसकी जगह भात था और मिठाइयों के साथ खीर जो केशर और मेवे डाल कर बनाई गई थीं।

दूसरे दिन बारात विदा हुई। जावेद ने दहेज खूब जी भर कर दिया। लोगों का तो कहना था कि उसने इस शादी में घर फूंक तमाशा देखा है। खुदा उसे बरक्कत दे। वह बहुत ही नेक आदमी है। जो दूसरे के काम आता उसे इन्सान नहीं खुदा कहा जाता है।

जावेद और नूरमहल की योजना यह थी कि लड़की ब्याह में बिदा होकर पहले अपनी ससुराल फिर जब उसे वहाँ से रुखसत कराया जायेगा तो उसका खाविंद साथ आयेगा और फिर दम्पत्ति स्थाई रूप से यहीं दिल्ली में रहेंगे।

अमीना और असलम को भी इसकी खुशी थी कि उनकी बेटी आँखों के सामने रहेगी। वे इस बात से अत्वधिक प्रसन्न थे कि जावेद दामाद को कोई रोजगार करवायेगा। वह उसकी तरक्की के लिए कुछ भी उठा नहीं रखेगा। उसका ऐसा फैसला है।

नादिरा के ब्याह का उछाह बहुत दिन तक पुराना ही नहीं हुआ। जिधर देखो उधर ही उसके ब्याह की ही चर्चा चलती। लोग कहते कि बारात ऐसी आनी चाहिए शादी ऐसी होनी चाहिए। जावेद औसत दर्जे का आदमी है, लेकिन उसने कमाल कर दिया। असलम इतना अच्छा ब्याह कभी नहीं करता। उसमें सामर्थ्य नहीं थी।

रहमान भी अपने दोस्तों के बीच में जब बैठता तो ढींग मारता, शेखी बघारता उसका कहना होता कि मेरी बहन की शादी में बेशुमार रुपया खर्च हुआ। चाचाजान जावेद ने अपनी सारी कमाई ऐसे मौके पर खर्च कर दी। देखना दोस्तों मेरी भी शादी किसी शहजादी से होगी। मेरे अब्बा अहमद भी ऊँचे ख्वाब देखते वे मेरे लिए क्या नहीं कर सकते हैं। यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ। इधर कुछ नाराज रहते कभी-कभी बिगड़ भी जाते हैं वैसे वे मेरे लिए आसमान के तारे भी तोड़ कर ला सकते हैं। मुझे उन पर फख्र हैं। हालाँकि मैं उनका गोद लिया हुआ बेटा हूँ, लेकिन वे मुझे अपने कलेजे का टुकड़ा समझते हैं।

अम्मी जरीना भी ऐसा प्यार करती कि यह लगता ही नहीं कि मैं अमीना का

बेटा हूँ और उन्होंने मुझे गोद लिया है।

इसीलिए तो कहता हूँ यार कि मेरी शादी भी बहुत बढ़िया होगी।

दोस्त लोग रहमान की बातें सुनते तो हँस देते। सभी जानते थे कि वह समर्थ बाप का बेटा हैं। उसके एक नहीं दो घर हैं दो माँ और दो बाप और दो घरों के बीच जो अकेला बेटा हो उसका फिर क्या कहना।

रहमान के कुछ शरारती दोस्त भी थे। उनमें से किसी-किसी ने कह डाला कि देख लेंगे रहमान सब सामने आया जाता है। नाई से जजमान ने पूछा कि अब बाल कितने हैं नाई ने जबाव दिया कि अभी सामने आये जाते हैं। बारात में हम लोग भी चलेंगे। नादिरा की शादी आगरे में हुई और तुम्हारी दुलहिन तो इसी दिल्ली से आयेगी।

रहमान को खुशी होती। अपने दोस्तों के बीच वह सबका सरगना था अर्थात् मुखिया। उसकी देह में ताकत थी। वह हृष्ट-पुष्ट था। इसीलिए लड़के उससे थर्राते। जिसे देखो वही हाँ में हां मिलाया करता।

यह सब था। लेकिन रहमान अपने जीवन का कोई भी निश्चित उद्देश्य स्थिर नहीं कर पाया।

× × ×

नादिरा आगरे से दिल्ली आ गयी। अमीना की खुशी का पारावार न रहा। वह बलायें लेती अपनी बेटी पर बलि-बलि जाती। नूरमहल से कहती कि यह अभी अल्हड़ है और नादान। इसे दुनियादारी सिखलाओ बहन। और यह बतलाओ कि एक शरीफ बीवी घर किस तरह चलाती है।

नूरमहल ने यद्यपि नादिरा को बड़े लाड़-प्यार से पाला था, लेकिन उसे उसने बिगड़ने नहीं दिया। हमेशा ख्याल रखा उसे उच्च शिक्षा ही नहीं दिलवायी बल्कि सिलाई, कढ़ाई और बुनाई यह काम भी सिखलाए। वह जब बावर्ची खाने जाती तो नादिरा को अपने पास बैठा लेती। उसे सब कुछ सिखलाया। यही कारण था कि नादिरा जो खाना बनाती वह सबको बेहद पसन्द आता।

नादिरा घर-गृहस्थी के प्रत्येक कार्य से पूर्णतया परिचित थी। उसे कोई टोक नहीं पाता वह ऐसा मौका ही नहीं देती।

ससुराल में नादिरा थोड़े दिन ही रही किन्तु कोई उसे छू नहीं पायी। सब तारीफ ही करते रहे।

अहमद को भी नादिरा पर गर्व था। वह जरीना से उसकी प्रशंसा करता और कहता कि नादिरा लड़की हीरा है हीरा। उसे तनिक भी गुमान नहीं। नीचे से लेकर ऊपर तक सोने-चाँदी के गहनों से लदी है। उसकी किस्मत अच्छी थी। वह अपनी माँ का नाम रौशन कर रही है यही औलाद का सुख है। बाकी गरीबी और अमीरी तो चलती ही रहती हैं।

असलम जब बेटी की बढ़ाई सुनता तो उसका कलेजा हाथ भर का हो जाता । वह चोरी-चोरी और चुपके-चुपके परवर दिगार से दुआ मांगता कि उसकी बेटी के नजर न लगे वह हमेशा खुशहाल रहे ।

रहमान नादिरा के सामने जाता तो बड़ी होने के नाते वह उसे डाँट देती । मीठी फटकार बतलाती । उसका कहना था कि राह-राह चलो । इधर-उधर भटकने वाला कभी अपनी मंजिल नहीं पाता । कादिर भाई जान अल्लाह के प्यारे हो गए । अकेले तुम रह गये हो रहमान । तुम्हें सोचना चाहिए कि कोई भी ऐसा काम न करो जिससे सबकी बदनामी हो ।

रहमान चुपचाप नादिरा की बातें सुन लेता । वह एक शब्द भी नहीं बोलता यही उसमें खूबी थी कि वह घर के लोगों को जवाब नहीं देता ।

नादिरा की इच्छा थी और इसके लिए उसने नूरमहल से भी कहा कि अम्मी हुज़ूर तुम्हारा कहना है कि अपने दामाद को कोई रोजगार करवाओगी । मैं चाहती हूँ कि रहमान को भी उसमें शामिल कर लिया जाए । आधा रुपया अहमद चाचा लगा देंगे । लड़का काबू में रहेगा वह फिर बहक नहीं पायेगा ।

नूरमहल ने नादिरा की बातें सुनी । उसने उन पर गहराई के साथ विचार किया । सुझाव बुरा नहीं था । इसीलिए उसने जावेद के सामने यह बात रखी ।

जावेद की समझ में भी आया । उसने सोच लिया कि इस विषय पर सबसे पहले असलम से बात करेगा फिर अहमद का मन लेगा । वह सबकी राय लेकर ही कदम उठायेगा । रोजगार में एक से दो भले होते हैं ।

नादिरा के पति का नाम शरीफ था । वह भी पत्नी की राय से पूर्णतया सहमत था और चाहता था कि रहमान उसके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम करे । उसकी आवारा गर्दी छूट जायेगी और वह कायदे की डोर में बँध जाएगा ।

इस तरह रहमान के लिए योजना बनाई जा रही थी, लेकिन वह अपनी दुनियाँ में मग्न था । उसे लगता कि मौज का मेला लग रहा है, खुशियों की दूकानें सज रही है, हँसी बिखर रही है और वह खुशियों के फूल बटोर रहा है ।

बीसवाँ

अहमद के पास उतनी पूँजी नहीं थी जितनी का मालिक जावेद था । वह रहमान को कभी रोजगार करवाने की सोचता । कभी मन ही मन टाल जाता कि रोजगार न करवा कर वह उससे नौकरी करवायेगा । उसकी एक ही हार्दिक इच्छा

थी जो आजकल बहुत प्रबल हो रही थी। जरीना मुद्दत से आँखों में इन्तजार लिए बैठी थी कि वह कौन सा सोने का दिन होगा जब चाँद जैसी बहू आकर उसके आँगन में उतरेगी।

ठीक ऐसे ही अरमान थे अहमद के भी। वह सोच रहा था कि जल्दी से जल्दी रहमान की शादी कर दे। उसमें अपने सारे हौसले पूरे कर ले। रकम बहुत ज्यादा खर्च होगी। खूब क्योंकि वह दिल खोलकर खर्च करेगा। बार-बार रहमान का ब्याह नहीं होगा।

जब अहमद के सामने जावेद ने अपना प्रस्ताव रखा तो वह कुछ क्षण तक तो निरुत्तर रहा। फिर धीरे से बोला—'मैं तुम्हारी इज्जत करता हूँ जावेद। बड़े होने के नाते अदब भी मानता हूँ। इतना पैसा मेरे पास नहीं हैं कि मैं दोनों काम कर सकूँ।'

'कौन से दोनों काम ?'

'रहमान की शादी और उसकी तिजारत।'

'शादी इतनी जरूरी नहीं है वह फिर होती रहेगी। सबसे पहले······।'

जावेद की बात में अहमद ने बाधा दी। वह उदास हो गया और रोनी सी सूरत बना कर बोला—'शादी कब होगी। लड़का जवान हो गया है। अब उसके कदम बहके-बहके हैं। शादी हो जाने के बाद पैरों में जंजीर पड़ जाएगी। इसीलिए चाहता हूँ कि पहले उपाय हो जाए।'

'फिर उसके बाद···।'

'उसके बाद जानते हो क्या होगा ?'

'क्या होगा ?'

'रहमान निकम्मा हो जायेगा। वह कुछ भी नहीं करेगा।'

'एं।'

'हाँ, चौंकते क्यों हो मैं सच कह रहा हूँ। निकम्मे लोग जब तक काम से न लगे उनकी शादी नहीं करनी चाहिए। नौकरी की बात भूल जाओ उसे तिजारत करवाओ।'

'लेकिन······।'

'लेकिन क्या ?'

'पहली बात तो यह है कि·········।'

'क्या ?'

'जरीना को कैसे राजी करूँ ? वह मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ी है। दिन में दस बार कहती कि रिश्ते न जाने कितने आये तुम हाँ क्यों नहीं कहते। हमें लड़के की शादी जल्दी ही करनी है।'

'मैं नादिरा की अम्मी को भेज दूंगा। वह जरीना भाभी को समझा देगी।'

'दूसरी बात यह है कि······।'

'क्या ?'

'मेरे पास इतनी दौलत नहीं कि मैं शादी और रोजगार दोनों काम कर लूँ।'

'तुम इसकी फिक्र मत करो अहमद।'

'फिर ?'

'तुम अपनी दौलत अपने पास रखो। तुम्हारे वक्त-जरूरत पर काम आएगी। रोजगार मैं करवाऊँगा। अगर अल्लाह ने चाहा तो दोनों साले और बहनोई एक दिन मालामाल हो जायेंगे।

जावेद ने अहमद को मजबूर कर दिया। उसे अपनी स्वीकृति देनी ही पड़ी। बात पक्की हो गई और योजना बनाई जाने लगी कि कौन-सा रोजगार किया जाये ? किसमें ज्यादा फायदा होगा।

रहमान को जब पता चला कि उसे अपने बहनोई के साथ तिजारत करनी पड़ेगी तो वह चौंका और चौंकता ही चला गया। उसके अन्तःकरण ने कहा कि उसकी आजादी छिन जायेगी। वह बन्दिश में पड़ जायेगा। तकल्लुफ कहाँ तक करेगा। उसका जीना हराम हो जायेगा।

रहमान ने अपने मन की बात जरीना से कही। वह बोला—'अम्मी जान मैं जीजा जी के साथ रोजगार नहीं करूँगा।'

'क्यों ?'

'मेरा मन नहीं भरता।

'ऐसा क्यों ?'

'मैं जो भी काम करूँगा वह अकेले और अपने दम पर।'

'रोजगार में एक से दो भले होते हैं बेटा। एक आदमी से काम नहीं चलता।

'यह ठीक है अम्मी मगर······।'

'मगर क्या ?'

'रिश्तेदारी का मामला बहुत नाजुक होता है। आपने काम में स्याह करो चाहे सफ़ेद कोई कह नहीं सकता, कोई टोक नहीं सकता।'

'कुछ भी हो तुम्हें बड़ों की बात माननी चाहिए। जो सोच लिया गया है वह वह किया जरूर जायेगा।'

''अगर मैं इन्कार कर दूँ तो ?'

'तो भी तुम्हारी बात नहीं मानी जायेगी।'

'क्यों ?'

'तुम अभी लड़के हो। तुम्हें अभी इतनी तमीज नहीं कि भला-बुरा समझ सको।'

रहमान ने जरीना को बहुत मनाया लेकिन वह राजी नहीं हुई। तब वह गहरे सोच में पड़ गया और अपनी समस्या पर विचार करने लगा। नादिरा से बह

घबराता था इसीलिए उसके पास नहीं गया।

अमीना के सामने भी जाने की उसकी हिम्मत नहीं हुई। असलम से भी डरता। अन्त में उसने यही सोचा कि वह अहमद के पास चलेगा और जिद करेगा।

रहमान को विश्वास था और वह अच्छी तरह जानता था कि अहमद उसे जरूरत से ज्यादा प्यार करता है। वह उस पर तरस खायेगा और उसकी बात मान लेगा।

और रहमान ने एक दिन एकान्त में अहमद से बातें की। सिलसिला इस तरह चला रहमान ने अपनी सारी बात कह डाली। अहमद चुपचाप सुनता रहा। उसके बाद वह मुस्कराया और धीरे से बोला—'देखो रहमान, बच्चे बचपन में शरारत करते, बड़े होने पर उनमें तकल्लुफ आ जाता। वह लिहाज करने लगते। अब तुम बच्चे नहीं रहे हो तुम जवान हो गए हो। तुम्हारी सारी बातों का यही एक जवाब है।'

'मगर अब्बा हुजूर……।'

'क्या ?'

'मेरा मन नहीं है और मैं रोजगार नहीं करूँगा।'

'तो फिर क्या करोगे ?'

'नौकरी।'

'लेकिन नौकरी को सब लोग पसन्द नहीं करते।'

'मुझे पसन्द है।'

'एक बार कह दिया कि तुम्हारी कोई भी बात न तो सुनी जायेगी और न मानी जायेगी। अभी तुम अपनी मर्जी के मालिक नहीं बन सकते जब तक हम सब जिन्दा हैं।'

'अब्बा हुजूर तो आप मेरी बात नहीं मानेंगे ?'

'नहीं।'

इसके बाद रहमान मौन हो गया। वह आगे कुछ भी न बोला। उसके चेहरे पर हवाईयाँ उड़ने लगीं और हृदय तेजी से धड़कने लगा। उसका दिल टूट गया। चित्त खिन्न हो गया था। उसे बन्धन किसी भी शर्त पर मंजूर नहीं था। वह हत्-बुद्धि-सा हो गथा। उसके विवेक ने साथ छोड़ दिया।

× × ×

कई दिन तक रहमान घर से बाहर नहीं निकला। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। न किसी काम में मन लगता। ऐसा लगता कि उसे सजा सुना दी गई और वह जल्दी ही कैदखाने में ले जाकर डाल दिया जायेगा।

जरीना समझाती अहमद भी फुसलाता किन्तु रहमान के चेहरे पर हँसी नहीं आती। वह उदासी में डूब गया था। वह ऊँब-ऊँब कर साँस लेता। दीर्घ उच्छवास

छोड़ता। ऐसा लगता कि उसे कोई गहरी ठेस पहुँची हो और उसी की वेदना से विह्वल हो।

× × ×

योजना बनते देर नहीं लगी पूरी तैयारी कर ली गयी। तय यह रहा कि शरीफ रेशमी कपड़ा बेचेगा। वह उसी का व्यापार करेगा इस तिजारत में अच्छा-खासा फायदा होगा। रेशमी कपड़ा बहुत कम लोग बेचते और उसमें मुनाफा अच्छा होता।

रहमान ने यह सब सुना तो उसने दिल्ली छोड़ दी। भटकता हुआ मेरठ पहुंचा और अपने लिए काम की तलाश करने लगा।

एक सराय में रहमान को काम मिला। काम यह था कि मुसाफिरों को खाना खिलाना और उनसे पैसे लेना। इसमें वह भटियारिन की निगाह बचा कर कुछ पैसे अपनी जेब में डाल लेता। उसकी खिदमत ऐसी थी कि भटियारिन बेहद खुश हो गयी। वह उस पर यकीन करने लगी। यही कारण था कि जिम्मेदारी के काम भी उसे ही सौंपती।

रहमान ने अपना नाम यहाँ हमीद बतलाया था। वह इसी नाम से मशहूर था और सब उसे हमीद कहकर ही पुकारते।

समय बदल जाता जमाना भी करवटें लेता। ठीक ऐसे ही बदलता है हवा का रुख। मगर इन्सान का स्वभाव नहीं बदलता। वह उसके आगे मजबूर हो जाता है।

रहमान को आजादी मिली। वह खुल कर खेलने लगा। उसने सोचा ही नहीं कि वह किसी का नौकर है। तनिक भी गलती हुई तो कान पकड़ कर फौरन निकाल दिया जायेगा।

धीरे-धीरे भटियारिन को इस बात का पता चल गया कि हमीद चोरी करता। वह पैसे अपनी जेब में रख लेता। उसकी आदतें अच्छी नहीं है वह चरस पीता, जुआँ खेलता और कभी-कभी दारु का भी शौक कर बैठता।

भटियारिन ने यह भी पता लगा लिया कि हमीद आचरण का अच्छा नहीं है। वह प्यासी आँखों से जवान लड़कियों और औरतों को देखता, किसी-किसी को छेड़ भी देता। वह मनचला है।

पहले तो भठियारिन ने सोचा कि वह हमीद को नौकरी से जवाब दे दे। लेकिन फिर शान्तचित्त विचार किया तो इस निर्णय पर पहुँची कि हमीद आदमी काम का है। उसे इतनी जल्दी हटाना ठीक नहीं। उसकी जगह पर अगर कोई बुद्धू आ गया तो नाक में दम हो जायेगा। वह अपनी गलतियाँ सुधार ले। आदमी बनकर रहे। मेरा कोई नुकसान नहीं अगर दाल में नमक खाता है तो खाता रहे। सराय में होशियार आदमी की जरूरत है काहिल और बुजदिलों की नहीं।

भटियारिन ने गहरी सूझ से काम लिया। उसने हमीद को डाँटा नहीं न

कोई शिकायत की। एक रात उसने प्रसंग चलाया। उसने कहा—'मैं सोचती हूँ हमीद कि तुम्हारी शादी जल्दी से जल्दी कर दूँ ताकि तुम एक से दो हो जाओ। घर बसा लो बस फिर तुम्हारी जिन्दगी खुशहाल हो जायेगी। जब से तुमने बतलाया कि तुम्हारे माँ-बाप कोई नहीं। तुम्हारे खानदान में भी कोई बाकी नहीं बचा तब से न जाने क्यों मुझे तुमसे जरूरत से ज्यादा हमदर्दी हो गई है।'

हमीद सुन रहा था भटियारिन कह रही थी। यह रात का दूसरा पहर था। मौसम था गर्मी का, चाँदनी छिटकी थी और आसमान में रुपहले तारे हंस रहे थे। हवा मादक थी वह शीतल और सुगन्धित होकर बह रही थी। भटियारिन ने कर वह बदली वह हमीद की ओर उन्मुख हुई और फिर धीरे-धीरे स्नेह भरे स्वर में कहने लगी—'मेरे भी कोई औलाद नहीं है। मैं समझ लूंगी कि मैंने तुम्हें गोद ले लिया। नसीब ने तुम्हें भेजा है बेटा अब तुम यहाँ से मत जाना। बोली, जबान दो मेरी बात मानोगे।'

हमीद असमंजस में पड़ गया। उसके मुँह से कुछ भी जवाब नहीं निकला। तब भटियारिन उठ कर बैठ गयी। उसने उसके सिर पर हाथ फेरा और गद्‌गद् कंठ से बोली—'मुझे तुमसे औलाद जैसी कलक हो गयी है हमीद। इसी लिए कुछ नहीं कहती सब कुछ सुनकर भी चुप रहती। कोई कहता कि तुम दारु पीते। किसी खबर में यह सुनने को मिलता कि तुम जुआँ खेलते हो। कभी कोई आकर बतलाता कि तुम चरस पीते चोरी करते, मुसाफिरों के पैसे अपनी जेब में रख लेते, लेकिन मैं चुप रहती, न जाने क्यों मेरे मुँह से बोल नहीं निकलता। अपने को सुधार ले बेटा तेरी जिन्दगी अभी बहुत लम्बी है।'

रहमान ने जब यह सुना तो वह अवाक् रह गया। देर तक उसके मुँह से बोल नहीं निकला। उसे लगा कि उसकी चोरी पकड़ी गयी। उसकी कमजोरियाँ उसे यहाँ भी बदनाम कर रही हैं।

जब हमीद ने कुछ भी जवाब नहीं दिया तो भटियारिन ने आगे बढ़ उसका मुंह चूम लिया। वह स्नेह विह्वल ही उठी इसी लिए ममता भरे स्वर में बोली—'सुबह का भूला अगर शाम को घर आ जाता है बेटा तो वह भूला नहीं कहा जाता। दुनियाँ का यही दस्तूर है। बुराइयों को भूल जाओ। अच्छाइयों को अपने दिल में बसा लो। यही दुनियाँ तुम्हारे लिए खुशनुमा हो जायेगी। मैं तेरी माँ हूं, सगी नहीं धर्म की, मजहब की और मोहब्बत की। तू बेटा बन जा और मैं माँ। दुनियां के सामने एक मिसाल कायम कर दो बेटा कि तुम क्या थे और क्या हो गये।।'

अब भटियारिन अपने आँसू नहीं रोक पायी। वह फूट-फूटकर रोने लगी। उसके हाथ काँपे उसने उन्हीं काँपते हाथों से रहमान को वक्ष से लगा लिया। वह निःसन्तान थी। युवावस्था में पैर रखते ही विधवा हो गयी। यद्यपि उसके समाज में पुर्नःविवाह वर्जित नहीं था, लेकिन उसने दूसरी शादी नहीं की। उसकी आँखों में

मोह का नीर उमड़ आया था और हृदयमें वात्सल्य हिलोरे ले रहा था। वह चाहती थी कि उसे कोई माँ कहकर पुकारे। अम्मी हुजूर कहे और कहे अम्मीजान।

इससे कोई सन्देह नहीं कि रहमान ने भटियारिन को सेवा भाव से जीता था। वह उसे अम्मी कहता अम्मीजान। वह उसकी इतनी इज्जत करता कि देखने वाले दाँतों तले उँगली दबा लेते।

लोग देखते और कहने वाले कहते भी कि हमीद भाटियारिन का हुक्म सिर झुका कर सुनता। वह कभी सामने नजर भी नहीं करता, जवाब देना तो दूर रहा। काम उसके बस का हो या न हो। वह कभी इन्कार नहीं करता उसके मुँह से जवाब नहीं निकलता। अदब की हद हो गयी। इतना लिहाज तो लोग अपने माँ-बाप का भी नहीं करते। इसीलिए तो पुरानी कहावत आज भी मशहूर है और लोग चिल्ला-चिल्ला कर कहते कि खुशामद में ही आमद है। सबसे बड़ी खुशामद है।

भटियारिन ने उस रात हमीद को समझाया जिससे वह इस नतीजे पर पहुँचा कि कोई भी काम उसे खुला हुआ नहीं करना चाहिए। इसमें बदनामी है।

रहमान ने सोच लिया था कि वह अब अपनी बुराइयों को किसी के भी सामने नहीं आने देगा। उसका यह सिद्धान्त रहेगा कि ओखली के अन्दर और चोट से बाहर। उसने अपने माँ-बाप छोड़े। अहमद और जरीना के पास रहा। अब उन्हें भी छोड़ दिया अब वह लौट कर दिल्ली वापस नहीं जायेगा। उसका पक्का इरादा है। भटियारिन उसे औलाद से कम नहीं मानती। वह उसी के पास रहेगा। उसकी खिदमत करेगा। वह उसका दत्तक पुत्र बन जायेगा और जिन्दगी भर मौज करेगा।

जितना लगाव भटियारिन को हमीद से था उससे कहीं अधिक अब हमीद की श्रद्धा उसके प्रति बढ़ चली थी। वह दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती ही जाती।

इस तरह एक ओर स्नेह था और दूसरी तरफ श्रद्धा। दोनों धारायें अबाध गति से बह रही हैं। हमीद चाहता कि वह भटियारिन को खुश करने के लिए आसमान के तारे तोड़ लाए।

और भटियारिन चाहती कि वह हमीद को आँखों की पुतली बना ले। उसे कभी नजर से ओझल न होने दे। वह उसके कलेजे का टुकड़ा है और उसकी आँखों की रोशनी।

इक्कीसवाँ

रहमान अचानक गायब हो गया। उसे बहुत खोजा गया, लेकिन कुछ भी पता नहीं चला। सब यही कहते कि वह रोजगार बहनोई के साथ नहीं करना चाहता था। इसीलिए मुँह मोड़कर चला गया।

अमीना रोती। वह बड़े-बड़े आँसू बहाती। असलम के दिल को भी तसल्ली नहीं हो रही थी। उसके कलेजे में हूक उठती और उसका अन्तःकरण कहता कि रहमान लौटेगा नहीं। शायद वह कहीं दूर निकल गया है।

जरीना का बुरा हाल था। उसे लगता कि वह दुनियाँ के मेले में लूट ली गई। उसका लाल चला गया अब वह किसके सहारे जिन्दा रहेगी?

अहमद जरीना को समझाता और जरीना उसे। दोनों पता लगाते देवी-देवता मनाते। पीर के मजार पर जाते वहाँ सिन्नी चढ़ाते। मनौती मानते मिन्नत करते लेकिन सब व्यर्थ। धीरे-धीरे एक महीना हो गया। रहमान का कोई सुराग नहीं मिला।

नूरमहल जावेद को उकसाती। वह रहमान की तलाश नित्य करता। अन्त में थका-हारा घर लौट आता।

रुस्तम भी अपने कर्त्तव्य से पीछे नहीं था। उसकी कोशिश यही थी कि किसी तरह असलम का बेटा मिल जाये। वह भी उसकी खोज निरन्तर करता रहता।

शरीफ ने रेशमी कपड़े का काम शुरू कर दिया था। उसने बीच बाजार में किराये पर दूकान ली। उसकी तिजारत जल्दी ही चमक गई। दूकान पर ग्राहकों की भीड़ रहती और वह सब के साथ मीठा व्यवहार करता। उसे भी दुख था कि उसका साला घर से चला गया यह अच्छा नहीं हुआ। अल्लाह उसे भेज दे। वह अच्छी तरह हो। परवर दिगार उसकी मदद करे।

अब्बास ने जब सुना कि रहमान घर छोड़ गया है तो उसे बेहद खुशी हुई। उसने उसके लिए अफवाहें उड़ानी शुरू कर दी कि रहमान का चाल-चलन अच्छा नहीं था। उसे किसी लड़की से मोहब्बत हो गई थी जब लड़की हमल से हो गई तो उसे मुँह लुका कर भागना पड़ा। वह आवारा था आवारा। ऐसे सहज ही घर नहीं छोड़ता।

लोग अब्बास की बातें सुनते, लेकिन उस पर ध्यान नहीं देते। सभी जानते थे कि वह असलम से जलता है।

अमीना अपने मन में नित्य आशा का दीपक जलाती। वह उसकी रोशनी अपने हृदय-मन्दिर में देखती। उसका मन कहता कि रहमान आयेगा जरूर आयेगा। वह आकर रहेगा।

किन्तु रात प्रभात में बदल जाती और दिन भी आकर बिदाई लेता। मगर

रहमान नहीं आता, नहीं आता। वह ईद का चाँद हो गया था और जैसे गूलर का का फूल। किसी ने उसकी सूरत तक नहीं देखी और न उसका पता चला।

× × ×

शेरशाह सूरी के राज्य काल में प्रजा खुशहाल थी। वह अपने बादशाह की दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती मनाती। हिन्दू कहते कि यह राम राज्य है। हमें बड़ा आराम है। मुसलमानों का कहना था कि मुल्क में अमन है। सारी रियाया खुश है शहंनशाह ऐसा होना चाहिए।

शेरशाह ने रायसिंह, मारवाड़, पंजाब और मालवा विजय कर लिया था। वह सन् १५४० में दिल्ली के सिंहासन पर बैठा। अभी उसके राज्यकाल के केवल पाँच वर्ष ही बीते थे कि एक दिन अचानक उसका अन्त निकट आ गया।

बात यह थी कि शेरशाह सूरी ने कालिंजर के किले पर हमला किया। किला तो उसने जीत लिया, लेकिन बारूदखाने में आग लग गयी। शेरशाह उसी में बुरी तरह जल गया और उसकी मृत्यु हो गई।

पूरे दिल्ली शहर में चालीस दिन तक मातम मनाया गया। सभी की श्रद्धांजलियां अपने सम्राट् के लिए अर्पित थी। लोग यही कहते कि ऐसा बादशाह न हुआ था और न आगे होगा। प्रजा को यह चिन्ता थी कि कहीं देश में फिर पहले जैसी अशान्ति न फैल जाये। मगर ऐसा नहीं हुआ। शेरशाह सूरी का दूसरा बेटा सलीम शाह गद्दी पर बैठा। उसने अपना नाम इस्लाम शाह रखा और राज्य काल सम्भाल लिया। उसमें योग्यता थी। वह अपने पिता के चरण चिन्हों पर ही चला। तभी जनता में लोकप्रिय रहा और लोग उसका गुणगान करने लगे।

अहमद, जावेद और रुस्तम तीनों की नौकरियाँ ज्यों-की-त्यों बरकरार थीं। सलीम शाह के शासन काल में भी शान्ति थी। इसीलिए वे सब खुश थे।

असलम जी रहा था। हालाँकि उसकी जिन्दगी में अब कुछ भी शेष नहीं रहा। आने वाला वक्त उसके सामने बुझा हुआ चिराग लेकर खड़ा था। उसके लिए संसार सूना था अब न कोई अरमान थे और न कोई हौसला।

एक बार असलम ने सोचा कि वह बैशाखी के सहारे जमुना तक पहुँचे। नदी में कूद पड़े और अपनी जान दे दे। उसकी उम्र बहुत लम्बी है। वह जल्दी मरेगा नहीं।

मुँह अन्धेरे ही असलम उठा। उसने कोने में रखी अपनी बैशाखी सम्भाली फिर जैसे ही प्रवेश द्वार की कुण्डी खोली और बाहर जाने लगा ठीक तभी अमीना ने टोक दिया। वह उठकर बैठ गई थी। जल्दी से पास आयी और व्यस्त स्वर में पूछने लगी—'कहाँ जा रहे हो? अभी रात कई घड़ी बाकी है।'

असलम काँपने लगा। उसके मुँह से बोल नहीं निकला। कई क्षण तक वह निरुत्तर रहा। अमीना के शब्द उसके कानों से फिर टकराये। वह कह रही थी—'मैं पूछती हूँ कि कहाँ जा रहे थे?'

'कहीं नहीं।'

'तो फिर किवाड़ क्यों खोले ?'

'ऐसा लगा कि बाहर कोई बुला रहा है।'

'ऐं !'

'हाँ।'

'कौन था ?'

'मैं समझा कि मेरा रहमान आ गया और वही बुला रहा है।'

यह सुनते ही अमीना उदास हो गयी। उसका कण्ठ भर आया और गीले स्वर में बोली—'रहमान नहीं आएगा या तो वह कहीं बहुत दूर चला गया या किसी मुसीबत में फंस गया। रोज मेरी दाहिनी आँख फड़कती है। घर में बिल्ली रोती। क्या पता किसी दुश्मन ने उसे मार डाला हो। चलो लेट जाओ। आराम करो। बेकार के बहम में मत पड़ो। रहमान हमसे जुदा हो गया।'

अमीना ने यह कहने के साथ बैसाखी यथा स्थान रख दी फिर किवाड़ों की कुण्डी बन्द कर दी और पति को बिस्तर पर ले जाकर लिटाया।

इसके बाद भी असलम निरन्तर आत्महत्या के लिए सोचता रहा। जान कैसे दी जाय इसके उपाय खोजता। जब मोह सताता आँखें मूँद लेता और भीतर-ही-भीतर कठोर बन जाता।

असलम के मन की थाह किसी को भी नहीं मिलती। कोई नहीं जानता और न किसी को पता था कि वह प्राण देने पर उतारू है और आत्महत्या करके ही रहेगा।

अमीना इधर कुछ दिनों से देख रही थी कि असलम ज्यादातर खामोश रहता। जब चार बातें सुन लेता तो मुश्किल से एक का जवाब देता। खाने के लिए कहो तो उत्तर मिलता कि भूख नहीं है। रात में शायद उसे नींद नहीं आती। जब देखो वह बैठा मिलता। हँसता नहीं, मुस्कराता नहीं और न कभी हँसी-खुशी की बातें करता। यही कारण था कि अमीना सोचती कि उसके शौहर को सदमे ने बुरी तरह सता रखा है। अगर उसकी यही हालत रही तो एक दिन मौत अपना पैगाम लेकर आ जाएगी। और वह इस दुनिया से विदा हो जाएगा।

असलम का शरीर दुर्बल हो गया था। वह दिन-पर-दिन सूखता ही चला जाता। उसका चेहरा पीला पड़ गया। आँखें गड्ढों में धँस गयीं। दाढ़ी बेतरतीब बढ़ रही थी। उसका उसे तनिक भी ख्याल नहीं था।

यही नहीं असलम कपड़ों की ओर भी ध्यान नहीं देता। जब अमीना जोर देती तभी बदलता। दस्तरखान पर जब बैठता तो आधे से ज्यादा खाना थाली में ही छोड़ देता। अमीना जब दूध पीने को देती तो कहता मुझे ऊबकाई आ रही है। दाल में घी पड़ जाता तो फौरन ही शिकायत करने लगता कि कादिर की अम्मी मुझे खाँसी

आती है, घी मत दो।

इस तरह अमीना अपने पति की गतिविधियों से हैरान थी। वह उसे शान्तिपूर्वक समझाती। मना-मनाकर खिलाती। खूब सेवा करती। उसका कहना था कि बीते दिन भूल जाओ अब वे इस जिन्दगी में लौटकर कभी नहीं आएँगे। कादिर को भूल जाओ। वह तुम्हारा बेटा नहीं था। रहमान को भी भुलाना ही पड़ेगा वह हमसे दूर हो चुका है। मुकद्दर में जो लिखाकर लाए हैं हमें वही मिल रहा है। तसल्ली करो। खुदा के अलावा और दुनिया में कोई किसी का नहीं।

असलम जब अमीना की ऐसी बातें सुनता तो कुछ भी जवाब नहीं देता। उसके मुँह से दीर्घ उच्छ्वास निकल पड़ती।

× × ×

यहाँ दिल्ली में रहमान की राह देखी जा रही थी और उधर वह मेरठ में खुशियाँ मनाता। दिन हँसकर गुजारता और रात सपनों में। अपने को वह किसी भी शहजादे से कम नहीं समझता। वह अपने मुकद्दर को सराहता कि ऐसी किस्मत खुदा सबको दे।

भटियारिन रहमान को जी भर प्यार करती। उस पर जान देती और अपना बेटा समझती। वह जानती थी कि उसकी तकदीर ने करवट बदली है। तभी घर बैठे बेटा आ गया। उसे एक वारिस की तलाश थी।

भटियारिन ने हमीद के लिए पूरी आजादी दे रखी थी। उसे खुली छूट थी कि मनमाना खर्च करे और खूब खावे। उसकी तन्दुरुस्ती अच्छी रहे और तन्दुरुस्ती ही जिन्दगी में काम आती है।

सराय के जो पुराने कर्मचारी थे जिन्हें वेतन बहुत कम मिलता। वे हमीद से जलते उससे ईर्ष्या करते। जब एक साथ बैठते तो आपस में ऐसी बातें करते कि यह हमीद न जाने कहाँ से आ गया। पक्का उस्ताद निकला। भटियारिन को अपने काबू में कर लिया खुदा खैर करे यह उसे गारत में मिला देगा।

रहमान भी इस तथ्य को भली-भाँति समझता था कि सभी नौकर उसके खिलाफ हैं। सभी उससे जलते, लेकिन वह किसी की भी परवाह नहीं करता। वह तो केवल भटियारिन को जानता था। उसे अम्मीजान कहता और अम्मी हुजूर।

धीरे-धीरे भटियारिन को भी इस भेद का पता चल गया कि दूसरे मुलाजिम उसके बेटे हमीद को अच्छी निगाह से नहीं देखते। वह उनकी नजरों में काँटा जैसा खटकता है। इसके लिए उसने मन-ही-मन फैसला कर लिया कि वह पुराने नौकर जल्दी-से-जल्दी हटा देगी नये रक्खेगी। जिन पर हमीद का रुआब रहेगा।

इस तरह दिन आगे बढ़ रहे थे। रोज रातें आतीं और चुपके से चली जातीं दिन भी आता हँसता-मुस्कराता। अन्त में वह भी छिप जाता और फिर साँझ आ जाती।

सावन का महीना था। आकाश पर मेघ मल्हार गा रहे थे। जैसे ही सूरज डूबा रिमझिम-रिमझिम बूँदों की झड़ी लग गई। हवा मनभावन होकर बह रही थी इसीलिए मौसम बड़ा प्यारा था।

सराय में इस समय अच्छी-खासी चहल-पहल थी। कोई मुसाफिर खाना खा रहा था कोई खाकर उठ चुका था और मुँह धो रहा था। कोई शोरुआ माँग रहा था और कोई दाल। किसी की शिकायत थी कि चपाती कच्ची है दूसरी लाओ जो करारी हो।

ऐसे ही कोई पुलाव माँगता जिसके लिए उसका कहना होता कि पुलाव में हड्डी वाला गोश्त हो। नली जरूर लाना मँसीली बोटियाँ अच्छी नहीं लगतीं।

कोई यात्री अपना बिस्तर ठीक कर रहा था और कोई लेट चुका था। किसी के खुर्राटे सुनाई देते और कोई थकावट से कराह रहा था थोड़े-थोड़े फासले पर अण्डी के तेल के दीपक ऊँची दीवार पर रखे जल रहे थे। वह रोशनी बड़ी प्यारी लगती। अब पानी तेजी पकड़ गया। वह जोर बाँधकर बरसने लगा। दीए की लौ बार-बार काँपती। हवा का वेग भी बढ़ गया था। कभी-कभी तो ऐसा लगता कि दीपक बुझ जाएगा।

ऐसे में ही एक घुड़सवार भीगता हुआ आया। वह सराय के दरवाजे पर रुक गया। एक खिदमतगार ने उसका घोड़ा लेकर एक ओर बाँध दिया फिर उससे बोला—'तुम आग के पास चले जाओ वहाँ भट्टी जल रही है। गीले कपड़े निचोड़ कर सुखा लो।'

घुड़सवार भट्टी के पास पहुँचा वहाँ भटियारिन एक ऊँची चौकी पर बैठी थी। वह अधेड़ थी और स्थूल। रंग साँवला था काले होंठ पान की पीक से लाल हो रहे थे। हमीद खड़ा था। वह देखने में व्यस्त नजर आता।

भटियारिन ने आगन्तुक से पूछा—'कहाँ से आ रहे हो?'

'दिल्ली से।'

'और जाना कहाँ है?'

'यहीं सहारनपुर तक।'

'तो रात भर ठहरोगे?'

'इरादा तो यही है।'

'क्या नाम है?'

'अब्बास।'

भटियारिन ने यह सुना तो वह हमीद की ओर उन्मुख हुई। उससे बोली—'बेटा हमीद इनका नाम और पता लिख लो यह रात भर रुकेंगे।'

हमीद ने अब्बास का नाम सुना और उसकी सूरत देखी तो एकदम चौंक गया। उसने जल्दी से अपना मुँह छुपा लिया ताकि अब्बास उसे पहचान न ले।

लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। आँखें चार हो चुकी थीं। अब्बास ने पहली नजर में ही समझ लिया कि यह हमीद नहीं रहमान है। असलम का बेटा और अहमद का दत्तक पुत्र।

दोनों ने एक-दूसरे से कुछ भी नहीं कहा। सवेरे जब अब्बास चलने लगा तो वह भटियारिन के पास गया। उसके कान में चुपके से सब कुछ कह डाला कि वह हमीद नहीं रहमान है। इसका घर दिल्ली में है। यह भागकर आया है। इसकी आदतें अच्छी नहीं परले सिरे का आवारा है। इसे नौकरी से हटा दो नहीं तो एक दिन तुम्हें बहुत गहरा धोखा देगा।

अब्बास चला गया वह भटियारिन का दिमाग खराब कर गया। बेचारी सोच नहीं पाती कि उसे क्या करना चाहिए ? उसने हमीद से इस विषय में कुछ कहना उचित नहीं समझा। उसे शंका थी कि जब हमीद को यह पता चलेगा कि उसका राज खुल गया है तो वह रुकेगा नहीं फौरन ही यहाँ से चला जाएगा।

और रहमान भी परिस्थिति से अनभिज्ञ नहीं रहा। उसने दूर से देख लिया था कि अब्बास भढियारिन से बातें कर रहा है। तभी से सन्देह ने मन में घर कर लिया कि अब्बास सच्चाई उगल गया होगा। अब मैं भटियारिन की निगाहों से गिर गया। मैंने उससे झूठ बोला और झूठ बोलने वाले की दुनिया में कोई भी इज्जत नहीं करता।

रहमान असमञ्जस में पड़ गया वह हत्‌बुद्धि सा हो गया। कभी सोचता कि सराय छोड़ दे और दिल्ली वापस लौट जाए, लेकिन फिर विचार बदल देता और गहराई से सोचने लगता।

रहमान को डर था कि भटियारिन उसे अभी बुलवायेगी और सारी बात कहेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वह दिन बीत गया और रात भी आकर चली गयी।

रहमान को सारी रात नींद नहीं आयी। वह करवटें बदलता रहा। विचार आँधी और तूफान की तरह उसके मस्तिष्क में मचल रहे थे। वह बुरी तरह परेशान था इसी लिए ऊब-ऊब कर साँसे लेता।

रहमान सोचता कि जब भटियारिन पूछेगी तब वह क्या जवाब देगा। क्या करे उससे माफी माँग ले या फिर कोई जवाब ही न दे। उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं ? कुछ भी सोच नहीं पाया रहमान। सवेरा हो गया। उसकी हिम्मत भटियारिन के सामने जाने की नहीं हो रही थी।

बाईसवाँ

अब्बास दिल्ली से परेशान होकर सहारनपुर जा रहा था। वहाँ के लिए उसे यकीन था कि कोई न कोई काम जरूर मिल जायेगा। रास्ते में रात हो गई तो मेरठ की सराय में ठहर गया। उसे क्या पता था कि वहाँ रहमान मिल जायेगा। यद्यपि वह असलम से जलता और उसका भला कभी नहीं चाहता था, लेकिन फिर भी मन में यह ख्याल आया कि वह सहारनपुर न जाये सीधा दिल्ली वापस लौट जाये। अहमद से मिले उसके सामने यह शर्त रखे कि मुझे पाँच सौ रुपए दो मैं अभी तुम्हें रहमान का पता बतलाता हूँ।

अब्बास का ऐसा यकीन था कि अहमद इस शर्त पर फौरन ही राजी हो जायेगा और वह उसे रुपये दे देगा।

अब्बास दिल्ली की ओर लौट पड़ा। उसे लालच सता रहा था। अब उसे मन ही मन पछतावा हो रहा था कि उसे भटियारिन से कुछ नहीं कहना चाहिए था। या हो सकता है कि भटियारिन रहमान पर बिगड़े और वह सराय छोड़कर चला जाये।

अब्बास मन ही मन खुदा की इबादत करने लगा कि परवरदिगार दुनिया के मालिक मेरा मतलब हासिल होने दे। रहमान सराय से कहीं भी न जावे क्योंकि अहमद रुपये तभी देगा जब उसका बेटा उसे मिल जायेगा।

अब्बास घोड़े को सरपट घोड़ा रहा था। लेकिन घोड़ा था कमजोर। गरीबी के कारण उसकी खिलायी-पिलायी नहीं हो पाती। वह तो कहो जानवर वफादार था। मालिक का साथ देता। हाँफता जाता किन्तु हिम्मत नहीं हारता। चालीस मील का सफर था और अब्बास चाहता था कि वह रात तक दिल्ली पहुँच जाये। मगर रात बीच में ही हो गयी और उसे एक सराय में ठहरना पड़ा।

किसी तरह अब्बास ने सराय में रात काटी और सवेरा होते ही दिल्ली की ओर चल दिया।

अब्बास जब घर आया तो उसने अपनी बीबी को सब हाल बतलाया। कुछ देर सुस्त था भूखा था भर पेट खाना खाया। फिर अहमद के घर पहुँचा वहाँ जरीना मिली उससे मालूम हुआ कि अहमद रात को घर आयेगा इससे पहले नहीं।

वक्त काटना अब्बास के लिए मुश्किल हो गया। वह रात होने का इन्तजार करने लगा।

किसी तरह रात आयी। अब्बास फिर अहमद के घर पहुँचा। दोनों की मुलाकात हुई। जब तथ्य सामने आया तो अहमद पहले चौंका। उसे लगा कि अब्बास सरासर झूठ बोल रहा है। वह मुझसे रुपया ऐंठना चाहता है। इसीलिए बहाना लेकर आया है।

जब अब्बास ने बहुत जोर दिया और खुदा की कसम खायी तो अहमद बोल उठा 'मैं रुपया तब दूंगा जब रहमान मुझे मिल जायेगा। तुम यकीन रखो तुम्हारे साथ धोखा नहीं होगा। तुम्हें पूरी रकम मिल जायेगी इससे बेफिक्र रहो।'

'हाथ कंगन को आरसी क्या अहमद। चलो मेरे साथ मेरठ। मैं तुम्हें बेटे से मिलाये देता हूँ।'

अहमद तैयार हो गया। उसका घोड़ा तेज था इसीलिए उसने अब्बास को भी अपने घोड़े पर बैठा लिया।

दोनों मेरठ की ओर चल दिए। रास्ते में उनमें बातें होती जा रही थीं कि रहमान को समझा कर लाना पड़ेगा। वह वहाँ बहुत मजे में है।

अब्बास ने अहमद को यह नहीं बतलाया कि वह रहमान की असलियत भटियारिन को बतल आया है। उसके मन का चोर बार-बार उसे धिक्कारता कि अगर रहमान न मिला तो अहमद उसे झूठा कहेगा। खरी-खोटी सुनायेगा। एक जमाना था जब वह दिल्ली शहर का कोतवाल था। लोग उससे थर्राते उसके सामने नहीं आते आज समय उसके प्रतिकूल है। यह था भाग्य का खेल जिसे आज तक कोई भी समझ नहीं पाया।

× × ×

भटियारिन ने दूसरे दिन भी रहमान को नहीं टोका। वह अनजान सी बनी रही। उससे खूब हँस-हँस कर बातें करती।

किन्तु रहमान सशंकित था। उसके चित्त को तनिक भी शान्ति नहीं मिलती।

रहमान के पास कुछ थोड़ी पूँजी इकट्ठी हो गयी थी। उसका अन्तःकरण कह रहा था कि कुछ भी हो वह भटियारिन की नजरों से गिर गया। तारा जब आसमान से टूटता है तो वापस नहीं जाता। मुझे यहाँ से हट जाना चाहिए इसी में भलाई है।

रहमान ने दिल्ली लौटना उचितनहीं समझा। उसने रात को चुपके से प्रस्थान कर दिया और पश्चिम की ओर चल दिया। उसका विचार था कि पहले मुजफ्फर नगर में रुकेगा। अगर वहां कोई काम मिल गया तो बहुत अच्छा है। वैसे सहारनपुर जायेगा। वह मेरठ से बड़ा शहर है वहाँ नौकरी जरूर मिल जायेगी।

दिन निकल आया रहमान चलता ही रहा। वह बार-बार सोचता कि भटियारिन क्या कहेगी। वह समझ जायेगी कि अब्बास ने उसे मेरा भेद बतला दिया इसी लिए मैं बिना कहे चला आया। मेरे लिए यही मुनासिब था।

जब एक पहर दिन चढ़ गया तो रहमान को थकावट महसूस हुई। वह एक पेड़ के नीचे बैठ गया। सामने हरा-भरा खेत था। उसमें खीरे के नार फैल रहे थे। खेत वाला वहाँ नहीं था। रहमान उठकर गया। उसने दो खीरे तोड़े और उन्हें खाया

तो वे बड़े स्वादिष्ट लगे। नार के टूटे थे एकदम ताजे उनमें मिठास थी।

आगे एक कस्बा आया वहाँ रहमान ने एक मुसलमानी खानाघर में खाना खाया। फिर वह चल दिया और चलता ही रहा जब तक रात नहीं हो गयी।

इधर जब सवेरा हुआ तो भटियारिन ने देखा कि हमीद का बिस्तर खाली है। वह चौंकी नहीं मन ही मन मुस्करा दी और हमीद पर गर्व करने के लगी कि लड़का होनहार है। रात को बहुत देर से सोता सवेरे तड़के ही उठ जाता। यह आदत कितनी अच्छी है।

फिर जब ऊपर की धूप छज्जे से दिवाल पर उतरने लगी और हमीद भटियारिन को दिखलाई नहीं दिया तो उसका माथा ठनका और वह हतबुद्धि सी हो गई। उसके मन में शंकायें आने-जाने लगीं। दिल कहने लगा कि हमीद चला गया। उसने अब्बास को देखा था। वह यह भी जान गया कि मुझे उसका राज मालूम हो गया।

अपने मन का सन्देह भटियारिन ने सभी नौकरों को बतलाया। उसने वह कोठरी देखी जिसमें हमीद रहता था। उसका सब सामान ज्यों का त्यों रखा था। वह अपने साथ कुछ भी नहीं ले गया।

आंसू आ गये भटियारिन के और वह आँचल में मुँह छिपाकर रोने लगी।

धीरे-धीरे दोपहर की बेला आ गई और भटियारिन का रोना बन्द नहीं हुआ सभी उसे समझाते धीरज बँधाते मगर उसे तनिक भी तसल्ली नहीं हो रही थी।

जब भटियारिन के आँसुओं का वेग कुछ कम हुआ तो उसने खाँसकर गला। साफ किया और नौकरों से बोली—'तुम लोग खड़े-खड़े मेरा मुँह क्या देख रहे हो। अब तक तुमको चला जाना चाहिए। हमीद की तलाश करो। उसका मिलना बहुत जरूरी है।'

नौकर थे तो सब वफादार इसमें कोई सन्देह नहीं, लेकिन हमीद से सभी को जलन थी। इसीलिए वे मन ही मन बहुत खुश हुए और खुदा से मनाने लगे कि हमीद कभी लौटकर न आए। वह उनके लिए काँटा है कांटा।

किसी भी नौकर ने कोशिश नहीं की और न दूर तक गया। कोई शाम को लौटा और कोई रात तक सभी ने आकर निराशा व्यक्त की कि हमीद उन्हें कहीं नहीं मिला।

भटियारिन को गुस्सा आ गया। उसने सबको डाँटा। उसका कहना था कि तुम लोग लापरवाह हो। सवेरे फिर जाओ और हमीद को ढूँढकर लाओ।

भटियारिन सारी रात सोई नहीं वह रोती रही। उसे रह-रहकर लगता कि उसकी दौलत लूट गई। उसने ख्वावों की जो सुनहली दुनिया बसाई थी उसमें आग लग गई उसके अरमान जल गये। अब जिन्दगी में ऐसा मौका नहीं आएगा। हमीद को उसके मुकद्दर ने उसके पास भेजा था।

सवेरा होते ही नौकरों को भटियारिन ने भेज दिया। सराय का काम वह

स्वयं करने लगी। उसका मन बोझिल था इसीलिए किसी भी काम में चित नहीं लगता। किसी मुसाफिर पर खीज उठती। किसी को फटकार उठती कोई जा रहा होता तो उससे पैसे लेना ही भूल जाती। उसका विवेक खो गया सारे का सारा ध्यान हमीद की ओर लगा था।

आज बावर्ची खाने की भी बुरी हालत थी। दाल जल गई वह बद जायका हो गई। चपातियाँ ताजा आटा सान कर बनाई गई। उनमें खमीर नहीं पड़ा। वे जबान पर जाती तो तनिक भी अच्छी नहीं लगती।

भाटियारिन की मनःस्थिति डाँवा डोल थी। वह बार-बार प्रवेश घर की ओर आँखें बिछा देती। उसे लगता कि हमीद आ रहा है और वह जरूर आयेगा।

तेईसवाँ

अहमद और अब्बास जब मेरठ पहुँचे तो भटियारिन अब्बास को देखते ही उसे गालियाँ देने लगीं वह दोनों हाथ फटकार कर बोली—'मुँह जला, दाढ़ी जार तू अगर न आता तो मेरा बेटा हमीद यहाँ से कभी नहीं जाता। उसने तुझे देखा तभी चला गया। अब मुआ यहाँ क्या लेने आया? जा चला जा। मेरी आँखों के सामने से दूर हो जा। आईन्दा कभी अपनी मनहूस सूरत मत दिखलाना।'

अब्बास ने यह सुना तो वह हक्का-बक्का सा रह गया। शर्म से उसकी गरदन झुक गई और मुंह से बोल नहीं निकला।

अहमद ने भटियारिन से बातें की। सारा किस्सा सुनकर उसे भी गुस्सा आया। वह अब्बास से बोला—'तुमने यह बहुत बड़ी गलती की अब्बास तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था। रहमान दिल्ली तो पहुँचा नहीं आखिर फिर कहाँ गया?'

अब्बास निरुत्तर रहा। भटियारिन का स्वर अहमद के कानों में गूंजा। वह कह रही थी—'रहमान अभी दिल्ली नहीं पहुँचा हो सकता है कि पहुँच गया हो जैसे ही वह घर आए मुझे खबर देना मैं जरूर आऊंगी। उसने मेरा मन मोह लिया। बड़ा प्यारा बेटा था।'

इसके बाद भटियारिन ने अहमद को बतलाया कि उसने नौकरों को भेजकर खोज करवाई मगर रहमान का कुछ भी पता नहीं चला। न जाने वह कहाँ चला गया? अगर दिल्ली नहीं जाता है तो उसे तलाश करना बहुत मुश्किल हो जायेगा।

अब्बास को बुरी तरह जलील होना पड़ा। वह जब दिल्ली लौटकर आया तो उसकी खूब बदनामी फैली जो सुनता वही उसे अपबाद कहने लगता है।

अब्बास बुरी तरह खिसिया गया था इसीलिए कई दिन तक घर से बाहर नहीं निकला। वह मन ही मन ग्लानि और क्षोभ से पीड़ित हो उठा और यह तय कर लिया कि सपरिवार दिल्ली छोड़ देगा। सहारनपुर जायेगा और वहीं रहकर अपने पैर जमायेगा।

अब्बास को जीविका चलाना कठिन हो रहा था। पास की पूंजी समाप्त हो गयी। गहने भी धीरे-धीरे बिक गये। उसे कहीं काम नहीं मिलता। वह परेशान था।

अमीना जब अब्बास का हाल सुनती तो असलम से कहती कि आदमी को अपने किये का नतीजा इसी जिन्दगी में मिल जाता है और बहुत जल्दी। अब्बास क्या था और क्या हो गया।

जब रहमान का जिक्र आता तो अमीना ठण्डी साँस लेकर कहती। आयेगा नहीं रहमान। उसे अगर आना होता तो मेरठ से सीधा घर आता। वह आगे बढ गया, कहीं दूर निकल गया।

इधर अमीना की यह स्थिति थी और उधर जरीना अहमद को चैन से बैठने नहीं देती। वह कहती कि चुप होकर मत बैठो। रहमान की तलाश करो। मेरा ख्याल है कि वह मेरठ से ज्यादा दूर नहीं गया होगा।

अहमद ने मेरठ के कई चक्कर लगाये। आस-पास के सभी इलाके देखे। लोगों से पूछा भी। मगर कोई नतीजा नहीं निकला।

फिर भी अहमद निराश नहीं हुआ वह निरन्तर खोज करता ही रहा। उसमें आशा का संचार हो रहा था कि रहमान को मिलना जरूर चाहिए और वह मिलकर रहेगा।

असलम नाउम्मीद हो चुका था। उसे भविष्य पर तनिक भी भरोसा नहीं रहा। वह मन से कहता कि मैं जिन्दगी से हार गया। अब तक हिम्मत से काम लिया अब उसने भी साथ छोड़ दिया। जब हौसला टूट जाता और हिम्मत पस्त हो जाती तो आदमी बेमौत ही मर जाता है।

× × ×

रहमान मुजफ्फर नगर में कुछ दिन रुका वहाँ उसे काम नहीं मिला तो फिर सहारनपुर की ओर चल दिया।

सहारनपुर आये अभी रहमान को एक सप्ताह ही हुआ था उसे एक जौहरी की दुकान पर काम मिल गया। वहाँ हीरे-जवाहरात तो बिकते ही गोटे का भी काम होता। कच्चा और पक्का गोटा दोनों तरह का बिकता।

रहमान को वेतन अच्छा मिलता। उसने किराये पर एक कोठरी ले ली और आराम से रहने लगा।

रहमान ने दिल्ली न जाने की कसम जैसे खा ली थी। उसे घर की याद भी नहीं आती। कारण यह था कि जब से उसने घर छोड़ा उसे कोई तकलीफ नहीं

मिली। मुसीबत और परेशानी में ही आदमी को घर याद आता है।

रहमान की नीयत अच्छी नहीं थी। पन्ना, पोखराज, हीरे, मोती, नीलम और मूंगे देखकर उसके मुख में पानी आ जाता और वह सोचने लगता कि क्या ये मुझे नहीं मिल सकते? क्या मैं इनका मालिक नहीं बन सकता?

मालिक सरल स्वभाव का था। रहमान ने अपना नाम यहाँ अब्दुल बतलाया था। रहने वाला मेरठ का।

रहमान ऊँची उड़ाने भरता। उसका इरादा था कि वह कुछ हीरों की चोरी करेगा। उन्हें लेकर फिर किसी बड़े शहर में चला जायेगा। वहां रोजगार करेगा। शादी भी वहीं कर लेगा। इसके बाद जब पूरी तरह खुशहाल हो जायेगा तब दिल्ली लौटेगा और सबको दिखला देगा कि वह कमाकर खा सकता है।

समय का पहिया तेजी के साथ घूम रहा था बरसात बीत गयी। शरद ऋतु आयी। अब चाँदनी निर्मल लगती और मौसम प्यारा। रहमान मालिक की खूब सेवा करता। उसने खिदमत से उसे बेहद खुश कर लिया तभी तो मालिक लोगों से कहता कि अब्दुल मेरे हुक्म का बन्दा है बन्दा। इन्कार करना तो वह सीखा ही नहीं। सिर झुका कर बात सुनना और काम को फौरन ही करना। यह उसकी आदत है नेक लड़का है। ईमान का इतना सच्चा कि जिसका नाम नहीं।

रहमान को तनख्वाह पन्द्रह रुपया मिलती। वह जब खूब दिल खोलकर खर्च करता तो पाँच रुपये व्यय होते दस फिर भी बच जाते। अक्सर खाना मालिक के घर में ही मिल जाता। घर में तो वह कभी बनाता नहीं दूकान पर जाकर खा लेता।

कपड़े भी रहमान को मालिक ही बनवाता। यह भी खर्च उसका बच जाता। जब मालिक बहुत खुश होता तो उसे बख्शीश देता। इस तरह वह बहुत खुश था। वह जानता था कि इतनी आमदनी उसे और कहीं नहीं हो सकती।

रहमान अब भरपूर जवान था। उसकी दाढ़ी की जिल्द बहुत आकर्षक लगती। चेहरे पर रुआब था। रंग भी था गोरा और तन्दुरुस्ती अच्छी थी। कभी-कभी मालिक टोक देता वह हँसकर कहता कि शादी कर लो अब्दुल।

तब अब्दुल शर्मा जाता। वह मालिक को कुछ भी जवाब नहीं देता।

मालिक को खुद इसका ख्याल था कि अब अब्दुल की शादी हो जानी चाहिए।। लड़का शरीफ है निहायत नेक। उसे कोई भली खानदानी लड़की मिले तो मैं फौरन ही शादी कर दूं। बेचारा अकेला है उसके माँ-बाप कोई नहीं।

अब्दुल रात को पान खाकर बाजार घूमने जाता। कोठों पर छमछम घुंघरू बजते। तबला ठनकता और सारंगी की आवाज आती। हारमोनियम भी स्वर अलापती। मुजरे के बोल सुनायी पड़ते—'चले जाओगे बेदर्दी मैं रोये मरूँगी।'

कभी-कभी अब्दुल के मन में आता कि वह कोठे पर जाये और तवायफ का नाच देखे। मुजरा सुने उसे रुपया दे और फिर रोज-रोज जाये। जब तक शादी

नहीं होती उसे कोठे का ही सहारा लेना पड़ेगा ।

लेकिन अब्दुल ऐसा सोच कर ही रह जाता । उसके कदम आगे नहीं बढते वह ठिठक जाता ।

अब अब्दुल को शादी की जल्दी हो रही थी । पहले वह सोचा करता कि ब्याह हो जाने के बाद उसकी आजादी छिन जायेगी मगर अब महसूस कर रहा था कि घर में औरत का होना बहुत जरूरी है ।

रहमान अब जवान लड़कियों को देखता तो उन्हें देखता ही रह जाता । वे पर्दे नशीन होती, बुर्का पहनकर बाहर निकलतीं । वह उनके पीछे-पीछे चलता, ठंडी-ठंडी आहें भरता । उनके लिए कुटनी औरतों का सहारा लेता उन्हें पैसे देता । वह इस कोशिश में रहता कि किसी तरह किसी लड़की से उसका नाजायज ताल्लुक हो जाये ।

कुछ दिन तक तो अब्दुल को अपनी इस योजना में सफलता नहीं मिली । अन्त में वह कामयाब हो गया । एक विधवा की लड़की जोहरा से उसे लगाव हो गया । बुढ़िया गरीब थी उसके बाल सनई की तरह सफेद हो रहे थे । पूरे बदन में झुर्रियाँ ही झुर्रिया थी अब उससे मेहनत बिल्कुल नहीं होती । जब तक हाथ-पैर चले वह मेहनत-मजदूरी करती रही । अब शिथिल हो गये थे । चुपचाप चारपाई पर पड़ी रहती । उसे खाँसी खूब आती । खाँसते-खाँसते बेदम हो जाती । जोहरा दूसरों का अनाज पीसती, कपड़े सीलती । किसी के धान कूट देती तो किसी की दाल दर देती । दोनों माँ-बेटी मोटा अनाज ही खाती । गेहूँ उन्हें कभी मयस्सर नहीं होता ।

सिलसिला इस तरह चला । एक दिन जोहरा अपनी मां को हकीम के मतब में लिये जा रही थी । बुढ़िया गुलाबी रंग का मैला कपड़ा पहने थी । उस पर थी सफेद ओढ़नी ।

और जोहरा काली टसर का बुर्का ओढ़े थी । जो जगह-जगह से फट रहा था । रास्ते में बुढ़िया को धक्की मारकर जोर की खाँसी आ गयी। वह बैठ गयी उसके माथे पर पसीना आ गया । रहमान उधर से गुजर रहा था । वह बुढ़िया को देखकर रुक गया । उसने उसकी पीठ सहलायी और हमदर्दी जाहिर की । मतब तक उसे छोड़ने गया और फिर घर तक भेज भी आया । बुढ़िया ने अब्दुल को दुआयें दीं । उसने उसे सराहा । बस फिर क्या था अब तो अब्दुल रोज जोहरा के घर जाने लगा ।

अब्दुल जब बुढ़िया के सामने आता तो खाली हाथ कभी नहीं । कभी वह उसके लिए खाँसी की दवा लाता कभी कोई फल कभी खाने-पीने का सामान लाता । जब बुढ़िया कुछ कहती या ऐतराज करती तो हँसकर धीरे से कह देता कि तकल्लुफ मत करो अम्मी मैं तुम्हारा ही बेटा हूँ । दुआ दो कि खूब कमाऊँ और तुम्हारी खूब सेवा करूँ ।

जोहरा भी अब्दुल का सम्मान करती । वह उसे कभी-कभी खाना खिलाती ।

शरबत और पानी के लिए भी पूछ लेती। उसकी माँ का कहना था कि अब्दुल आया करे तो उसे खाना जरूर खिला दिया करो। बेचारा अकेला है।

धीरे-धीरे जोहरा का स्वाभाविक आकर्षण अब्दुल की ओर बढ़ने लगा। वह उसे ख्वाबों में देखती और सवेरे फिर सोचती ही रह जाती।

अब्दुल को भी जोहरा के ख्वाब आते वह देखता कि उन दोनों का निकाह हो रहा है। मुल्ला और मौलवी सभी बैठे हैं। कुरान शरीफ की आयतें पढ़ी जा रही हैं। जोहरा दुलहिन बनी है और वह दूल्हा।

अब्दुल ने सहज ही जोहरा को प्राप्त कर लिया। वह उसकी जिन्दगी में आ गयी और अब्दुल उसकी जवानी से खेलने लगा।

एक दिन बातों ही बातों में अब्दुल ने बुढ़िया से यह कह डाला कि आप जोहरा के लिए परेशान न हों अम्मी जान। मैं उससे शादी कर लूंगा। बस फिर तुम्हारी सारी तकलीफ दूर हो जाएगी।

बुढ़िया ने यह सुना तो वह खुशी से फूली नहीं समायी। उसने अब्दुल का मुंह चूम लिया और उसकी बलायें लेने लगी।

जोहरा ने जब यह बात सुनी तो उसके हर्ष का पारावार न रहा। वह खुदा की इबादत करने लगी कि जल्दी से जल्दी उसकी शादी अब्दुल से हो जाये। वह उसका शौहर बने। ऐसा खाविंद बड़े मुकद्दर से मिलता है।

दोनों माँ-बेटी अब्दुल को बहुत चाहती अब पहले जैसी बात नहीं रही। अब्दुल दोनों वक्त खाना जोहरा के घर में ही खाता। उसे तनिक भी संकोच नहीं लगता। वह निस्संकोच हो गया था।

किराये की कोठरी में रात को केवल रहमान पड़कर सो जाता। सवेरा होते ही जोहरा के घर पहुँच जाता। वहीं नहाता, वहीं खाता फिर दूकान पहुँचता। यह उसका नित्य का नियम बन गया था। रात को भी रहमान दूकान से सीधा जोहरा के घर जाता फिर आधी-आधी रात तक वहीं बना रहता। जब अपने घर जाता तो घोड़े बेचकर सो जाता और सवेरे अक्सर देर से उठता।

चौबीसवाँ

पड़ौसियों को ऐतराज होने लगा कि आखिर यह अब्दुल रोज-रोज जोहरा के घर क्यों आता। वह आजकल खाना भी वहीं खाता।

ज़ोहरा की माँ के कानों में जब मुहल्ले की चर्चा पड़ी तो उसने उपेक्षा पूर्वक

यह कहकर टाल दिया कि दुनिया तारीफ कभी नहीं करती और बुराई के बोल तो इतने सस्ते होते हैं चाहे जिसके मुँह से सुन लो ।

जोहरा भी निश्चित थी । वह जानती थी कि निकट भविष्य में ही उसकी शादी अब्दुल से हो जायेगी । लोग गाल बजाते हैं बजाते रहें । इससे उसका कुछ भी नहीं बिगड़ता है ।

अब्दुल से भी असलियत छिपी नहीं रही । वह लोगों के बोल सुनता । एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देता । जब लोग उसकी ओर उँगली उठाते, इंगित करते तो वह सिर नीचे झुका लेता । इधर-उधर देखता भी नहीं चुपचाप चला जाता ।

ऐसे ही रहमान लोगों को कानाफूसी करते सुनता तो कतरा कर निकल जाता । उसे पता था कि वे लोग उसकी तारीफ नहीं करते बल्कि बदनामी उड़ा रहे हैं ।

धीरे-धीरे अब्दुल के मालिक को भी यह बात मालूम हो गयी कि अब्दुल एक बुढ़िया के घर जाता । उसकी जवान बेटी जोहरा है । जोहरा से उसे मोहब्बत हो गयी है और वह उससे शादी करने के लिए तैयार है ।

मालिक बहुत खुश हुआ । वह तो यह चाहता ही था । उसने एक दिन अब्दुल के मन को टटोला । उत्तर में वह मौन रहा । मालिक ने इसे उसकी स्वीकृति समझी । उसने उसे आश्वासन दिया और यह कहा—'मैं जोहरा की माँ से बात करूँगा तुम चिन्ता मत करो तुम्हारी शादी खूब धूमधाम से होगी । गरीब घर की लड़की है अब तक मुसीबतें ही झेलती रही । उसकी भी किस्मत बदल जाएगी और तुम्हारा घर बस जाएगा । तुम एक से दो हो जाओगे ।'

अब्दुल ने मालिक की बातें सुनी तो उसे खुशी जरूर हुई, लेकिन भीतर ही भीतर वह न जाने क्यों बुझ सा गया । बात वास्तव में यह थी कि वह जोहरा पर नहीं बल्कि उसकी जवानी पर रीझा था । वह मौज का मेला देख रहा था । उससे शादी करने की उसकी कोई इच्छा नहीं थी ।

कारण यह था कि एक तो जोहरा का रंग गहरा साँवला था । दूसरे नख-सिख भी इतना अच्छा नहीं कि उसे खूबसूरत कहा जा सके और सुन्दर ।

रहमान चिन्तित हो उठा । उसने जोहरा की माँ के मुँह से भी सुना था । एक दिन बुढ़िया ने उससे कहा था—'लोग तरह-तरह की बातें करते । आवाज कशी करते । पूरे मुहल्ले को शिकायत है कि अब्दुल तुम मेरे घर क्यों आते हो ? मगर मुझे किसी की भी परवाह नहीं बेटा । मैं तो अपनी बात सोचती हूँ कि जब तुम सेहरा बाँध कर घोड़ी पर बैठकर बारात लेकर आओगे तो लोग देखते रह जायेंगे । जो गाल बजाते हैं कल फिर चुप हो जायेंगे ।'

अब्दुल ने यह सुन तो लिया मगर वह भीतर ही भीतर सहम गया । उसका हृदय धड़कने लगा ।

इस तरह अब्दुल पूर्णतयः सशंकित हो उठा था जैसे उसने अपने मुँह पर लगाम लगा ली है। ऐसा लगता है कि वह मजबूर कर दिया जायेगा और उसे हर हालत में जोहरा से शादी करनी पड़ेगी।

× × ×

एक दिन जोहरा को ऊबकाई आई। उसने उल्टी कर दी फिर थोड़ी देर बाद खटाई लाकर खाने लगी। बूढ़ी माँ ने यह देखा तो वह चौंकी। उसे पहले से शक था। अब नजारा आँखों के सामने था। वह पलक मारते ही समझ गयी कि उसकी लड़की हमल से है। अब्दुल ने यह अच्छा नहीं किया जो शादी से पहले गलत कदम उठाया। अब अगर निकाह जल्दी न हुआ तो मैं दुनिया को मुँह कैसे दिखलाऊँगी।

बुढ़िया ने पुत्री को अपने पास बुलाया पहले उसे खूब डांटा फटकारा फिर धीरे से समझाया कि वह अब्दुल के पीछे पड़े और उसे विवश कर दे। ताकि शादी इसी महीने हो जाये।

जोहरा का भी मन छोटा हो गया था। उसे ऐसी उम्मीद नहीं थी कि इतनी जल्दी वह गर्भवती हो जाएगी।

जब जोहरा ने रहमान से शादी वाली बात कही और अपने को हमल से बतलाया तो वह सन्नाटे में आ गया। उसके पैरों के नीचे से जमीन निकल गई। देर तक वह खामोश रहा फिर धीरे से बोला 'शादी की क्या जल्दी है ? हो जाएगी वह तो होनी ही है। मैं जल्दी ही इसका इन्तजाम करूँगा। तुम बेफिक्र रहो।'

मगर जोहरा को तसल्ली नहीं हुई। वह बार-बार जोर देती और उसे उकसाती रही। मर्द से ज्यादा औरत बदनामी से डरती क्योंकि जिन्दगी कच्चे धागे में बँधी रहती है। जोहरा में यही घबराहट थी कि अगर शादी से पहले माँ बन गई तो उसकी थू-थू होगी और समाज में उसकी कोई भी इज्जत नहीं रह जाएगी।

दूसरे दिन भी जोहरा और अब्दुल की बातें हुई। जिनका मुख्य विषय शादी था। तीसरे दिन भी यही हुआ और चौथे दिन भी।

रहमान परेशान हो गया। उसने जोहरा के घर आना-जाना कम कर दिया। कभी सवेरे जाता तो रात को नहीं। रात में पहुंचता तो प्रातः गायब हो जाता। इसके लिए वह रोज नए-नए बहाने बनाता कि आज दूकान देर से बन्द हुई। कुछ बाहर के सौदागर आ गए थे इसीलिए देर हुई। आज सिर में दर्द था रात को बुखार आ गया।

बुढ़िया ने धूप में बाल सफेद नहीं किए थे। उसने अब्दुल की यह गतिविधि देखी तो नीचे से लेकर ऊपर तक काँप गयी। उसे समझते देर नहीं लगी कि अब्दुल उससे कट रहा है। वह किनारा कर रहा है। कहीं ऐसा न हो कि शाहिल मिलने से पहले ही किश्ती बीच धार में डूब जाए।

यही कारण था कि बुढ़िया ने अब्दुल के साथ सद्व्यवहार आरम्भ कर दिया।

वह उससे रोकर बोलती। मीठी-मीठी बातें करती और जब अच्छा मन देखती तो शादी की बात जरूर चला देती।

जोहरा को भी अब्दुल पर सन्देह होने लगा था कि कहीं वह उसे धोखा तो नहीं देगा। आजकल वह कुछ उखड़ा-उखड़ा सा लगता है। न जाने क्या हो गया है उसे? जब देखो तब जल्दी रहती। वैसे तो पहले घन्टों बैठता उठने का नाम ही नहीं लेता। वही अब्दुल अब कितना बदल गया है।

जोहरा अब्दुल से उसके व्यस्तीकरण का कारण पूछती तो वह कहता कि अकेली जान है। थक जाता हूँ। इधर तबियत कुछ ढीली रहती। काम में मन नहीं लगता। दूकान पर सवेरे से रात हो जाती। वहाँ बैठा ही रहता हूँ। फिर तुम्हारे घर आओ। उसके बाद अपने मकान पर जाओ। खाना खाओ और सोओ कहीं और। इस जिन्दगी ने मुझे तंग कर दिया इसीलिए परेशान रहता हूँ।

जोहरा को तनिक भी संतोष नहीं होता। वह बेधीरज हो उठी थी। उसका अन्तःकरण कहता कि अगर अब्दुल ने तुम्हें धोखा दिया तो क्या करोगी?

× × ×

रहमान इतना दिल्ली में परेशान नहीं हुआ मेरठ में भी उसे कोई कठिनाई नहीं आई। अब परिस्थिति बहुत जटिल थी। समस्या ऐसी उलझी हुई थी कि उसका कोई निवारण समझ में नहीं आता। कभी वह सोचता कि सहारनपुर छोड़ दे। जोहरा से मुंह मोड़ ले।

और कभी रहमान ऐसा सोचने लग जाता कि बदनामी से बचने के लिए यही एक रास्ता है जोहरा से निकाह कर लिया जावे। फिर मैं उसे छोड़कर चला जाऊँगा तो कोई कुछ नहीं कहेगा।

मगर दहशत साथ में थी कि एक बार शादी हो गई तो पैरों में जंजीर पड़ जायेगी।

क्या करूँ और क्या न करूँ यह विषम परिस्थिति रहमान के सामने थी। उसे दिन में चैन नहीं पड़ती। रात में नींद नहीं आती। उसकी हैरानी और अकुलाहट इतनी बढ़ गई थी कि जिसका नाम नहीं। ऐसा लग रहा था कि वह एक पतंग है जो ऊँचे पर जाकर कट गई। डोरी टूट गई। पतंग हवा में बल खा रही है। वह नीचे गिरेगी। अब ऊपर उड़कर कभी नहीं जा सकती।

इधर यह स्थिति थी और उधर रहमान दूकान पर भी मन लगाकर काम नहीं करता। वह ग्राहकों की ओर ध्यान ही नहीं देता। हमेशा यही सोचा करता कि कब मौका मिले और मैं चोरी कर लूं।

न जाने किस दुनिया में रहने लगा था रहमान। जब देखो तब खोया-खोया सा नजर आता। बदहवाशी हमेशा उसके चेहरे पर रहती। देखने में प्रतीत होता कि उसका कुछ खो गया है। जिसके लिए वह चिन्तित है। उसे सदमा है तभी हँसता-मुस्कराता नहीं।

पच्चीसवाँ

अब्बास ने दिल्ली से डेरा कूच किया वह पड़ाव पर पड़ाव करता हुआ सहारनपुर की ओर चल दिया। उसके साथ उसकी गृहस्थी थी जो दो बैलगाड़ियों पर लदी थी।

दिल्ली से सहारनपुर तक की पचास कोस की दूरी अब्बास के काफिले ने चार दिन में पूरी की। सबसे पहले वह एक सराय में जाकर ठहरा। योजना यह थी कि कुछ दिन जाकर सराय में रहेगा। इस बीच मकान की तलाश करेगा। किराये पर जैसे ही कोई सस्ता और काम चलाऊ मकान मिल जायेगा तो उसमें चला जायेगा और सराय छोड़ देगा।

अब्बास की बीवी के पास गहनों में केवल एक अंगूठी बची थी। जिस पर हीरा जड़ा था। यह अंगूठी उसने अपने खाविंद से छिपाकर रखी थी। न जाने कैसे पूरा परिवार दिल्ली से यहाँ तक आया। सब लोग भूखे रहे सराय में भी दो फाके हुये। बच्चे भूख से बिलबिलाने लगे।

अब अब्बास की पत्नी का मन नहीं माना। उसने अंगूठी लाकर पति के हाथ पर रख दी और उदासी से डुबे स्वर में बोली—'मौत जिन्दगी के लिए इसे तुमसे छिपाकर रखी थी। ले जाओ बेच आओ। अब बच्चों की तकलीफ मुझसे नहीं देखी जाती।'

अंगूठी देखते ही अब्बास की आँखों में चमक आ गई। उसे अपनी बीवी पर गर्व हो आ आया। वह उसकी तारीफ करने लगा। उसने कहा—'नेक औरतें ऐसी ही होती हैं। जिस घर में बीवी नहीं वह कभी नहीं बन सकता।'

अब्बास ने अंगूठी जेब में डाली। वह बाजार की ओर चल दिया।

रास्ते में अब्बास सोचता जा रहा था कि अंगूठी की कीमत इतनी ज्यादा मिलेगी कि वह एक साल तक बैठकर आराम से खा सकता है। इसके अलावा यह भी हो सकता है कि अगर कहीं नौकरी अच्छी न मिली तो कोई छोटा-मोटा रोजगार कर लेगा। तिजारत इन्सान को आगे बढ़ाती है।

अब्बास ने यह भी सोच डाला कि मकान अच्छा ही लेगा चाहे किराया अधिक देना पड़े। दिल्ली से वह सहारनपुर आया। यहाँ आते ही उसकी किस्मत खुल गई है।

अब्बास इतना खुश था इतना खुश कि उसके पैर सीधे नहीं पड़ते। उसे लग रहा था कि वह उड़न खटोले पर बैठा है और हवा में उड़ रहा है।

इधर अब्बास की यह स्थिति थी और उसकी घर वाली बैठी सोच रही थी कि रुपये ज्यादा आयेंगे। उन्हें मैं संभाल कर रखूंगी। किफायत से खर्च करूंगी।

क्या पता आगे आने वाला वक्त मेरे माफिक हो या न हो।

अब्बास के लिए उसकी पत्नी का ऐसा विचार था कि घर में चाहे जितनी दौलत हो मगर मर्द को कमाना जरूर चाहिए। बरक्कत तभी होती है।

वह गृहिणी सुन्दर-सुन्दर सपने देख रही थी कि एक भैंस लेगी। उसका दूध होगा। उपले जलाने के काम में आयेंगे। वह उसकी खिदमत खुद करेगी। सानी लगायेगी। चारा डालेगी। पानी पिलायेगी। उसे खली और दाना देगी। इससे यह होगा कि भैंस दूध खूब देगी। घर में दही होगा। मट्ठाभी पिया जायेगा। घी निकलेगा। वह भैंस जरूर पालेगी।

अब्बास को गये देर हो चुकी थी। गृहिणी राह देख रही थी। जाते-जाते टोक कर कहा था—'खाने-पीने का सामान जरूर लेते आना। मैं भटियारिन के यहाँ खरीद कर मोल का खाना नहीं खाऊंगी। बर्तन साथ है फौरन पका लूंगी।'

अब्बास ने भी पत्नी के ये शब्द सुने थे, लेकिन वह दूसरी दुनिया में मगन था। उसे खुशी थी कि आज एक बहुत बड़ी रकम उसके हाथ पर आई है।

× × ×

'मैं कहती हूँ कि आखिर तुम शादी कब करोगे? जब कहती हूँ तो टाल देते। आखिर तुम्हारा इरादा क्या है? अम्मीजान बहुत नाराज हैं। उन्हें जवाब दो कि निकाह कब कर रहे हो?'

अब्दुल ने जोहरा की यह बातें सुनी तो वह गम्भीर हो गया और उसी मुद्रा में बोला—'निकाह जल्दी ही हो जायेगा। बात यह है कि अभी मैंने अपने दुकान के मालिक से नहीं कहा। बिना उनकी राय के मैं कोई काम नहीं करता। वे…।'

अभी अब्दुल की बात पूरी भी नहीं हो पायी थी कि जोहरा बीच में बाधा देकर बोल उठी। उसका स्वर व्यस्त था। उसने छूटते ही कहा—'तो मालिक से कल बात कर लो। उनसे इजाजत ले लो।'

'यही करूँगा।'

'तो कल जरूर।'

'हाँ कल से परसों नहीं होगा। जोहरा तुम यकीन रखो।'

जोहरा ने यह सुना तो गद्गद हो उठी। उल्लास उसमें हिलोरे लेने लगा और वह बावरी सी हो गयी। जब अब्दुल चला गया तो उसने जाकर माँ को सब हाल बतलाया।

मगर बुढ़िया को कोई भी खुशी नहीं हुई। उसने एक दीर्घ उच्छ्वास ली और मुर्दा स्वर में कहने लगी—'अन्धे को चाहिए दो आँखें अगर वह मिल जाये तो उसे फौरन ही यकीन हो जायेगा। मुझे अब्दुल की बातों पर भरोसा नहीं। आजकल वह कुछ बहका-बहका सा नजर आता है। वह तो जब शादी कर लेगा

तभी मुझे यकीन होगा। ऐसे कभी नहीं हो सकता।'

जोहरा की नई उम्र थी उठती जवानी। उसने दुनिया को दूर से देखा उसके नजदीक कभी नहीं गई। इसीलिए उसे माँ की बातें अच्छी नहीं लगी। उसने अपने तर्क पेश किये और लगातार करती ही चली गई।

आखिर बुढ़िया झुंझला उठी। वह जोहरा को बुरा-भला कहने लगी। उसने कहने में कुछ भी उठा नहीं रखा कि अगर तू ही शरीफ होती तो हमल से क्यों हो जाती। नादान लड़की खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी और मुझे अब नसीहत देती।

जोहरा माँ के पास से उठ आई। वह अपनी कोठरी में आ आँखें मूंद आने वाले जमाने के ख्वाब देखने लगी। उसका मन कहता कि अब्दुल प्यार की दुनिया लेकर आया था। उसमें अरमान थे और तमन्नायें। उसने जो वादे किये हैं। उन्हें इस जिन्दगी में कभी नहीं भूल सकता। वह मुझसे कह गया है। वैसा ही करेगा। मुझे उस पर पूरा-पूरा यकीन है।

जोहरा जानती थी अब्दुल कल अपने मालिक से बात जरूर करेगा। उसके बाद फिर जल्दी ही शादी हो जायेगी। दुनिया के सारे झंझट अपने आप ही खत्म हो जायेंगे।

रात को जोहरा देर तक सोई नहीं। वह मीठे-मीठे सपने देखती रही। सवेरा होते ही राह देखी कि अब्दुल आता ही होगा। आज वह उसे हलुआ बनाकर खिलायेगी। पुड़िया भी पकाकर खिला देगी। उसकी खूब खातिर करेगी। वह उसका शौहर है।

लेकिन दिन काफी चढ़ आया और अब्दुल नहीं आया। इससे जोहरा के मन को ठेस लगी और वह अपने में बुझ सी गई।

× × ×

'क्यों मियाँ अब्दुल आजकल कुछ खब्तुल हवास जैसे रहते हो। आखिर बात क्या है?'

अब्दुल ने जब यह सुना तो उसने मालिक की ओर देखा नहीं नीचे सिर झुकाये बैठा रहा और मन्द स्वर में बोला—'कोई बात नहीं है मालिक हुजूर। तबीयत साफ नहीं रहती। न तो खुल कर भूख लगती और न रात को नींद ही आती।'

'तुम्हारा हाजमा खराब हो गया है। तुम्हें चाहिए कि किसी हकीम को दिखलाओ और लगकर इलाज करो।'

'हकीम को दिखला चुका हूं।'

'उसने क्या कहा?'

'यही बतलाया कि आँतें साफ नहीं है। उनमें गंदगी है।'

'तो दवा खा रहे हो ?'

'हाँ।'

'उससे कोई ग्राराम नहीं मिला ?'

'नहीं।'

'तो किसी दूसरे हकीम को दिखलाग्रो। पेट का मर्ज बड़ा जालिम होता है। देखो न इसका तुम्हारी तन्दुरुस्ती पर भी बुरा ग्रसर पड़ रहा है। चेहरा पीला पड़ गया।'

रहमान चुपचाप सुनता रहा ग्रौर मालिक कहता रहा—'ग्राज दोपहर को मेरे साथ चलना। मैं तुम्हें ग्रपने हकीम को दिखलाऊंगा। वह काबिल ग्रादमी है। उसकी दवा से तुम्हें फायदा जरूर होगा।'

रहमान ने यह सुनकर संतोष की साँस ली। उसके मन ने कहा कि न तो मैं बीमार हूँ ग्रौर न मुझे दवा चाहिए। मेरे गले में फाँसी का जो फंदा लगा है। मैं उससे छुटकारा चाहता हूँ। कुछ भी हो मैं जोहरा से शादी नहीं करूंगा। यह मेरा पक्का इरादा है।

फिर जब दोपहर को रहमान ग्रपने मालिक के साथ हकीम के मकान में गया तो हकीम ने नाड़ी देखी। देर तक उसकी परीक्षा करता रहा। पेट को उसने उँगलियों से बजाया। दाब-दाब कर देखा। जीभ देखी। ग्राँखों की कोरे देखीं।

हकीम हंस दिया ग्रौर जौहरी से कहने लगा—'पेट की शिकायत तो कोई भी मालूम नहीं होती। जबान गुलाबी है उस पर कोई सफेदी नहीं। ग्रगर पेट खराब होता तो जबान ऐसी नहीं होती।'

रहमान ने यह सुना तो वह मन ही मन शर्मिन्दा हो गया। तभी उसने सुना मालिक हकीम से कह रहा था—'फिर क्या तकलीफ है हकीम जी ?'

'इनको दिमागी उलझन है।'

'दिमागी उलझन ?'

'हाँ दिमागी उलझन।'

'तो उसके लिए कोई दवा दे दीजिये।'

'ग्रभी देता हूँ।'

रहमान दवा लेकर दूकान पर ग्राया। वह गुमसुम सा होकर एक ग्रोर बैठा रहा तो मालिक ने उसे ग्रपने पास बुलाया ग्रौर स्नेह भरे स्वर में कहा—'तुम परेशान क्यों हो ग्रब्दुल ? तुम्हें क्या तकलीफ है ? देखो मैं तुम्हारी शादी का इन्तजाम बहुत जल्दी ही करता हूँ। उससे सब ठीक हो जायेगा।'

रहमान कुछ नहीं बोला। उसने ग्रपनी मौन समाधि नहीं तोड़ी। उसने सोच लिया था कि दवाई खायेगा नहीं। दूकान से जाते ही पुड़िया फेंक देगा।

ग्रब रहमान के मन में यह शंका जोर बाँध गई कि मालिक ने मेरा इलाज

शादी सोचा है। वह उसके लिए जल्दी करेगा। ऐसी हालत में यह होगा कि मैं नौकरी छोड़ दूँ और यहाँ से चला जाऊँ।

छब्बीसवाँ

'सवेरे मैंने तुम्हारी बहुत राह देखी, लेकिन तुम नहीं आये। मैं पूछती हूँ कि आखिर यह कौन-सा तरीका है? पहले तो तुम्हें फुरसत ही फुरसत रहती थी और अब क्या हो गया है? जो ·······।'

'कुछ नहीं हो गया जोहरा। तबियत ठीक नहीं रहती। आज मालिक ने हकीम को दिखलाया था।'

'तो दवा लाये?'

'हाँ।'

'क्या बतलाया हकीम ने?'

'यही कि हाजमा ठीक नहीं है। क्या करूँ दिन भर दुकान पर बैठा रहता। पैरों से काम नहीं पड़ता। चलने को मिलता ही नहीं। पेट इसीलिए खराब हो गया और कोई सबब नहीं।'

'अच्छा तुमने मालिक से शादी के बारे में बात कर ली?'

'हाँ कर ली।'

'क्या कहा मालिक ने?'

'मालिक का कहना है कि यह काम जल्दी ही हो जाना चाहिए। शादी का पूरा खर्च वही उठायेगा।'

'तुम्हारा मालिक दरिया दिल है। ऐसे ही इन्सान काबिले तारीफ होते हैं। अल्लाह उसे बरक्कत दे। उसका रोजगार खूब चले।'

जोहरा ने यह कहा और वह अपने में आत्मविभोर हो गई। उसे लगा कि उसके अरमानों की जो कलियाँ थीं वह फूल बनकर मुस्करा रही हैं। अब्दुल एक भौंरा है और वह हर फूल पर बैठता। उसका रस लेता। वह बावरा हो गया है यह गुलशन छोड़कर कहीं नहीं जायेगा। जिन्दगी भर मेरे ही चमन में रहेगा।

और रहमान की भी हो गयी थी थोड़ी सी तसल्ली कि आज जोहरा नाराज नहीं, खुश है इसी तरह वह जब तक यहाँ रहेगा। उसे भुलावा हो देता रहेगा। वह भूल-भुलैया में पड़ी रहेगी और एक दिन वह चला जायेगा।

× × ×

रहमान की एक नहीं, अनेक योजनायें थीं, लेकिन वह किसी को भी कार्य-रूप में परिणीत नहीं कर पाता। कभी कुछ सोचता, कभी कुछ विचार करने लगता। चित्त अस्थिर था इसीलिए कुछ भी निश्चित नहीं कर पाता।

रहमान की पहली योजना थी कि वह दुकान से हीरों की चोरी करेगा। इस योजना में उसे सफलता नहीं मिली। ऐसा मौका ही नहीं आता कि वह चोरी करे। वह रोज सवेरे यही सोच कर जाता और रात को जब लौटता तो निराश हो जाता।

दूसरी योजना रहमान ने यह बनायी थी कि वह जोहरा से शादी नहीं करेगा। उसे इसी हालत में छोड़कर चला जाएगा। इस काम में भी उसे बाधा लग रही थी। वह असमंजस में था। अभी तक कदम नहीं उठा पाया और न उसकी हिम्मत ही पड़ती थी।

तीसरी योजना रहमान ने इस तरह बनाई थी कि वह सहारनपुर छोड़ देगा। कहीं दूर जाकर रहेगा। अजनबी बनकर जाएगा और अनजान बस्ती में अपना डेरा डालेगा। ऐसी ही तमाम योजनायें थी जिन्होंने रहमान को परेशान कर रक्खा था। उसकी समझ में नहीं आता कि क्या करे ? वह भीतर-ही-भीतर हमेशा दहशत से भरा रहता। ऐसा लगता कि वह चोर है और चोरी करते पकड़ा गया है।

अब रहमान जोहरा के घर जाते घबराता। उसे डर-सा लगता कि बुढ़िया टोक देगी। वह शादी की बात जरूर चलाएगी।

इसी प्रकार मालिक से भी वह मुँह चुराता। एक झूठ छिपाने के लिए सौ झूठ बोलता। कभी उससे स्याही फैल जाती तो कभी कलम टूट जाती। वह भेजा जाता पान लेने के लिए मगर लौटता तम्बाकू लेकर।

दुकान से रहमान घर की ओर जाता तो राह भूल जाता। वह बाजार में जाता और वहाँ की रौनक देखने लगता।

परेशानी इन्सान को कहीं-से-कहीं ले जाकर खड़ा कर देती है। उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती और वह अपना भला-बुरा भी सोच नहीं पाता। रहमान ने दारू का सहारा लिया। पहले रोज नहीं पीता, लेकिन अब नित्य का नियम बन गया था। उसका मन नहीं माना वह कोठों पर भी जाने लगा और मुजरे सुनने लगा। अच्छी खासी जिन्दगी को उसने नर्क में डाल दिया। रोज सोचता कि आज सहारनपुर छोड़ देगा मगर छोड़ नहीं नहीं पाता।

रहमान लम्बी पूँजी लेकर हटना चाहता था। उसके पास छोटी पूंजी थी जिससे उसे तसल्ली होती।

एक दिन रहमान ने अपने संचित धन को गिना। लगभग एक हजार रुपया था खरे चाँदी के सिक्के। कुछ सोने की मोहरें भी थी। जो उसने भटियारिन के सन्दूक से चुरायी थीं। अन्त में उसने यही सन्तोष कर लिया कि इसी दौलत को

लेकर वह परदेश जायेगा। वहाँ खूब जी भरकर कमायेगा। इसके बाद जब रईस बन जायेगा तभी दिल्ली लौटेगा। वह अपने बहनोई शरीफ को दिखला देगा कि दौलत कैसे कमायी जाती है और किस तरह।

आज जब सवेरा हुआ तो रहमान के अन्त: करण ने कहा कि वह दुकान नहीं जायेगा और घर छोड़ने की तैयारी करेगा। वह ऐसा सोच ही रहा था तब तक मालिक का दूसरा नौकर आ पहुँचा। उसने आते ही मालिक का हुक्म सुनाया कि वे उसे घर पर बुला रहे हैं। एक जरूरी काम है उसे अभी चलना है।

रहमान जब मालिक के घर पहुँचा तो उसने देखते ही उसकी पीठ ठोंकी और हंसकर कहने लगा 'बरखुरदार तुम्हें इसलिए बुलाया है कि तुम्हें कुछ हीरे लेकर देहरादून जाना है। वहाँ से लौटने के बाद ही तुम्हारी शादी हो जाएगी। मैंने तय कर रक्खा है। अभी चलो मैं दुकान चलता हूँ और तुम्हें हीरे देता हूँ साथ में हथियार बन्द चार आदमी जायेंगे और मेरा घोड़ा होगा।'

रहमान ने चुपचाप सारी बातें सुन ली। उसने एक का भी जवाब नहीं दिया। उसके मन में कल्पनायें उड़ानें भरने लगीं कि वह साथियों को चकमा देगा। उन्हें धोखा देकर गायब हो जाएगा और फिर लौट कर सहारनपुर कभी नहीं आएगा। खुदा ने खैर की उसने अपने आप ही जाने की राह बना दी। ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलेगा।

रहमान जैसे ही मालिक के साथ दुकान पर आया ठीक तभी अब्बास आकर वहाँ खड़ा हो गया। उसने रहमान को देखा तो एक क्षण में ही चौंका और सम्भल गया। वह अनजान बन गया। अपनी दाढ़ी पर रूमाल बाँध लिया और मन-ही-मन यह सोच लिया कि वह रहमान को यह जाहिर ही नहीं होने देगा कि वह अब्बास है और उसे पहचानता है। किन्तु रहमान सब कुछ समझ गया। जब वह यह सोच रहा था कि यहाँ पर भी वह उसका भेद खोल देगा।

तब अब्बास मन-ही-मन योजना बना रहा था कि वह चुप रहेगा और कल ही देहली के लिए रवाना हो जाएगा। वहाँ जाकर अहमद को अपने साथ लाएगा। फिर उसे दिखला देगा कि देखो रहमान यह है।

···अब्बास ने अँगूठी बेची। उसका उसे उचित मूल्य मिल गया। वह रकम उसने जेब में रक्खी और फिर खुशी-खुशी घर की ओर चल दिया।

आज अब्बास की गति में तेजी थी। उसके कदम खूब हल्के पड़ते। खुशी का ही कारण था कि हृदय तेजी से धड़कता ऐसा लगता कि आँखें अँधे को मिल गयी हैं और उसकी मुँह माँगी मुराद।

अब्बास घर की ओर चला जा रहा था वह चाहता था। कि हवा में उड़ जाए उसके पँख लग जाएँ और वह पलक भारते ही अपनी बीबी के सामने जाकर खड़ा हो जाए।

अब्बास ने यह भी सोच लिया था कि रहमान का भेद अपनी पत्नी को नहीं बतलाएगा। यह बात केवल अपने तक रखेगा कि जिसमें उसे सफलता मिल जाए। उसे पता था। वह जानता था कि अहमद उसे पाँच सौ चाँदी के सिक्के देगा। उनसे वह कोई काम करेगा। फिर उसे नौकरी ढूढ़ँने की जरूरत नहीं रह जाएगी।

जब अब्बास घर आया तो वह मुस्करा रहा था। घर वाली ने उसे हाथों हाथ लिया। वह बीती बातें भूल गई और मग्न होकर बोली—'आज बहुत खुश हो। मैं जानती थी कि तुम्हें निहायत खुशी होगी। कीमत अच्छी मिल गयी न।'

'हाँ।'

'मैं यही चाहती थी।'

'तुम कितनी अच्छी हो बेगम। तुम्हारी मैं तारीफ नहीं कर सकता। तुम्हारी सर शराफत का कायर हूँ। खुदा ऐसी नेक बीवी सबको दे। मुझे तुम पर फख्र है तो यह दौलत सम्भालो इसकी मालकिन तुम्हीं हो। अब गरीबी नहीं रहेगी बेगम। मैं कोई धंधा करूंगा, धंधा।'

'जो हाथी पर बैठते पैदल चलना उनकी जिन्दा मौत है। जो मोहन भोग खाते। वे भूखे नहीं रह सकते। तुम शहर कोतवाल रह चुके हो। तुम्हें तिजारत भी करनी पड़ेगी। यही मेरी राय है। ईन्शाल्लाह अगर ऊपर वाले ने चाहा तो घर में दौलत-ही दौलत हो जाएगी।

दम्पति देर तक इसी तरह आमोद-प्रमोद पूर्ण बातें करते रहे। उनकी बातों का सिलसिला समाप्त ही नहीं हुआ। वे अपने को भूल गए। ऐसा लग रहा था कि उनके सामने बिल्कुल नई दुनिया है। वे नये पक्षी हैं और उनके बसेरे भी नये ही बनेगें।

सराय में ही खाना पका। अब्बास ने अपनी बीवी से कहा कि कल सवेरा होते ही सबसे पहले वह घर तलाश करेगा, रात होने के पहले-ही-पहले किराये के मकान में पहुँच जाएगा। इसके लिए व तनिक भी लालच नहीं करेगा और अच्छा मकान लेकर रहेगा।

रात को अब्बास जब सोया तो खुशी के कारण उसे देर से नींद आयी। वह योजनाएँ बनाता रहा, कल्पनायें करता रहा। उसने सपनों का नया संसार बसाया जिसमें सब कुछ नया-ही-नया था।

× × ×

रहमान ने अब्बास को अच्छी तरह पहचान लिया था। वह जानता था कि उसके पीठ पीछे अब्बास आएगा और उसका सारा भेद खोल जाएगा। उसने जल्दी-जल्दी हीरे सम्भाले और फिर कपड़े लेने के बहाने घर आया। वहाँ आकर घर का कुछ भी सामान नहीं छुआ। सिर्फ अपनी पूंजी ली और फिर लोगों के साथ देहरादून की ओर चल दिया।

रात आराम से कट रही थी। ऐसा लगता कि मंजिल बहुत आसान है और तनिक भी देर नहीं लगेगी रहमान देहरादून पहुँच जाएगा।

साथी भालों से लैस थे। उनकी कमर में तलवारें लटकती। वे कहते कि अगर डाकू मिले तो उन्हें मौत के घाट उतार देगें। राहजनी करने वालों को कत्ल कर देगें। यह इब्राहीम लोदी का जमाना नहीं। सूरी खानदान की हकूमत है।

सराय में यह लोग रुकते दिन-ही-दिन मँजिल तय करते रात में ठहर जाते। तब अन्ध युग था न तो थी पक्की सड़कें और न रात में उन पर रोशनी का कोई प्रबंध ही। दो-दो कोस की दूरी पर सराय बनी थी जिनमें हिन्दू और मुसलमनों के अलग-अलग ठहरने का प्रबन्ध था।

एक रात जब रहमान के सभी साथी सो गए तो वह चुपके से उठा उसने पैदल न जा एक मुसाफिर का घोड़ा खोला। फिर उसने दूर की राह ली और पंजाब की ओर चल दिया।

सबेरे रहमान के साथी हक्के-बक्के रह गए। उनके हाथों के तोते उड़ गए। उन सबने सपने में भी नहीं सोचा था कि रहमान उनके बीच से कूद कर निकल जाएगा। वे आपस में एक-दूसरे से कहने लगे कि अब्दुल दगाबाज निकला। उसने मालिक के साथ विश्वासघात किया। उसकी नीयत अच्छी नहीं थी।

रहमान के साथियों ने उसे चारों तरफ खूब सरगर्मी के साथ तलाश किया। सब-के-सब डर रहे थे कि वे जाकर मालिक को क्या जवाब देंगे ?

सवेरे से रात हो गयी और अब्दुल कहीं नहीं मिला। सभी लोग बुरी तरह थक गए थे। वह रात उन्होंने सराय में ही गुजारी। सबेरे निराशा लेकर सहारनपुर की ओर चल दिए।

चारों आदमी दहशत से भर रहे थे। चलते वक्त मालिक ने कहा था कि देखो रात को कहीं ठहरना तो सब लोग इकट्ठे ही मत सो जाना। पारी-पारी से सोना। बराबर जागते रहना। परदेश का मामला है धोखा होते देर नहीं लगती।

अब्दुल पर सबका अटूट विश्वास था। सभी जानते थे कि वह वफादार नौकर है। उससे मालिक का कभी नुकसान नहीं हो सकता। वह अपने मालिक के लिए बड़ी-से-बड़ी कुर्बानी दे सकता है।

ज्यों-ज्यों मंजिल करीब आती जा रही थी। जौहरी के कर्मचारियों को लगता कि उन पर आफत का पहाड़ टूटकर गिरने वाला है। नौकरी से तो वे निकाल ही दिए जाएँगे साथ ही जलील भी होंगे। बदनामी अलग होगी। उन पर यह भी तोहमत लगायी जा सकती है कि वे अब्दुल से मिल गए और सबने मिलकर हीरे गायब कर दिए।

इसी तरह अनेक शंकाओं से भरते हुए जौहरी के नौकर अपनी यात्रा तय कर रहे थे। किसी के मन में आता कि उन्हें शक में काजी के सुपुर्द किया जा

सकता है। मुकदमा चलेगा फैसला होगा। ऐसा भी हो सकता है कि उन्हें जेलखाने की हवा खानी पड़े। जब मुकदर खराब होता है तो परेशानी सबसे पहले सामने आती। यह दुनिया का दस्तूर है।

सत्ताईसवाँ

एक दो और फिर जब तीन दिन बीत गये तो जोहरा की चिन्ता बढ़ी। उसने माँ से कहा—'माँ अब्दुल नहीं आया। आज कई दिन हो गये कहीं ऐसा तो नहीं कि उसकी तबीयत नाशाद हो गयी हो कोई खबर नहीं मिली अल्लाह जाने क्या बात है ?'

'बात क्या है ? वह अब तुझसे कतराता है। इसीलिए मैं रोज चिल्लाती कि जल्दी से जल्दी निकाह हो जाए।'

'क्या करूँ अम्मी अब्दुल के घर जाऊँ ?'

'मैं कुछ नहीं जानती। तुझे जाना है तो जा।'

जोहरा ने बुर्का पहना। वह रहमान के घर आई। कुण्डी में ताला लटक रहा था जो इस बात का प्रतीक था कि रहमान घर में नहीं है।

जोहरा विचलित तो थी ही वह अधीर हो उठी। उसने माथे पर दोनों हाथ दे मारे और घूमकर घर की ओर चल दी।

रास्ते में जोहरा का विचार बदला। उसने सोचा कि जब इतनी दूर आई हूँ और घर से बाहर निकली हूँ तो अब्दुल को दूकान पर भी देख लूँ। शायद वह वहीं पर गया हो।

फिर जब जोहरा जौहरी के सामने बुर्का ओढ़े पहुँची और उसने अपना नाम जोहरा बतलाया तो वह बहुत खुश हुआ। उसने इज्जत के साथ उसे गद्दी पर बैठाया और मृदु स्वर में कहने लगा—'अब्दुल हीरे लेकर देहरादून गया है। दो-एक दिन में लौट आएगा। उसकी चिन्ता मत करो।'

जोहरा को हमदर्दी मिली। वह निश्चिन्त हो गई। वह उठकर खड़ी हुई और उसके मुँह से धीरे से निकला—'तसलीम।'

जोहरा ने घर आकर माँ को सब हाल बतलाया। उसने कहा—'अगर अब्दुल जल्दी में न होता तो यहाँ जरूर आता। मुझे उस पर यकीन है।'

'तेरा यकीन कच्चा मिट्टी का घड़ा है वह फूट सकता है पगली। मैं पत्थर की निगाह रखती। मैंने धूप में बाल सफेद नहीं किए। खुदा से इबादत कर कि वह

तेरी बिगड़ी बना दे ।'

जोहरा की माँ ने यह कहा फिर उसने एक दीर्घ उच्छवास ली। उसके दोनों हाथों में आँचल आ गया। उसने उसे थाम लिया और फिर आकाश की ओर सिर उठा मौन स्वरों में ईश्वर से विनय करने लगी।

× × ×

तीन दिन और बीते, लेकिन अब्दुल नहीं आया। इससे जोहरा की परेशानी बढ़ गई। उसके मस्तिष्क में माँ की बातें टकराने लगीं। उसका मन नहीं माना तो चौथे दिन जौहरी की दूकान पर गई। वहाँ जाकर उसने जो कुछ सुना उससे अवाक् रह गई।

मालिक ने बतलाया कि अब्दुल हीरे लेकर कहीं गायब हो गया। उससे ऐसी उम्मीद नहीं थी। उसने बहुत बड़ा धोखा दिया।

जोहरा को यह भी बतलाया गया कि जो चार आदमी अब्दुल के साथ देहरादून गये थे उन्हें माफ नहीं किया गया। पहले तो काजी को सौंपने का इरादा था, फिर रहम खाकर उन्हें छोड़ दिया। नौकरी से निकाल दिया।

जोहरा किकर्त्तव्यविमूढ़ सी हो गई। किसी तरह वह घर आई। माँ को कुछ भी नहीं बतलाया। जब बुढ़िया ने पूछा तो धीरे से जवाब दे दिया कि अब्दुल अभी लौटा नहीं आजकल में आने ही वाला है।

लेकिन वृद्धा को इससे सन्तोष नहीं हुआ वह चौंक गई। उसके मन में शंकायें घर करने लगीं कि शायद अब्दुल यहाँ से चला गया और अब वह लौटकर कभी नहीं आएगा।

इधर माँ की यह स्थिति थी और उधर जोहरा अपने आप में ही घुट रही थी। उसकी समझ में नही आता कि क्या करे ? कहाँ जाये ? और किससे पूछे कि अब्दुल कहाँ है ?

जोहरा के अन्तःकरण ने उससे पूछा—'अगर अब्दुल न आया तब तुम क्या करोगी ?'

'मैं उसकी तलाश करूँगी।'

'अगर इसमें भी कामयाबी न मिली तो ?'

'तो···।'

'हाँ तो···।'

'तो मैं अपनी जान दे दूंगी। मेरे पास यही एक रास्ता है।'

'मगर खुदकशी जुर्म है।'

'परेशान इन्सान यह नहीं सोचता।'

'और यह क्यों भूल जाती हो जोहरा कि तुम माँ बनने वाली हो। ऐसा गुनाह मत करना नहीं तो तुम्हें दोजख में भी जगह नहीं मिलेगी।'

जोहरा की हैरानी जब बहुत बढ़ गई तो उसने आँचल में मुँह छिपा लिया और सिसक-सिसक कर रोने लगी।

× × ×

अब्बास ने दूसरे दिन ही सराय छोड़ दी वह एक मकान में आ गया। घर पक्का था। करीने से बना हुआ। उसमें सुख-सुविधा के सभी साधन उपलब्ध थे।

नये मकान में आने के बाद दूसरे दिन ही अब्बास ने अपनी बीवी से कहा—'मैं एक दोस्त से मिलने पानीपत जा रहा हूँ बेचारा बहुत गरीब है। मुझे उस पर रहम आता मेरा जिगरी यार है। सोचता हूँ कि उसे यहाँ ले आऊँ। तिजारत में सहारा देगा। काम में मेरा हाथ बँटायेगा। हम एक से दो हो जायेंगे। काम अच्छा चलेगा।'

यद्यपि बीवी का मन नहीं था, लेकिन फिर भी उसने मना नहीं किया। अब्बास ने रकाब पर पैर रखा वह घोड़े की पीठ पर बैठ गया। उसने सीधी देहली की राह ली। उसका उद्योग था कि जल्दी से जल्दी अहमद के पास पहुँच जाये।

घोड़ा सरपट भागता। उसकी चाल बढ़िया थी। ऐसा लगता कि हवा में उड़ रहा है। ऐसे ही हवा में उड़ रहा था अब्बास वह ख्वाबों के महल बनाता। उसे वे बहुत पसन्द आते। उसे लगता कि देहली दूर नहीं बहुत ही करीब है।

मंजिल पर मंजिल तय करता हुआ अब्बास दिल्ली पहुँच गया। अहमद ने जब उसकी सूरत देखी तो उसने नाक-भौं सिकोड़ी और मन ही मन सोचने लगा कि यह आदमी फिर कोई नया सबुका लाया है।

अब्बास ने अहमद को सब हाल बतलाया फिर उन्होंने जोर देकर कहा कि मेरे साथ सहारनपुर चलो। इस बार तुम्हें धोखा नहीं होगा अहमद। तुम्हारा लड़का तुम्हें मिल जाएगा। रहमान जौहरी की दूकान पर नौकरी करता है।

जरीना गम में डूबी बैठी थी। उसके मुँह से एक गर्म साँस निकली। उसने पति को सहारनपुर जाने की सलाह दी।

इस तरह अहमद अब्बास के साथ सहारनपुर के लिए रवाना हो गया।

इधर अहमद दिल्ली जा रहा था। वह रास्ते में था। उधर जरीना ने पीर के मजार पर रेशमी चादर चढ़ाई। सिन्नियाँ बाँटी, फूल चढ़ाये और मनौती मानी कि रहमान राजी-खुशी घर आ जाये। फिर वह खैरात बाँटेगी। कंगलों को खिलाएगी।

जरीना मस्जिद में गई। वहां जाकर खुदा की इबादत की, नमाज पढ़ी। वहाँ के मुल्ला और मौलवियों को पैसे दिए। घर आकर भी वह चैन से नहीं बैठी। उसका अन्तःकरण कहता कि अगर रहमान न मिला तो वह पागल हो जायेगी। उसकी किस्मत में औलाद का मुँह देखना नहीं बदा था। रहमान को गोद लिया वह भी हाथ से बेहाथ हो गया। मुकद्दर इसे ही कहते हैं और तकदीर इसी का नाम है।

जरीना का दुःख अथाह था। उसका पार नहीं मिलता। ऊब-ऊब कर साँसें लेती। एक क्षण के लिए पलकें मूँदती तो रहमान की सूरत दिखलायी पड़ती। वह अँधेरे में उजाला ढूँढ़ती और उजाला उससे दूर भाग रहा था।

अट्ठाईसवाँ

लम्बा सफर था। अहमद किसी तरह सहारनपुर पहुँचा। वह अब्बास के साथ जौहरी की दूकान पर गया।

जौहरी को जब मालूम हुआ कि अहमद अब्दुल का धर्म पिता है। उसने उसे गोद लिया और बड़े लाड़-चाव से पाला था तो वह उसके सिर हो गया। उसने रहमान का सारा हाल बतलाया कि किस तरह वह अब्दुल बनकर यहाँ रहा उसने जोहरा को धोखा दिया। साथ ही अमानत में खयानत की। वह जो हीरे ले गया है। वह अहमद को देने पड़ेंगे।

कुसूर अब्बास का नहीं था। इसीलिए अहमद को उस पर गुस्सा नहीं आया। उसने जौहरी की। खुशामद की उसके हाथ जोड़े और कहा—'मैं रहमान की तलाश करता हूँ। आप बेफिक्र रहिए। जैसे ही वह मिला, आप के हीरे आपको लौटा दिये जायेंगे। थोड़ी मोहलत दीजिए, आपका बहुत बड़ा एहसान होगा।'

जौहरी अधेड़ था। क्रोध तो उसे बहुत अधिक था। लेकिन फिर भी उसने मुलाहिजा किया। वह तनिक हँसा और गम्भीर स्वर में कहने लगा—'गयी चीज फिर कभी वापस नहीं मिलती। जाओ मियाँ खुदा हाफिज! अल्लाह खैर करे तुम्हारा बेटा तुम्हें मिल जाय।'

'मुझे अपना वायदा याद रहेगा। जौहरी हुजूर! आपका नुकसान हो गया। इसका मुझे बहुत बड़ा गम है।'

अहमद देर तक जौहरी के पास बैठा रहा। अब्बास भी नहीं गया। तभी दोनों ने देखा कि एक बुढ़िया जो काले रंग का ओढ़ना पहने थी आयी और आकर दूकान के सामने खड़ी हो गई। उसके साथ एक दूसरी औरत थी जिसने बुर्का पहन रक्खा था। उसने जौहरी को सलाम किया। फिर गद्दी पर बैठ गयी और धीरे से पूछा—'चाचा हुजूर अब्दुल की कोई खबर मिली?'

'नहीं।'

'तो अब क्या होगा?'

'होता क्या है। अपने नसीब को झीखो।'

'बुढ़िया अब तक खड़ी थी, वह जोहरा के पास बैठ गई। उसने दोनों हाथ नचाए और जौहरी से कहने लगी—'नाश हो उस मुये अब्दुल का। उसने मुझे न तो घर का रक्खा और न घाट का। उसके इरादे पहले से ही नापाक थे। मैं जोहरा को मना करती रही मगर इसकी किस्मत खराब थी। वह उससे मोहब्बत कर बैठी और अब हमल से है। बताओ इसका क्या करूँ? गला घोंट दूँ। जान से मार डालूँ। जमाना क्या कहेगा? यह लोगों को मुँह कैसे दिखलायेगी?'

अब्बास और अहमद ने जब बुढ़िया की बातें सुनी तो दोनों सन्नाटे में आ गए। वे एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

जौहरी ने चुपचाप बुढ़िया की बातें सुनीं। वह देर तक मौन रहा। फिर उसने बुढ़िया को कुछ भी जवाब नहीं दिया। अहमद को सारा हाल बतलाया।

ऐसे ही जौहरी ने बुढ़िया को भी बतला दिया कि वह अहमद रहमान का बाप है। दिल्ली से आया है। इसका पल्ला पकड़ो। इसी के लड़के ने जोहरा की जिन्दगी बरबाद की।

देर तक सबमें बातें होती रहीं। समझौता किसी तरह का भी नहीं हो पाया। अब्बास अपने घर चला गया।

और अहमद जोहरा के साथ उसके मकान पर आया। उसने उसे तसल्ली दी। उसकी माँ को भी समझाया उसने कहा—'जोहरा मेरी बहू है। रहमान को उसे कुबूल करना पड़ेगा। जोहरा उसकी बीबी बनेगी। मैं उसे बदनाम नहीं होने दूंगा। इंशाल्लाह मैं जमीन का कोना-कोना छान डालूंगा। पूरा हिन्दुस्तान ढूंढ़ लूंगा। रहमान मिलेगा खुदा के दरबार में देर जरूर होती है अंधेर कभी नहीं होता।'

जोहरा रो रही थी। वह बार-बार अपने आँसू पोंछती। अहमद जब उसकी सिसकियाँ सुनता तो उसका कलेजा टूक-टूक हो जाता।

बुढ़िया के भी आँसू बह रहे थे। वह कभी कुछ कहती और कभी कुछ।

× × ×

जब अहमद चला तो जोहरा खूब रोई। अहमद ने उसके सिर पर हाथ रक्खा और दुआ दी। वह गीले स्वर में बोला—'मत रो बेटी! रहमान तेरा शोहर बनेगा। यह मेरा वादा है। दुनिया का मालिक उसे खुशनसीब बनायेगा। माँ मैं बारात लेकर आऊँगा वक्त का इन्तजार करो। जोहरा मेरी दुआयें तुम्हारे साथ हैं।'

अहमद ने अपनी राह ली। वह सीधा देहली की ओर चला। मस्तिष्क में पहले केवल एक ही उलझन थी कि रहमान खो गया। वह मिलता नहीं।

लेकिन अब एक नहीं अनेक समस्यायें थीं। अहमद का दिमाग उलझ रहा था। वह सामने देखता तो लगता कि रहमान चोरों की तरह भागा चला जा रहा है। फिर पलकें मूंद लेता तो मालूम पड़ता जोहरा सामने खड़ी है वह रो रही है। उसके आंसू बह रहे हैं।

कानों में अहमद को लगता कि बदनामी के ढोल बज रहे हैं। वह उन पर हाथ रख लेता लगाम कस जाती घोड़ा चौंक उठता। उसकी चाल में फर्क आ जाता।

कभी अहमद को लगता कि सारी दुनिया शोर मचा रही है कि रहमान चोर है। उसने मालिक के साथ दगाबाजी की। वह नमक हराम है।

किसी तरह अहमद देहली पहुँचा। उसने जरीना को सब हाल बतलाया। जरीना हाय-हाय करने लगी। उसने दोनों हाथों से अपना सिर धुन लिया।

असलम और अमीना को भी सारा समाचार विदित हो चुका था। दम्पति दुख में तो पहले से ही डूबे थे। अब उनकी कमर टूट गई। उन्हें रहमान पर रह-रह कर क्रोध आता।

असलम ने उम्मीद छोड़ दी कि अब रहमान मिलेगा। उसे इतना गहरा सदमा पहुँचा कि उसने मौन समाधि ले ली। न कहीं जाता, न किसी से बात करता, अमीना से भी बोलने से भी उसे बोझ जैसा लगता था।

असलम ने आत्महत्या के लिए न जाने कितनी बार योजना बनाई किन्तु वह जीवित रहा। वह जिन्दगी से ऊब चुका था। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता। उसके कानों में कोई कहता कि तुमने जो कुछ इस जिन्दगी में किया उसका नतीजा तुम्हारे सामने है। जिस जिन्दगी में जन्नत नजर आती थी वह दोजख हो रही है। चले जाओ इस दुनिया से। अब यहाँ तुम्हारा कोई काम नहीं।

और एक रात जब अमीना गहरी नींद में सो रही थी। असलम ने चुपके से घर छोड़ दिया। सवेरे जब मुर्गे की बाँग सुनाई दी और मस्जिदों में अजान होने लगी तो अमीना उठी। वह पति की कोठरी में आई तो पाया कि बिस्तर खाली है। उसके मन ने उससे तत्क्षण ही पूछ लिया—'आज बहुत जल्दी जाग गये किवाड़ खुले हैं। बाहर क्या करने गये?'

'हाँ, बाहर क्या करने गये?'

अमीना के ओंठ हिले, अस्फुट स्वर निकला वह ठगी सी वहीं पर खड़ी रही। देर बाद ऊपर सिर उठाया तो देखा छज्जे पर धूप फैल रही थी। उसका रंग सुनहरा था।

× × ×

और असलम फिर नहीं लौटा। अमीना उसकी राह देखती ही रह गई। दोपहर हो गई। उसने रो-रो कर घर भर दिया। पड़ोसियों की भीड़ लग गई। आँगन औरतों से घिर गया। हमदर्दी के बादल बरसे। असलम की तलाश भी हुई। लोग कहते कि अपाहिज आदमी आखिर जाएगा कहाँ, असलम लंगड़ा है। वह बैशाखी के सहारे ज्यादा दूर नहीं जा सकता है। कहीं उस नादान ने खुदकशी तो नहीं कर ली? अगर वह नहीं मिलता तो उसकी लाश मिलेगी अच्छी तरह ढूँढ़ो।

जावेद और अहमद दोनों ने बहुत खोज की। अपनी समझ में कुछ भी उठा

नहीं रक्खा मगर असलम नहीं मिला।

दिन पर दिन बीतते गये। अमीना के घर में मातम छा रहा था। वह अधेड़ अवस्था में बूढ़ी हो गई। देखने में जीर्ण लगती। सदमा चेहरे पर था गम आँखों में। ऐसा लगता कि मरणासन्न है। किसी तरह जी रही है। अब अमीना दिन-रात न जाने क्या सोचा करती। उससे कुछ भी काम नहीं होता। भूख लगना तो दूर रहा वह रोटी खाना भी भूल जाती। अकेले में हँसती और अपने आप से कहती कि सब हँसते हैं। कोई भी तारीफ नहीं करता। मैं भी कैसी माँ हूँ कादिर जैसा जवान बेटा मौत के मुँह में चला गया। मेरा कलेजा टुकड़े-टुकड़े नहीं हुआ। मैं जिन्दा हूँ। यह भी सच है कि मैं नेक बीबी नहीं। मुझ पर लोग उँगली उठाते हैं। मेरा शौहर चला गया और मैं घर में बैठी हूँ। लानत है ऐसी जिन्दगी को। मैं जिन्दा नहीं रहूँगी।

अमीना सोचती कि मैं कितनी बदनाम हूँ। मेरे लड़के रहमान ने हीरों की चोरी की। मालिक को धोखा दिया। वह जोहरा की जिन्दगी से खेला। जोहरा एक से दो होने वाली है। तौबा-तौबा खुदा औलाद न दे। कभी न दे। मैं बच्चों वाली माँ हूँ और इस वक्त मेरा कोई नहीं।

रात को जब आसमान निर्मल होता और उसकी नीली चुनरी में चाँदी के फूल खिलते तब अमीना के बदन में शोले भड़कते। आग लग जाती। ऐसे में ही निकल आता चाँद तब अमीना बुझ जाती और उसके कलेजे में हूक उठने लगती।

नादिरा से माँ का यह हाल देखा नहीं गया। उसने नूरमहल से इजाजत ले ली और अमीना के पास ही रहने लगी। शरीक को भी अपनी सास का ख्याल था।

जरीना खुद ही दुखी थी। फिर भी उसकी हमदर्दी अमीना के साथ थी।

और अहमद कहता कि अगर यही हाल रहा तो एक दिन अमीना मर जायेगी।

न जाने क्या हो गया था अमीना को। वह सूख कर काँटा हो रही थी। कभी आँसू बहाती। कभी उन्हें भीतर-ही-भीतर पी जाती। वह उच्छवास से और गर्म ठंडी साँसे लेती वह जब अपने से ऊब जाती तो आँखें बन्द कर लेती और फिर देर तक नहीं खोलती।

अमीना न जाने क्यों अपने को हेय समझ रही थी। जब कि समाज में उसका बहुत ही ऊँचा स्थान था। छोटे से लेकर बड़े तक सब उसे इज्जत की निगाह से देखते। वह शरीफ औरत थी। उसकी हर जगह तारीफ होती।

मगर अमीना ने अपने को माटी समझ लिया। वह भूल गई कि सोना क्या है? और सोना किसे कहते हैं?

उन्तीसवाँ

धीरे-धीरे एक महीना बीत गया और असलम लौटकर फिर घर नहीं आया। अमीना निराश हो गई। उसे पक्का विश्वास था कि उसके पति ने आत्म-हत्या कर ली। अन्य लोग भी यही समझ बैठे। इसीलिए अब उसकी तलाश नहीं की जाती।

अमीना सोचती कि जो तारा डूब गया है वह अब कभी नहीं निकलेगा। असलम अब नहीं आयेगा वह इस दुनिया से चला गया।

इधर अमीना की यह स्थिति थी। उधर अहमद अपने में परेशान था। उसकी एक धुन थी एक ही लगन कि किसी तरह रहमान मिल जाय तो उसकी सोई किस्मत जागे।

यही कारण था कि अहमद कभी चैन से नहीं बैठता। वह किसी न किसी दिन रहमान की तलाश में दूर तक निकल जाता। उसका अन्तःकरण कहता कि रहमान मिलेगा जरूर।

जरीना की भी आशा अभी जीवित थी। वह रोज सवेरे रहमान की राह देखती। दिन भर उसके लिए दुआएँ करती। साँझ को दीपक जलाती तो दरवाजे पर जरूर जाती कि शायद रहमान आया हो। वह अमीना को भी समझाती। उसे ढाढ़स बँधाती। वह कहती कि रहमान सुधरेगा कैसे नहीं। मैं उसे राह पर लाकर रहूँगी।

अमीना ऐसी बातें सुनती तो कुछ भी जवाब नहीं देती। वह अधिकांश मौन रहती और इसी में उसे सुख मिलता। नूरमहल अमीना का बेहद ख्याल रखती। वह उसके दुख से इतनी दुखी थी कि जिसका नाम नहीं उसके लिए खुदा से इबादत करती कि असलम किसी तरह घर लौट आये। उसका खोया बेटा रहमान मिल जाये। एक बार उसकी जिन्दगी मुस्करा दे।

मगर नूरमहल की दुआ अमीना को नहीं लगती। परवरदिगार उससे रूठा था। उसकी तकदीर ने उसे कभी हँसने नहीं दिया। शुरू से उसने आँसू बहाये और उनका खजाना अभी तक खाली नहीं हो पाया।

एक रात अमीना ने सपना देखा कि वह किश्ती पर सवार है। किश्ती दरिया को पार कर रही है। असलम के हाथों में पतवार है और वह नाव चला रहा है। अचानक बादल गरजे, बिजली चमकी और देखते-ही-देखते आ गया तूफान। नदी में पानी के बबूले उठने लगे। लहरें खूब ऊँची उठती। पानी भँवर बाँध जाता। नाव डगमगाने लगती। सहसा नाव डूब गई। अमीना जोर से चीखी और तभी उसकी नींद टूट गई।

नादिरा ने यह ख्वाब सुना तो दुखी हो गई और माँ से कहने लगी—'अम्मी जान यह ख्वाब अच्छा नहीं। खुदा खैर करे हम लोग तो यूं ही मुसीबतों के मारे हुए हैं। तुमसे कितनी बार कहा कि ज्यादा सोच मत करो मगर तुम मानती ही नहीं।

सपने उसे ही आते हैं जो दिन-रात सोचा करता है।'

अमीना ने जैसे कुछ सुना ही नहीं। वह तब ढलती रात के वे तारे देख रही थी जो चटके नहीं अब फीके थे और जिनकी रोशनी बुझ रही थी।

× × ×

वह दिन भी आ गया जब अमीना खाट से लग गयी। न तो उसे ज्वर था और न खाँसी। बीमारी बड़ी अजीब थी। उसका इलाज कोई भी हकीम नहीं कर पाया। एक तो उसे भूख लगती ही नहीं और दूसरे जब किसी तरह खाने बैठती तो निवाला मुँह में नहीं जाता। उसके आँसू आ जाते।

रात को अमीना सोती नहीं। वह न जाने कितने काम करती और ऐसे में ही सवेरा हो जाता।

रात को अमीना करवटें बदलती। ऊब-ऊब कर साँसें लेती। तारे गिनती, अतीत के चलचित्र देखती, उठकर बैठती। आंचल पसार कर परवरदिगार से दुआ करती। फिर आ जाता दिन। वह उसके लिए कोई भी खुशी नहीं लाता। गम के दरिया में डूबो देता। जिसमें वह दिन भर गोते लगाती रहती।

अब अमीना का बदन जर्जर हो चुका था। वह क्षीणकाय प्रतीत होती। केवल उसमें अस्थियाँ और चर्म था। रक्त का नाम नहीं, कमजोर इतनी हो गयी थी कि उठकर खड़ी नहीं हो पाती।

हकीम कहते कि सदमें की बीमारी का कोई इलाज नहीं। अगर अमीना की आबो हवा न बदली गई तो एक दिन वह घुट-घुट कर मर जाएगी।

अमीना से जब अहमद और जावेद ने यह कहा कि वह कुछ दिन के लिए देहली छोद दे तो अमीना राजी नहीं हुई। उसका कहना था कि मैं सिपाही की बीवी हूँ। मेरा शौहर चला गया। मेरा कादिर खुदा को प्यारा हो गया। मैं यह मकान नहीं छोड़ूँगी। इस मकान से मेरा जनाजा ही निकलेगा। न जाने वे बीवियाँ जिन्दा कैसे रहती जिनके खाविंद नहीं रहते या चले जाते। मुझे दोजख में भी जगह नहीं मिलेगी। मुझे शर्म आती है कि मैं अब तक जिन्दा कैसे हूँ। मुझे मर जाना चाहिए।

यों तो अब्बास अमीना का दुश्मन था, लेकिन उसने जब उसकी बीमारी का हाल सुना तो तरस आया वह उसे देखने आ पहुँचा। अन्त में उसने क्षमा माँगते हुए यहाँ तक कह डाला कि मुझे माफ कर दो अमीना बहन ! मैंने तुम्हें बहुत सताया। मैंने तो देहली छोड़ दी थी, लेकिन सहारनपुर में मन नहीं लगा। इसीलिए यहाँ फिर चला आया। खुदा की मेहरबानी है। फूल, पीतल और ताँबे के बर्तनों की दुकान कर ली है। भैंस भी पाल ली है। अब मजे में हूँ। अल्लाह से मेरी यही इल्तजा है कि वह तुम्हें सेहत दे। तुम्हारे शौहर को वापस घर भेज दे।

अमीना ने अब्बास को सान्त्वना दी। उसके बाद फिर अपनी कथा कहती हुई रोने लगी। उसके मुंह से गीले स्वर में निकला—'कोतवाल साहब वक्त बड़ा जालिम

होता है। यह उसी का चक्कर है। मुझे जमाना नचा रहा है और मैं नाच रही हूँ। अब कोई नहीं आएगा। जो दिन गुजर जाते हैं वे फिर कभी लौटकर आते नहीं। जाओ खुदा करे जिन्दगी भर मौज करो। यहाँ तो मौत का इंतजार है। वह न जाने क्यों देर कर रही है?

अब्बास अब जब-तब आ जाता। उसे अमीना से हमदर्दी हो गई थी।

कौन ऐसा था जिसे अमीना से सहानुभूति न थी। लोग उसकी जिन्दगी के लिए खुदा से दुआ माँगते।

लेकिन अमीना दिन-प्रतिदिन क्षीण होती जा रही थी। उसकी शारीरिक दुर्बलता अपनी चरम-सीमा को पार कर गई। वह हड्डियों का ढाँचा मात्र थी।

अहमद को अमीना की अत्यधिक चिन्ता थी। वह सोचा करता कि अगर रहमान मिल जाए तो अमीना का दुख दूर हो सकता है। उसे जिन्दगी में राहत मिल जायेगी।

अहमद पागल हो रहा था। उसके दिमाग में कभी कुछ आता और कभी कुछ। वह मुल्ला-मौलवियों के पास जाता उनसे ताबीज लेता। झाड़-फूँक करवाता। पीर के मजार पर रोज हाजिरी देता। मस्जिद जाना कभी नहीं भूलता। दिन की पाँचों नमाजें पढ़ता।

अहमद ने नौकरी से एक महीने की छुट्टी ली। उसने तय कर लिया था कि इस बीच वह घर नहीं लौटेगा जब तक रहमान को खोज न लेगा। रहमान सहारनपुर से देहरादून गया था और बीच से गायब हो गया। आखिर वह गया कहाँ? वहीं यहीं कहीं होगा। मैं उसकी तलाश करूँगा।

अहमद सीधा सहारनपुर पहुँचा। सबसे पहले वह जौहरी की दुकान पर गया। वहाँ रहमान का पता किया। मालूम हुआ कि न तो रहमान लौटकर आया और न उसका कोई हाल मिला।

इसके बाद अहमद जोहरा के घर गया। वहाँ सुनने को मिला कि जोहरा ने एक पुत्र को जन्म दिया था। समाज ने उसे धिक्कारा थूँ-थूँ की। उसकी बूढ़ी माँ बदनामी का सदमा सह नहीं पाई। वह मर गई और जोहरा ने एक दिन रात को मकान छोड़ दिया।

अहमद गहरे सोच में डूब गया कि आखिर जोहरा कहाँ गई। उसकी गोद में बच्चा है। वह कहाँ भटक रही होगी।

अहमद दो दिन तक सहारनपुर में रहा। उसने शहर का कोना-कोना छान डाला। रहमान कहीं नहीं मिला फिर वह आगे बढ़ा।

अहमद ने हरिद्वार और तीर्थ देखा। वहाँ पर भी रहमान नहीं मिला। वह देहरादून आया।

अहमद को कामयाबी नहीं मिली। वह निराशा लेकर घर नहीं लौटना

चाहता था। इसीलिए आगरे की ओर चल दिया कि शायद रहमान आगरे गया हो। क्योंकि वह भी शाही शहर है।

जब अहमद मथुरा पहुँचा तो रात को उसने सराय में पड़ाव किया। आगरा अभी दूर था और वह बुरी तरह थक चुका था। उसके पास जिस मुसाफिर की चारपाई थी वह बेखबर पड़ा सो रहा था। लकड़ी की ऊँची दिपट पर बड़ा-सा अण्डी के तेल का दीपक जल रहा था। उसकी जर्दीली रोशनी में अहमद ने देखा तो उसे लगा कि वह रहमान है। शक्ल हू-बहू वही थी। उसने उसे जगाना चाहा, लेकिन फिर जगाया नहीं। सोच कर ही रह गया। जब तक रात आधी नहीं हो गई दीपक बराबर जलता रहा। अहमद अब सोए हुए युवक को देखता रहा और फिर जब अन्धेरा हो गया तो वह उसकी साँसें सुनता रहा। सवेरे उसने उससे उसका नाम पूछा तो उसने नूरअली बतलाया। वह सिकरी का रहने वाला था। दूर एक रिश्तेदारी में गया था।

अहमद आगरे की ओर चला, वह शहर की गलियों में चक्कर लगाने लगा। सभी प्रमुख बाजार देखे। रहमान कहीं नहीं मिला तब उसकी आत्मा कहने लगी कि रहमान चोर है और चोर कभी खुले बाजार में नहीं बैठ सकता। या तो उसका भेष बदला होगा या फिर वह किसी ऐसी जगह में होगा जो छोटी हो और जहाँ के लोग उसे जानते न हों।

अहमद देहली की ओर नहीं लौटा। वह टूंडला आया। वहाँ से फिरोजाबाद पहुँच गया। रास्ते में जितनी भी सराय पड़ी वह सबमें गया। जो कस्बे और गांव पड़े उन्हें देखा।

अहमद की थकावट बेहद बढ़ गई थी। वह कुछ दिन आराम करना चाहता था। छुट्टी उसने एक महीने की ली थी और अब हो रहे थे पूरे दो माह। उसने सोच लिया था कि नौकरी छूट जाय उसकी कोई परवाह नहीं। उसके पास इतनी दौलत है कि जिन्दगी भर बैठकर रोटी खा लेगा। वह रहमान को ढूंढ़ कर ही मानेगा। यह उसकी जिद्द है।

फिरोजाबाद कहने को तो कस्बा था, लेकिन उसकी रौनक देखते ही बनती। वह शहरों को मात करता। लोग उसे आगरे का बच्चा कहते। अहमद एक सराय में ठहर गया। वह कई दिन तक ठहरा रहा। थकावट धीरे-धीरे दूर होने लगी। घोड़े को भी आराम मिला। वहाँ एक दिन एक नजूमी से अहमद की मुलाकात हो गई। उसने बतलाया कि चन्द दिनों में उसका बेटा मिल जाएगा। अभी तक उसकी किस्मत का सितारा गर्दिश में था। अब बुलन्द होने वाला है। थोड़े दिनों की बात है।

अहमद को इससे बड़ी तसल्ली हुई। उसने सन्तोष की साँस ली।

तीसवाँ

शाम का समय था। अहमद सराय से बाहर निकला। उसका मन हुआ कि बाजार घूम आए।

दूकानों पर शमादान जल रहे थे। मोमबत्तियों की रोशनी होती। छोटी-मोटी दूकानों पर जल रहे थे तेल के दीपक और कुप्पियाँ कहीं बेले और गुलाब के हार तथा गजरे बिकते। उनकी खुशबू महर-महर आती।

अहमद का मन बुझा-बुझा था उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगा। अचानक उसकी निगाह राह के एक किनारे बैठी औरत पर पड़ गई। वह फटा-पुराना मैला बुर्का ओढ़े थी। उसकी गोद में बच्चा था। वह दाहिना हाथ फैलाकर आवाज लगा रही थी—'है कोई अल्लाह का प्यारा ? दे खुदा की राह पर।'

अहमद उस मुफलिस औरत के पास आया। तब वह कह रही थी—जो दे उसका भला और जो न दे उसका भी भला। बच्चे के लिए कुछ देते जाओ। यह यतीम है इसका कोई नहीं।'

पहले अहमद के मन में आया कि उस दुखिया के हाथ पर कुछ पैसे रख दे, लेकिन फिर उसे रहमान की याद आ गई। हृदय तेजी से धड़कने लगा। उसमें ममता उमड़ी और वह सोचने लगा कि औलाद के लिए इंसान क्या नहीं करता। यह बदनसीब औरत उसी के लिए भीख मांग रही है।

औरत पर्दा नशीन थी। अहमद ने हमदर्दी के साथ धीरे से पूछ लिया—'तुम्हारा घर कहाँ है ?'

औरत चौंकी वह खामोश रही। उसने कुछ भी जवाब नहीं दिया।

अहमद को संकोच लगा। खिसियाहट सी मालूम हुई। वह कुछ क्षण मौन रहा फिर धीरे से बोला—'मैं बुजुर्ग हूँ। हमदर्दी के नाते तुमसे पूछ लिया। खुदा रहम करे बेटी। मैं औलाद का मारा हूँ। दर-दर भटक रहा हूँ। इसीलिए पूछ लिया बुरा मत मानना मुझे माफ कर देना। मैं···।'

अभी अहमद की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि औरत बुर्के के अन्दर से बोल उठी। उसकी जबान शिरि थी। उसने अदब के साथ लिहाज भरे स्वर में यह कहा—'खुदा हाफिज। उसी की रहमत है। वह दुनिया का मालिक है। वह इंसान की मदद करता मगर इंसान उसे समझ नहीं पाता। मैंने कुछ भी बुरा नहीं माना। शायद आप···?'

'और शायद तुम···?'

'आप उनके वालिद हैं ?'

'और तुम जोहरा हो ?'

'अब्बा हुजूर, देखिए गर्दिश ने मेरी क्या हालत कर दी ? मैं···?'

इसके बाद जोहरा अपने को रोक नहीं पाई वह सिसक-सिसक कर रोने लगी, उठकर खड़ी हुई। उसने अहमद को बतलाया कि जब रहमान नहीं लौटा उसका कुछ भी पता नहीं चला तो वह बहुत घबराई। माँ ताने देती दिन-रात कोसती। पड़ोसी भी बदनाम करते। किसी के भी सामने मुँह करने की हिम्मत नहीं होती।

अहमद ने जोहरा को तसल्ली दी। दोनों राह से एक तरफ चले गए। वहाँ बैठ कर बातें होने लगीं। जोहरा की सिसकियाँ बराबर उसका साथ दे रही थीं। वह कहती जा रही थी—'किसी तरह बदनामी का मुकाबला किया। उनका इन्तजार करती रही मगर वे नहीं आए। मैं माँ बन गई। यह मुन्ना गोद में आ गया। अब तो जीना मुश्किल हो गया। पड़ोसी तंग करने लगे अम्मी को इतना गम हुआ कि वे मौत के मुँह में चली गई मुझे अकेली छोड़ गई मैं डर गई थी घबरा गई थी और यह दहशत थी कि पड़ोसी मुझे मार डालेंगे। मुझसे मेरे बच्चे को छीन लेंगे। मैंने सहारनपुर छोड़ दिया और...।'

जोहरा हाँफ रही थी। उसने तनिक साँस ली। अहमद ने बच्चे को गोद में ले लिया था वह उसे प्यार कर रहा था।

जोहरा ने आगे बतलाया कि वह दिन भर चलती। रात को किसी सराय में ठहर जाती। उसके पास जहर खाने के लिए भी एक पैसा न था। घर की हालत पहले से ही पतली थी आमदनी का कोई भी जरिया नहीं था। बर्तन तक बिक गए। मिट्टी के बर्तनों से काम चलाती रही। पहले सोचा कि खुदकशी कर लूं बच्चे को उसकी तकदीर के सहारे छोड़ दूँ लेकिन फिर मन नहीं माना और दिल ने कहा कि तुम्हें औलाद के लिए जिन्दा रहना पड़ेगा जोहरा। यह तुम्हारा फर्ज है मैं मान गई। बात मेरी समझ में आ गई। इसीलिए अब तक जिन्दा हूँ।

अहमद दत्तचित्त होकर सुन रहा था। जोहरा के दुखिया बोल उसके कानों में पड़ते। उसे लगता कि वह मोम हो गया है। उसकी ममता बह निकली जोहरा उसकी बहू है और बच्चा उसका नाती। यह दुनिया उसी की है।

अहमद बीच-बीच में सांत्वना देता जाता और जोहरा की दास्तान जारी थी—'मैं भूख सहती रही। भीख माँगना मुनासिब न समझा। जिस सराय में ठहरती भटियारिन को बतला देती कि मैं यतीम हूँ। मुझ से खिदमत ले लो काम करवा लो। बदले में बच्चे के लिए दूध दे दो और अगर मुनासिब समझो तो रूखी-सूखी दो रोटियाँ दे, दो काम चल जाता। मैं बेफिक्र हो गई। उनकी तलाश करती रही। उन्हें बराबर खोजती रही आखिर में ऐसे दिन भी आए जब गुण्डे और मनचलों बदमाशों ने मुझे परेशान करना शुरू किया तब यह सोचा कि एक जगह टिक जाऊँ। भटकने में खतरा है। किसी दिन नुकसान उठा जाऊँगी।'

यह कह कर जोहरा ने एक दीर्घ उच्छवास ली। उसने आँसू पोंछे और फिर आसमान की ओर देखा। तभी उसके कानों में अहमद का स्वर गूँजा। वह कह रहा

था—'तुमने बहुत बड़ी गलती की है जोहरा ?'

'क्या ?'

'जब तुमने सहारनपुर छोड़ा था तो तुम्हें सीधे देहली आना चाहिए था।'

'हाँ, यह भी मन में आया था, लेकिन…।'

'लेकिन क्या ?'

'इसका सबब था।'

'क्या सबब ?'

'एक तो हाथ खाली था। देहली दूर थी। गोद में बच्चा था। आखिर मैं पैदल कितना चलती ? भूखे-प्यासे चला नहीं जाता। पैरों में छाले पड़ जाते हैं।'

'तुम घोड़ा-गाड़ी कर लेतीं। ऊँट गाड़ी पर सवार हो जातीं। जब देहली आती तो किराया मैं चुका देता। यह मेरी जिम्मेदारी थी।'

'ऐसी हिम्मत मैं नहीं कर सकती थी और दूसरी बात तो आपने सुनी ही नहीं।'

'क्या ?'

'देहली कैसे आती ?'

'क्यों ?'

'मुझे डर था कि आपके घर में भी मुझे जगह नहीं मिलेगी।'

'ऐसा क्यों सोचा तुमने ?'

'मैं बदनसीबी से बुरी तरह डर गई थी। मुझे सबसे डर लगता। मैं नाउम्मीद हो गई थी। मैंने सहारा छोड़ दिया कि अब वे आयेंगे। मुकद्दर मुझे नचा रहा था। मैं नाच रही थी। अब भी नाच रही हूँ। मेरी दुनिया आपके सामने है।'

'हाँ फिर क्या किया तुमने ?'

'मैं फिरोजाबाद आ गई थी। फिर यहाँ से जाने का नाम नहीं लिया। कुछ दिन सराय में रही। फिर वह जगह छोड़ दी। अपनी झोंपड़ी बना ली। भीख का सहारा लिया। मेरे सामने यही एक राह रह गई थी।'

मुझे बहुत सदमा है कि तुम पर ऐसी गुजरी जोहरा। सवेरे मैं तुम्हें साथ लेकर देहली के लिए रवाना हो जाऊँगा।'

'आप मुझे ले चलेंगे ?'

'हाँ ?'

'मगर वहाँ के लोग क्या कहेंगे ?'

'क्या कहेंगे ?'

'यही कि निकाह नहीं हुआ और मैं माँ बन गई।'

'इसका जवाब मैं सबको दे लूँगा। तुम बेफिक्र रहो।'

'न जाने क्यों मुझे दहशत सी लगती और…।'

'डर को मन से निकाल दो। अब तुम्हारा बाल भी बाँका नहीं हो सकता। तुम देहली चलो। तुम्हारे जाने से घर की खोई रौनक वापस लौट आएगी।'

जोहरा मौन हो गई। वह अपने साथ अहमद को झोपड़ी पर ले गई।

अहमद ने जोहरा को अपना सब हाल बतलाया। उसने कहा कि झोपड़ी अभी छोड़ दो। मेरे साथ ही सराय में चलो। मेरे साथ घोड़ा है। तुम्हें सवारी पर बैठा दूंगा। जब तुम देहली पहुँच जाओगी। तब फिर रहमान की तलाश में निकलूंगा। नौकरी छोड़ दूंगा। मैंने यह पक्का इरादा कर लिया है।

जोहरा को अहमद की बात माननी पड़ी। वह उसके साथ-साथ सराय में आई।

रात भर ससुर और बहू दोनों सोए नहीं। उनमें दुख-सुख की बातें होती रहीं। सवेरे जैसे ही सूरज निकला अहमद ने एक तेज रफ्तार वाली घोड़ा-गाड़ी पर जोहरा को बैठाया। वह घोड़े पर सवार था और उसकी मंजिल तय होने लगी।

जहाँ कहीं बस्ती आती और घोड़ा-गाड़ी बीच बाजार से गुजरती तो कोचवान उसे रोक देता। मुसाफिर पानी पीते। नीचे उतरते। नाश्ता करते।

तब अहमद भी जोहरा और बच्चे का ख्याल रखता। उसे जल्दी हो रही थी कि किसी तरह पलक मारते देहली पहुँच जाये।

जोहरा मन-ही-मन सोचती कि वह नई जगह जा रही है। न जाने तकदीर साथ दे या न दे। अगर सहारनपुर जैसी हालत वहाँ भी हुई तो मैं कहाँ जाऊँगी ? क्या करुँगी ?

अहमद बहुत खुश था कि उसे जोहरा मिल गई। उसने रास्ते में नया बुर्का खरीदा जोहरा के लिए गरारे और घुटने लिए बच्चे के लिए भी दो पोशाकें नई खरीदी। उसने जोहरा को भी जूतियाँ पहनायीं। वे गुलाबी मखमल की थीं। उन पर सुनहरे कलाबत्तू का काम हो रहा था।

जोहरा तकल्लुफ से गड़ी जा रही थी। उसकी किस्मत इतनी जल्दी बदल जाएगी। यह उसने कभी ख्वाब में भी नहीं सोचा था।

राह तय हो रही थी। अहमद प्रसन्न था। उसे लगता कि अब देहली दूर नहीं। बिल्कुल नजदीक आ गई है।

इकत्तीसवाँ

जोहरा जब देहली पहुँची तो रात हो आई थी। किले के सदर फाटक पर गजब की रोशनी हो रही थी। शहर पनाह में घुसते ही घोड़ा-गाड़ी रुक गई। अहमद ने बहू को नीचे उतारा पोते को गोद में लिया। फिर उसने एक पालकी किराए पर की और उसमें जोहरा को बैठाया।

पालकी दरवाजे पर रख दी गई। अहमद भागा-भागा अन्दर आया तब जरीना शमादान के सामने बैठी कुरान शरीफ पढ़ रही थी। उसने अपने खाविंद को देखा तो खुशी से उछल पड़ी। जल्दी उठकर खड़ी हुई और मुंह से निकल गया—'आ गए मेरे आका? बहुत खुश नजर आ रहे हो। क्या रहमान मिल गया?'

'यह फिर बताऊँगा अभी तनिक बाहर चलो?'

'बाहर?'

'हाँ बाहर?'

'वहाँ क्या है?'

'चलो तो। हाथ कंगन को आरसी क्या? अभी अपनी आँखों देख लोगी।'

'चलो?'

और जब जरीना ने बाहर आकर पर्दा पड़ी पालकी देखी तो चौंकी उसे ताज्जुब सा हुआ। वह कुछ पूछने जा रही थी तब तक अहमद बोल उठा—'तुम्हारी बहू आई है पालकी में वही है। उसे मकान में ले चलो। वह···।'

'और मेरा बेटा कहाँ है?'

'अभी बहू मिली है खुदा चाहेगा तो बेटा भी मिल जाएगा।'

'बहू कहाँ मिली? यह कौन है? शादी कब हुई थी?'

'यह जोहरा है।'

'जोहरा?'

'हाँ जोहरा।'

'मगर जोहरा के साथ रहमान का निकाह तो नहीं हुआ। वह बहू कैसे बन गई? तुम उसे क्यों लिवा लाए? लोग क्या कहेंगे मैं क्या जवाब दूंगी?'

पालकी के भीतर बैठी जोहरा सारी बातें सुन रही थी। उसने माथे पर दोनों हाथ दे मारे और अपनी तकदीर को कोसने लगी।

अहमद जरीना को कुछ जवाब दे। इससे पहले ही बच्चा रोने लगा।

तब जरीना बुरी तरह चौंक गई। वह विस्फरित नेत्रों से पति को देखती हुई व्यस्त स्वर में बोली—'यह क्या?'

'यह तुम्हारा पोता है। रहमान का बेटा।'

'क्या कहा ? बहू अपने साथ बच्चा भी लाई है ?'

'हाँ ?'

'तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया ? कहीं तुम्हें पागल कुत्ते ने तो नहीं काटा ? जब रहमान जोहरा को छोड़ गया तुम उसे कैसे ले आए ?'

अहमद को गुस्सा आ गया। वह तेज गले से बोला—'इतनी बहस कर चुकी और अब भी दलील पर दलील करती जा रही हो तुम अन्दर चलो।'

यह कहकर अहमद ने पालकी का पर्दा उठा दिया। वह जोहरा से बोला—'उतरो बहू, घर में चलो। किसी बात का बुरा मत मानना। धीरे-धीरे सब ठीक हो जाएगा।'

जोहरा के आँसू बह रहे थे। वह पालकी से उतरी। शिशु को अहमद ने गोद में ले लिया।

जरीना अंगारों पर पैर रखती हुई आँगन में आ गई। वह जानती थी कि अहमद का गुस्सा बहुत खराब है इसीलिए खामोश थी।

जोहरा आते ही जरीना के कदमों पर झुक गई। उसने उसके दोनों पैर पकड़ लिए फिर आँसुओं से धोती हुई दुखिया स्वर में बोली—'अम्मी हुजूर ! मुझे माफ कर दो अपनी खिदमत में ले लो। मैं खादिमा हूँ खादिमा। मुझे यतीम समझ कर इस घर में जगह दे दो। एक कोने में पड़ी रहूँगी और मुझे कोई भी हक नहीं चाहिए।'

जरीना पीछे हटी और कुछ भी जवाब नहीं दिया, लेकिन जोहरा ने सास के पैर नहीं छोड़े। देर तक वह रोती सिसकती रही। अन्त में जरीना को तरस आ गया। उसने बहू को उठाया और छाती से लगा लिया।

अहमद ने जरीना को बहुत समझाया। जोहरा का सब हाल बतलाया कि वह किस हालत से गुजर चुकी है।

× × ×

सवेरे खबर अमीना के पास पहुँची। नादिरा अपनी भाभी को देखने आ पहुँची। अमीना ने कोई भी खिलाफत नहीं की। उसने अहमद से कहा—'जब वक्त बिगड़ता और बुरे दिन आते हैं तो घर में मौत होती, आग लग जाती, चोरी होती, डाका पड़ता, बदनामी फैलती और दुनिया तमाशा देखती।' सब कुछ हो चुका है मेरे साथ। अब कुछ भी बाकी नहीं रहा। मैं तो यही कहूँगी कि खुदा जो करता है वह अच्छा ही। मैं तो जा नहीं सकती भेजना जोहरा को। कादिर की बहू के लिए ब्याह का जोड़ा सिलवाया था। वह उसे दूँगी।'

अहमद को तसल्ली हुई। वह मन-ही-मन डर रहा था कि जरीना की तरह अमीना भी चौंकेगी और बुरा-भला कहेगी। मगर ऐसा नहीं हुआ। वह अमीना की शराफत का कायल हो गया और उसे दुआएं देने लगा।

जावेद और नूरमहल को जब जोहरा के आने की सूचना मिली तो दम्पत्ति जरीना के घर पहुँचे। दोनों ने हँसकर जोहरा का स्वागत किया। नूरमहल ने उसके पैरों में पायजेब पहना दी और जावेद ने सोने की पहुँची दी।

जब जोहरा अपनी सगी सास के पास आई तो अमीना उठकर खड़ी हुई उसने उसके सिर पर हाथ रखकर दुआ दी। शादी का जोड़ा पहनाया। बच्चे को लेकर प्यार करने लगी। वह खुशी के आँसू बहाती हुई पूछने लगी—'रहमान तुमसे क्या कह गया था बहू ? कहीं तुम लोगों में आपस में झगड़ा तो नहीं हुआ था ?'

उत्तर में जोहरा ने नाद्योत्तक सिर हिलाया। फिर धीरे से मन्द स्वर में कहा—'उनसे झगड़ा कभी नहीं हुआ। उनसे मुझे कोई शिकायत नहीं है।'

'अच्छे खानदान की लड़की हो। नेक बीवियाँ कभी अपनी शौहर की शिकायत नहीं करतीं।'

अमीना के घर में जोहरा उस दिन रही दूसरे दिन जरीना उसे लिवा ले गई।

और फिर तीसरे दिन नूरमहल ने जोहरा को अपने मकान पर बुलाया। इस तरह जोहरा बहू मान ली गई और तीनों परिवारों में उसका कोई विरोध नहीं हुआ।

× × ×

दुनिया अच्छाई कभी नहीं देखती उसके लिए अन्धी और बहरी हो जाती है। किन्तु बुराई का चश्मा सभी की आँखों पर चढ़ा होता। कोई उँगली उठा देता कोई टोक देता। लोग चूकते नहीं अपनी आदत से मजबूर हो जाते हैं।

जोहरा को लेकर पास-पड़ौस में एक हंगामा सा मच गया। सभी कहते कि आवारा लड़की थी बदचलन थी। उसका रहमान से ताल्लुक हो गया। वह हमल से हो गई तो रहमान ने उसे छोड़ दिया। मुई ने एक लड़का पैदा कर दिया। अहमद उसे घर ले आया। तौबा-तौबा कयामत हो जाएगी। यह कैसा जमाना आ गया है।

जहाँ पर दो-चार आदमी इकट्ठे होते वहीं गुफ्तगू चलती। औरतें आपस में मिलतीं तो कानाफूसी करतीं।

पूरा समाज कह रहा था कि तीनों घर एक हैं। इनका हुक्का-पानी बन्द कर दो। बिरादरी से निकाल दो। हम मुसलमान हैं, खानदानी मुसलमान। हमारे घर में आवारा औरतें नहीं रह सकतीं। उनके लिए बाजार पड़ा है। कोठे खुले हैं। अगर अहमद ने जोहरा को घर में रखा तो उसे दूध की मक्खी की तरह बिरादरी से निकाल दिया जाएगा।

अहमद ऐसी बातें सुनता तो एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता। जरीना भी किसी की परवाह नहीं करती।

और अमीना कहती कि दुनिया को गाल बजाने दो वह नेकी नहीं देखती, बदी

के गीत गाती है ।

नूरमहल हँसती वह कहती दुनिया बेवफा है, जमाना जालीम । वह दूसरे के हाल पर हँसना तो जानता है मगर आँसू कभी नहीं बहाता और न उसे रोना ही आता है । हँसने दो बुराई करने दो । एक दिन सबके कान बन्द हो जायेंगे वह वक्त भी आएगा ।

जावेद कहता कि मेरे मुँह पर कोई कुछ कहे तो उसे मैं ईंट का जवाब पत्थर से देने के लिए तैयार हूँ । जब असलम की ऐसी हालत थी वह बुरी तरह परेशान था तब कहाँ गए थे ये लोग ? क्या तब मर गए थे या इन्हें साँप ने डस लिया था ।

जोहरा को ऐसा लगता कि वह तीनों परिवारों के लिए आकर सिर दर्द बन गई है । एक तो करेला दूसरे नीम पर चढ़ा । रहमान बदनाम था और बदनामी के साथ ही उसने देहली छोड़ी । मैं भी बदनामी लेकर आ गई । वह शोला था वह चला गया, होना यह चाहिए था कि मैं शबनम बनकर आती और दुनिया मेरा स्वागत करती, लेकिन अफसोस मैं चिनगारी बनकर आई । चिनगारी शोला बनेगी फिर शोला भड़केगा । आग लग जाएगी । यह सारा जहान जल जाएगा ।

बदनामी के बोल सुनते-सुनते जोहरा के कान पक गए थे । वह कभी-कभी सोचने लगती कि बच्चा महफूज जगह पर आ गया है । उसकी परवरिश हो जाएगी । उसे यहाँ छोड़ दूं और मैं कहीं चली जाऊँ । यही ठीक रहेगा और एक दिन यही करना पड़ेगा ।

इस तरह जोहरा अक्सर परेशान हो जाती । वह न जाने क्या-क्या सोच डालती उसका मस्तिष्क उलझ जाता ।

बत्तीसवाँ

अहमद बुरी तरह परेशान हो गया । वह लोगों की बातें सुन लेता । उन्हें कुछ भी जबाब नहीं देता, उसका सिद्धान्त था कि एक चुप सौ बलाये टालती है । गोधूल वेला थी । वह मगरिफ की तरफ जा रहा था । नमाज पढ़ने की जल्दी थी । सहसा वह रुक गया । उसने देखा कि आगे-आगे दो बुजुंग जा रहे हैं । उनमें परस्पर वार्ता चल रही थी । एक ने कहा—'अरे मियाँ ! यह बिल्कुल नामुमकिन है कि जोहरा अहमद के घर में बहू बनकर रहे । हम लोग ऐसा नहीं होने देंगे । इसका असर हमारी बहू-बेटियों पर गलत पड़ेगा ।'

अहमद ठिठक गया । वह दबे पाँव धीरे-धीरे चलने लगा । उसने सुना दूसरा

बूढ़ा कह रहा था—'आज जुमेरात है। पहले तो यह सोचा गया था कि मामला काजी को सौंपा जाएगा, लेकिन फिर इरादा बदल दिया गया। सबकी यही सलाह हुई कि कल जुमाँ हैं। दोपहर को पंचायत बैठेगी उसमें अहमद, जावेद और अमीना को बुलाया जायेगा। कल फैसला हो जाएगा।'

अहमद ने यह सुना तो उसके कान खड़े हो गये। फिर वह मजिस्द की ओर नहीं गया, घर आया और जरीना को सब हाल बतलाया।

दम्पति अमीना के घर गये। वहीं जावेद और नूरमहल को बुलवाया।

देर तक सबमें परामर्श होता रहा। निश्चय किया गया कि पंचायत को जवाब दे लिया जायेगा। अगर बिरादरी हमें छोड़ती है तो हम खुशी-खुशी उसे छोड़ देंगे। ऐसा भाईचारा, ऐसा पड़ोस हमें नहीं चाहिए। जिसका दिल पत्थर का हो। आँखों में मुलाहिजा न हो।

जोहरा ने यह सुना तो उसके पैरों के नीचे से जमीन निकल गयी। वह गुप्त भय की आशंका से मन ही मन कांप उठी। उसे लगा कि आसमान फट जायेगा। वह टूट कर उस पर गिरेगा वह खुद भी दबेगी और अपने साथ सबको ले डालेगी। दुनिया कहती है कि बदकिस्मत इन्सान जहाँ भी जाता वहाँ वह दूसरे के नसीब को भी बट्टा लगा देता है। सारे झगड़ों की जड़ मैं हूँ और मेरा यहाँ से चला जाना ही ठीक है।

'मगर एक बात है।'

जब दिल ने यह कहा तो जोहरा चौंकी। उसने चुपके से पूछ लिया—'क्या ?'

'तुम बच्चे को छोड़ जाओगी लेकिन यह तुम्हारी भूल है।'

'क्यों ?'

'जैसी बदनामी तुम्हारी वैसी लड़के की भी हैं। वे लोग उसे नाजायज औलाद कहते। उससे नफरत करते हैं।'

'तो फिर क्या करूँ ?'

'अगर तुम्हें जाना है तो मुन्ने को भी साथ ले जाओ।'

'नहीं। यह मुझसे नहीं होगा।'

जोहरा ने दोनों कानों पर हाथ रख लिए। वह सुबक-सुबक कर रोने लगी।'

कुछ भी निश्चय नहीं कर पाई जोहरा। वह रात बीत गई।

× × ×

दोपहर को अमीना के दरवाजे पर भीड़ लग गई। चबूतरे पर लोगों ने लाकर सफेद जाजन बिछा दी। उस पर पंच बैठे। उनमें सभी बुजुर्ग थे। बच्चे तमाशाई बने खड़े थे। जवान कुछ बैठे और कुछ खड़े थे। बूढ़ी औरतें एक तरफ बैठी थीं। अहमद और जावेद को बुलाया गया। दोनों बाहर आ गये इसके बाद जब

अमीना का सवाल उठा तो अहमद ने साफ कह दिया कि वह पर्दानसीन औरत है। पंचायत में नहीं आयेगी। उसकी तरफ से जवाब मैं दूंगा।

और जोहरा के लिए भी जावेद ने यही कहा कि वह हमारी बहू है। हम उसे पंचायत में नहीं ला सकते यह कायदे के खिलाफ है।

देर तक लोग अपने-अपने गाल बजाते रहे। किसी के पास रियायत नहीं थी। अहमद सुन रहा था जावेद के भी कान खड़े थे। आखिर में जब फैसला हो गया कि तीनों परिवारों को बिरादरी से बाहर निकाल दिया गया। तब अहमद उठ कर खड़ा हुआ। उसका स्वर गम्भीर था। उसे तनिक भी क्रोध नहीं था। उसने पंचों को सम्बोधित करते हुए कहा—'मुझे पंचायत का फैसला मंजूर है। आप लोगों ने मेरा हुक्का-पानी बन्द कर दिया। यह बहुत अच्छा किया।'

जावेद भी खड़ा हो चुका था। वह अपनी बात कह रह था—'हमें इन्सान प्यारा है। बिरादरी नहीं। हम जोहरा को नहीं छोड़ सकते। बिरादरी छोड़ देंगे। यह कबूल है।'

पंचायत उठ गयी। उसकी चर्चा कई दिनों तक बस्ती में चलती रही। जो सुनता वही कहता कि अमीना बहुत गिर गई जवान बेटा खो दिया। शौहर से भी हाथ धोये और अब तक फाहिशा को बहू बना लिया। उससे ऐसी उम्मीद नहीं थी। वह एक नेक औरत थी।

जोहरा कुछ दिन जरीना के पास रही। फिर अहमद ने कह दिया कि यह अमीना के पास रहे उसकी देख-भाल करें। उसे सहारे की जरूरत है। कभी-कभी यहाँ भी आती रहे। दोनों उसी के घर हैं।

यों तो अमीना की खिदमत में नादिरा रहती थी। मगर अब जोहरा पहुँच गई। वह तन-मन से उसकी सेवा करने लगी।

जोहरा के आ जाने से नादिरा को थोड़ी छूट मिली। वह नूरमहल के घर में अधिकांश रहने लगी। शरीफ वहीं रहता। वह अमीना के घर कभी-कभी जाता था।

जोहरा सबकी प्यारी थी। नूरमहल उसे बुलाती। सिर आँखों पर लेती। वह उसे ढाढ़स बँधाती, तसल्ली देती। उसका कहना था कि हिम्मत से काम लो बहू। हर मुश्किल आसान हो जाती है। इन्सान को तसल्ली रखनी चाहिए। जरीना का भी प्यार जोहरा के प्रति कम नहीं था। वह उसकी बलाएँ लेती। लम्बी उम्र की दुआ देती।

और अमीना ने बच्चे का नाम रख दिया। वह उसे सलीम कहती। गोद में लेकर मुँह चूमती। उसकी शक्ल बिल्कुल रहमान जैसी थी। यही कारण था कि अमीना उसे अपने जिगर का टुकड़ा समझती।

तैंतीसवाँ

रहमान ने जब अपने साथियों को छोड़ा तो फिर वह वहाँ रुका नहीं। उसने पंजाब की राह ली। कुछ दिन बाद वह लाहौर पहुँच गया। वहाँ किराये का मकान लिया और फिर अनार कली बाजार में सोने-चाँदी के जेवरों की दुकान की। अपना नाम गफ़ूर रक्खा।

इस तरह रहमान अब गफ़ूर बनकर अपनी जिन्दगी के दिन गुजार रहा था। वह जोहरा को भूल गया। उसे ख्वाब में भी याद नहीं करता। हाँ देहली की याद उसे बार-बार आती। तब मन कहता कि अभी नहीं। कुछ दिन और बीतने दो। खूब दौलत कमा लूं। फिर अपने दौलत खाने पर जाऊंगा।

अब गफ़ूर सोचता कि उसकी बाजार में इज्जत है। उसे हर शरीफ आदमी अपनी लड़की देने के लिए तैयार हो जाएगा। उसे चाहिए कि जल्दी से जल्दी शादी कर ले घर बसाना जरूरी है।

मगर रहमान ऐसा सोच कर ही रह जाता। उसे संकोच लगता। वह किसी से कुछ भी कह नहीं पाता। हां अलबत्ता जब कभी किसी के आगे जिक्र चलता तो धीरे से कह देता कि वह शादीशुदा नहीं है।

रहमान की तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी थी। देखने में वह हट्टा-कट्टा जवान लगता। उसका चेहरा एकदम सुर्ख था उस पर रुआब था। दाढ़ी बाँकी, मूँछे सुरमई। लिबास अपने ढंग का निराला होता। लोग उसे देखते तो दूर से ही सलाम करते।

रहमान की दुकानदारी चल निकली थी। अकेला था वह। खर्चा सीमित था। दूकान पर केवल एक नौकर था। जिसे महीने में पांच रुपये वेतन देता। खाना बनाता नहीं। बाजार में खाता। खर्च कम था और आमदनी अधिक। इसीलिए बचत होती। उसे लग रहा था कि वह जल्दी ही मालामाल हो जायेगा।

यह वह समय था। जब चाँदी और सोना बहुत सस्ता था। गरीब तो आज की तरह ही गरीब थे। औसत दर्जे के लोग सोने-चाँदी के गहने खूब पहनते।

और अमीर जो ऊँचे तबके के थे। वे सोने चाँदी के बर्तनों में खाना खाते। उनके आभूषण हीरे-जवाहरातों के होते।

सब कुछ सस्ता था। पर आदमी के पास पैसा न था। रहमान अपने खर्चे में कोई भी कमी नहीं करता। उसे बरक्कत नजर आ रही थी। जब रुपया ज्यादा हो जाता तो वह उसे घर में जमीन खोदकर गाड़ देता। सोने की मोहरें भी उसके पास पर्याप्त मात्रा में हो गई थीं वह पूर्णतयः निश्चित था। उसे यकीन हो गया कि दौलत ही इन्सान की जिन्दगी है। उसके बगैर वह कुछ भी नहीं कर सकता। मैं रईस बन गया। मेरी किस्मत बदल गई।

रहमान को लोग गफूर कह कर पुकारते, उसकी दुकान पर बाहर के सौदागर भी आते, वह जेवर बेचता। ग्राहकों को बनवा कर भी देता। पुराना सोना-चादी खरीदता, कसौटी हमेशा अपने पास रखता। उसे अच्छी परख हो गई थी, वह कुशल दुकानदार था। सोना ऐसा तौलता कि लोग दंग रह जाते, क्या मजाल कि एक रत्ती का भी फर्क पड़ जाय।

चाँदी हाथ में लेते ही बतला देता कि इसमें कितना बट्टा है सोने का रवा उसका पाटला और चाँदी की थकिया का वह जो भाव बतला देता पूरा बाजार घूम आवे फिर उससे अधिक दाम नहीं मिल सकते।

एक बात और थी रहमान न तो किसी को उधार देता और न किसी से लेता, उसका हिसाब बिल्कुल साफ रहता लोग इससे बेहद खुश थे।

इसके अलावा सभी दुकानदार जानते थे कि जो गहना किसी की दुकान पर नहीं मिलेगा। वह गफूर के यहाँ जरूर होगा। उसकी दुकान पर पर्दा नसीन औरतें आती, मनचाहे जेवर खरीद ले जाती उसका कहना होता कि अगर माल में तनिक भी शिकायत हो तो घर से वापस ले आओ अपने पैसे ले जाओ। वह डंडे की चोट पर रोजगार करता। उसकी पूँजी दिन-दूनी रात चौगुनी बढ़ रही थी उसे संतोष था।

रहमान के जीवन में केवल एक ही अभाव था जो उसे दिन रात खटकता। वह ब्याह करने का इच्छुक था और उसकी कहीं भी चर्चा नहीं चलती।

जो माली नित्य साँझ को गफूर को हार और गजरे देने आता, उससे एक दिन बात चली, उसने कहा कि शादी में कितनी देर लगती है। बात कहते हो जायेगी। मैं लोगों से जिक्र करूँगा और आपका रिश्ता अच्छा ही करवाऊँगा।

ऐसे ही एक पड़ोसी से बातचीत के सिलसिले में शादी की चर्चा चल पड़ी। उसने सब्ज बाग दिखलाये, उसके शब्द थे कि अच्छे खानदान में आपकी शादी होगी, नेक लड़की घर आयेगी। आपने तकल्लुफ किया पहले नहीं बतलाया, नहीं तो अब तक शादी हो जाती और आप एक बच्चे के बाप होते।

रहमान को आशा बंधी। वह उस दिन की प्रतीक्षा करने लगा कि जब नौशा बनेगा। घोड़ी पर बैठेगा, उसके सिर पर फूलों का सेहरा होगा, बारात उठेगी, शहनाई बजेगी।

अब रहमान अक्सर लोगों से शादी की बात चला देता, वह सबसे कहता कि अकेली जिन्दगी का कोई मतलब नहीं, इतनी दौलत है और इसका खर्च करने वाला कोई नहीं।

रात को रहमान रंगीन ख्वाब देखता। उसी दुनिया में खोया रहता। वह अपने को किसी भी शहजादे से कम नहीं समझता उसके सपनों का जो महल बनता उसमें हरम होता, उसकी बेगम रेशमी जरी के काम के कपड़े पहनती। उसके गले

में सोने का गुलबन्द होता सिर पर सोने का झूमर, माथे पर बेंदी, बाहों में बाजूबंद होते, हाथों में कंगन, सोने के हथफूल और आरसी ।

पैरों में पायल होती जिनके घूंघरू छम-छम बजते, वह इतनी खूबसूरत होती कि उसके आगे चांद भी लजाता ।

सवेरे रहमान सपने की याद करता, तो पहले उसे हंसी आती फिर उदास हो जाता । उसके मुँह से दीर्घ उच्छवास निकल पड़ती और अन्तःकरण कहने लगता कि देर हो रही है । न जाने शादी कब होगी ?

इस तरह दिन आगे बढ़ रहे थे । सवेरा साँझ में बदलता, रोज रात आती । सप्ताह जल्दी ही पूरा हो जाता और फिर वह महीने का रूप ले लेता ।

और रहमान सोचा करता कि इस महीने अगर नहीं तो अगले माह उसकी शादी जरूर हो जायेगी ।

चौंतीसवाँ

भगवान् जब खुशियाँ देता है तो छप्पर फाड़ कर । आदमी बीते दिन भूल जाता है । वह वर्तमान समय के प्रवाह में बहने लगता । उसे यह भी बोध नहीं रहता कि कल आने वाला दिन उस के अनुकूल होगा अथवा प्रतिकूल ।

रहमान के जीवन में बसन्त छा रहा था । वह जिधर भी आँखें उठाता उसे चमन गुलजार ही नजर आता । उस के मन की कोयल मीठे बोल बोलती । वह रंगीन दुनिबा में खो जाता । उसे लगता कि मौसम सदा बहार है । उस की जिंदगी मुस्करा रही है और हमेशा मुस्कराती ही रहेगी ।

एक रात रहमान अपने घर में जब गहरी नींद में सो रहा था । तभी मकान में चोर आये । वे चुपके से दीवाल फाँद कर घुसे थे । रहमान बेखबर सोता रहा । उसे तनिक भी आहट नहीं मिली ।

जिस कमरे में रहमान सोया था । उसमें पीछे एक कोठरी थी । उसी कोठरी में उस ने सोने और चाँदी के सिक्के जमीन में गाड़ रखे थे । चोर पड़ौस के ही थे । वे इस भेद को भली-भाँति जानते थे । उन्होंने बड़ी सावधानी से काम लिया । तनिक भी आवाज नहीं होने दी । सारे रुपये खोद लिए । सोने की मोहरें भी बाँधी । फिर बाहर का प्रवेश-द्वार खोल कर चले गए ।

सवेरे रहमान जब सो कर उठा तो दिन काफी चढ़ आया था । उस ने एक अँगड़ाई ली फिर खुदा की इबादत करने लगा तभी अचानक निगाह सामने दरवाजे

पर गयी । किवाड़ खुले थे । उन में दराज हो रही थी । वह चौंका उसका माथा ठनका । समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर किवाड़ खुले कैसे रह गये ?

पहले तो रहमान ने यह सोच कर तसल्ली कर ली कि रात को जब वह घर आया तो वह नशे में था । हो सकता है कि कुण्डी लगाना भूल गया हो ।

लेकिन तब तक निगाह पीछे घूमी । उसने देखा कि कोठरी के किवाड़ भी खुले हैं । अब तो उस के ताज्जुब का ठिकाना नहीं रहा उसने जल्दी से बिस्तर छोड़ा और कोठरी में गया ।

कोठरी की जमीन खुदी पड़ी थो । सोने-चाँदी के दस-पाँच सिक्के इधर-उधर बिखरे थे । रहमान को गश आ गया । वह घबरा कर वहीं पर गिर पड़ा । देर बाद जब होश आया तो हाथ मलने लगा ।

उस दिन रहमान दुकान नहीं गया । घर पर ही रहा । पड़ौसियों ने जब सुना तो वे दौड़े आए और हमदर्दी करने लगे । मामला काजी के यहाँ पहुँचा दिया गया । उसने आश्वासन दिया कि चोरों की तलाश की जाएगी ।

रहमान को गहरा धक्का लगा था । वह सदमें में डूब गया । उसके चेहरे पर मुर्दनी-सी छा गयी । उसने अपने को बहुत समझाया, लेकिन किसी तरह भी तसल्ली नहीं हो रही थी ।

रहमान के अन्तःकरण ने कहा कि जैसा पैसा आया था वैसे ही चला गया । इसमें उसके मुक्कदर की कोई खराबी नही । लोग सच कहते हैं कि मेहनत और ईमानदारी की कमाई कभी नहीं जाती उसमें बरक्कत होती है मगर बेईमानी कभी फ़लती नहीं । उसमें हमेशा धोखा होता है ।

बाजार में भी लोगों ने सहानुभूति दिखलायी । सभी हमदर्द नजर आते । सभी के पास हमदर्दी थी । कोई कहता कि गमगीन मत हो गफ़ूर । पैसा आदमी के हाथ का मैल है । तुमने कमाया था और कमा लोगे अभी जिन्दगी बहुत पड़ी है ।

किसी का यह सुझाव था कि वह घर छोड़ दो दूसरा किराये पर ले लो । या खुदा की दी हुई तुम्हारे पास दौलत तो है ही । कोई घर खरीद लो । एक नौकर रख लो । वह चौकसी रखेगा । उसकी जिम्मेदारी होगी ।

रहमान सबकी बातें सुनता परन्तु अच्छा नहीं लगता । वह कलेजा थाम कर रह गया था । उसका बहुत बड़ा नुकसान हो गया । कई दिन तक उसे रात में नींद नहीं आयी । दिन में भी ऊब-ऊब कर साँसें लेता । ऐसा लगता कि उड़ने वाले पंछी के किसी ने पंख काट दिए हो ।

× × ×

आफत जब एक ओर से आती तो मनुष्य सोच भी नहीं पाता कि वह दूसरी तरफ से भी आ जाएगी । परेशानी चारों ओर से आती । रहमान अभी यही सोच रहा था कि जो नुकसान हो गया है । उसे किस तरह पूरा करेगा । तब एक रात में

उसकी दुकान के ताले टूट गये। सारा माल चोरी हो गया। वह बेहोश होकर गिर पड़ा। लोग उसे सम्भाल कर किसी तरह घर लाए। वह दो दिन तक बेहोश ही पड़ा रहा। उसे होश नहीं आया।

अब रहमान न घर का रहा और न घाट का। वह बिल्कुल खाली हाथ था। उसे शर्म-सी लगती। उसका सारा हौसला ठंडा हो गया। एक दिन उसने लाहौर छोड़ दिया और देहली की ओर चल दिया।

रहमान के पास चन्द रुपये थे। वे कब तक चलते। उसने पैदल यात्रा आरम्भ की और फिर निरन्तर चलता ही रहा। उसने सोच लिया था कि सीधा अहमद के पास जाएगा। उससे माफी माँग लेगा। जरीना खुश हो जाएगी। वह उसे छाती से लगा लेगी। उसकी माँ अमीना खुशी से फूली नहीं समाएगी। वह बाप से मिलेगा। बहन को देखेगा। आखिर में जब इन्सान हार जाता और उसे कोई राह नजर नहीं आती तो अपना ही घर सूझता है। इसीलिए तो कहा जाता है कि सुबह का भूला अगर शाम को घर आ जाए तो वह भूला नहीं कहा जाता। अपने घर जाने में कोई शर्म नहीं। उसे जाना चाहिए।

रहमान दिन भर भूखा रहता। रात को जिस सराय में ठहरता। वहाँ खाना खाता। थोड़े पैसों में ही पेट भर लेता। अब वह शोरूवा और कलेजी नहीं खाता। रोटी-दाल से काम चला लेता।

चलता रहा रहमान जब बहुत थक जाता तो एक दिन सराय में टिक कर आराम कर लेता। उसके पैरों में छाले पड़ गए। सूरत-शक्ल बदल गयी। चेहरे पर हवाइयाँ उड़ती। दाढ़ी बढ़ आयी थी। देखने में लगता कि वह आदमी जरूरत से ज्यादा परेशान है।

अब देहली थोड़ी दूर रह गयी थी। रहमान की थकावट इतनी बढ़ गयी कि उससे बिल्कुल चला नहीं जाता वह दुखी था और दुखी मनुष्य के पैर सीधे नहीं पड़ते यही कारण था कि वह आगे बढ़ता और कदम पीछे लौटते।

पैंतीसवाँ

रहमान जब देहली आया तो उसका इरादा बदल गया। उसकी हिम्मत ने साथ नहीं दिया जो वह अहमद के घर जाता। दिल धड़कने लगा, पैर काँपे। वह जानता था कि जरूरत से ज्यादा बदनाम है। उसकी घर में कोई इज्जत नहीं होगी। उल्टा धिक्कारा जायेगा। उसकी थू-थू होगी।

अब रहमान सोच रहा था कि उसने दिल्ली आकर बहुत बड़ी भूल की। उसे यहाँ नहीं आना चाहिए था। अमीना के घर जाना भी उसके लिए मुमकिन नहीं था। दहशत लगती कि वहाँ भी उसका बुरा हाल होगा। उसकी कोई नहीं सुनेगा, कोई नहीं मानेगा। सब अपनी-अपनी कहेंगे। नतीजा यह होगा कि वह शर्मिन्दा हो जायेगा और एक बार फिर सबसे मुंह मोड़ लेगा।

जावेद और नूरमहल का जब ख्याल आया तो रहमान सोचकर रह गया। उसका साहस नहीं हुआ कि वह उस घर में जाता। कदम डगमगाये। हिम्मत पस्त होने लगी। रहमान को लगा कि वह मुलजिम है और अपने आप ही आकर जाल में फँस गया है। वह निकल नहीं पायेगा, पकड़ लिया जायेगा। उसे सजा मिलेगी। वह कुसूरवार है।

दो दिन तक रहमान देहली में रहा। वह कुछ भी निश्चय नहीं कर पा रहा था कि उसे क्या करना चाहिये। वह बस्ती से दूर बीराने में इधर-उधर भटकता रहा। डर था कि कहीं कोई देख न ले, पहचान न ले। नहीं तो आफत हो जायेगी। उसे सबके सामने जाना पड़ेगा।

रात अंधेरी थी आसमान में तारे निकल आये थे। कल-कल निनाद करती हुई जमुना बह रही थी। लहरें हिलोरें लेती। तारे जल में अपनी परछाई देखते। हवा भी चल रही थी मन्द गति से। रहमान पानी में पैर लटकाये बैठा न जाने क्या सोच रहा था। कभी विचार आता कि इस बार दक्खिन की तरफ जाये वहाँ वह सबके लिये अनजान होगा। कोई भी उसे पहचान नहीं सकता।

कभी रहमान के मन में आता कि देहली में ही रहे और जब उसके हाथ में पैसा आ जाये तभी यहाँ से चले। खाली हाथ सफर करना मुसीबत से लड़ना है। यह योजना रहमान के मन में बैठ गई। वह अपने प्रति अडिग हो गया। सवाल इस बात का था कि आखिर पैसा कहाँ से आयेगा और किस तरह मिलेगा?

'चोरी ?'

'नहीं। अब मैं चोरी नहीं करूँगा।'

'तो फिर सीनाजोरी।'

'अब मुझसे वह भी नहीं हो सकती।'

'तिकड़म ?'

'तिकड़म से भी मैं दूर भागता हूँ।'

'तो फिर और क्या करोगे ?'

'मेहनत।'

'मेहनत तुमसे नहीं हो सकती।'

'क्यों ?'

'तुम काम चोर हो। तुम ईमान से नहीं, बेईमानी से चलते हो। जो करते

आये हो वही करोगे आदमी अपनी आदत से मजबूर हो जाता है।'

रहमान को अन्त:करण की बातें बिल्कुल अच्छी नहीं लगी। वह दरिया के किनारे से उठा और बस्ती की ओर चल दिया।

तब रजनी का दूसरा पहर आधे से अधिक बीत चुका था। कुत्ते भौंकते, गश्त जारी थी। सिपाही सीटियाँ बजाते और आवाज लगाते—'जागते रहो। जागते रहो।'

रहमान ने अन्धेरे में नगर रक्षकों को जब अपनी ओर आते देखा तो वह जल्दी से एक गली में मुड़ गया। कुत्तों ने उसे देखा तो जोर-जोर से भौंकने लगे।

रहमान के माथे पर पसीना आ गया। उसके नथुने जोर-जोर से चल रहे थे। सारे का सारा बदन पत्ते की तरह थर-थर काँपता। उसे लगा कि वह चोर समझकर पकड़ लिया जायेगा। उसकी बदनामी की जो जंजीर चारों तरफ फैल रही है उसमें एक कड़ी और जुड़ जायेगी।

सीटियाँ शोर मचा रही थीं। जागते रहो की आवाजें बुलन्द थीं। कुत्ते कान फोड़ रहे थे। वातावरण भयानक सा लगा। चारों ओर आतंक ही आतंक था। रहमान का दिल तेजी से धड़क रहा था। वह एक गली से दूसरी में मुड़ा और फिर तीसरी में।

इस तरह रहमान लुकता-छिपता अपनी जान बचा रहा था। भय का भूत उसके सिर पर सवार था आखिर वह एक मकान की छत पर पेड़ के सहारे चढ़ गया वहीं छिपकर बैठ गया और यह प्रतीक्षा करने लगा कि जब गश्त के सिपाही जायें तब वह नीचे उतरेगा।

× × ×

जब से जोहरा आई नादिरा की जिम्मेदारी करीब-करीब खत्म हो गई थी। वह माँ अमीना के पास दिन में कई बार आती जरूर, लेकिन रात को रहती नहीं नूरमहल के घर चली जाती।

जोहरा सास की सेवा करती। उसे हाथ में पानी देती। उसका मन बहलाये रहती। उसका प्रयत्न हमेशा यही रहता कि अमीना गमगीन न रहे। वह हँसती-मुस्कराती रहे।

जोहरा आग्रह करके अमीना को खाना खिलाती। उसे दूध देती। दाल में घी डालती। उसके बदन पर तेल की मालिश करती और रात को जब सोने चलती तो उससे पहले देर तक पैर दबाती। वह उसके कपड़े रोज धोती। बालों पर कंघी भी करती। सास के आगे सलीम का ख्याल नहीं करती। वह रोया करता और जोहरा सास की खिदमत में लगी रहती।

यही नहीं जोहरा समय निकाल कर जरीना के घर भी जाती। वह उसे भी शिकायत का मौका नहीं देती। उसने सेवा भाव से उसका मन जीत लिया था।

यही कारण था कि अहमद को भी अपनी बहू से कोई गिला नहीं था।

नूरमहल के घर जब जोहरा जाती तो जाते ही काम में जुट जाती। मना करने पर भी नहीं मानती। उसकी खूब तारीफ होती। हालाँकि जाति-बिरादरी से इन तीनों परिवारों को अलग कर दिया गया था, लेकिन फिर भी जोहरा की प्रशंसा होती। लोग कहते कि चाल-चलन चाहे जैसा हो, लेकिन लड़की नेक है। उसका सिर हमेशा झुका ही रहता कभी ऊपर नहीं उठता।

जोहरा जब अमीना के पैर दाब चुकी तो उठकर शमादान के पास गई उसे बुझा दिया। उसका बिस्तर भी सास के पास ही बिछा था। सलीम गहरी नींद में सो रहा था। वह भी उसके पास जाकर लेट रही। कुछ देर जागती रही फिर नींद आ गई। वह दूसरी दुनिया में पहुँच गई। वह स्वप्न देखने लगी कि रहमान आया है और घर में खूब खुशियाँ मनाई जा रही हैं।

अमीना को थोड़ी देर नींद आती फिर वह उठकर बैठ जाती। देर तक बैठी रहती। लेटती तो करवटें बदलती। झपकी लगती फिर जागती। यही गतिविधि उसकी सारी रात रहती।

आधी रात से अधिक हो चुकी थी। अमीना की आँखें खुली उसने करवट बदली। तभी उसे सहसा कुछ आहट सी लगी जिससे चौंक गई।

अमीना उठकर बैठ गई। उसके कान खड़े थे। ऐसा लग रहा था कि कोई कोठरी के अन्दर है और वह जमीन खोद रहा है।

अमीना के रोये खड़े हो गये। हृदय की धड़कन तीव्र हो गई। अंधेरे में उसने बगल में टटोल कर देखा जोहरा और सलीम दोनों सो रहे थे।

अमीना ने जोहरा को जगाया नहीं वह देर तक बैठी आहट लेती रही।

अब खोदना बन्द हो चुका था। सन्दूक खुला उसकी आवाज हुई। कोठरी में घुप्प अंधेरा था। कुछ भी दिखलाई नहीं देता। अमीना हिम्मत करके उठी। वह असलम के कमरे में गई। वहाँ से खूँटी पर टंगी उसकी तलवार उतार लाई वह उसने म्यान से बाहर निकाली और दबे पाँव कोठरी की ओर चल दी।

अमीना ने मुँह से एक शब्द भी नहीं निकाला और न रोशनी की। वह बाँये हाथ से चोर को टटोल रही थी। उसके दाहिने हाथ में तलवार थी।

अचानक अमीना का हाथ चोर के सीने पर पहुँच गया। फिर उसने तनिक भी देर नहीं की। पूरी ताकत के साथ तलवार उसके सीने के अन्दर कर दी। चोर जोर से चीखा और फड़फड़ा कर जमीन पर गिर पड़ा।

अमीना ने तलवार नहीं निकाली उसने जल्दी से बाहर आ कोठरी के किवाड़े बन्द कर दिये।

जोहरा हड़बड़ा कर उठी। चोर अब भी चीख रहा था। वह बुरी तरह घबरा गई। उसने गला फाड़कर पुकारा—'अम्मी। अम्मीजान कोई…।'

अमीना बहू के पास आ गई और उसके सिर पर हाथ रखती हुई व्यस्त स्वर में कहने लगी—'चोर आया था वह कोठरी में घुसा चोरी कर रहा था। मैंने उसकी छाती में तलवार आर-पार कर दी। वहीं तड़प रहा है। किवाड़ों की कुण्डी बाहर से बन्द कर दी अब कोई खतरा नहीं है। जल्दी से शमादान जलाओ मैं शोर मचाती हूँ जब पड़ौसी इकट्ठे हो जायेंगे तभी कोठरी के किवाड़ खोलूँगी।'

जोहरा सन्नाटे में आ गई। किसी तरह जल्दी-जल्दी उसने शमादान जलाया। रोशनी हुई सलीम जाग गया वह रोने लगा। जोहरा ने उसे गोद में ले लिया और चुप कराने लगी।

अन्दर कोठरी में चोर बुरी तरह कराह रहा था। उसकी चीख सुनकर दया लगती।

और आँगन में खड़ी अमीना दोनों हाथ फैला जोर-जोर से चिल्ला रही थी—'दौड़ो बचाओ चोर-चोर चोर।'

बात की बात में अमीना का चिल्लाना सुनकर पड़ौसी दौड़ पड़े। किवाड़ खुले आँगन लोगों से भर गया। शमादान की रोशनी हो रही थी। कोठरी के किवाड़ खोले गये। सबने देखा तो उनके आश्चर्य का पारावार न रहा। चोर कोई और नहीं अमीना का बेटा रहमान था।

जोहरा बुक फाड़कर रो पड़ी और रोते-रोते अमीना से बोली—'अम्मी यह क्या किया तुमने? अपनी ही औलाद को मार डाला। देखो, पहचानो यह कौन है?'

'अमीना ने रहमान को देखा तो उसे मोह नहीं लगा। उसको आँसू नहीं आये। उसने दिल पत्थर का कर लिया। व्यंग पूर्वक मुस्कराई और फिर गम्भीर स्वर में कहने लगी—'यह चोर है रहमान नहीं। रहमान तो उसी दिन मर गया था जब उसने देहली छोड़ी। मर जाने दो इसे हमारा खानदान पाक हो जायेगा।'

जोहरा जार-बेजार होकर रो रही थी। अमीना शान्त खड़ी थी। उसकी परिस्थिति से लग रहा था कि कुछ भी नहीं हुआ। कोई भी घटना नहीं घटित हुई।

लोगों में चखचख मच रही थी। अहमद भाग आया। जावेद को भी आते देर नहीं लगी। रहमान बुरी तरह चिल्ला रहा था। वह खून से लथपथ था कोठरी की जमीन रक्त स्नान कर रही थी। जो देखता उसे चक्कर सा आने लगता।

आखिर अहमद का मन नहीं माना। उसने रहमान के सीने से तलवार बाहर खींच ली। जरीना ने जल्दी से उसे पानी पिलाया और फिर उसका सिर अपने घुटने पर रखकर बैठ गई। वह रो रही थी और आँसू बहाती हुई कह रही थी—'यह तुमने क्या किया रहमान? तुम अपने ही घर में चोरी करने आये थे?'

रहमान का स्वर क्षीण हो रहा था। शरीर से खून बहुत ज्यादा निकल

गया था। फिर भी हिम्मत करके वह धीरे से जरीना से बोला—'मुझे माफ कर दो अम्मी हुजूर। मैं तुम्हारा नालायक बेटा हूँ। तुम्हें कभी भी आराम नहीं दिया। मुझे मर जाने दो। मेरे गुनाहों की यही सजा है।'

जरीना रो रही थी। जोहरा का भी हाल बुरा था। वह पति के पास बैठ गई और उसके जख्म पर अपना दुपट्टा रख दिया।

रो रही थी नूरमहल भी। चखचख का बाजार गर्म था।

अमीना प्रस्तर प्रतिमा की भाँति खड़ी थी। उसके चेहरे पर तनिक भी मलाल नहीं था।

और जावेद ने जब रहमान को आश्वासन दिया। उससे प्यार से पूछा तो रहमान ने संक्षेप में अपनी सारी कहानी सुनाई कि वह किन परिस्थितियों से गुजरा ? कैसे देहली आया।

सभी सुन रहे थे सभी की आँखें गीली थीं। ऐसी अनहोनी घटना कभी नहीं घटी। माँ ने बेटे का कत्ल कर दिया। सभी लोग ताज्जुब कर रहे थे।

रहमान ने जोहरा को देखा तो उसकी ओर मुखातिब हुआ। उसके मुँह से निकला—'जोहरा तुम यहाँ ?'

'हाँ मेरे आका।'

जोहरा यह कहने के साथ जोर से सिसक पड़ी।

रहमान को थकावट सी महसूस हो रही थी। उसने धीरे से साँस ली और फिर जोहरा से कहने लगा—'यह खुदा ने बहुत अच्छा किया जो तुम यहाँ आ गई। मुझे माफ कर दो। मैंने तुम्हें धोखा दिया परेशान किया।'

रहमान बुरी तरह थक चुका था। उसकी साँसे अन्तिम प्रणाम कर रही थीं। साहस थक गया पलक मूंद गयी। साँसो ने भी अपनी गति अवरोध कर दी। बदन काँपा एक थिरकन सी हुई फिर रहमान की गर्दन दाहिनी ओर को झूल गई। दीपक बुझ गया। उपस्थित लोगों के आँसू धार बनकर बहने लगे।

× × ×

और माँ अमीना वैसी ही निश्चल खड़ी थी पत्थर की देवी की तरह देर बाद वह जोर से हँसी और अपनी छाती ठोंकी। उसके स्वर थे जो आज भी बुलन्द हैं। वह कह रही थी—'मैं भारत माता हूँ। मैं इस देश की रमणी हूँ। मैंने सिंगार किया, मैं दुलहिन बनी। मुझे पति का प्रेम मिला। मैंने पुत्र को गोद में खिलाया। खुदा रूठ गया, भाग्य ने साथ नहीं दिया, मेरी दुनिया बदल गई और मैंने अपने बेटे को कत्ल कर दिया। मैं माँ हूं। अब भी देखो मेरे कलेजे में जख्म हैं। मैं······।'

अमीना भरभरा कर गिर पड़ी। उसके प्राण जा चुके थे और काया जमीन पर पड़ी थी।

आँसू बह रहे थे। रुदन मेला लग रहा था। आसमान फट रहा था। धरती नीचे जा रही थी। हाय रे गरीब! तेरी दुनिया कभी आबाद नहीं हुई। तू हमेशा दुःखी ही रहा।

× × ×

सूरज की किरणें जैसी ही जमीन तक पहुँची। जनाजे उठ गये। मातम पुर्सी मनाते हुए लोग ऐसे जा रहे थे जैसे मौत के कैदी। अमीना का जनाजा आगे था। रहमान का पीछे-पीछे चल रहा था। ज़रीना पागल हो रही थी। नूरमहल बुरी तरह रो रही थी। नादिरा को अगर लोग पकड़े न होते तो वह अपना सिर फोड़ लेती। अहमद कह रहा था—'अमीना एक ऐसी माँ थी जो सिपाही की बीबी थी। उसने अपना हक अदा कर दिया वह कुर्बान हो गई। मुल्क ऐसी ही औरतों से आगे बढ़ता है।'

और जनाजा चला जा रहा था।

□□□